हया
और
पाक दामनी

मुसन्निफ़

हज़रत मौलाना

पीर ज़ुल्फ़क़ार अहमद नक़्शबन्दी

हया

और पाक दामनी

मुसन्निफ़

हज़रत मौलाना

पीर जुल्फ़क़ार अहमद नक़्शबन्दी

सबीला पब्लिकेशन्स

दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

विषय सूची

पेश लफ़्ज़

इस्लाम दीने फ़ितरत है और इनसान को ऐसे तरीक़े बताता है जो उसे कामयाबी की मंज़िल तक पहुँचाते हैं बल्कि ऐसे अख़्लाक़ से सजाता है जो उसे पाकीज़ा और अमन व सुकून वाली ज़िन्दगी गुज़ारने का सलीक़ा अता करते हैं। हया इस्लाम के तालीम दिए हुए बुनियादी अख़्लाक़ में से एक है दीन में इसकी अहमियत इतनी ज़्यादा है कि नबी अलैहिस्सलाम ने इसे ईमान का हिस्सा क़रार दिया है और फ़रमाया, الحياء من الايمان (हया ईमान का एक हिस्सा है।) हया और ईमान एक-दूसरे के साथ ऐसे लाज़मी हैं कि जिस आदमी में ईमान होता है उसमें हया भी लाज़मी होती है और जिसमें हया नहीं होती उसमें ईमान की भी कमी होती है। गोया हया एक मोमिन की लाज़मी सिफ़्त है।

हम आज मशहूर "रौशन ख़्याली" के ऐसे अंधेरे दौर से गुज़र रहे हैं जिसमें आमतौर पर इनसान अपनी दीनी, रूहानी और बेहतरीन जज़्बात को दिल के किसी वीरान कोने में डालकर जी चाही के घोड़े पर सवार माद्दियतपरस्ती (चीज़ों की मेहनत) की तरफ़ दौड़ रहे हैं। इसने लज़्ज़तों भरी ज़िन्दगी को ही अपनी असल ज़िन्दगी समझ लिया है और ख़्वाहिशों को पूरा करने को अपनी ज़िन्दगी की मंज़िल समझ लिया है। यह समझता है कि जी की चाहतें पूरी होनी चाहिए जैसे-जैसे भी हों। लिहाज़ा जिन्सी (सैक्स) ख़्वाहिशो जो इनसान की नफ़्सानी ख़्वाहिशों में से एक बड़ी ख़्वाहिश है उसको पूरा करने की दौड़ मे आज का इनसान कुछ इस तरह लगा हुआ है कि शर्म व हया की सिफ़्त से पल्ला झाड़ चुका है। नंगेपन और बेहयाई का एक तूफ़ान है जो काफ़िरो की इश्रतगाहों से उठा है और मुस्लिम मुल्कों को अपनी लपेट में लेता चला जा रहा है। टीवी, वीसीआर, वीडियो सीडी,

डिश, केबल और इंटरनेट वग़ैरह ऐसे शैतानी ज़रिए हैं जिन्होंने कुफ़्र के कलचर और मआशरत के रंग को मुसलमानों के घर-घर में पहुँचा दिया है। चुनाँचे बेहयाई और अख़्लाक़ी गिरावट के वे मनाज़र जो कभी बातिल की पहचान थे आज मुसलमानों में भी रिवाज पा चुके हैं—

फ़सादे क़ल्ब ओ नज़र है फ़िरंग की तहज़ीब
के रूह इस मदनियत की रह सकी न अफ़ीफ़
रहे न रूह में पाकीज़गी तो है ना पैद
ज़मीर पाक ओ ख़्याल बुलन्द ओ ज़ौक़ लतीफ़

काफ़िरों की तहज़ीब व कलचर को अपनाकर और उनकी मीडिया को देख-देखकर हमारी नौजवान नस्ल ग्लैमर और रोमांस की ऐसी दुनिया में खो गयी है कि वह अपनी हक़ीक़त को ही भूल गई है। यह वह क़ौम है जिसके नौजवान कभी अल्लाह के ज़िक्र की मस्ती, सज्दों की लज़्ज़त, अल्लाह तआला के ख़ौफ़, रातों को जागने के शौक़ और इल्म के ज़ौक़ के आदी थे, उनके चेहरे इबादत के नूर की चमक और मारिफ़त के नूर की दमक से चमका और दमका करते थे। आज उसके नौजवान गाने वालियों की चहक और नाचने वालियों के थिरक के रसिया हैं। परी चेहरों की मटक और हसीन औरतों की ठुमका के आशिक़ हैं।

कभी ऐ नौजवान मुस्लिम तदब्बुर भी किया तूने
वह क्या गरदूँ था तू जिसका है टूटा हुआ तारा

पहले वक़्त की अदबी किताबों में लैला-मजनूँ जैसे किरदारों के अदाकारों के इक्का-दुक्का वाक़िआत बतौर इबरत के नज़र आते थे लेकिन आज तो ज़्यादातर जिस नौजवान लड़के को अन्दर से टटोलो तो मजनूँ नज़र आता है और जिस लड़की का अन्दर खोलें तो लैला निकलती हैं हाँ कुछ ख़ुशनसीब जो अच्छी सोहबत और अल्लाह वालों की संगत की वजह से ज़माने के बुरे असरात से बच गए हों तो इन पाकीज़ा लोगों से अभी दुनिया

ख़ाली नहीं हुई। रोज़ाना के अख़बरात में लड़कियों के घर से भागने और आशिक़ों की बदहाली के वाक़िआत कसरत से मिलते हैं। स्कूलों जहाँ लड़के-लड़कियाँ इकठ्ठे पढ़ते हैं उन के बीच परवान चढ़ते रोमांस और क़ौमी फ़क्शनों में होने वाला गाना-बजाना हमारी क़ौम की मजमूई अख़्लाक़ी हालत का मंज़र खींचता है। फ़क़ीर को दुनिया में बहुत-से मुल्कों में सफ़र करने का मौक़ा मिला, हर जगह पर ऐसे नौजवान कसरत से मिलते हैं जिनकी खोई-खोई आँखें, उड़ी-उड़ी रंगत और उतरे-उतरे चेहरे उनके दिल का फ़साना सुना रहे होते हैं। उस वक़्त फ़क़ीर इंतिहाई रंज व अफ़सोस के साथ यह सोचता है कि काश कोई इनको समझाने वाला होता जो इनको समझाता, कोई इनका मसीहा होता जो इनको दवा देता—

नशा पिला के गिराना तो सबको आता है
मज़ा तो तब है के गिरतों का थाम ले साक़ी

ये सब हालात देख कार एक अरसे से फ़क़ीर के दिल में यह ख़्वाहिश उभर रही थी कि इस समाज के बिगाड़ की इस्लाह के लिए हया और पाकदामनी जैसे नाज़ुक मौज़ू पर कोई किताब लिखी जाए लेकिन कुछ तबलीग़ी मसरूफ़ियतें और मअहदुल फ़क़ीर की तामीरी मसरूफ़ियत में इसमें आड़े रहीं। फिर भी फ़क़ीर को सलवटों में कुछ वक़्त मिला कुछ-न-कुछ लिखता रहा। यहाँ तक कि दो साल के अरसे में यह किताब पूरी हुई, अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह।

इस किताब के लिखने में फ़क़ीर के सामने तीन बड़े इस्लाही मक़ासिद थे—

अव्वल उन नवजवानों की इस्लाह मक़सूद है ख़्वाहिश के हाथों मजबूर होकर तरह-तरह की जिन्सी और अख़्लाक़ी बुरी आदतों का शिकर हो चुके हैं और जवानी दीवानी के शैतानी कामों में लगकर अपनी ज़िन्दगी को अपने ही हाथों बरबाद कर रहे हैं। ज़रूरत इस बात की है कि उनको ग़लत हरकतों का

अंजाम बताया जाए और उनके अन्दर क़ुव्वते एहसास को पैदा किया जाए ताकि वे तबाही व बरबादी वाले रास्ते को छोड़कर हया और पाकदामनी को अपनी शुआर बनाए। और इफ़्फ़त व असमत वाली ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बन जाएँ।

दूसरे इसके मुख़ातिब कसीर तादाद में वह अवामुल नास है, जो बज़ाते ख़ुद तो अख़्लाकी बेरह रवी का शिकार नहीं लेकिन उन्हें मुआशरे में होने वाले हया सोज़ अफ़आल (हया वाले काम) कि बुराई का बुराई का इतना एहसास भी नहीं। अपने आसपास बहुत कुछ होता देखते हैं लेकिन उसे मामूली कार्यवाही समझते हैं। अपनी औलादों को अख़्लाक़ी बुराईयों में मुब्तला देखते हैं लेकिन "जवानी का तक़ाज़ा" समझकर नज़रअंदाज़ कर देते हैं। कुछ ख़ुद अपने हाथों से घर में शैतानी चीज़ें टीवी, डिश और केबल वग़ैरह लाकर रखते हैं और उसे बुराई समझने की बजाए "वक़्त की ज़रूरत" समझते हैं। और कुछ शरीफ़ लोग थोड़ा बहुत बेहयाई में मुँह मारने को शराफ़त के ख़िलाफ़ नहीं समझते। तो इन लोगों को भी तस्वीर का असल रूख़ दिखाना मक़सूद है ताकि वे समाज में अपनी ज़िम्मेदारियों को समझकर ख़ुद भी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से बचें और अपनी नई नस्ल को भी बचाएँ।

तीसरे यह किताब सालिकीन तरीक़त (मुरीदों) के लिए लिखी गई है। तसव्वुफ़ व सुलूक की सारी मेहनत अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मारिफ़त और निसबत हासिल करने के लिए होती हैं लेकिन अल्लाह तआला बड़े ग़य्यूर (ग़ैरतदार) हैं इसलिए ग़ैरुअल्लाह की तरफ़ थोड़-सा झुकाव भी मुरीद को इस्लाह के रास्ते से उतार देता है और वसूल इलल्लाह की मंज़िल से कोसों दूर फेंक देता है। एक थोड़ी-सी बदनज़री उसके सालों के ज़िक्र व अज़्क़ार पर पानी फेर देती है। लिहाज़ा इस किताब के ज़रिए सालिकों (मुरीदों) को आगाह करना मक़सूद है कि अगर वे महबूबे हक़ीक़ी को पाना चाहते हैं तो उनहें दिल के उन तमाम चोर दरवाज़ों को

बंद करना होगा जिनसे ग़ैर-महरम की मुहब्बत दिल में आती है। जब वे इस मामले में इंतिहाई एहतियात दिखाएँगे तो दिल में महबूब के जलवे का मुशाहिदा करना आसान हो जाएगा—

चश्म बंद व गोश बंद व लब बद
गर न बीनी सिरे हक़ बर मन बख़न्द

तू अपनी आँखों को, अपने कानों को, अपने होंठों को बंद कर ले फिर तुझे मुशाहिदा हक़ न हो तो मेरा मज़ाक़ उड़ाना।

इस किताब में फ़क़ीर ने पूरी कोशिश की है कि शैतानी क़ुव्वतों की तरफ़ से बेहयाई फैलाने वाली हया को ख़त्म करनेवाली तदबीरों को खोलकर बयान कर दिया जाए ताकि दर्दमंद दिल रखनेवाले लोगों के लिए उनको समझना और उनको दूर करना आसान हो जाए। दुआ है कि अल्लाह तआला फ़क़ीर की इस टूटी-फूटी कोशिश को क़बूल फ़रमए और इसे आख़िरत के लिए सदक़ा जारिया बनाएँ। वमा तौफ़ीकी इल्लाह बिल्लाह इलैहि तवक्कलतू व इलैहि उनीब।

दुआगो व दुआ जो
फ़क़ीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दी

बाब-1

हया और पाकदामनी की अहमियत

अल्लाह तआला ने इन्सान को अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बनाकर क़ुदरती ख़ूबियों से माला-माल किया हैं इस ख़ुबियों में से एक ख़ूबी शर्म व हया है। शरई नुक़्ते नज़र से शर्म व हया उस सिफ़्त को कहते हैं जिसकी वजह से इनसान बुरे और नापसन्दीदा कामों से परहेज़ करता है। दीने इस्लाम ने हया की अहमियत को ख़ूब उजागर किया है ताकि मोमिन हया वाला बनकर समाज में अमन व सुकून फैलाने का ज़रिया बने। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मर्तबा एक अंसारी रज़ियल्लाहु अनहु को देखा जो अपने भाई को समझा रहा था कि ज़्यादा शर्म न किया करो। आपने सुना तो इरशाद फ़रमाया :

فَإِنَّ الْحَيَاءَ مِنَ الْإِيْمَانِ (متفق عليه مشكوة باب الرفق والحياء)

"बस हया ईमान का जुज़्व (हिस्सा) है।"

एक दूसरी हदीस में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْحَيَاءُ لَا يَأْتِيْ إِلَّا بِخَيْرٍ (متفق عليه مشكوة)

हया ख़ैर ही की मूजिब (ज़रिय) होती है।

इस तरह है कि इन्सान जिस क़द्र बाहया होगा उतनी ही उसमें ख़ैर बढ़ती जाएगी। हया उन सिफ़ात में से है जिनकी वजह से इन्सान आख़िरत में जन्नत का हक़दार बनेगा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْحَيَاءُ مِنَ الْإِيْمَانِ وَالْإِيْمَانُ فِي الْجَنَّةِ وَالْبَذَاءُ مِنَ الْجَفَاءِ وَالْجَفَاءُ فِي النَّارِ

(رواه احمد والترمذى مشكوة ٤٣١)

हया ईमान का हिस्सा है और ईमान जन्नत में जाने का सबब है। बेहयाई जफ़ा है और जफ़ा जहन्नम में जाने का सबब है।

हया की वजह से इन्सान के कहने और करने में हुस्न व जमाल पैदा हो जाता है। लिहाज़ा बाहया इन्सान मख़्लूक़ की नज़र में भी पुरकशिश बन जाता है और परवर्दिगार आलम के यहाँ भी मक़्बूल हो जाता है। क़ुरआन मजीद से भी इसका सुबूत मिलता हैं हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम की नेक बेटी जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बुलाने के लिए आई तो उसकी चाल ढाल में बड़ी सुकून और म्याना-रवी थी। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को यह शर्मीलापन इतना अच्छा लगा कि क़ुरआन मजीद में इसका तज़्किरा फ़रमाया। इरशाद बारी तआला है—

فَجَآءَتْهُ إِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ (القصص:۲۵)

और आई उनके पास उनमें से एक लड़की शरमाती हुई।

सोचने की बात है कि जब बाहया इनसान की चाल और बातचीत अल्लाह तआला को इतनी पसन्द है तो उसका किरदार कितना मक़्बूल व महबूब होगा। लिहाज़ा जो आदमी हया जैसी नेमत से महरूम हो जाता है वह हक़ीक़त में बदक़िस्मत बन जाता है। ऐसे इन्सान से ख़ैर की उम्मीद रखना भी बेकार है। नबी अलैहि वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

إِذَا لَمْ تَسْتَحْيِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ (رواه البخاری مشکوٰة:۴۳۱)

जब शर्म न रहे तो फिर जो मर्ज़ी कर।

इससे मालूम हुआ कि बेहया इनसान किसी अख़्लाक़ के ज़ाब्ते का पाबन्द नहीं होता। उसकी ज़िन्दगी बेलगाम ऊँट की तरह होती है। हया ही वह सिफ़्त है कि जिसकी वजह से इन्सान पाकीज़गी और पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारता है बल्कि यूँ कहना चाहिए कि हया और पाकदामनी एक-दूसरे के लिए ज़रूरी हैं। इन दोनों में चोली-दामन का साथ है। नीचे इस हक़ीक़त का जाएज़ा लिया जाता है।

पाकदामनी क़ुरआन मजीद की नज़र में

अज्रे अज़ीम का वादा

इशार्दे बारी ताला है—

وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿احزاب:٣٥﴾

अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करनेवाले मर्द और औरतें और अल्लाह को क़सरत से याद करनेवाले मर्द और औरतें। उनके लिए अल्लाह ने मग़फ़िरत और बड़ा सवाब तैयार कर रखा है।

इस आयत में कितनी वज़ाहत के साथ बयान किया गया है कि पाकदामनी के साथ यादे इलाही में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले लोगों के लिए अल्लाह तआला ने मग़फ़िरत और बड़ा सवाब तैयार कर रखा हैं सवाब से मुराद दुनिया की बरकतें और आख़िरत की नेमतें है जबकि मग़फ़िरत से मुराद यह है कि पाकदामन शख़्स से होनेवाली दूसरी ग़ल्ती कोताहियों को अल्लाह जल्दी माफ़ कर देंगे। यह बात देखने में आई है कि जो तालिबे इल्म पढ़ाई में लायक़ और मेहनती होता है उस्ताद उसकी दूसरी कोताहियों को नज़रअंदाज़ कर देता है। अज्र के साथ अज़ीम का लफ़्ज़ निशानदेही कर रहा कि पाकदामनी पर मिलने वाला ईमान वाला ईमान आम मामूल से ज़्यादा होता है। वैसे भी दस्तूर यहीं है कि बड़े लोग जिस चीज़ को बड़ा कह दें वह वाक़ई बहुत बड़ी होती है। यहीं तो परवरदिगार आलम पाकदामनी पर मिलनेवाले अज्र को बड़ा कह रहे हैं तो वाक़ई वह ईनाम बहुत बड़ा होगा। मुबारकबाद के लायक़ हैं वे ख़ुशनसीब हस्तियाँ जो पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारकर ऐसे अज्र की मुस्तहिक बन जाती हैं।

هَنِيْئًا لِاَرْبَابِ النَّعِيْمِ نَعِيْمُهَا

नेमत पानेवालों को उन नेमतों पर मुबारकबाद हो।

2. फ़लाह कामिल की ख़ुशख़बरी

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ① .... وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ⑤

(المؤمنون:١)

तहक़ीक़ फ़लाह पा गए वे मोमिन जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।

इस आयत मुबारका में फ़लाह पानेवाले मोमिन की चंद सिफ़ात का तज़्किरा किया गया है जिनमें से एक सिफ़्त पाकदामनी भी है। इससे मालूम हुआ कि बस फ़लाह कामिल पाकदामन लोगों को ही मिल सकती है। अरबी ज़बान में फ़लाह कहते हैं ऐसी कामयाबी को जिसके बाद नाकामी न हो। ऐसी ख़ुशी को जिसके बाद ग़मी न हो और अल्लाह तआला के हाँ ऐसी इज़्ज़त मिलने को जिसके बाद ज़िल्लत न हो। ख़ुशख़बरी है उन लोगों के लिए जिनके लिए यह मक़ाम है।

पाकदामनी हदीस पाक की नज़र में

1. नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मर्तबा क़ुरैश के जवानों से फ़रमाया :

يَا شَبَابَ قُرَيْشٍ اَحْفِظُوْا فُرُوْجَكُمْ لَا تَزْنُوْا اَلَا مَنْ حَفِظَ فَرْجَهٗ فَلَهُ الْجَنَّةُ

(حاكم، بيهقي)

ऐ जवानों क़ुरैश! अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो। ज़िना मत करो। जो अपनी शहवतगाह को महफ़ूज़ रखेगा उसके लिए जन्नत है।

इस हदीस में रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कितने खुले लफ़्ज़ों में यह हक़ीक़त खोल दी है कि जो लोग अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करेंगे, ज़िना के ज़रिए नफ़्सानी

शहवानी, शैतानी और वक़्ती लज़्ज़तों को हासिल करने से परहेज़ करेंगे उनको जन्नत की दाएमी ख़ुशियाँ नसीब होंगी। इसे कहते हैं मेहनत थोड़ी और अज्र ज़्यादा। हज़रत निसार फ़तही मद्देज़िल्लहू इरशाद फ़रमाते हैं—

नूर में हो या नार में रहना
हर जगह ज़िक्र यार में रहना
चंद झोंके ख़िज़ां के बस सह लो
फिर हमेशा बहार में रहना

2. रोम के बादशाह हरक़ुल ने जब अबूसुफ़ियान से पूछा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कि चीज़ों की तालीम देते हैं तो अगरचे अबूसुफ़ियान उस वक़्त मुसलमान नहीं हुए थे उन्होंने सीधे-सादे अल्फ़ाज़ में तालीमाते नबवी का ख़ाका यूँ पेश किया :

يَأْمُرُنَا بِالصَّلٰوةِ وَالصَّدَقَةِ وَالْعَفَافِ وَالصِّلَةِ (بخاری کتاب الادب باب صلۃ المرأة ۳۰۰۳)

वे हमें नमाज़, सदक़ा, पाकदामनी और सिला रहमी का हुक्म देते हैं।

मालूम हुआ कि पाकदामनी की तलक़ीन इस्लाम की बुनियादी तालीमात में से है बल्कि यूँ कहना चाहिए कि इस्लामी मआशरे की इमारत जिन सुतूनों पर खड़ी होती हैं उनमें से एक सुतून का नाम पाकदामनी है।

पाकदामनी नुबुव्वत का हिस्सा है

1. अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम वे पाकीज़ा हस्तियाँ थीं जिन्हें अल्लाह तआला ने इंसानियत की हिदायत के लिए नूर का मीनार बनाकर भेजा। उन्होंने ख़ुद भी पाकीज़ा और पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारी और अपने ताल्लुक़ वालों को भी इसकी ताकीद की। लिहाज़ा पाकदामनी नबुव्वत का हिस्सा हैं अल्लाह तआला ने जब हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को बेटा होने की ख़ुशख़बरी दी तो इरशाद फ़रमया :

سَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ (آل عمران:٣٩)

सरदार होंगे अपने नफ़्स को रोकने वाले होंगें, नबी होंगे, आला दर्जे के शाइस्ता होंगे।

अरबी ज़बान में "हुसूर" कहते हैं उस शख़्स को जो अपनी शहवत पर क़ाबू रखता हो और नफ़्स के फ़रेब में मुब्तला न हो। हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी इसी सिफ़्त से पुर थी।

2. जब अज़ीज़े मिस्र की बीवी ज़ुलेख़ा ने बंद कमरे में बेहतरीन मौक़ा देखकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश का खुले लफ़्ज़ों में इज़्हार किया तो उन्होंने फ़ौरन कहा مَعَاذَ اللّٰهِ मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ। अगरचे हज़रत युसुफ़ अलैहिस्सलाम को इस इनकार करने पर जेल की मुशक़्क़तें बरदाश्त करनी पड़ीं मगर एक वक़्त ऐसा आया कि ज़ुलेखा ने ख़ुद अपनी ज़बान से इक़रार किया कि–

وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ (یوسف:٣٢)

मैंने इसको मतलब हासिल करने के लिए बहकाया मगर यह पाक साफ़ रहा।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत यूसुफ़ अलहिस्सलाम की तारीफ़ में इरशाद फ़रमाया :

كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ۝٢٤

ताकि हम उनसे बुराई और फ़हाशी को दूर रखें। बेशक वे हमारे बरगुज़िदा बंदों में से थे।

इससे मालूम हुआ कि अंबिया किराम सबके सब बरगुज़िदा लोग थे जिन्होंने पाकीज़गी और पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारी। बस साबित हुआ कि पाकदामनी नबुव्वत का हिस्सा है।

पाकदामनी शर्ते विलायत है

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में नेक बंदों की सिफ़ात बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया है :

وَلَا يَزْنُوْنَ

और जो ज़िना नहीं करते।

इससे मालूम हुआ कि औलिया अल्लाह ज़िना से बचते हैं। तफ़सील यह है कि हर सालिक नेकोकारी और परहेज़गारी पर इस्तेक़ामत इख़्तियार करने की वजह से ही औलिया अल्लाह में शामिल होता है जबकि औलिया अल्लाह को अल्लाह तआला अपनी हिफ़ाज़त में ले लेते हैं और हर क़िस्म के गुनाहे कबीरा से महफ़ूज़ फ़रमाते हैं। रहमत का तक़ाज़ा भी यही है और दोस्ती का हक़ भी यही है और अल्लाह तआला ही सबसे ज़्यादा रहीम और सबसे ज़्यादा बेहतरीन दोस्त है।

अल्लाह वाले अपनी सच्ची मुहब्बत की बिना पर ग़ैर की तरफ़ आँख उठाकर देखना भी पसन्द नहीं करते। अगर एक ग़रीब लावारिस यतीम और बेसहारा लड़की को वक़्त का बादशाह अपनी मलिका बना ले और उसे महल में हर नेमत मुहैय्या करे, नौकर चाकर हों, पहनने ओढ़ने के लिए बेहतरीन लिबास हो, खाने-पीने के लिए मुर्ग़ मुसल्लम हों, ज़ेवरात और हीरे जवाहरात का ढेर हो, ख़ज़ाने का मुँह उसके इशारे पर खोल दिया जाए, बादशाह अपनी मलिका को ख़ूब मुहब्बत और इज़्ज़त व एहतिराम से रखे, ऐसे में कोई बदशक्ल भंगी अपने बदबूदार कपड़ों और बदबूदार जिस्म के साथ मलिका को बहकाने की कोशिश करे जबकि बादशाह भी देख रहा हो तो वह मलिका उस भंगी की तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखेगी। औलिया अल्लाह के दिल की यही कैफ़ियत होती है कि एक तरफ़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के बेशुमार एहसानात उनपर होते हैं, हर लम्हे उनके दिलों पर अल्ताफ़े करीमाना की बारिश हो रही होती है, अल्लाह तआला की मदद व नुसरत का क़दम-क़दम पर वह मुशाहिदा करते हैं। अल्लाह तआला दुनिया के ग़मों से उनको निजात देकर अपनी मुहब्बत व उलफ़त की शीरनी उन्हें अता करते हैं। ऐसे में कोई ग़ैर-महरम उनको गुनाहों की तरफ़ मुतवज्जेह करे तो वह

एक "पेशाब के लोटे" की ख़ातिर अपने मालिक हक़ीक़ी को नाराज़ करने की सोच भी नहीं सकते।

हज़रत सुलेमान बिन यसार रह. मशहूर मुहद्दिस हैं। एक मर्तबा हज के सफ़र पर रवाना हुए तो जंगल में एक जगह पड़ाव डाला। उनके साथी किसी काम के लिए शहर को गए तो वह अपने ख़ेमें मे अकेले थे। इतने में एक ख़ूबसूरत औरत उनके ख़ेमे में आई और कुछ माँगने का इशारा किया। उन्होंने कुछ खाना देना चाहा तो उसने कहा, मैं आपसे वह कुछ चाहती हूँ जो एक औरत मर्द से चाहती है देखो तुम नोवजवान हो, मैं ख़ुबसूरत हूँ, हम दोनों के मज़े उड़ाने के लिए तनहाई का मौक़ा भी है। हज़रत सुलेमान बिन यसार रह. ने यह सुना तो समझ गए कि शैतान ने मेरी उम्र भर की मेहनत को ज़ाए करने के लिए इस औरत को भेजा है। वह ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से ज़ार व क़तार रोने लगे। इतना रोए कि वह औरत शर्मिन्दा होकर वापस चली गई। हज़रत सुलेमान बिन यसार रह. ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया कि मुसीबत से जान छूटी। रात को सोए तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, मुबारकबाद हो, तुमने वली होकर वह काम कर दिखाया जो एक नबी ने किया था।

हज़रत जुनैदा बग़दादी रह. के दौर में एक अमीर शख़्स था जिसकी बीवी रश्क़े क़मर और परी चेहरा थी। उस औरत को अपने हुस्न पर बड़ा नाज़ था। एक मर्तबा बनाव सिंगार करते हुए उसने नाज़ नख़रे में अपने ख़ाविन्द को कहा कि कोई आदमी ऐसा नहीं जो मुझे देखे और मेरी तमा न करे। ख़ाविन्द ने कहा मुझे उम्मीद है कि जुनैद बग़दादी को तेरी परवाह भी नहीं होगी। बीवी ने कहा कि मुझे इजाज़त हो तो जुनैद बग़दादी को आज़मा लेती हूँ। यह कौन-सा मुश्किल काम हैं यही घोड़ा और यही घोड़े का मैदान। देख लेती हूँ जुनैद बग़दादी रह. कितने पानी में है। ख़ाविन्द ने इजाज़त दे दी।

वह और बन संवरकर जुनैद बगदादी रह. के पास आई और एक मसअला पूछने के बहाने चेहरे का नक़ाब खोल दिया। जुनैद बगदादी रह. की नज़र पड़ी तो उन्होंने ज़ोर से अल्लाह के नाम की ज़र्ब लगाई। उस औरते के दिल में यह नाम पेवस्त हो गया। उसके दिल की हालत बदल गई। वह अपने घर वापस आई और सब नाज़ व नखरे छोड़ दिए। ज़िन्दगी की सुबह व शाम बदल गई। सारा दिन क़ुरआन मजीद की तिलावत करती और सारी रात मुसल्ले पर खड़े होकर गुज़ार देती। ख़शियते इलाही और मुहब्बत इलाही कि वजह से आँसुओं की लड़ियाँ उसके गालों पर बहती रहती। उस औरत का ख़ाविन्द कहा करता था कि मैंने जुनैद बगदादी का क्या बिगाड़ा था कि उसने मेरी बीवी को राहिबा (सन्यासी) बना दिया और मेरे काम का न छोड़ा।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह. फ़रमाया करते थे कि जब नूरे निस्बत मेरे सीने में मुन्तक़िल हुआ तो ऐसी बातिनी ठंडक नसीब हुई कि बावजूद भरपूर जवानी के मेरे लिए औरत और दीवार के दर्मियान फ़र्क़ ख़त्म हो गया।

इन वाक़ियात से इस बात की तस्दीक़ होती है कि औलिया कामिलीन को मुहब्बते इलाही की ऐसी हलावत नसीब होती है कि फिर नफ़सानी और शहवानी लज़्ज़तें उनकी नज़र मे हेच हो जाती हैं।

गोया औलिया अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी यह है कि वह पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। अगर मान भी लें कि बशारियत की बिना पर कोई ख़ता हो जाए तो वे जब तक सच्ची तौबा के ज़रिए उसको माफ़ नहीं करवा लेते उनको चैन नहीं आता।

हज़रत माइज़ असलमी रज़ियल्लाहु अनहु का वाक़िआ इसकी उम्दा दलील हैं उनको सच्ची तौबा पर इतना अज्र मिलता है कि अगर उसकी ज़कात निकालकर तक़्सीम करें तो पूरे शहर के गुनाहगारों की बख़्शिश हो जाए। अल्लाह वाले फ़रिश्ते नहीं होते,

इनसान होते हैं। उनसे ख़ता का हो जाना मुमकिन है मगर वे गुनाह पर जमे नहीं रहते। ऐसे वाक़िआत बहुत मुश्किल से होते हैं बल्कि न होने के बराबर होते हैं। आम दस्तूर यही है कि अल्लाह तआला उनकी कबीरा गुनाहों से हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं। कभी-कभी उनसे अपनी हिफ़ाज़त की छतरी थोड़ी देर के लिए हटा देते हैं जिसकी वजह से उनसे चूक और कोताही हो जाती है। फिर वह ख़ूब रोने-धोने के ज़रिए अल्लाह तआला से माफ़ी माँगते हैं। परवरदिगार आलम को उनका रोना धोना, मिन्नत समाजत करना और माफ़ियाँ माँगना अच्छा लगता है। कभी-कभी तो सच्ची तौबा पर अल्लाह तआला इतना ख़ुश होते हैं कि उनके गुनाहों को उनकी नेकियों में तब्दील फ़रमा देते हैं। उसूल तो यही है कि अल्लाह का वली बदकारी पर जमा नहीं रहता जबकि बदकारी पर जमा रहनेवाला वली नहीं होता। इसकी मिसाल यूँ समझें कि क़ुरआन मजीद में खोट शामिल नहीं हो सकता यानी बातिल उसमें जगह नहीं पा सकता। इसका मतलब यह नहीं कि इसमें किताबत और प्रिन्टिंग की ग़ल्ती नही हो सकती। अगर कोई ग़फ़लत बरते तो क़ुरआन मजीद मे किताबत की ग़ल्ती हो सकती हैं। मगर ये ग़ल्तियाँ क़रार नहीं पकड़ सकती। जब भी कोई हाफ़िज़ आमिल उसको पढ़ेगा तो फ़ौरन निशानदिही कर देगा। चुनाँचे खोट दूर कर दिया जाएगा। बातिल हक़ के साथ हमेशा के लिए नहीं मिल सकेगा। जिस तरह क़ुरआन पाक में किताबत की ग़ल्ती क़रार नहीं पकड़ सकती इसी तरह अल्लाह वालों की ज़िन्दगीयों में क़बीरा गुनाह की आदत क़रार नहीं पकड़ सकती। अल्लाह का वली वही शख़्स होता है जो शरिअत व सुन्नत पर इस्तिक़ामत की ज़िन्दगी गुज़ारता है। अगर शैतान उससे कोई ग़ल्ती करवाने में कामयाब हो भी जाए तो वह फ़ौरन नादिम और शर्मिन्दा होकर तौबा कर लेता है, गुनाह पर जमा नहीं रहता। हदीस पाक में आता है :

اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ (مشكوة ٢٠٦)

गुनाह से तौबा करनेवाला ऐसा होता है जैसे उसने गुनाह किया ही नहीं।

उसूल तो यही है कि अंबिया किराम मासूम होते हैं और औलिया किराम महफ़ूज़ होते हैं। यहाँ ज़हन में एक सवाल पैदा होता है कि जब औलियाए कामिलीन अल्लाह तआला की हिफाज़त में होते हैं तो फिर वह कभी-कभार हिफ़ाज़त से दूर क्यों कर दिए जाते हैं? इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआला अपने बंदों के मुरब्बी हैं। उनकी मुख़्तलिफ़ हालात में तर्बियत फ़रमाते हैं। अपने औलिया किराम में से किसी एक से कोई ऐसा अमल करवाते हैं कि जिसकी वजह से नफ़्स पर ख़ूब मलामत करने का मौक़ा मिले। उसके अन्दर से ख़ुदपसन्दी और उजब को खुरच-खुरच कर निकाल देते हैं। उसको सरापा नियाज़ बना देते हैं। नाज़ की जड़ें काटकर रख देते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह उंदलूसी रह. का वाक़िआ इसकी बेहतरीन मिसाल हैं एक इसाई बस्ती के क़रीब गुज़रते हुए हज़रत अब्दुल्लाह उंदलूसी रह. ने यह कह दिया कि ईसाइ लोग कितने कम अक़्ल हैं कि अल्लाह तआला के साथ शरीक बनाते हैं। बस इतनी मामूली सी बात पर अल्लाह तआला ने उनकी बातिनी कैफ़ियतों को छीन लिया। वह एक ईसाई लड़की पर आशिक़ हो गए। उससे शादी करने की ग़र्ज़ से एक साल सुअर चराते रहे। कुरआन मजीद और हदीस का हिफ्ज़ भूल गए। आख़िर उनके मुरीद हज़तर शिबली रह. जब उनसे मिलने आए तो वह दोनों मिलकर ख़ूब रोए। अल्लाह तआला से ख़ूब रो-रोकर माफ़ी माँगी। अल्लाह तआला ने सब कैफ़ियते वापस लौटा दीं। यह सब कुछ इसलिए पेश आया कि हज़रत अब्दुल्लाह उंदलूसी रह. को पता चले कि अगर मैं हिदायत पर हूँ तो यह मेरी अक़्ल का कमाल नहीं बल्कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत का कमाल है। हज़रत अब्दुल्लाह उंदलूसी रह. की याद्दाश्त दोबारा काम करने लगी और पहले से भी ज़्यादा दीन की मेहनत करने लगे और

लाखों इनसानो की हिदायत का ज़रिया बने। अल्लाह तआला हमें अपनी हिफ़ाज़त से कभी भी दूर न फ़रमाए, आमीन सुम्मा आमीन।

बात का खुलासा यह है कि मशाइख़ किराम अपने मुरीदों को ज़िक्र व मुराक़बे की तालीम देते हैं जिन पर पाबन्दी करने से सालिक के अन्दर से नफ़्सानी ख्वाहिशात पर कंट्रोल की सिफ़्त पैदा हो जाती है। उनकी निगाह पाक हो जाती है, दिल साफ़ हो जाता है, तबियत शरिअत की पाबन्द बन जाती हैं, उन्हें पाकीज़गी और पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारना आसान हो जाता है। यही सिफ़्त मक़ामे विलायत के हासिल होने का सबब बन जाती है।

हज़रत नक़्शबंदी बुख़ारी रह० से किसी ने पूछा कि हज़रत! इनसान बालिग कब होता है? फ़रमाया, बालिगे शरिअत या बालिगे तरीक़त? उसने अर्ज़ किया कि हज़रत मुझे दोनों की तफ़्सील बता दें। फ़रमाया कि इनसान बालिगे शरीयत तब होता है जब इसे अन्दर से मनी से निकले और हाँ तरीक़त तब होता है जब वह मनी से निकल जाए यानी शहवत से मुताल्लिक गुनाहों से बच जाए। इससे मालूम हुआ कि जब नूरे विलायत सीने में दाख़िल होता है तो सालिक़ की जोश की कैफ़ियत को सुकून मिल जाता है। शहवत के समुन्दर में ज्वार-भाटे की हालत नहीं रहती। सालिक को पाकदामनी की ज़िन्दगी नसीब हो जाती है। यही सिफ़्त विलायत का मंशा और उसकी शर्त है।

पाकदामनी पर दुनिया में नुसरते ख़ुदावन्दी

1. दुनिया में तख़्त व ताज नसीब हुआ

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भाईयों ने कुँए में डाल दिया तो एक क़ाफ़िलेवालों ने उनको गुलाम बना लिया और शहर मिस्र में आकर उनको बेच दिया। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की

लड़कपन की उम्र थी। मिस्र में उनका अपना रिश्तेदार या दोस्त यार कोई नहीं था। ज़ाहिरी तौर पर बे यार मददगाद थे, बिलकुल बेसहारा थे। वक़्त के साथ जब भरपूर जवानी की उम्र को पहुँचे तो अज़ीज़े मिस्र की बीवी जुलेख़ा ने उनको गुनाह की दावत दी। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की पनाह माँगी और कमरे से बाहर भाग गए। जुलैखा ने हीले बहाने से उनको जेल भिजवा दिया। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जेल की मुशक़्क़तें और परेशानियाँ सालों तक बरदाश्त करते रहे। एक वक़्त ऐसा आया कि अल्लाह तआला की रहमत मुतवज्जेह हुई। वह न सिर्फ़ बाइज़्ज़त बरी हो गए बल्कि ख़ज़ानों के वाली बना दिए गए। अल्लाह तआला ने ताज उनके क़दमों में डाल दिया। चंद साल, पहले जो गुलाम थे आज आक़ा बन गए। पाकदामनी के अमल पर दुनिया में भी नक़द ईनाम मिला। ऐसी इज़्ज़त मिली कि माँ-बाप और भाई सब-के-सब उनके सामने सज्दा रेज़ हुए। हर दौर और हर ज़माने में जो आदमी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह तक़्वा और पाकदामनी की ज़िन्दगीं गुज़ारेगा अल्लाह तआला उसके सर पर इज़्ज़तों के ताज सजाएगा!

2. ग़ार का मुँह खुल गया

हदीस मुबारका में बनी इसराईल के तीन आदमियों का वाक़िआ मंक़ूल है। एक सफ़र के दौरान सख़्त बारिश होने लगी तो वह बचने के लिए एक ग़ार के अन्दर छिप गए। अल्लाह तआला की शान देखिए कि तूफ़ानी बारिश की वजह से एक बड़ी चट्टान लुढ़कती हुई ग़ार के मुँह पर आ पड़ी। चट्टान इतनी बड़ी थी कि ये तीनों मिलकर ज़ोर लगाते तो भी न हिला सकते। बाहर निकलने का रास्ता बिलकुल नहीं था। तीनों को मौत सामने खड़ी मुस्कराती नज़र आई। इस परेशानी, ग़म और ख़ौफ़ की हालत में तीनों ने फ़ैसला किया कि अपनी-अपनी ज़िन्दगी का कोई अमल अल्लाह ताआल की बारगाह में पेश करके निजात की दुआ मांगे। एक ने कहा मैंने माँ-बाप की बहुत

ख़िदमत की। मैं बकरियों का दूध पहले माँ को पेश करता बाद में सोया करता था। एक रात जब मैं दूध लेकर हाज़िर हुआ तो मेरी माँ सो चुकी थी। मैंने जगाना मुनासिब न समझा और दूध हाथ में लेकर खड़ा इंतेज़ार करता रहा यहाँ तक कि सुबह हो गई। ऐ अल्लाह मेरे इस अमल को क़बूल कर के हमें निजात अता फ़रमा। चट्टान एक तिहाई सरक गई फिर भी अभी निकलने का रास्ता न बना था। दूसरे ने कहा ऐ अल्लाह मैं अपनी भरपूर जवानी की उम्र में अपनी ख़ूबसूरत चचाज़ाद बहन पर आशिक़ था। मैंने उसे फुसलाने के लिए कई हीले बहाने किए मगर वह पाक-साफ़ रही और मेरे जाल में न फँसी। एक मर्तबा तंगदस्तती के हालात में मजबूर होकर वह मुझ से क़र्ज़ लेने आई। मैंने उसे इस शर्त पर पैसे देने का वादा किया कि वह मेरी ख़्वाहिश पूरी करे। मरती क्या न करती, उसने हामी भर दी। जब में जमाअ के लिए उसके क़रीब आया तो उसने कहा, अल्लाह से डर और इस मोहर को न तोड़। उसके अल्फ़ाज़ बिजली बनकर गिरे। मुझपर अल्लाह तआला का ख़ौफ़ तारी हो गया। मैंने उसे पैसे भी दे दिए और बुराई भी न की। ऐ अल्लाह! अगर यह मेरा अमल आपके हाँ मक़्बूल हैं तो हमें इस मुसीबत से निजात अता फ़रमाइए। चट्टान दूसरी तहाई भी सरक गई। फिर भी निकलने का रस्ता न बना। तीसरे ने कहा ऐ अल्लाह! मेरा एक मज़दूर मज़दूरी लिए बग़ैर किसी वजह से नाराज़ होकर चला गया। मैंने उसके पैसों से बकरी ख़रीदी। वक़्त गुज़रने के साथ वह भरपूर रेवड़ बन गया। काफ़ी मुद्दत के बाद अपनी वह अपनी मज़दूरी लेने के लिए आया तो मैंने पूरा रेवड़ उसे पेश कर दिया। ऐ अल्लाह! अगर मेरा यह अमल आपके हाँ मक़्बूल है तो हमें इस मुसीबत से निजात अता फ़रमा। चट्टान मज़ीद हट गई और हम तीनों दोस्त ग़ार से बाहर निकल आए।

इस वाक़िए में हमारे उनवान से मुताल्लिक़ दूसरे आदमी का अमल है जिसने ख़ौफ़े ख़ुदा की वजह से गुनाह को छोड़ा और उसका अमल अल्लाह तआला के हाँ मक़्बूल हुआ। इससे सबक़

मिला कि पाकदामन इनसान अल्लाह तआला का मक़्बूल बंदा होता है। अल्लाह तआला उसको दुनिया के गर्मी से भी बचाते हैं और क़दम-क़दम पर उसकी पुश्तपनाही भी फ़रमाते हैं।

३. दुआ क़बूल हो गई

एक मर्तबा देहली में सख़्त कहत पड़ा। बारिश न होने की वजह से खेतों में फ़सल भी न हुई और पेड़ों पर फल भी न हुए। लोग खाने के लिए रोटी को तरसने लगे। हर आदमी बारिश की दुआएँ माँगता मगर आसमान पर बादल नज़र ही न आते। उलमा शहर ने मशवरा किया कि शहर के सब लोग एक दिन खुले मैदान में जमा हों। औरतों बच्चों और जानवरों को भी साथ लाए। मैदान में नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा करने के बाद अपने गुनाहों से तौबा करें और बारिश की दुआ करें। प्रोग्राम के मुताबिक़ शहर से बाहर लोग जमा हो गए।

सख़्त गर्मी और चिलचिलाती धूप ने सबके चेहरों को झुलसाकर रख दिया। नमाज़ अदा की गई। मर्दों व औरतों ने रो-रोकर बारिश के लिए दुआ माँगी मगर आसमान पर दूर-दूर तक बादल का नाम व निशान नज़र नहीं आया। मासूम बच्चे तड़पने लगे। जानवर भी पानी को तरसने लगे लोगों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। सुबह से अस्र तक यह अमल जारी रहा मगर उम्मीद की किरन नज़र न आई। जिस वक़्त दुआ माँगते हुए मख़्लूक़े ख़ुदा ख़ूब रो रही थी। उस वक़्त एक मुसाफ़िर नौजवान उस मैदान के क़रीब से गुज़रा। उसने ऊँट की मुहार पकड़ी हुई थी। ख़ुद पैदल चल रहा था जबकि ऊँट पर कोई पर्दा नशीन औरत सवार थी। उसने इतने लोगों को आह व ज़ारी करते देखा तो ऊँट को एक जगह रोका और क़रीब के लोगों से पूछा कि क्या मामला है। जब इसे हक़ीक़त का पता चला तो वह अपने ऊँट के क़रीब गया और दुआ के लिए हाथ उठाए। अभी हाथ नीचें नहीं आए थे कि छमछम बारिश बरसने लगी। एक

आलिम ने उस नौजवान से पूछा कि कितने ख़ुश नसीब और मुसतजाबुद्दावात इनसान हैं उसने जवाब दिया कि दरहक़ीक़त ऊँट पर मेरी वालिदा सवार हैं। मैंने अपनी वालिदा की चादर का एक कोना पकड़कर अल्लाह तआला से दुआ माँगी। ऐ परवरदिगार आलम ये मेरी नेक पाकदामन वालिदा हैं, आपको इनकी पाकदामनी का वास्ता देता हूँ अपने बंदों पर बारिश बरसा दीजिए। अभी मेरे हाथ नीचे नहीं आए थे कि बारिश बरसने लगी। मालूम हुआ कि पाकदामनी अल्लाह तआला के हाँ इतना मक़बूल अमल है कि अगर इसको अल्लाह के हुज़ूर पेश करें तो परवरदिगार दुआओं को रद्द नहीं फ़रमाते।

4. पाकदामनी का बदला पाकदामनी

इरशाद बारी तआला है :

الطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ (النور:٢٦)

पाकीज़ा औरतें पाकीज़ा मर्दों के लिए और पाकीज़ा मर्द पाकीज़ा औरतों के लिए।

जो आदमी पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारता है उसे दुनिया में नक़द ईनाम यह मिलता है कि उसके घरवालों के लिए पाकदामनी की ज़िन्दगी नसीब फ़रमाते हैं। हदीस पाक में आया है कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साम्ने शिकायत पेश की कि मुझे अपनी बीवी के किरदार पर शक है। यह बात मेरी सख़्त तकलीफ़ और परेशानी का सबब है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोगों की औरतों के बारे में पाकीज़गी इख़्तियार करोगे तो लोग तुम्हारी औरतों के बारे में पाकीज़गी इख़्तियार करेंगे। (अलू जामेअ सग़ीर जि. 2 स. 156) इससे मालूम हुआ कि अदले का बदला होता है। ज़िनाकार आदमी सिर्फ़ फ़हश अमल ही नहीं करता बल्कि दूसरों का मक़रूज़ हो जाता है और यह क़र्ज़ उसके घरवालों या औलादों में से कोई-न-कोई चुका देता है। उसूल यही है कि

गुनाह की सज़ा उस अमल की क़िस्म से हुआ करती है। बस जो आदमी दूसरों की इज़्ज़त बरबाद करेगा दूसरे उसकी इज़्ज़त बरबाद करेंगे। इमाम शाफ़ई रह. के मशहूर अशआर है जिसका तर्जुमा है :

पाकदामन रहो तुम्हारी औरतें पाकदामन रहेंगी। और बचो उससे जो मुसलमान के लायक़ नहीं। बेशक ज़िना क़र्ज़ है तो अगर तूने क़र्ज़ लिया है तो अदाएगी तेरे घरवालों से होगी। इसको जान ले जो ज़िना करे उससे ज़िना किया जाएगा अगरचे उसकी दीवार से। ऐ शख़्स! अगर तू अक़्लमंद है तो इसको जान ले।

तफ़्सील रूहुल बयान लिरूसवी में एक क़िस्सा लिखा है कि शहर बुख़ारा में एक सुनार की मशहूर दुकान थी। उसकी बीवी नेक सीरत और ख़ूबसूरत थी। एक सक़्क़ा (पानी लाने वाला) उनके घर में तीस साल तक पानी लाता रहा। बहुत एतिमाद का आदमी था। एक दिन सक़्क़े ने पानी डालने के बाद उस सुनार की बीवी का हाथ पकड़कर शहवत से दबाया और चला गया। और बहुत गमज़दा हुई कि इतनी मुद्दत के एतिमाद को ठेस पहुँची। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। इसी दौरान सुनार खाना खाने के लिए घर आया तो उसने बीवी को रोते हुए देखा। पूछने पर हक़ीक़त मालूम हुई तो सुनार की आँखों में भी आँसू आ गए। बीवी ने पूछा क्या हुआ। सुनार ने बताया कि आज एक औरत ज़ेवर ख़रीदने आई जब मैं उसे ज़ेवर देने लगा तो उसका ख़ूबसूरत हाथ मुझे पसन्द आया। मैंने उस अजनबिया का हाथ शहवत से दबाया। यह मेरे ऊपर क़र्ज़ हो गया था। लिहाज़ा सक़्क़े ने तुम्हारे हाथ को दबाकर क़र्ज़ चुका दिया। मैं तुम्हारे सामने सच्ची तौबा करता हूँ कि आइन्दा ऐसा कभी नहीं करूँगा मगर ये मुझे बताना कि कल सक़्क़ा तुम्हारे साथ क्या मामला करता है। दूसरे दिन सक़्क़ा पानी डालने के लिए आया तो उसने सुनार की बीवी से कहा, मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ, कल शैतान ने मुझे

बहकाकर बुरा काम करवा दिया। मैंने सच्ची तौबा कर ली है, आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि आइन्दा ऐसा कभी नहीं होगा। अजीब बात है कि सुनार ने ग़ैर औरतों को हाथ लगाने से तौबा की तो ग़ैर-मर्दों ने उसकी बीवी को हाथ लगाने से तौबा की।

(तफ़्सीर रूहुल बयान)

2. एक बादशाह के सामने किसी आलिम ने यह मसअला बयान किया कि ज़ानी के अमल का क़र्ज़ उसकी औलाद या घरवालों में से किसी-न-किसी को चुकाना पड़ता है। उस बादशाह ने सोचा कि मैं इसका तजुरिबा करता हूँ। उसकी बेटी हुस्न व जमाल में बेमिसाल थी। उसने शहज़ादी को बुलाकर कहा कि आम सादा कपड़े पहनकर अकेली बाज़ार में जाओ। अपना चेहरा खुला रखो और लोग तुम्हारे साथ जो मामला करें वह हू-बहू मुझे आकर बताओ। शहज़ादी ने बाज़ार का चक्कर लगाया मगर जो ग़ैर-महरम आदमी उसकी तरफ़ देखता तो शर्म के मारे निगाहें फेर लेता। किसी आदमी ने उस शहज़ादी के हुस्न जमाल की तरफ़ ध्यान ही नहीं दिया। सारे शहर का चक्कर लगाकर जब शहज़ादी अपने महल में दाख़िल होने लगी तो चौकीदारों में से किसी मुलाज़िम ने महल की ख़ादिमा समझकर रोका। गले लगाया, बोसा लिया और भाग गया। शहज़ादी ने बादशाह को सारा क़िस्सा सुनाया। बादशाह की आँखों में से आँसू निकल आए। कहने लगा मैंने सारी ज़िन्दगी ग़ैर-महरम से अपनी निगाहों की हिफ़ाज़त की है। अलबत्ता एक मर्तबा मैं एक ग़लती कर बैठा और एक ग़ैर-महरम लड़की को गले से लगाकर उसका बोसा लिया था। बस मेरे साथ वही कुछ हुआ जो मैंने अपने हाथों से किया था। सच है कि ज़िना एक क़िसास वाला अमल है, जिसका बदला अदा होकर रहता है। (रूहुलमानी आलूसी 15/68)

हमें ऊपर ज़िक्र किए गए वाक़िआत से इबरत हासिल करनी चाहिए। ऐसा न हो हमारी कोताहियों का बदला हमारी औलाद

चुकाती फिरें। हर आदमी चाहता है कि उसके घर की औरतें पाकदामन बनकर रहें। उसे चाहिए कि वह ग़ैर-महरम औरतों से लालच ख़त्म कर दे। इसी तरह जो औरतें चाहती हैं कि हमारे ख़ाविन्द नेकोकारी की ज़िन्दगी गुज़ारें, बेहयाई वाले कामों को छोड़ दें, उन्हें चाहिए कि वे ग़ैर-मर्दों की तरफ़ नज़र उठाना भी छोड़ दें ताकि पाकदामनी का बदला पाकदामनी की सूरत में मिल जाए। रह गई बात कि अगर किसी ने पहले यह क़बीरा गुनाह किया है तो तौबा कर दरवाज़ा खुला हैं सच्ची तौबा के ज़रिए अपने रब को मनाएँ ताकि दुनिया में बदला देने से बच जाएँ और आख़िरत की ज़िल्लत से छुटकारा पाएँ।

पाकदामनी पर महशर में इकराम

हदीस पाक में आया हैं कि क़यामत के दिन सात आदमी अर्श के साए में होंगे जिस दिन अर्श के सिवा कोई दूसरा साया नहीं होगा। उन सात ख़ुशनसीब लोगों में से एक वह पाकदामन इनसान होगा जिस ख़ूबसूरत और ख़ानदानी औरत गुनाह की दावत दे और जवाब में कह दे :

اِنِّی اَخَافُ اللّٰہَ (بخاری باب فضل من ترک الفواحش)

मैं अल्लाह से डरता हूँ।

अंदाज़ा लगाएँ कि पाकदामनी वाली सिफ़्त की अल्लाह तआला के यहाँ कितनी क़द्र है कि रोज़े महशर जब तमाम इनसानियत अपनी-अपनी के आलम में पड़ी होगी तो उस वक़्त कुछ लोग होंगे जिनपर अल्लाह तआला का ख़ास करम और ख़ास रहमत होगी। उनमें वे ख़ुशनसीब भी होंगे जो ज़िना से बचेंगे। ऐन उस वक़्त जबकि गुनाह की दावत मिल रही थी और वे चाहते तो मौक़े से फ़ायदा उठा सकते थे लेकिन उन्होंने नफ़्स को दबाया ओर अपने किरदार को गुनाह से आलूदा होने से बचा लिया। लिहाज़ा अल्लाह तआला के अर्श के साए में मुतमइन व मसरूर होंगे।

पाकदामनी पर जन्नत की बशारत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले को जन्नत की बशारत दी है और वह भी अपनी ज़मानत पर। फ़रमाया :

مَنْ تَوَكَّلَ لِيْ مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ تَوَكَّلْتُ لَهُ بِالْجَنَّةِ (بخاری)

जो मेरे लिए अपनी रानों की दर्मियानी चीज़ (शर्मगाह) और जबड़ों की दर्मियानी चीज़ (ज़बान) की हिफ़ाज़त की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत में दाखिल होने की ज़मानत देता हूँ।

एक और मौक़े पर नवजवानों को मुख़ातिब करके फ़रमाया :

يَا شَبَابَ قُرَيْشٍ اِحْفَظُوْا فُرُوْجَكُمْ لَا تَزْنُوْا اَلَا مَنْ حَفِظَ فَرْجَهُ فَلَهُ الْجَنَّةُ

(حاکم بیہقی)

ऐ जवानाने क़ुरैश! अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो, ज़िना मत करो। जो अपनी शहवतगाह को महफ़ूज़ रखेगा उसके लिए जन्नत है।

लिहाज़ा जन्नत के हमेशा के ईनामों को हासिल करने के लिए यह ज़रूरी है कि हम दुनिया के वक़्ती मज़ों व शहवतों पर क़ाबू करें।

पाकदामनी और परवर्दिगार का मुशाहिदा

जिस आदमी का ना-महरम पर क़ाबू हुआ मगर ख़ुदा तआला के ख़ौफ़ से गुनाह से बच गया उसके बदले में उसे जन्नत में अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा। (इब्ने माजा)

हदीसों में पाकदामनी की दुआएँ

पाकदामनी वह आला सिफ़्त है जिसकी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अल्लाह तआला से दुआ मांगा करते थे। आप हालाँकि अपनी ज़ात में मासूम थे लेकिन इससे आपकी

इफ़्फ़त व पाकदामनी की ज़िन्दगी से मुहब्बत का अंदाज़ा होता है। दूसरा यह कि उम्मत की तालीम के लिए आपने ये दुआएँ माँगी। हदीसों में कई दुआएँ हैं जिसमें आपने अल्लाह तआला से आँख की पाकीज़गी और इफ़्फ़त व असमत को तमन्ना बनाकर माँगा है। चंद दुआएँ इस तरह है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْهُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰی(مسلم مشکوۃ الاستعاذ)

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुकल-हुदा वत्तु-क़ वल-अफ़ा-फ़ वल ग़िना

ऐ अल्लाह मैं तुझसे हिदायत, परहेज़गारी और पाकदामनी और ग़िना का सवाल करता हूँ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الصِّحَّةَ وَالْعِفَّةَ وَالْاَمَانَةَ وَحُسْنِ الْخُلُقِ الْحَسَنَ وَالرِّضَا بِالْقَدَرِ(مشکوۃباب الاستعاذ)

अल्लाहुम्मा इननी अस्अलुकस-स्सिहता वल इफ़्-फ़-त वल अमाः-न-त व हुस्नुल ख़ुल्क़ित हुस्ना वरिज़ा बिल-क़द्र।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सेहत, पाकदामनी और अमानत और अच्छे अख़्लाक़, हुस्न और रज़ा बिल क़द्र (तक़दीर पर राज़ी रहने) का सवाल करता हूँ।

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِیْ مِنَ النِّفَاقِ وَعَمَلِیْ مِنَ الرِّيَاءِ وَلِسَانِیْ مِنَ الْكِذْبِ وَ عَيْنِیْ مِنَ الْخِيَانَةِ فَاِنَّكَ تَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِی الصُّدُوْرِ.

अल्लाहुम्मा तहिहर क़ल्बि मिनन-निफ़ाक़ि व अ-म-लि मिनर्रियाइ व लिसानि मिनल कज़्बि व ऐनि मिलन ख़ियानति फ़-इन्न-क तअलमू ख़ाइनतुल आयूनि व-मा तुख़फ़िस्सुदूर।

ऐ अल्लाह! मेरे दिल को निफ़ाक़ से पाक कर और मेरे अमल को रिया से और मेरी ज़बान को झूठ से और मेरी आँख को ख़ियानत से। बेशक तू आँखों और सीने की पोशिदा ख़ियानतों को जानता है।

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِیْ رُشْدِیْ وَاَعِذْنِیْ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ (رواه الترمذی)

अल्लाहुम्ममा अल-हिमनि रुशदि व अइज़्नी मिन शर्रि नफ़्सी।

ऐ अल्लाह! मुझे इल्हाम फ़रमा मेरी हिदायत और मेरे नफ़्स के शर से मुझे दूर फ़रमा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الْاَخْلَاقِ وَالْاَعْمَالِ وَالْاَهْوَاءِ (رواه الترمذی)

अलहुम्मा इन्नी अउज़ुबिका मिम्मुनकरातिल अख़्लाक़ि वल आमालि वल अह्वाई।

ऐ अल्लाह! मैं नापसन्दीदा अख़्लाक़ और आमाल और ख़्वाहिशात से तेरी पनाह चाहता हूँ।

اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِیْ وَبَصَرِیْ وَلِسَانِیْ وَقَلْبِیْ مَنِیِّیْ

अऊज़ुबि-क मिन शर्रि समई व ब-स-रि व लिसानि व क़ल्बि व मन्नियि।

मैं अपने कान, अपनी बीनाई, अपने दिल और मनी की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ।

हमें भी चाहिए कि हम अपनी ज़िन्दगी में इन दुआओं के माँगने का मामूल बनाएँ ताकि इनकी बरकत से इफ़्फ़त व पाकदामनी वाली ज़िन्दगी नसीब हो जाए।

सहाबा किराम का पाकदामनी का जज़्बा

इस्लाम से पहले अरब में शराब पीना और बेहयाई आम थी और वे अपनी महफ़िलों में और अपनी बातचीत में इसका इज़्हार बड़े फ़ख़्र से किया करते थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा तालीमात और आपके फ़ैज़े सोहबत ने सहाबा किराम पर ऐसा असर किया कि उनकी ज़िन्दगियाँ बिलकुल बदल कर रह गयीं। वही सहाबा किराम जो जाहिलियत के ज़माना में हर क़िस्म की अख़्लाक़ी गुमराही का शिकार थे

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तर्बियत की बरकत से उनकी ज़ातें ऐसी पाक साफ़ हुई की उन्हें अख़्लाक़ी बुराईयों से पूरी नफ़रत हो गई।

एक सहाबी मरसद बिन अबि मरसद ग़नवी रज़ियल्लाहु अन्हु को हिजरत के मौके पर यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई कि जो कमज़ोर और ज़ईफ़ लोग मक्का मुक़र्रमा में रह गए हैं वह उनकी मक्का मुक़र्रमा से मदीना मुनव्वरा की तरफ हिजरत में मदद व नुसरत करें और हिफ़ाज़त के साथ मदीना मुनव्वरा तक पहुँचाएँ। एक दफ़ा वह इसी सिलसिले में मक्का तशरीफ़ ले गए। इत्तिफ़ाक़न से उनको अनाक़ नामी एक औरत के घर के पास से गुज़रना पड़ा। यह एक फ़ाहिशा औरत थी जिससे उनके इस्लाम से पहले कुछ ताल्लुक़ात रहे थे। उस औरत ने हज़रत मरसद को देखकर पहचान लिया और आगे बढ़कर उनका बड़ी गर्मजोशी से इस्तिक़बाल किया और रात को घर ठहरने पर इसरार करने लगी। हज़रत मरसद रज़ियल्लाहु अन्हु चूँकि इस्लाम की रोशनी हासिल कर चुके थे इस तरह की बुराईयों से नफ़रत करने लगे थे लिहाज़ा साफ़ जवाब देते हुए फ़रमाया, "अब पहला ज़माना बाक़ी नहीं रहा, इस्लाम ने ज़िना को हराम क़रार दे दिया है लिहाज़ा मुझे माफ़ करो।" उसने कहा, अगर मेरी ख़्वाहिश पूरी नहीं करोगे तो मैं शोर व गुल करूँगी और तुम्हें गिरफ़्तार करवा दूँगी। लेकिन इस धमकी के बावजूद हज़रत मरसद रज़ियल्लाहु अनहु ने गंदगी में सनना पसन्द न किया और वहाँ से भाग खड़े हुए और छिपते-छिपाते काफ़िरों के चंगुल से निकल गए।

एक और सहाबी हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे पसंद है कि मेरी नाक मुर्दार की बू से भर जाए मगर यह पसन्द नहीं कि इसमें किसी ग़ैर औरत की बू आए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक हसीन

औरत मस्जिद में आया करती थी और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ा करती थी। बाज़ सहाबा किराम ने अपना यह मामूल बना लिया था कि वे उनसे बहुत पहले आकर अगली सफ़ में बैठ जाते कि उन पर निगाह न पड़ जाए।

एक दफ़ा सहाबा किराम ने दुश्मन का कोई इलाक़ा फ़तेह किया। और उस इलाक़े में उनका लश्कर अमीर के साथ चला जा रहा था। ईसाईयों ने उनके ईमान पर डाका डालने के लिए वहाँ रास्ते में बेपर्दा औरतों को बना संवारकर खड़ा कर दिया। अमीरे लश्कर ने सिर्फ़ इतनी आयत पढ़ी :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ

मोमिनीन से कह दो कि अपनी निगाहों को झुका लें।

तो सहाबा किराम ने निगाहें नीची कर लीं, उस शहर से गुज़र गए और शहर के दर व दीवर को न देखा। जब वापस आए तो मदीना मुनव्वरा के लोगों ने पूछा कि शहर के मकानों की बनावट कैसी थी, कितने ऊँचे थे? तो फ़रमाने लगे जब हमें हुक्म मिला हमने निगाहें नीची कर लीं, ऊँची की ही नहीं यहाँ तक की इस शहर से वापस आ गए। हमें उस शहर के मकानों की ऊँचाई का पता ही नहीं चला, सुब्हानअल्लाह।

औरतों से इफ़्फ़त व असमत पर बैअत

शर्म व हया औरत का ज़ेवर है और उसकी फ़ितरत में पेवस्त किया गया है। जब तक औरत अपने इस ज़ेवर की हिफ़ाज़त करती है उस वक़्त तक समाज में पाकीज़गी और अमन का गहवारा बना रहता है। और जब औरत ही ख़ाईन बनकर अपने उस ज़ेवर को लुटाने पर आमादा हो जाए तो समाज में बहुत-सी अख़्लाक़ी बुराईयों के दरवाज़े खुल जाते हैं। लिहाज़ा औरत को बज़ाते ख़ुद अपनी इफ़्फ़त व असमत की हिफ़ाज़त का ख़्याल रखना चाहिए। यही वजह कि नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म फ़रमाया गया कि वे औरतों से इस बात पर बैअत लें :

وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ

और न वे ज़िना करेंगी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी और न इफ़्तिरा (बोहतान) बाँधेंगी।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यहाँ क़त्ल औलाद से मुराद हमल गिराना है और इफ़्तिरा से मुराद अपनी नाजाएज़ औलाद को झूठा किसी से मन्सूब करना (जोड़ना) है।

बेहयाई की मज़म्मत क़ुरआन में

क़ुरआन पाक में बेहयाई के लिए "फ़हशा" लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है। और बहुत-सी जगहों पर बेहयाई से सख़्ती से मना किया गया है और तंबीह की गई है। चुनाँचे फ़रमाया :

وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

(النحل:٩٠)

अल्लाह तआल मना करता है फ़हाशी से और मुन्कर (बुराई) से और हद से निकलने से।

एक और जगह पर फ़रमाया :

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ (اعراف:٣٣)

ऐ पैग़म्बर! कह दीजिए बेशक अल्लाह तआला ने बुराई के सारे कामों (बेहयाई) को जो खुले हों या छिपे हों, मना किया है।

एक और जगह पर बड़े खुल लफ़्ज़ों में ज़िना को फ़ाहिशा कहा और इसे इंतिहाई बुरी बात क़रार दी। फ़रमाया :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَىٰ ۖ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٣٢﴾ (بنی اسرائیل:٣٢)

और ज़िना के क़रीब न जाओ ये "फ़ाहिशा" और बुरी

राह।

गोया कि यह बात समझाई जा रही है कि अल्लाह तआला ने इनसान के शहवानी जज़्बात के पूरा करने के लिए कुछ हदें मुक़र्रर फ़रमाई हैं। जो इन हदों को तोड़ता है वह फ़हशा (बेहयाई) का काम करता है। चुनाँचे सूर : मुमिनून में इस बात की वज़ाहत फ़रमाई :

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝

(المؤمنون:٤-٦)

और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं लेकिन अपनी बीवियों और बांदियों पर और जो कोई इसके अलावा कुछ करे तो वह हद से बढ़ने वाले हैं।

मुसलमान होने की हैसियत से यह हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम कुरआन करीम में बयान की गई रोशन तालीमात पर अमल करें और हया और पाकदामनी वाली ज़िन्दगी को अपनाए। दुआ है कि अल्लाह तआला हमें अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे, आमीन सुम्मा आमीन।

बाब-2

बदनज़री

इनसानी आँखें जब बे-लगाम हो जाती हैं तो अक्सर बेहयाई की बुनियाद बन जाती है। इसी लिए मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक बदनज़री "उम्मुल ख़बाइस" (बुराईयों की जड़) की तरह है। इन दो सुराख़ों से ही फ़ितने के चश्में उबलते हैं और माहौल व समाज में नंगेपन और बेहयाई के फैलने का सबब बनते हैं। इस्लाम ने इन दो सुराख़ों पर पहरा बिठा दिया। यह भी इस्लामी तालीमात का हुस्न जमाल है कि हर मोमिन को निगाहें नीचीं रखने का हुक्म दिया हैं न ही ग़ैर-महरम पर नज़र पड़े और न ही शहवत की आग भड़के। न रहे बांस न बजे बांसुरी। उसूली बात है—

बुराई की इब्तिदा को ही ख़त्म कर दो।

Nip the evil in the bud.

आमतौर पर देखा जाता है कि जिन लोगों की निगाहें बेक़ाबू होती हैं उनके अन्दर शहवत की आग भड़कती रहती है यहाँ तक कि उनसे बेहयाई का काम हो जाता है।

नज़र की हिफ़ाज़त के बारे में क़ुरआनी आयतें

इरशाद बारी तआला है :

قُلْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا يَصْنَعُوْنَ (النور:۳۰)

ईमान वालों से कह दीजिए कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। इसमें उनके लिए पाकीज़गी है। बेशक अल्लाह तआला को ख़बर है, इसकी जो कुछ वे करते हैं।

क़ुरआन मजीद की यह आयत मोमिनों के लिए एक कामिल पैग़ाम है। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस आयत में तादीब (अदब), तबीह और तहदीद (डांट) का बयान है जिसकी तफ़्सील इस तरह है :

तादीब

आयत के इब्तिदाई हिस्से में तादीब है। मोमिनों को अदब सिखाया गया है कि जिन चीज़ों को देखना उनके लिए जाएज़ नहीं है उनसे अपनी निगाहें नीची रखें। बंदों को यही सजता है कि अपने आका की फ़रमांबरदारी करें। इससे यह भी मालूम हुआ निगाह नीची करना शुरूआत है और शर्मगाह की हिफ़ाज़त इन्तिहा है। गोया ये दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। बस जिसकी निगाह क़बू में नहीं उसकी शर्मगाह क़ाबू में नहीं।

तंबीह

ذٰلِكَ أَزْكٰى لَهُمْ ज़ालिका अज़्क़ा लहुम में तंबीह है कि निगाह नीची करने का फ़ायदा यह है कि दिलों में पाकीज़गी आएगी। गुनाह का वसवसा ही पैदा नहीं होगा। इसमें उनका अपना फ़ायदा है। इबादत में यकसूई नसीब होगी, नफ़्सानी, शैतानी, शहवानी वसाविस से जान छूट जाएगी और अगर इस हिदायत पर अमल नहीं करेंगे तो बदनज़री की वजह से दिल के सुकून से महरुम हो जाएँगे। दिल में हसरतों की भरमार होगी। फ़ितने में पड़ने का क़वी अंदेशा होगा।

तहदीद (डांट)

إِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا يَصْنَعُوْنَ इन्नल्ला-ह ख़बीरुम बिमा यसनऊन में डांट है। परवरदिगार आलम की तरफ़ से तंबीह है कि अगर बंदों ने इस हिदायत की परवाह न की तो याद रखें कि अल्लाह तआला ग़ाफ़िल नहीं। वह उनकी तमाम कारवाइयों से वाक़िफ़ है। वह नाफ़रमानों से निपटना अच्छी तरह जानता है।

यह बात ज़हन में बिठा लें कि अगर इस्लाम ने मर्दों को खुले लफ़्ज़ों में अपनी निगाहें नीची रखने का हुक्म दिया है तो औरतों को भी नहीं छोड़ा। क्योंकि मर्द व औरत दोनों का ख़मीर एक ही है। लिहाजा औरत की फ़ितरत में भी शहवत रखी गई है। उनके बारे में इरशादे बारी तआला है :

وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ

ईमान वालियों से कह दीजिए कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें।

इन दोनों आयतों का लब व लहजा इस हक़ीक़त को वाज़ेह कर रहा है कि आँखों की बेबाकी शहवत को भड़काती और शर्मगाह में उभार पैदा करती है। ऐसी हालत में इनसानी अक़्ल पर पर्दा पड़ जाता है। शहवत खुली आँखों के बावजूद इनसान को अंधा बना देती है। इनसान गुनाह करके ज़िल्लत व रुस्वाई के गढ़े में जा गिरता है। शहवत के मामले में जो हाल मर्दों का है कम व बेश वही हाल औरतों का है। औरतें अमूमन जज़बाती होती हैं, जल्दी मुतास्सिर हो जाती हैं। उनकी निगाहें मैली हो जाएँ तो ज़्यादा फ़ितने जगाती हैं। लिहाज़ा उन्हें भी चाहिए कि अपनी निगाहें नीची रखें। इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं :

तर्जुमा : फिर तू आँख की ज़रूर हिफ़ाज़त कर, अल्लाह तुझे और हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए क्योंकि यह हर फ़ित्ने और आफ़त का सबब है।

इससे मालूम हुआ कि आँखों का फ़ित्ना बहुत हलाक करनेवाला है और अक्सर फ़ित्नों और आफ़तों का बुनियादी सबब है।

नज़र की हिफ़ाज़त के बारे में हदीस मुबारक

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गरामी है :

غُضُّوا أَبْصَارَكُمْ وَاحْفَظُوا فُرُوجَكُمْ (الجواب الكافي ٢٠٠)

अपनी निगाहों को पस्त रखो और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो।

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह. लिखते हैं :

“निगाह शहवत की क़ासिद और प्याम्बर होती है और निगाह की हिफ़ाज़त दरअसल शर्मगाह और शहवत की जगह की हिफ़ाज़त हैं जिसने नज़र को आज़ाद कर दिया उसने इसको हलाकत में डाल दिया। नज़र ही उन तमाम आफ़तों की बुनियाद है जिनमें इनसान मुब्तला होता है।” (अलजवाबुल काफ़ी -204)

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद गरामी है :

النَّظْرَةُ سَهْمٌ مَسْمُوْمٌ مِنْ سِهَامِ إِبْلِيْسَ (الجواب الكافي ٢٠٤)

नज़र इब्लीस के तीरों में एक ज़हरआलूदा तीर है।

बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है :

النَّظْرُ سَهْمٌ سَمٌّ إِلَى الْقَلْبِ (ابن كثير ٣-٢٨٢)

निगाह एक तीर है जो दिल में ज़हर डाल देता है।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद गरामी है :

الْعَيْنَانِ زِنَاهُمَا النَّظْرُ (مسلم)

आँखों का ज़िना देखना है।

इस हदीस पाक से मालूम हुआ कि जो आदमी किसी ग़ैर-महरम के चेहरे पर शहवत भरी निगाह डालता है वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका होता है। बुज़ुर्गों ने निगाह को “बरीदुल इश्क़” यानी “इश्क़ का प्याम्बर” कहा है।

ज़ुलेख़ा अगर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के चेहरे पर नज़र न डालती तो जज़्बात के हाथों बेक़ाबू होकर गुनाह की दावत न देती। चंद लम्हों की बेताबी ने उसकी रुसवाई भरे बोल का तज़्किरा क़ुरआन मजीद में करवा दिया। बेहयाई वाले काम की निस्बत क़यामत तक उसकी तरफ़ रहेगी।

इबरत हासिल करनी चाहिए कि बदनज़री की रुसवाईयाँ कितनी बड़ी और कितनी बुरी है।

अचानक नज़र माफ़ है

कई मर्तबा ऐसा होता है कि राह चलते या आते-जाते ग़ैर-महरम औरत सामने आ जाती है तो उसके चेहरे पर नज़र पड़ जाती है। ऐसी सूरत के बारे में हज़रत अली रज़ि.यल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल पूछा तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

يَا عَلِيُّ لَا تُتْبِعِ النَّظْرَةَ النَّظْرَةَ فَإِنَّ لَكَ الْأُولَى وَلَيْسَتْ لَكَ الْآخِرَةُ (مشكوة ٢٦٨)

ऐ अली! एक मर्तबा नज़र पड़ जाने के बाद फिर दोबारा न देखो क्योंकि तुम्हारे लिए सिर्फ़ पहली नज़र माफ़ है, दूसरी नहीं।

इससे मालूम हुआ कि पहली अचानक नज़र माफ़ है और अगर किसी वक़्त पहली नज़र ही इरादे के साथ डाली गई तो वह भी हराम होगी। और पहली नज़र माफ़ होने का मतलब यह भी नहीं कि पहली नज़र ही इतनी भरपूर हो कि दोबारा देखने की ज़रूरत ही न रहे। सिर्फ़ इतनी बात है कि अगर अचानक नज़र पड़ गई तो नज़रें फ़ौरन हटाने का हुक्म है।

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि जो नज़र अचानक पड़ जाती है उसके बारे में क्या हुक्म है? इरशाद फ़रमाया :

أَصْرِفْ بَصَرَكَ (مشكوة ابن كثير)

निगाह को फेर लो।

कभी-कभी हकीम डाक्टर या जज किसी को शरई उज़्र की वजह से किसी ना-महरम को चेहरा देखना पड़ जाए तो बक़द्र ज़रूरत देखने के बाद नज़र को फ़ौरन हटा लेना चाहिए।

बदनज़री फ़साद का बीज

ग़ैर-महरम की तरफ़ शहवत की नज़र से देखना फ़साद का बीज है। शैतान ग़ैर-महरम के चेहरों को बनाकर पेश करता है। वैसे भी दूर से हर चीज़ भली नज़र आती है। इसीलिए तो कहावत मशहूर है कि दूर के ढोल सुहाने हुआ करते हैं। बदनज़री करने से इनसान के दिल में गुनाह का बीज पड़ जाता है जो मौक़ा मिलने पर अपनी बहार दिखाता है। क़ाबील ने हाबील की बीवी के हुस्न व जमाल पर नज़र डाली तो दिल व दिमाग़ पर ऐसा भूत सवार हुआ कि अपने भाई को क़त्ल कर दिया। दुनिया में सबसे पहली नाफ़रमानी कर बैठा।

क़ुरआन मजीद में इस बुरी हरकत का ज़िक्र हुआ है। गुनाह की बुनियाद डालने की वजह से क़यामत तक जितने क़ातिल आएँगे उनका बोझ उसके सर पर होगा। मालूम हुआ कि पहली नज़र डालने का तो इख़्तियार होता है। फिर मामला उसके बाद ग़ैर-इख़्तियारी वाला हो जाता है—

चले के एक नज़र तेरी बज़्म देख आएँ
यहाँ जो आए तो बेइख़्तियार बैठ गए

इसलिए बेहतर है कि पहल ीनज़र से ही बचा जाए। ख़तरे में पड़ना मुहतात लोगों का काम नहीं होता।

बदनज़री ज़िना की पहली सीढ़ी है

मुसनद अहमद में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गरामी नक़ल किया है :

العينان زناهما النظر والاذنان زناهما الاستماع واللسان زناها الكلام واليد زناها البطش والرجل زناها الخطا والقلب يهوى ويتمنى ويصدق ذالك الفرج اويكذبه

आँखों का ज़िना देखना है, कानों का ज़िना सुनना है, ज़बान का ज़िना बात करना है, हाथ का ज़िना पकड़ना

है, पाँव का ज़िना चलना है, दिल का ज़िना आरज़ू और तमन्ना करना है, शर्मगाह उसकी तसदीक़ या तकज़ीब करती (झुठलाती) है।

مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَنْظُرُ إِلَى مَحَاسِنِ الْمَرْأَةِ أَوَّلَ مَرَّةٍ ثُمَّ يَغُضُّ بَصَرَهُ إِلَّا أَحْدَثَ اللهُ لَهُ عِبَادَةً يَجِدُ حَلَاوَتَهَا (مشكوٰة ٢٠٠)

कोई मुस्लामन जब पहली मर्तबा किसी और की ख़ूबसूरती देखे फिर अपनी निगाह को पस्त कर ले तो अल्लाह तआला उसको इबादत की लज़्ज़त अता फ़रमाते हैं।

तबरानी शरीफ़ में ग़ैर-महरम से नज़र हटाने के बारे में रिवायत है :

مَنْ تَرَكَهَا مِنْ مَخَافَتِي أَبْدَلْتُهُ إِيْمَانًا يَجِدُ حَلَاوَتَهُ فِي قَلْبِهِ (رواه طبرانى والحاكم الترغيب والترهيب ٣٦٠٢)

जिसने मेरे डर की वजह से (बदनज़री) छोड़ी मैं उसे ईमान अता करूँगा जिसकी हलावत वह दिल में महसूस करेगा।

कितना नफ़ेमंद सौदा है कि बदनज़री की वक़्ती और आरज़ी लज़्ज़त को छोड़ने पर ईमान की हमेशा की हलावत और शीरनी नसीब होती है। साबित हुआ कि अल्लाह तआला ऐसे आदमी के सीने में ठंडक डाल देते हैं। वैसे भी दस्तूर है कि अमल की जज़ा उसी की क़िस्म से होती हैं बस जो आदमी ग़ैर-महरम पर नज़रबाज़ी की लज़्ज़त को छोड़ेगा अल्लाह तआला उसको इबादत और ईमान की लज़्ज़त अता करेगा।

बदनज़री से कभी जी नहीं भरता

हज़रत अक़्दस थानवी रह० फ़रमाते हैं :

“बदनज़री चाहे कितनी ज़्यादा की जाए, चाहे हज़ारों मर्दों और औरतों को घूरा जाए और घंटों घूरा जाए सैरी (तसल्ली) नहीं होती।

बदनज़री ऐसी प्यास लगाती है जो कभी नहीं बुझती। इस्तिस्क़ा (प्यास की बीमारी) का मरीज़ इतना पानी पिए कि पेट फटने को आए तो भी प्यास ख़त्म नहीं होती। अल्लाह तआला ने एक से बढ़कर एक को ख़ूबसूरत बनाया है। इनसान कितने ठप्पे देखेगा। नतीज़ा यही निकलती है कि एक को देखा है दूसरे को देखने की हवस है। इस दरिया में सारी उम्र बहते रहेंगे तो भी किनारे पर नहीं पहुँचेगे। इसलिए कि यह दरिया वह है जिसका किनारा नहीं।

बदनज़री ज़ख़्म को गहरा करती है

नज़र का तीर जब पेवस्त हो जाता है तो फिर दिल की कुढ़न बढ़ना शुरू हो जाती हैं जितनी बदनज़री ज़्यादा की जाएगी उतना ही ज़ख़्म ज़्यादा गहरा होता है। हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह. फ़रमाते हैं :

"निगाह का तीर फेंका जाए तो फेंकने वाला पहले क़त्ल हो जाता है। वजह यह है कि निगाह डालने वाला दूसरी निगाह को अपने ज़ख़्म का मदावा (तसल्ली) समझता है हालाँकि वह ज़ख़्म को ज़्यादा गहरा करता है। (अल् जवाब काफ़ी-417)

लोग कांटों से बचकर चलते हैं
हमने फूलों से ज़ख़्म खाएँ हैं

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह. फ़रमाते है :

الصبر على غض البصر ايسر على الصبر على الم ما بعده (الجواب الكافى ٤١٣)

आँख बंद करना आसान है मगर बाद की तकलीफ़ पर सब्र करना मुश्किल काम है।

बदनज़री से बूढ़े भी महफ़ूज़ नहीं

ज़िना के अमल से बहुत से लोग बच जाते हैं चूँकि उसके लिए बड़े एहतिमाम करने पड़ते हैं। अव्वल तो जिससे ज़िना करना चाहे वह राज़ी हो, दूसरा मुनासिब मौक़ा व महल मैयस्सर हो, तीसरा तन्हाई भी वरना डर लगा रहता है कि अगर किसी को ख़बर हो गई तो इज़्ज़त ख़ाक में मिल जाएगी। इसलिए शरीफ़ और इज़्ज़तदार लोग इसमें कम मुब्तला होते हैं। अगर पेशेवर औरत से ज़िना करना चाहें तो माल, पैसा पानी की तरह बहाना पड़ता है। इसके अलावा एड्स, आतिश्क, सूज़ाक जैसी ख़तरनाक बीमारियों का डर लगा रहता है। इसके ख़िलाफ़ बदनज़री वाले गुनाह के कि इसमें सामान की ज़रूरत ही नहीं होती। न ही इसमें बदनामी का डर होता है क्योंकि इसकी ख़बर तो अल्लाह ही को है कि नीयत कैसी हैं वे बूढ़े जो अमली तौर पर जमा की क़ुदरत ही नहीं रखते वह भी बदनज़री के गुनाह में मुब्तला हो जाते हैं बल्कि उनमें गुनाह की हसरत कूट-कूट कर भरी होती है। बक़ौल शायर—

जवानी से ज़्यादा वक़्ते पीरी जोश होता है
भड़कता है चिराग़े सुबह जब ख़ामोश होता है

बाज़ लोगों का जिस्म बूढ़ा होता है दिल नवजवान होता है। वे हर वक़्त जवानी को याद करते रहते हैं—

पीरी तमाम ज़िक्रे जवानी में कट गई
क्या रात थी कि एक कहानी में कट गई

कुछ टांगे क़ब्र में पहुँच जाती हैं, कमर झुक जाती है फिर भी उन्हें जवानी की तलाश होती है बक़ौल शायर—

यहीं कहीं थी जवानी मगर पता न चला
उसी को ढूंढ रहा हूँ कमर झुकाए हुए

सोचना चाहिए कि अगर जवानी ग़फ़लत में गुज़र चुकी तो चलो बुढ़ापे में ही रब को याद कर लें मगर यहाँ तो उल्टी गंगा

बहती हैं—

अहदे पीरी में जवानी की उमंग
आह किस वक़्त में क्या याद आया

तमाशा यह है कि औरतें बूढ़ा समझकर उससे पर्दा नहीं करतीं। इससे बदनज़री का गुनाह और ज़्यादा आसान हो जाता है। शहवतपरस्त बूढ़े बाल सफ़ेद कर लेते हैं जबकि दिल स्याह कर बैठते हैं। रोज़े महशर ज़बाने हाल से कहेंगे—

नाकर्दा गुनाहों की भी हसरत की मिले दाद
या रब! अगर इन कर्दा गुनाहों की सज़ा है

हज़रत थानवी रह. फ़रमाते हैं कि मुझसे एक बूढ़े आदमी मिले जो बहुत से कामों में मुत्क़ी थे। मगर उन्होंने अपनी हालत बयान की मैं ग़ैर-महरम को ललचाई हुई नज़रों से देखने में मुब्तला हूँ। बदनज़री का कितना नुक़सान है कि बूढ़ा आदमी क़ब्र के किनारे तक पहुँच जाता है मगर यह ख़तरनाक मर्ज़ साथ लगा रहता है।

बदनज़री से तौफ़ीक़े अमल भी छिन जाती है

हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह. फ़रमाते हैं—

"बदनज़री निहायत ही मुहलिक मर्ज़ है। एक तजुरिबा तो मेरा भी अपने बहुत-से अहबाब पर है कि ज़िक्र व शग़ल की इब्तिदा में लज़्ज़त व जोश की कैफ़ियत होती है मगर बदनज़री की वजह से इबादत की हलावत और लज़्ज़त फ़ना हो जाती है और उसके बाद धीरे-धीरे इबादतों के छूटने का ज़रिया बन जाता है।
(आपबीती-6/418)

मिसाल के तौर पर सेहतमंद नवजवान आदमी को बुख़ार आ जाए और उतरने का नाम ही न ले तो लाग़िरी और कमज़ोरी की वजह से उसके लिए चलना फिरना मुश्किल हो जाता है। कोई

काम करने को दिल नहीं चाहता, बिसतर पर पड़े रहने को दिल चाहता हैं इसी तरह जिस आदमी को बदनज़री की बीमारी लग जाए वह बातिनी तौर पर कमज़ोर हो जाता है। नेक अमल करना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। दूसरे लफ़्ज़ों में उससे अमल की तौफ़ीक़ छिन जाती है। नेक काम करने की नीयत भी करता है तो बदनज़री की वजह से नीयत में फ़ुतूर आ जाता है। बक़ौल शायर—

तैयार थे नमाज़ को हम सुनकर ज़िक्रे हूर
जलवा बुतों का देखकर नीयत बदल गई

बदनज़री से क़ुव्वते हाफ़िज़ा कमज़ोर होती है

हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहसपुरी रह. फ़रमाया करते थे कि ग़ैर-महरम औरतों की तरफ़ या नौ उम्र लड़कों की तरफ़ शहवत की नज़र डालने से क़ुव्वते हाफ़िज़ा कमज़ोर हो जाती है। इसकी तसदीक़ के लिए यह सुबूत काफ़ी है कि बदनज़री करनेवाले हाफ़िज़ को मंज़िल याद नहीं रहती और जो तालिब इल्म हिफ़्ज़ कर रहे हों उनके लिए सबक़ याद करना मुसीबत होता है। इमाम शाफ़ई रह. ने अपने उस्ताद इमाम वकीअ रह. से क़ुव्वते हाफ़िज़ा में कमी की शिकायत की तो उन्होंने गुनाहों से बचने की तलक़ीन की। इमाम शाफ़ई रह. ने इस गुफ़्तगू को शेर का जामा पहनाते हुए फ़रमाया :

شکوت الی وکیع سوء حفظی   فاوصانی الی ترک المعاصی
فان العلم نور من الٰہی   ونور اللّٰہ لا یعطی لعاصی

"मैंने इमाम वकीअ रह. से अपने हाफ़िज़े की कमी की शिकायत की। उन्होंने वसीयत की कि ऐ तालिब इल्म! गुनाहों से बच जाओ क्योंकि इल्म अल्लाह तआला का नूर है और अल्लाह तआला का नूर किसी गुनाहगार को अता नही किया जाता।"

कॉलेज, युनिवर्सिटियों और मदरसों के पढ़नेवालों के लिए इसमें इबरत का सबक़ मौजूद है।

बदनज़री ज़िल्लत व ख़्वारी का सबब है

शेख़ वास्ती रह. फ़रमाया करते थे कि जब अल्लाह तआला किसी बंदे की ज़िल्लत व ख़्वारी चाहता है तो उसे ख़ूबसूरत चेहरे देखने की आदत में मुब्तला कर देते हैं। इससे मालूम हुआ कि बदनज़री ज़िल्लत व ख़ारी का बुनियादी सबब बनती है। जो ख़ुशनसीब लोग अपनी निगाहों को पस्त रखते हैं वे बड़ी-बड़ी आफ़तों और मुसीबतों से बचे रहते हैं। बक़ौल मीर तक़ी—

इस आशिक़ी में इज़्ज़ते सादात भी गई

मिर्ज़ा ग़ालिब कहते हैं—

इश्क़ ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया
वरना हम भी आदमी थे काम के

बदनज़री से बरकत ख़त्म हो जाती है

बदनज़री के बदअसरात में से एक यह भी है कि इनसान की ज़िन्दगी में से रिज़्क़ में से और वक़्त में से बरकत उठा ली जाती है। छोटे-छोटे काम बड़े-बड़े मसअले बन जाते हैं। जिस काम की इनसान कोशिश करे वह अधूरा रह जाता है। ज़ाहिर में लगता है कि काम हो जाएगा मगर ऐन वक़्त पर होते-होते रह जाता है और परेशानी व पशेमानी का सबब बनता है। लोग समझते हैं कि किसी ने कुछ कर दिया है। हालाँकि वह अपनी नफ़्स की ख़बासत की वजह से मुसीबत में मुब्तिला होते है अपने ज़बान से इक़रार करते हैं कि एक वक़्त था कि मिट्टी को हाथ लगाते थे तो सोना बन जाती थी। अब सोने को हाथ लगाओ तो वह भी मिट्टी बन जाता है। मालूम हुआ कि बदनज़री की वजह से इनसान की ज़िन्दगी से बरकत उठ जाती है।

बदनज़री करनेवाले से शैतान पुरउम्मीद रहता है

एक बुजुर्ग की शैतान से मुलाक़ात हुई। उन्होंने शैतान लईन से पूछा कि ऐसे नुक़सानदेह अमल की निशानदेही करो जिसकी वजह से इनसान आसानी से तुम्हारे जाल में फंस जाता है। उस मरदूद ने जवाब दिया कि ग़ैर-महरम की तरफ़ शहवत की नज़र करना ऐसा काम है कि मैं उस बंदे से उम्मीद रखता हूँ कि कभी-न-कभी उसको गुनाह में फंसाकर अपने जाल में फंसा लूँगा। जो लोग निगाहें नीची रखते हैं मेरे बहुत से दांव उन पर कारगर साबित नहीं होते। मैंने चारों सिमतों से औलादे आदम को बहकाने की क़सम उठाई है। नीचे की सिम्त महफ़ूज सिम्त है। जिसने निगाहें झुकाएँ रखीं उसने मुझे नाउम्मीद रखा।

बदनज़री से नेकी बरबाद गुनाह लाज़िम

ग़ैर-महरम की तरफ़ ललचाई नज़रों से देखनेवाला आमतौर पर जल्दी या देर से इश्क़े मजाज़ी (मख़्लूक़ के इश्क) में गिरफ़्तार हो जाता है। वह मख़्लूक़ को अपना महबूब बना लेता है। बक़ौल एक शख़्स—

तू मेरा दीन ईमान संजनाँ

ऐ महबूब तू ही मेरा दीन और ईमान है।

यह अमल शिर्के ख़ुफ़ी कहलाता है। जबकि शिर्क ऐसा गुनाह है जो किए हुए अमलों के ज़ाए होने का सबब बनता है। इसको कहते हैं कि नेकी बरबाद गुनाह लाज़िम।

बदनज़री से अल्लाह तआला की ग़ैरत भड़कती है

नबी (सल्ल.) का इर्शाद है—

اَنَا غَيُوْرٌ وَاللّٰهُ اَغْيَرُ مِنِّيْ وَمِنْ غَيْرَتِهٖ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ

मैं ग़य्यूर हूँ और अल्लाह तआला मुझसे ज़्यादा ग़य्यूर हैं। ग़ैरत ही की वजह से अल्लाह तआला ने ज़ाहिर व बातिन फ़वाहिश (बेहयाई) को हराम कर दिया है।

बदनज़री फ़हश कामों की जड़ है। जो इसको करता है अल्लाह जल्लेशानुहू को ग़ैरत आती है। अपने दरबारे आली से उसको मलऊन व मरदूद कर देते हैं। बदनज़री करनेवाले को अपनी रहमत से दूर कर देते हैं। जो लोग नेक बनकर ज़िन्दगी गुज़ारना चाहते हैं वह बदनज़री से बचें ताकि अल्लाह की रहमत से क़रीब हों।

बदनज़री करनेवाला मलऊन होता है

हदीस पाक में है—

لَعَنَ اللّٰهُ النَّاظِرَ وَالْمَنْظُوْرُ اِلَيْهِ (بيهقى مشكوة ٢٠٠)

"अल्लाह तआला लानत बरसाए देखनेवाले पर और देखने का मौक़ा देने वाली पर।"

जो लड़कियाँ बन संवरकर बेपर्दा गली बाज़ारों में घूमती-फिरती हैं और जो लोग उनकी तरफ़ ललचाई हुई नज़रों से देखते हैं वे दोनों अल्लाह तआला की लानत के हक़दार बनते हैं। यह कितना बड़ा नुक़सान है कि बदनज़री करनेवाला गुनाह करने के दौरान इनसान अल्लाह तआला की रहमत से दूर होता है और लानतें बरसने का सबब बनता है। बदनज़री वाले गुनाह से तौबा करने में देर नहीं करनी चाहिए। ऐसा न हो कि इधर मौत आए और उधर रहमतों की बजाए लानतें बरस रही हों।

خسر الدنيا والآخرۃ ذالك هو الخسران المبين

यह दुनिया व आख़िरत का ख़सारा है और वाज़ेह ख़सारा है।

बदनज़री को लोग हल्का समझते हैं

बदनज़री अगरचे बड़ा गुनाह है मगर अक्सर लोग इसको हल्का समझते हैं। इसलिए बेधड़क करते हैं। यह गुनाह अव्वल जवानी में शहवत के ग़लबे की वजह से किया जाता है। फिर ऐसा मर्ज़ और रोग लग जाता है कि क़ब्र के क़रीब पहुँचने तक

नहीं जाता। लिहाज़ा यह गुनाह हल्का नहीं है बल्कि यह बड़ी मुसीबतों में से एक है।

बदनज़री से बदमाशी तक

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं :

हवादिस की इब्तिदा नज़र से होती है जैसा कि आग और शोलों की इब्तिदा एक चिंगारी से होती है। इसलिए शर्मगाह की हिफ़ाज़त के लिए नज़र की हिफ़ाज़त ज़रूरी है।" (अल्जवाब काफ़ी)

जो लोग बदनज़री करते हैं वही बदमाशी करते हैं। जो लोग अपनी नज़र को आज़ाद छोड़ देते हैं उनकी शर्मगाह बेक़ाबू हो जाती है। फिर इनसान को फ़हश काम करने पर मजबूर कर देती है बस मालूम हुआ कि आँख इब्तिदा करती है और शर्मगाह इंतिहा करती है।

बदनज़री से जिस्म में बदबू

हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० फ़रमाते हैं:

"यह तो बहुत मुजर्रब (आज़माई हुई) चीज़ है कि बदनज़री से कपड़ों में ताफ़्फ़ुन यानी बदबू पैदा हो जाती है। (आपबीती)

बदनज़री कितना मुहलिक मर्ज़ है कि इसका असर फ़ौरी तौर पर ज़ाहिर होता है यहाँ तक कि जिस्म और कपड़ों से अजीब क़िस्म की मुहलिक बू आने लगती है। इसके मुक़ाबले में जो लोग अपनी निगाहों को पाकीज़ा बना लेते हैं और पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उनके ज़िस्मों से ख़ुशबू आती है। हदीस पाक से भी इस मज़मून का सुबूत मिलता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िस्मे अत्हर से इतनी ख़ुशबू आती थी कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम महसूस कर लेते थे कि नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम किस रास्ते से गुज़रे हैं।

एक रिवायत में आया है कि उम्मे सलीम रज़ियल्लाहु अन्हा बच्चों के ज़रिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसीने के क़तरे शीशी में जमा करवा लेती थीं। फिर जब उसको ख़ुशबू में मिलाती थीं तो ख़ुशबू की ख़ुशबू में इज़ाफ़ा हो जाता था।

यही बात है सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु में देखी गई, सैय्यदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लहु अन्हु फ़रमाया करते थे।

كان ريح أبي بكر أطيب من ريح المسك

अबू-बक्र की ख़ुशबू मश्क की ख़ुशबू से ज़्यादा अच्छी थी।

इससे मालूम हुआ कि इफ़्फ़त व पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारने वालों के जिस्म में ख़ुशबू पैदा हो जाती है जबकि बदनिगाही और बेहयाई करनेवालों के जिस्म से बदबू आती है यूरोप व अमेरिका का सफ़र करनेवाले इसका मुशाहिदा करते है कि अंग्रेज़ देखने में गोरे चिट्टे होते हैं, कपड़े साफ़-सुथरे होते हैं मगर जहाज़ में साथ वाली सीट पर बैठ जाएँ तो अजीब सी बदबू उनके जिस्म से आ रही होती है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया है :

إنما المشركون نجس

बेशक मुश्रिकीन नजिस होते हैं।

सारी दुनिया जानती है कि गंदगी में बदबू होती है। और ज़्यादा कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है।

बदनज़री की नक़द सज़ा

बदनज़री की एक क़िस्म यह है कि किसी के मकान में सुराख़, खिड़की या दरवाज़े से देखा जाए। हदीस पाक में इस पर सख़्त वईद आई है। यहाँ तक कि घरवाले को इख़्तियार दिया गया है कि झांकनेवाले की आँख फ़ोड़ दे।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

ان امرأة اطلع عليك بغير اذن فخذ فته بحصاة ففقأت عينيه ما كان
عليك من جناح (ابن كثير ٣-٢٨)

अगर कोई बग़ैर इजाज़त तुम्हारे घर में झांके तो तुम उसको कंकरी उठाकर मारो जिससे उसकी आँख फूट जाए तो तुमपर कोई गुनाह नहीं।

बदनज़री की वजह से क़ुरआन भूल गया

इमाम जौज़ी रह० अपनी किताब "तलबीस-इब्लीस" में लिखते हैं कि अबूअब्दुल्लाह इब्ने अजला कहते हैं कि मैं खड़ा हुआ एक ख़ूबसूरत ईसाई लड़के को देख रहा था कि इतने में अबू अब्दुल्लाह बलख़ी मेरे सामने से गुज़रे। पूछा कैसे खड़े हो? मैंने कहा, ऐ चचा! आप इस ख़ूबसूरत चेहरे को देखते हैं, इसे किस तरह दोज़ख़ की आग में अज़ाब दिया जाएगा। उन्होंने दोनों हाथ मेरे कंधों की बीच मारे और कहा, बदनज़री का नतीजा तुम्हें मिलेगा अगरचे एक मुद्दत गुज़र जाए। मैंने चालीस साल बाद इस गुनाह की नहूसत देखी कि क़ुरआन मजीद मुझको याद न रहा।

अबुल-अदयान कहते हैं कि मैं अपने उस्ताद अबूबक्र दक़्क़ाक़ के साथ जा रहा था। एक नवउम्र लड़के के चेहरे पर मेरी ललचाई हुई नज़र पड़ी तो शेख़ ने फ़ौरन भांप लिया। फ़रमाया कि तुम इसका नतीजा पाओगे। मैं कुछ अरसे के बाद क़ुरआन पाक भूल गया।

बदनज़री और तस्वीरें

बदनज़री की एक क़िस्म वह नंगी तस्वीरें देखना है जो अख़बारों और किताबों की ज़ीनत बनती हैं या जिन्सी रिसालों के टाइटल पर छपती हैं। फ़िल्मों और ड्रामों में काम करने वाली औरतों की, तस्वीरें देखना, टीवी एनाउन्सर को ख़बरें सुनने के बहाने देखना, रास्ता चलते सड़क के किनारों पर लगे हुए साइन

बोर्ड पर बनी तस्वीर देखना या गर्ल-फ्रैन्ड या ब्वाए फ्रैन्ड की तस्वीर छिपाकर रखना और तन्हाई में घंटों उन्हें ललचाई हुई नज़रों से देखना या इंटरनेट पर पेशेवर लड़कियों की नंगी तस्वीर देखना या बेहयाई वाली सीडी पर तस्वीर देखना सबका सब हराम है। कुछ लोग शादी ब्याह के मौक़े पर मिली जुली महफ़िलों की तस्वीरें अपने पास रखते हैं और देखते दिखाते हैं। तस्वीर देखना ज़िन्दा आदमी को देखने से ज़्यादा नुक़सानदेह हैं। रास्ता चलते हुए ग़ैर-महरम की एक-एक चीज़ को इतना बारीकी के साथ नहीं देखा जा सकता जितना तस्वीर के ज़रिए देखना मुमकिन है। इससे ज़्यादा एहतियात रखने की ज़रूरत है। किसी बदहाल शायर ने तस्वीर की तारीफ़ करते हुए कहा है—

तेरी तस्वीर में एक बात तुझसे भी निराली है
के जितना चाहो बोसे लो न झिड़की है न गाली है

बदनज़री और हुस्न पसन्दी का धोका

कुछ जाहिल लोग कहते हैं कि हम ख़ूबसूरत शक्लों को देखकर अल्लाह तआला की अज़मत का मुशाहिदा करते हैं। यह सिर्फ़ धोका और शैतानी दाँव है। अल्लाह तआला ने कितनी जाएज़ और हलाल चीज़ें ऐसी बनायीं है जो उसकी कुदरत का नमूना है।। फूलों के तरह-तरह के रंगो के डिज़ाईन देखें, उसकी नज़ाकत पर ग़ौर करें, उसकी ख़ुशबू सूंघकर देखें कि कैसे दिमाग़ मौत्तर कर देती हैं। फलों की बनावट और उनकी शीरनी पर ग़ौर करें।

أُنْظُرُوْا إِلٰى ثَمَرِهٖ إِذَا أَثْمَرَ

देखो उसके फलों की तरफ़ जब फल ले आएँ।

दरियाओं, झरनों, हरे-भरे मैदानों को देखें। ज़मीन की वुसअतें, आसमान की बुलन्दियाँ इनसान को अपने ऊपर ग़ौर करने की दावत देती हैं। रबे करीम इरशाद फ़रमाते हैं :

أَفَلَا يَنْظُرُوْنَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ـ وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ـ وَإِلٰى

الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ. وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ

क्या नहीं देखते ऊँट की तरफ़ कि कैसे पैदा किया गया और आसमान की तरफ़ कि कैसे बुलन्द किया गया और पहाड़ों की तरफ़ कैसे गाड़े गए और ज़मीन की तरफ़ कि कैसे फैलाई गई।

ग़ौर करना है तो सूरज, चाँद, सितारों के हुस्न व जमाल को देखें। क्या हवा में उड़ते ख़ूबसूरत परिन्दे और पानी में तैरती रंग-बिरंगी मछलियाँ ग़ौर करने के लिए कम हैं। सिर्फ़ इनसानों के चेहरे ही देखने के लिए रह गए? ये सब बेकार बहाने और बद से बदतर गुनाह की तरह हैं।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी रह० के सामने एक मर्तबा ऐसे ही किसी दिल के हाथों मजबूर आदमी ने यही उज़्र किया कि हज़रत हम तो ख़ूबसूरत चेहरों को इसलिए देखते है कि अल्लाह तआला की कारीगरी और क़ुदरत ज़ाहिर होती है। आपने बड़ा इबरतनाक़ जवाब दिया। फ़रमाया, फिर तू अपनी वालिदा की शर्मगाह को देखा करो कि किस तरह छोटे से रास्ते से तुम्हारे जैसे आदमी को पैदा किया।

बदनज़री की नहूसत

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में एक आदमी आया जिसकी निगाह ने रास्ते में ख़ता की थी। आपने उसकी आँखों को देखते ही पहचान लिया और फ़रमाया :

ما بال اقوام يترشح الزنا من اعينهم

इस क़ौम को क्या हो गया, बेधड़क हमारे पास चले आते हैं हालाँकि उनकी आँखों से ज़िना टपकता है।

वह आदमी हैरान रह गया और पूछने लगा कि क्या अभी 'वही' का सिलसिला बाक़ी है? आपने फ़रमाया, नहीं यह तो मोमिन की फ़िरासत (समझदारी) है।

اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ

मोमिन की फ़िरासत से डरो क्योंकि वह अल्लाह के नूर से देखता है।

अहले कश्फ़ ने लिखा है कि बदनज़री से आँखो में ऐसी ज़ुलमत पैदा हो जाती है कि जिसको बसीरत वाला (समझदार) आदमी पहचान लेता है। जबकि अफ़ीफ़ और मुत्तक़ी आदमी की आँखों में नूर होता है।

बदनज़री का इबरतनाक अंजाम

हज़रतशेखुल हदीस रह० फ़रमाते हैं, एक आदमी को जब मरने का वक़्त हुआ तो लोग उसे कलिमे की तलक़ीन करने लगे तो वह जवाब में कहने लगे कि मेरी ज़बान हरकत नहीं करती। पूछा क्या वजह है कहने लगा कि एक औरत मुझसे तौलिया खरीदने आई थी मुझे अच्छी लगी मैं ललचाई नज़रों से उसे देखता रहा। (आपबीती जि० 6 स० 420)

इब्ने जौज़ी रह० ने लिखा है कि मिस्र की जामा मस्जिद का मौज़्ज़िन मीनारे पर अज़ान देने के लिए चढ़ा। हमसाए की छत पर नज़र पड़ी तो एक ख़ूबसूरत ईसाई लड़की नज़र आई। सोचा कि नए किराएदार मालूम होते हैं। अज़ान के बाद तार्रूफ़ करूँगा। अज़ान देकर पड़ौसी के दरवाज़े पर पहुँचा। दस्तक देने पर लड़की के वालिद से मुलाक़ात हुई। बातचीत के दौरान पत्ता चला कि लड़की कुँवारी है। मौज़्ज़िन ने कहा कि मैं इससे शादी करना चाहता हूँ। लड़की के वालिद ने कहा कि हमारा मज़हब क़बूल कर लो। हम शादी कर देंगे। उस मौज़्ज़िन के दिल पर शहवत का ऐसा भूत सवार था कि उसने हाँ कर दी। लड़की के वालिद ने कहा आप ऊपर छत पर आएँ। बैठकर तफ़्सील से बात करते हैं। मौज़्ज़िन सीढ़ियाँ चढ़ने लगा कि दर्मियान में पाँव फिसला तो यह गर्दन के बल गिरा और जान निकल गई। बक़ौल शायर—

न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम
न इधर के रहे न उधर के रहे

बदनज़री पर सज़ा का तय न होना

इर्शाद बारी तआला है :

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ

जानता है आँखों की ख़्यानत को और जो दिलों में छिपाते हैं।

इस आयत में बदनज़री के गुनाह होने का तज़्किरा तो फ़रमाया गया मगर कोई मुअय्यन व मुक़र्रर सज़ा बयान नहीं की गई। इस आयत में राज़ यह है कि लोग दो तरह के होते हैं। एक बेहिस लोग लातों के भूत होते हैं। जो बातों से नहीं बल्कि जूतों से ही मानते हैं। उनको धमकी दी गई है कि हम आँखों की ख़्यानत को जानते हैं। अगर तुम लोग बाज़ न आए तो ख़ूब सज़ा देंगे—

चोरियाँ आँखों की और सीनों के राज़
जानता है सबको तू ऐ बे नियाज़

दूसरे हस्सास लोग होते हैं उनको पता चल जाए कि हमारे आक़ा को हमारी करतूत की खबर हो गई है तो मारे शर्म के गड़ जाते हैं। तो इस आयत में उनको शर्म दिला दी गई। उनके लिए इतना ही काफ़ी था। बदनज़री करने पर हर आदमी को उसकी तबियत के मुताबिक़ सज़ा दी जाएगी। बक़ौल किसी के—

जैसी रूह वैसे फ़रिश्ते

जितना बेहया उतनी ज़्यादा सज़ा।

बदनज़री का असर दिल पर

हज़रत अक़्दस थानवी रह० फ़रमाते हैं कि दिल का गुनाह नज़रबाज़ी से वजूद में आता है। बहुत-से लोग ग़ैर-महरम औरतों और नौउम्र लड़कों को ललचाई हुई नज़रों से देखते हैं तो दिल में

उनके नक़्श व नैन की छाप लग जाती है। फिर ये अपनी तन्हाईयों में सोच और ख़्याल के ज़रिए उनसे शहवत पूरी करने के मज़े लेते हैं। यह दिल का गुनाह आँखों के गुनाह से भी शदीद है। फ़ुक़्हा ने लिखा है कि अगर कोई आदमी अपनी बीवी से हमबिस्तरी करे मगर तसव्वुर में किसी दूसरी औरत का ख़्याल लाए तो उसे ज़िना करने का गुनाह होगा।

बदनज़री और बेनूर चेहरा

बदनज़री के असरात में से एक यह भी है कि चेहरे को बेनूर कर दिया जाता है। हदीस पाक में आया है :

عن ابی اما مة عن النبی ﷺ قال لتغضن ابصارکم او لتحفظن فروجکم او لیکسفن الله وجوھکم (رواہ الطبرانی الترغیب الترھیب۔۳۔۳۶)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि या तुम अपनी निगाह नीचे रखोगे और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करोग या फिर अल्लाह तुम्हारी सूरतों को बदल देगा।

शक्ल बदलने की इब्तिदा यही कि चेहरे को बेनूर कर दिया जाए, ख़ूबसूरती की बावजूद चेहरा बेरौनक़ हो।

बदनज़री से परहेज़ पर ईनाम

जो आदमी अपनी निगाहों की हिफ़ाज़त करे उसे आख़िरत में दो ईनाम मिलेंगे। एक तो हर निगाह की हिफ़ाज़त पर उसे अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा। दूसरा ईनाम यह कि ऐसी आँखें क़यामत के दिन रोने से महफ़ूज़ रहेंगी। हदीस पाक में है

روی عن ابی ھریرۃ رضی الله عنه قال قال رسول الله ﷺ کل عین باکیة یوم القیامة الا عین غضت عن محارم الله و عین یھدت فی

سبيل الله وعين خرج منها مثل رأس الذباب من خشية الله (الترغيب والترهيب ۳۳.۴)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हर आँखे क़यामत के दिन रोएगी सिवाए उस आँख के जो ख़ुदा की हराम की हुई चीज़ों को देखने से बंद रहे। और वह आँख जो ख़ुदा की राह में जागती रहे और वह आँख जो ख़ुदा के ख़ौफ़ से रोए गो उसमें से मक्खी के सर के बराबर आँसू निकले।

बदनज़री में हिम्मत भर एहतियात

बदनज़री वाले गुनाह से बचने के लिए हर मुमकिन एहतियात करनी चाहिए। मर्दों के लिए सिर्फ़ ग़ैर-महरम औरतों को देखने की बात ही नहीं। अगर महरम औरत को देखने से शहवत उभरे तो उसकी तरफ़ भी न देखें। नवउम्र लड़कों की तरफ़ भी न दें बल्कि अगर किसी मर्द के चेहरे को देखकर गुनाह का ख़्याल पैदा हो तो उसके चेहरे को देखने से भी परहेज़ करे। यही मामला औरतों का है कि उनके लिए सिर्फ़ ग़ैर-मर्द को देखना ही मना नहीं बल्कि अगर किसी लड़की का चेहरा देखकर दिल में छिपी शहवत बेदार होती हो तो उसकी तरफ़ भी न देखो।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु मना फ़रमाया करते थे कि आदमी किसी नवउम्र लड़के को नज़र जमाकर देखे।

(तलबीस इब्लीस 346)

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि तुम नवउम्र लड़कों के साथ न बैठो क्योंकि उनका फ़ित्न कुँवारी लड़कियों के फ़ितने से भी ज़्यादा है। इसमें हिकमत यह है कि ग़ैर लड़की के साथ बैठने में तो कई रुकावटें नहीं होती मगर नौउम्र लड़के के साथ बैठने में कोई रुकावट नहीं होती लिहाज़ा फ़ितने का अंदेशा ज़्यादा है। इसी पर क़यास करना चाहिए कि औरत के लिए मर्द तक पहुँचने

में कई रुकावटें होती हैं मगर एक औरत के लिए दूसरी औरत के पास बैठना तो आसान होता है। लिहाज़ा अगर औरत दिल मे खतरा महसूस करे कि फ़लाँ औरत के पास बैठने में गुनाह में मुलव्विस होने का डर है तो उससे इसी तरह दूर रहे जैसे मर्द से दूर रहती है। यहाँ तक कि उसके चेहरे की तरफ़ भी नज़र न उठाए। ज़्यादा बातचीत से भी परहेज़ करे—

क़दम क़दम पे यहाँ एहितयात लाज़िम है
के मुन्तज़िर है ये दुनिया किसी बहाने की

बदनज़री से हाथी भी फिसल जाता है

जिस आदमी को बदनज़री की आदत पड़ जाए वह शर्मगाह की हिफ़ाज़त कभी नहीं कर सकता। शैतान अजीब अंदाज़ से धोका देता है कि तुम सिर्फ़ देखते हो करते तो कुछ नहीं हालाँकि यही देखना ही तो करने की शुरूआत है। ज़ाहिर में इनसान जितना भी जमाव वाला (हाथी) हो अगर बदनज़री से नहीं बचेगा तो एक-न-एक दिन ज़रूर फिसल जाएगा—

अब जिसके जी में आए वही पाए रौशनी
हमने तो दिल जलाकर सरेआम रख दिया

बदनज़री के तीन बड़े नुक़सानात

बदनज़री से इनसान के अन्दर नफ़्सानी ख़्वाहिशात का तूफ़ान उठ खड़ा होता हैं और इन्सान इस सैलाब की रौ में बह जाता है। इसमें तीन बड़े नुक़सानात वजूद में आते हैं :

1. बदनज़री से इन्सान के दिल में ख़्याली महबूब का तसव्वुर पैदा हो जाता है। हसीन चेहरे इसके दिल व दिमाग़ पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं। वह आदमी जानता है कि मैं इन हसीन शक्लों तक रसाई हासिल नहीं कर सकता। मगर इसके बावजूद तन्हाईयों में उनके तसव्वुर से लज़्ज़त लेता है। कभी-कभी तो घंटो उनके साथ ख़्याल की दुनिया में बातें करता है। मामला इस हद तक बढ़ जाता है—

तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता

बदनज़री के साथ ही शैतान इन्सान के दिल व दिमाग़ पर सवार हो जाता है और उस आदमी से शैतानी हरकतें करवाने में जल्दी करता है। जिस तरह वीरान और ख़ाली जगह पर तुन्द और तेज़ आँधी अपने असरात छोड़ती है उसी तरह शैतान भी इस आदमी के दिल पर अपने असरात छोड़ता हैं ताकि उसकी देखी हुई सूरत को ख़ूब बना-संवार कर उसके सामने पेश करे और उसके सामने एक ख़ूबसूरत बुत बना दे। ऐसे आदमी का दिल रात दिन उसी बुत की पूजा में लगा रहता है। वह बेकार आरज़ूओं और तमन्नाओं में उलझा रहता है। इसी का नाम शहवत परस्ती, ख़्वाहिशपरस्ती, नफ़्सपरस्ती बल्कि बुतपरस्ती है। यह शिर्के ख़फ़ी है। इरशाद बारी तआला है :

وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

और उसका कहना न मान जिसका दिल हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वह अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करता है और उसका काम हद से बढ़ गया है। (केहफ 25)

इन ख़्याली माबूदों से जान छुड़ाए बग़ैर न तो ईमान की हलावत नीसब होती है न कुर्बे इलाही की हवा लगती है। बक़ौल शायर—

बुतों को तोड़ तख़य्युल के हों के पत्थर के

2. बदनज़री का दूसरा नुक़सान यह है कि इन्सान का दिल व दिमाग़ बहुत-सी चीज़ों में बट जाता है। यहाँ तक कि वह अपने मसालह और मुनाफ़े को भूल जाता है। घर में हसीन व जमील नेकोकार और वफ़ादार बीवी मौजूद होती है मगर उस आदमी का दिल बीवी की तरफ़ माइल ही नहीं होता।

बीवी अच्छी नहीं लगती। ज़रा-ज़रा सी बात पर उससे उलझता है। घर के माहौल बेसुकूनी पैदा हो जाती है। जब कि यही आदमी बेपर्दा घूमने वाली औरतों को इस तरह ललचाई नज़रों से देखता है जिस तरह शिकारी कत्ता अपने शिकार को देखता है। कभी-कभी तो इस आदमी का दिल काम-काज में भी नहीं लगता। अगर पढ़नेवाले हैं तो पढ़ाई के सिवा हर चीज़ अच्छी लगती है। अगर ताजिर है तो कारोबार से दिल उकता जाता है, कई घंटे सोता है मगर पुरसुकून नींद से महरुम रहता है। देखने वाले समझते हैं कि सोया हुआ है जबकि व ख़्याली महबूब के तसव्वुर में खोया हुआ होता है।

3. बदनज़री का तीसरा बड़ा नुक़सान यह है कि दिल हक़ व बातिल और सुन्नत और बिदअत में तमीज़ करने से आरी हो जाता हैं कुव्वते बसीरत छिन जाती हैं। दीन के उलूम व मआरिफ़ से महरुमी होने लगती है। गुनाह का काम उसको गुनाह नज़र नहीं आता। फिर ऐसे हालात में दीन के बारे में शैतान शक व शुब्ह में मुब्तला कर देता है। नेक लोगों से बदगुमानियाँ पैदा होती हैं। यहाँ तक कि उसे दीनी शक्ल व सूरत वाले लोगों से ही नफ़रत हो जाती है। वह बातिल पर होते हुए भी अपने आपको हक़पर समझता है और आखिर ईमान से महरुम होकर दुनिया से जहन्नम रसीद हो जाता है।

बदनज़री के बारे में बुज़ुर्गों के क़ौल

1. हदीस-पाक में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

لَعَنَ اللّٰهُ النَّاظِرَ وَالْمَنْظُوْرَ اِلَيْهِ (بیہقی مشکوۃ ۲۷۰)

(अल्लाह तआला लानत करते हैं बदनज़री करनेवाले मर्द और बदनज़री करनेवाली औरत पर।

2. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को नसीहत फ़रमाई कि शेर और अज़दहे के पीछे चले जाना मगर किसी औरत के पीछे हर्गिज़ न जाना। मक़सद यह है कि शेर और अज़दहा पलट आया तो मौत के मुँह में चले जाओगे। अगर औरत पलट आई तो जहन्नम के मुँह में चले जाओगे।
3. हज़रत याह्या बिन ज़करिय अलैहिस्सलाम से लोगों ने पूछा कि ज़िना की इब्तिदा कहाँ से होती है? फ़रमाया, आँखों से।
4. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अगर दो बोसीदा हड्डियाँ भी एक जगह अकेले में हों तो एक-दूसरे का इरादा करेंगे। (बोसीदा हड्डियों से मुराद बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरत है।)
5. हज़रत सईद बिन मुसैय्यब रह० ने फ़रमाया कि जब तुम किसी को देखो कि वह नवउम्र लड़के की तरफ़ नज़र जमाकर देख रहा है तो समझ लो कि दाल में कुछ काला है।
6. फ़तेह मूसली रह० फ़रमाया करते थे कि मैं तीस मशाइख़ से मिला हूँ जो अब्दाल में शुमार किए जाते थे, हर एक ने रुख़्सत के वक़्त वसीयत की नौउम्रों के साथ रहने से बचते रहना।
7. इब्ने ज़ाहिर मुक़द्दसी रह. फ़रमाया करते थे कि जिस आदमी की शहवत किसी मर्द को देखने से भड़के तो उसके लिए मर्द को देखना हराम है।
8. इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाया करते थे कि मुरीद पर फाड़ खानेवाला शेर झपटे तो मैं इतना नहीं डरता जितना नवउम्र लड़कों की हमनशीनी से डरता हूँ।
9. हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी रह० फ़रमाया करते थे कि बदनज़री कुव्वते हाफ़िज़ा के लिए ज़हर क़ातिल की तरह है।
10. हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह. अपने मक्तूबात में लिखते हैं कि जिस आदमी की नज़र क़ाबू में नहीं उसका दिल क़ाबू में

नहीं और जिसका दिल क़ाबू में नहीं उसकी शर्मगाह क़ाबू में नहीं रहेगी।

बदनज़री का इलाज

मौजूदा दौर में इंटरनेट, टीवी और वीसीआर की वजह से घर-घर में फ़िल्में, ड्रामे आम हो गए हैं। नंगेपन और बेहयाई का सैलाब उमड़ आया है। जवान उम्र औरतें बन-ठनकर बेपर्दा गली व बाज़ारों में घूमती फिरती हैं। इश्तेहारीबाज़ी के नाम पर सड़कों के चारों तरफ़ औरतों की अपनी तरफ़ खींचने वाली तस्वीरें लगी रहती हैं। अख़बारों और रिसालों में पुरकशिश तस्वीरें आम सी बात हो गई है। ऐसी हालत में नवजवान तो क्या बूढ़ों के लिए भी नज़र की हिफ़ाज़त एक मुसीबत बन गई है। कोशिश के बावजूद इससे निजात की सूरत नज़र नहीं आती। जिन लोगों के दिलों में हिदायत का नूर मौजूद है वह इस गुनाह के होने पर अन्दर ही अन्दर कुढ़ते रहते हैं। मुरीद लोग अपने शेख़ से बदनज़री का इलाज मालूम करते हैं ताकि इस बीमारी से शिफ़ा नसीब हो। ज़रूरी मालूम होता है कि क़ुरआन व सुन्नत की रोशनी में इस बीमारी से छुटकारा पाने के लिए कुछ तजुरिबेशुदा नुस्ख़े पेश कर दिए जाएं ताकि निगाहें हराम से हटकर हलाल की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाएँ। शहवत की भड़कती आग के शोले ठंडे हों। पाकीज़गी और पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारनी आसान हो जाए।

क़ुरआन मजीद की रोशनी में

बदनज़री से बचने के लिए क़ुरआन मजीद की रोशनी में सात नुस्ख़े इस तरह हैं :

1. इरशाद बारी तआला है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ

(ईमानवालों से कह दीजिए कि अपनी निगाहें नीचे रखें।)

बदनज़री का सबसे बेहतरीन इलाज अपनी निगाहों को पस्त रखना है। बस सालिक को चाहिए कि गली, कूचा, बाज़ार में चलते हुए अपनी निगाहें नीची रखने की आदत बनाए। पैदल चल रहा हो तो सड़क पर नज़र रखे। सवारी पर हो तो निगाहें इतनी उठाए कि दूसरी सवारियाँ और राहगीरों के गुज़रने का पता चलता रहे। किसी के चेहरे की तरफ़ नज़र न उठाए क्योंकि फ़ितने की शुरूआत यही होती है। अगर नज़र ख़ता करे तो इस्तिग़फ़ार पढ़े और फिर निगाहें नीची करे। इस आदत को अपनाने के लिए कोशिश करता रहे यहाँ तक कि ज़िन्दगी का हिस्सा बन जाए। अगर दफ़्तरी काम के सिलसिले में या लेन-देन के सिलसिले में या ख़रीद व फ़रोख़्त के मामले में किसी औरत से बात करनी पड़े तो उसके चेहरे की तरफ़ नज़र न करे। जिस तरह दो नाराज़ बंदे मजबूरी में एक दूसरे से बात करें भी तो एक-दूसरे के चेहरों पर नज़र नहीं डालते, आँखे से आँख नहीं मिलाते, इसी तरह ज़हन में ख़्याल रखे कि ग़ैर-महरम से मेरी अल्लाह तआला के लिए नाराज़गी है। लिहाज़ा उसके चेहरे को नहीं देखना।

2. इरशाद बारी तआला है :

فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَاءِ

(निकाह करो औरतों से जो तुम्हे भली लगती हों।)

जितना जल्दी मुमकिन हो सके दीनदार, फ़रमाँबरदार हुस्न व जमाल वाली लड़की से शादी करे ताकि जिन्सी ज़रूरत पूरी हो सके। जो इन्सान भूखा हो वह चाहे कि मैं नफ़्लें पढ़ लूँ ताकि भूख उतर जाए तो उसको अपना इलाज करवाना चाहिए। भूख का इलाज यह है कि रोटी खाए और अल्लाह तआला से भूख उतरने की दुआ करें। इसी तरह नज़र को पाकीज़ा रखने का तरीक़ा यह है कि शादी कर ले और अल्लाह तआला से पाकीज़ा नज़र हासिल होने की दुआ करें। जब मौक़ा मिल तो अपनी बीवी के चेहरे को मुहब्बत की नज़र से देखे। अल्लाह तआला का

शुक्रअदा करे कि अगर यह नेमत न मिलती तो कितनी मुसीबत होती। जो शौक़िया नज़रें गली कूचों में चलने वाली बेपर्दा औरतों पर डालता है वह अपनी बीवी पर डाले। बीवी को साफ़-सुथरा रहने को कहे, अच्छे कपड़े लाकर दे, जो कुछ दूसरी औरतों के पास है वही सब कुछ बीवी के पास है। दिल में सोचे कि अगर मैं ग़ैर-महरम की तरफ़ देखूँगा तो अल्लाह तआला नाराज़ होंगे और अगर बीवी को देखूँगा तो वह राज़ी होंगे। हदीस पाक में है :

जो आदमी अपनी बीवी को मुस्कराता हुआ देखता है और बीवी खाविन्द को मुस्कराकर देखती है तो अल्लाह तआला उन दोनों को मुस्कराकर देखते हैं। हलाल को जी भरकर देखे ताकि हराम की तरफ़ ख़्याल ही न जाए। जब भी नफ़्स ग़ैर-महरम की तरफ़ देखने की ख़ाहिश करे तसव्वुर में बीवी का चेहरा ले आए गुनाह का ख़्याल दिल से दूर हो जाएगा।

3. इरशाद बारी तआला है :

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَٰئِفٌ مِّنَ الشَّيْطَٰنِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ﴿الاعراف:٢٠١﴾

बेशक जो डरते हैं, जब उन पर शैतानी लश्करों में से कोई घेरे तो वे अल्लाह का ज़िक्र करते हैं। बस उन्हें सूझ आ जाती है।

इस आयते मुबारका से यह राज़ खुलता है कि जब भी शैतान इन्सान पर हमलावर हो और दिल में गुनाह का वसवसा डाले तो ज़िक्र के ज़रिए से अपना बचाव करे। चुनाँचे बाज़ार में से गुज़रते हुए ज़िक्र का एहतिमाम करे। हो सके तो हाथ में तस्बीह रख ले वरना क़ल्बी ज़िक्र तो करता ही रहे। ग़फ़लत गुनाह की बुनियाद हैं ज़िक्र के ज़रिए ग़फ़लत को दूर करे। ज़िक्र का नूर धीरे-धीरे दिल में ऐसा सुरूर पैदा करता है कि ग़ैर की तरफ़ आँख उठाकर देखने को जी ही नहीं चाहता—

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

4. इरशाद बारी तआला है :

أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ﴿١٤﴾ (العلق:١٤)

(क्या जानते नहीं कि अल्लाह देख रहा है?)

सालिक का नफ़्स जब भी ना-महरम की तरफ़ देखने का तक़ाज़ा करे तो फ़ौरन सोचे कि अल्लाह तआला मुझे देख रहे हैं। निगाह क़ाबू में रखनी आसान हो जाएगी। इसकी मिसाल यूँ समझे कि अगर इस औरत का बाप या ख़ाविन्द हमारी तरफ़ देख रहा हो तो क्या हमारी नज़रें इस हाल में इस औरत के चेहरे की तरफ़ उठ सकेंगी। हमें झिझक महसूस होगी कि इस औरत का बाप या शौहर हम से सख़्त नाराज़ होगा। इसी तरह यह सोचना चाहिए कि जब अल्लाह तआला हमें देख रहे हैं और मना फ़रमाया है कि हम ग़ैर-मरहम की तरफ़ नज़र न उठाए। इसके बावजूद अगर हम देखें तो यक़ीनन परवर्दिगार आलम को ज़लाल आएगा। अगर पकड़ कर ली तो हमारा क्या बनेगा?

5. इरशाद बारी तआला है :

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ (العنكبوت:٦٩)

(जो हमारी राह में मुजाहिदा करते हैं हम ज़रूर उसे अपना रास्ता दिखाते हैं।)

मुफ़स्सिरीन किराम ने लिखा है कि शरिअत पर अमल की ख़ातिर नफ़्स के ख़िलाफ़ काम करने को मुजाहिदा कहते हैं। यह हक़ीक़त है कि मुजाहिदे से मुशाहिद नसीब होता है। लिहाज़ा जब भी नफ़्स ग़ैर-महरम की तरफ़ देखने का तक़ाज़ा करे तो अपनी कुव्वते इरादी से उसके ख़िलाफ़ करे। ज़हन में रखे कि इस मुजाहिदे के बदले में मुझे महबूबे हक़ीक़ी का मुशाहदा नसीब होगा। वैसी भी यह मुजाहिदा चंद लम्हों का होता है जबकि मुशाहिदे की लज़्ज़त हमेशा के लिए होगी। याद रखें कि ज़ब्ते

नफ़्स से दिल बहुत जल्दी साफ़ होता है। तस्बीह के दाने इसका मुक़ाबला नहीं कर सकते। हिम्मत हारने से मसअला हल नहीं होता। हिम्मत करने से मसअला हल होगा। बस अपने नफ़्स पर जब्र करे और उसे शरिअत की लगाम डाले ताकि क़यामत के दिन सआदत का हार पहनना नसीब हो।

6. इरशादे बारी तआला है :

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا (النساء:٥٨)

(अल्लाह तआला तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को पहुँचा दो।)

सालिक अपने ज़हन में ख़्याल जमाए कि मेरी आँखें अल्लाह तआला की दी हुई अमानत हैं। मुझे इस अमानत को हुक्मे इलाही के मुताबिक़ इस्तेमाल करना है। अगर इसके ख़िलाफ़ किया तो अमानत में ख़्यानत करे तो दूसरी बार उसको अमानत सुपुर्द नहीं की जाती। ऐसा न हो कि मैं दुनिया में अल्लाह तआला की दी हुई बीनाई को ग़ैर-महरम के देखने में इस्तेमाल करूँ और क़यामत के दिन मुझे बीनाई वापस ही न की जाए। अगर उस दिन अंधा खड़ा कर दिया गया तो क्या बनेगा।

क़ुरआन मजीद से साबित है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन कुछ लोगों को अंधा खड़ा करेंगे और वे पूछेंगे कि :

رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا

(ऐ रब मुझे क्यों अंधा खड़ा किया हालाँकि मैं तो बीना था।)

यह बात भी ग़ौर करने की है कि हम दुनिया में ऐसे वक़्त पैदा हुए हैं कि अल्लाह तआला के महबूब की ज़ियारत नहीं कर सके। अगर क़यामत के दिन अंधे खड़े किए गए तो उस दिन भी महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार नहीं कर सकेंगे। अल्लाह तआला इस दोहरी महरूमी से हम सबको बचाए। लिहाज़ा निगाहों का ठीक इस्तेमाल करना ज़रूरी है ताकि

क़यामत के दिन यह अमानत दोबारा नसीब हो जाए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

इस मज़मून को ज़हन में रखकर सोचे कि अगर मैंने दुनिया की हसीनों को गंदी नज़र से देखा तो कहीं अल्लाह तआला क़यामत के दिन अपने हुस्न व जमाल का मुशाहिदा करने से महरूम न कर दे।

7. इरशाद बारी तआला है :

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَن تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ

(الحديد)

(क्या ईमान वालों पर अभी वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद से डर जाएँ और जो उतरा उन पर सच्चा दीन।)

सालिक का नफ़्स जब भी बदनज़री करना चाहे तो फ़ौरन दिल में इस आयत का मफ़हूम सोचे कि क्या ईमानवालों के लिए अभी वक़्त आया कि उनके दिल डर जाए। जब-जब नज़र उठाने को जी चाहे तब-तब अपने आपको मुख़ातिब करके कहे, क्या ईमान वालों के लिए अभी अल्लाह तआला से डर जाने का वक़्त नहीं आया। हर नज़र पर यह मज़मून सोचता रहे और अल्लाह तआला से मदद माँगता रहे। अल्लाह तआला अपना डर अता फ़रमाएँगे और बदनज़री से सच्ची तौबा नसीब हो जाएगी।

हदीस पाक की रोशनी में

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने नज़र की हिफ़ाज़त के बारे में बहुत ताकीद फ़रमाई। इन्सानी चेहरे की कोशिश तो अपनी जगह होती है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने तो जानवरों की शर्मगाह देखने से भी मना फ़रमाया। नज़र को शैतान के ज़हर आलूदर तीरों में से एक तीर कहा। हदीस पाक में ग़ौर करने से दो अहम नुस्ख़े बदनज़री के इलाज के बारे में नज़र आते हैं जो इस तरह हैं:

1. नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर किसी ग़ैर-महरम पर अचानक नज़र पड़ जाए और उसका हुस्न व जमाल दिल में उतर जाए तो चाहिए कि घर आकर अपनी बीवी से हमबिस्तरी करे। जो कुछ उस ग़ैर-महरम के पास है वही सब कुछ बीवी के पास है। इससे मालूम हुआ कि हलाल तरीक़े पर अपनी ज़रूरतों को पूरा कर लेने से हराम से बचना आसान हो जाता है।
2. एक नौजवान नबी अलैहिस्सलातु वस्सलम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। अर्ज़ करने लगा कि ऐ अल्लाह के नबी! मुझे ज़िना की इजाज़त दीजिए। नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने डाँट डपट करने के बजाए प्यार से फ़रमाया कि बताओ, क्या तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारी वालिदा से ज़िना करे? उसने कहा, नहीं, फिर पूछा कि यह बताओ कि तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारी बीवी से ज़िना करे? उसने कहा, नहीं। फिर पूछा क्या तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारी बहन से ज़िना करे? उसने कहा, नहीं। फिर पूछा क्या तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारी बेटी से ज़िना करे? उसने कहा, नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाा कि जिससे भी तुम ज़िना करोगे वह किसी-न-किसी की माँ होगी, बीवी होगी, बहन होगी या बेटी होगी। जैसे तुम्हें पसन्द नहीं कि कोई तुम्हारी महरम औरतों से ज़िना करे इसी तरह दूसरे लोग भी पसन्द नहीं करते कि कोई उनकी महरम औरतों से ज़िना करे। इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके सीने पर हाथ रखकर उसकी इफ़्फ़त और असमत की हिफ़ाज़त की दुआ माँगी। वह सहाबी फ़रमाते हैं कि मेरे सीने से ज़िना का तक़ाज़ा भी ख़त्म हो गया बल्कि मुझे ज़िना से इतनी नफ़रत्त हो गई कि इतनी नफ़रत किसी और गुनाह से नहीं थी।

इससे मालूम हुआ कि सालिक बदनज़री के मौक़े पर यह

सोचे कि जिस तरह मैं यह पसन्द नही करता कि लोग मेरी महरम औरतों की तरफ़ शैतानी नज़रों से देखें, इसी तरह और लोग भी पसन्द नहीं करते कि मैं उनकी औरतों को ललचाई नज़रों से देखे। इससे दिल को ठंडक और सुकून नसीब होगा। बदनज़री का वलवला कमज़ोर हो जाएगा। इसके अलावा किसी कामिल शेख़ से राब्ता हो तो इस बीमारी का तज़्किरा उनके सामने करे और दुआ की दरख़ास्त करें। मशाइख़ किराम नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम के नाएब होते हैं उनकी तवज्जोहात से दिलों की ज़ुलमतें दूर हो जाती हैं। नफ़्सानियत की पस्तियों से निकलकर इन्सान रूहानियत की बुलन्दियों पर पहुँच जाता है। उनकी सोहबत दवा और उनकी नज़र शिफ़ा होती है।

बुज़ुर्गो! के इरशादात की रोशनी में

मशाइख़ किराम ने अपने मुरीदों और ताल्लुक़ वालों को बदनज़री से बचने के लिए बहुत-से तरीके बताए हैं। बुनियादी तौर पर उन्हें दो हिस्सों में बाँटा जा सकता है :

1. ख़्याल बदलना

जब भी इनसान का नफ़्स ग़ैर-महरम की तरफ़ देखने का तक़ाज़ा करे तो सालिक को चाहिए कि अपना ध्यान ग़ैर-महरम की तरफ़ से हटाकर दूसरी तरफ़ जमा ले। ज़हन में इरादे से कोई ख़्याल सोचेंगे तो ग़ैर-महरम का ख़्याल अपने आप दूर हो जाएगा।

चंद मिसालें खि़दमत में पेश हैं :

- इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि ऐ अज़ीज़! जान लो कि जब कोई ग़ैर-महरम सामने से गुज़रे तो शैतान तक़ाज़ा करता है कि तू इस पर नज़र डाल और देख कि कैसी है। उस वक़्त शैतान से बहस करना चाहिए कि मैं क्यों देखूँ? अगर यह बदसूरत है तो मैं गुनाह बेलज़्ज़त करूँगा। अगर ख़ूबसूरत है तो गुनाह के साथ-साथ दिल में हसरत भी पैदा

होगी कि काश यह मुझे हासिल होती। हर औरत तो हासिल हो नहीं सकती। लिहाज़ा दिल को परेशान करने का क्या फ़ायदा। बस दिल में यही फैसला करेगा कि न देखो न गुनाह हो न ही दिल परेशान हो। दिल का इत्मिनान गंवाना अक़्लमंदी का काम नहीं।

- हज़रत अक़्दस थानवी रह० फ़रमाया करते थे कि जब किसी हसीन की तरफ़ तबियत माइल हो तो उसका इलाज यह है कि फ़ौरन किसी ऐसे आदमी का तसव्वुर बांधो कि जिसका रंग काला है, चेचक के दाग हैं, आँखों से अंधा है, सर से गंजा है, दांत लंबे और आगे को निकले हुए हैं, होंठ मोटे-मोटे हैं, नाक बहकर होंठों तक पहुँच चुकी है, मक्खियाँ बैठी हुई है तो तबियत में सख़्त नागवारी होगी। यह कराहियत और नफ़रत उस जिन्सी मैलान को कम कर देगी जो हसीन को देखकर दिल में पैदा हुआ था।
- कभी-कभी यह तसव्वुर भी करे कि यह हसीन जब मरेगा और क़ब्र में जाएगा तो इसका नाज़ुक बदन गल सड़ जाएगा, कीड़े इसे खाएंगे, सख़्त बदबू पैदा होगी। लिहाज़ा उसको देखकर मैं अपने रब को नाराज़ क्यों करूँ।
- एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि जब किसी हसीन व जमील की तरफ़ तबियत माइल हो तो फ़ौरन उसके बुढ़ापे का तसव्वुर करे कि कमर झुकी होगी, हड्डियों का ढांचा बना होगा, बीनाई बहुत कमज़ोर होगी, सुनने की ताक़त ख़त्म हो जाएगी, न मुँह में दांत होगा, न पेट में आंत होगी। बैठे-बैठे पेशाब निकल जाया करेगा। चेहरा छुआरे की तरह बन जाएगा। लिहाज़ा इसको देखकर मैं रब को क्यों नाराज़ करूँ।
- एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि जब किसी हसीन व जमील की तरफ़ देखने को दिल चाहे तो फ़ौरन तसव्वुर करे कि मेरे शेख़ मेरी तरफ़ देख रहे हैं तो तबियत में झिझक पैदा हो

जाएगी, नज़र हट जाएगी। फिर सोचे की अगर मेरे शेख़ इस अमल को देखें तो किस क़द्र नाराज़ होंगे हालाँकि अल्लाह तआला तो हक़ीक़त में देख रहे हैं तो वह कितना नाराज़ होंगे। इससे बदनज़री से तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हो जाएगी।

2. नफ़्स को सज़ा देना

बदनज़री से बचने के लिए दूसरा तरीक़ा यह है कि इन्सान अपने नफ़्स पर सज़ा मुक़र्रर करे कि बदनज़री की तो तुम्हें सज़ा दूँगा। क्योंकि सज़ा की तकलीफ़ ज़्यादा होगी बदनज़री की सज़ा के मुक़ाबले में। लिहाज़ा वक़्त के साथ-साथ नफ़्स बदनज़री की आदत से रुक जाएगा।

- हज़रत अक़्दस थानवी रह॰ फ़रमाया करते थे कि बदनज़री करनेवाला बीस रकअत नफ़्ल की सज़ा तय कर ले। एक-दो दिन में ही नफ़्स चीख़ उठेगा और बदनज़री से बाज़ आ जाएगा। शैतान भी कहेगा कि यह आदमी एक मर्तबा बदनज़री करने पर चालीस बार सज्दे कर रहा है। ऐसा न हो कि इसके गुनाह नेकियों में बदल जाएं। मेरी ज़िन्दगी भर की मेहनत ज़ाए हो जाएगी। लिहाज़ा उस आदमी को बदनज़री के लिए उकसाना ही नहीं चाहिए।
- एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि जिस आदमी को खाने-पीने का चस्का लगा हुआ हो उसे चाहिए कि तीन रोज़े रखने की सज़ा तय करे। जब भूखा-प्यासा रहेगा तो सब मस्तीबाज़ी दूर हो जाएगी।
- एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि बदनज़री करनेवाला अगर ग़रीब आदमी है तो अपने ऊपर कुछ माल सदक़ा करने का जुर्माना मुक़र्रर करे। जब अपनी ज़रूरतों को क़ुर्बान करके माल सदक़ा करना पड़ेगा तो सब नशा हिरन हो जाएगा।
- एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि नफ़्स में बदनज़री का दाईया पैदा हो तो तन्हाई में अपनी पीठ पर कपड़े का बना

हुआ कोड़ा कई बार मारे और सोचे कि जब क़यामत के दिन फ़रिश्ते कोड़े लगाएँगे तो क्या बनेगा। इस तरीक़े से चंद दिनों में बदनज़री की आदत ख़त्म हो जाएगी।

राक़िमुल-हुरूफ़ (लिखनेवाले) के कुछ आज़माए हुए नुस्ख़े

नीचे कुछ और नुस्ख़े पेश किए जाते हैं जिनसे बंदे ने और ताल्लुक वालों ने बहुत फ़ायदा पाया। पढ़नेवाले इन नुक्तों को ज़हन में रखकर फ़ायदा उठाएँ, कारागर पाएँगे।

1. बदनज़री के मौक़े से बचे

सबसे बड़ी एहतियात यही है कि जिन मौक़ों पर बदनज़री मुमकिन हो उनसे बचें। शादी ब्याह के मौके पर मिली जुली महफ़िलों में हर्गिज़ न जाए। किसी जगह जाने के दो रास्ते हों तो वह रास्ता अपनाए जिसमें बदनज़री का ख़तरा कम हो। किसी घर के दरवाज़े को खटखटाए तो सामने से हटकर खड़ा हो। ऐसा न हो कि कोई बच्चा दरवाज़ा खोले और बेपर्दगी हो। हवाई जहाज़ वग़ैरह पर सफ़र के दौरान टिकट काउन्टर पर जहाँ मर्द हों वहाँ जाए ताकि औरत से बातचीत करने का मौक़ा पेश न आए। गाड़ी में सफ़र करते हुए आसपास की गुज़रने वाली गाड़ियों पर नज़र जमाए मुमकिन है बेपर्दा औरत बैठी हो तो बदनज़री हो जाएगी। अपने घर में दाख़िल होते वक़्त खकार ऐसी आवाज़ पैदा कर दे कि अगर कोई ग़ैर-औरत मौजूद हो तो वह पर्दा कर ले। बस, ट्रेन और हवाई जहाज़ के सफ़र के दौरान कोई दिलचस्प किताब अपने पास रखे और उसे पढ़ते हुए वक़्त गुज़ार दे। जब थक जाए तो सो जाए। नींद न आए तो मुराक़बे की नीयत करके बैठा रहे। आँखें खोलने से मुसाफ़िर औरतों पर

नज़र पड़ने का अंदेशा होगा। रास्ता चलते वक़्त निगाह इस तरह नीची रखे कि क़रीब से गुज़रने वालों के पाँव से अंदाज़ा हो कि मर्द है या औरत है। हर वक़्त यह ज़हन में रखे कि औरतों ने हम से पर्दा नहीं करना, हमने औरतों से पर्दा करना है। तवाफ़ के दौरान नज़रों को क़दमों पर जमाए रखें। हर्गिज़-हर्गिज़ ऊपर न उठने दे। मुहल्ले में जहाँ तन्दूर वग़ैरह पर औरतें होती हैं, उस मकान की तरफ़ नज़र ही न उठाए। तफ़रीहगाहों में अव्वल तो जाए नहीं अगर मजबूरी में जाना पड़े तो ऐसा वक़्त और ऐसे दिन का चुनाव करे कि लोग न होने के बराबर हों। अगर किसी दफ़्तर या एयरपोर्ट लाउन्ज वग़ैरह में इंतेज़ार के लिए बैठना पड़े जहाँ टीवी चल रहा हो या औरतों की तस्वीरें लगी हों तो इरादातन उनकी तरफ़ से पीठ करके बैठे। सड़कों के किनारे लगे हुए फ़िल्मी बोर्डों या इश्तेहारी बोर्डों पर नज़र न डाले। मोटर साइकल या कार चलाते हुए अगर रिक्शा तांगा सामने हो तो उसमें बैठी हुई औरतों की तरफ़ नज़र न उठने दें। जिस सड़क या गली में लड़कियों का स्कूल या कॉलेज हो उससे गुज़रना छोड़ दे तो बेहतर है। काफ़िरों के मुल्क में सफ़र करना पड़े तो बेहतर है कि लोगों के चेहरों पर नज़र ही न डाले। अव्वल तो गर्मी के मौसम में आधे से ज़्यादा नंगे होते हैं। अगर सर्दी के मौसम में जिस्म पर कपड़े हों भी तो मर्द और औरत के दर्मियान पता ही नहीं चलता। कई मर्तबा लिबास एक जैसा होता है। औरतें कोट पतलून पहनती हैं। टाई लगाती हैं, मर्दों की तरह बाल कटवाती हैं। इस मुसीबत से बचने का हल यही है कि निगाहें झुकाए अपने ईमान को बचाए। अल्लाह से आजिज़ी के साथ इल्तिजा करे या इलाही—

ग़में हयात के साए मुहीत न करना
किसी ग़रीब को दिल का ग़रीब न करना
मैं इम्तिहान के क़ाबिल नहीं मेरे मौला
मुझे गुनाह का मौक़ा नसीब न करना

2. बीवी को ख़ुश रखे

अपनी बीवी के साथ मुहब्बत व उलफ़त का बर्ताव रखे। उसके पहनने ओढ़ने वग़ैरह का ख़्याल रखे। जब बीवी घर में मियाँ को मुहब्बत व प्यार देगी, ख़िदमत करेगी, मुस्कराहटों से इस्तिक़बाल करेगी तो ख़ाविन्द की तबियत ग़ैर-महरम की तरफ़ मुवतवज्जेह नहीं होगी। ज़रा ग़ौर करें उस सूरतेहाल पर जब मियाँ-बीवी का रोज़ाना घर में झगड़ा हो। परेशान हाल ख़ाविन्द दफ़्तर में बग़ैर नाशता किए पहुँच जाए। वहाँ उसकी बेपर्दा कारकुन ख़ातून मुस्कराकर इंतिहाई हमदर्दी के लहजे में पूछे कि सर! आप कैसे हैं? तो उस लड़की की मुस्कराहट ख़ाविन्द की इज़्दिवाजी ज़िन्दगी में ज़हर घोल देती है। इस सूरत में हंसते बसते घर तबाह हो जाते हैं। जब घर में ख़ूबसूरत बीवी झगड़े करती रहे तो बाहर की काली कालौटी औरत भी हूर परी नज़र आने लगती हैं। लिहाज़ा मियाँ-बीवी दोनों को कोशिश करनी चहिए, कि घर में उलफ़त व मुहब्बत का माहौल रहे ताकि बाहर की गंदगियों से बचना आसान हो। आमतौर पर बदनज़री वही लोग करते हैं जिनकी बीवी नहीं होती या बीवी होती है मगर वह बीवी से जिन्सी तौर पर मुतमइन नहीं होते। क़ुरआन मजीद ने बीवी का मक़सद बताया لِتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا (ताकि तुम उससे सुकून पाओ।) और जो बीवी पुरसुकून ख़ाविन्द को परेशान कर दे वह अल्लाह के सामने क्या जवाब देगी। आज का नवजवान अगर बीवी को उस शौक़ से देखे जिस शौक़ से टीवी को देखता है तो बीवी जन्नत की हूर नज़र आने लग जाएगी। सुना है कि मुहब्बत के ग़लबे में ज़ुलेख़ा ने हर चीज़ का नाम यूसुफ़ रख दिया था। उसे दुनिया में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सिवा कुछ नज़र ही नहीं आता था। जब बीवी और ख़ाविन्द में ऐसी सच्ची मुहब्बत होगी तो ख़ाविन्द की किसी ग़ैर-महरम पर नज़र ही नहीं पड़ेगी।

3. अपने आपको बे-तमा कर ले

सालिक बार-बार अपने दिल में यह ख़्याल जमाए कि मैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को नाराज़ नहीं करना चाहता। मेरी ग़ैर-महरम पर उठनेवाली हर नज़र मुझे मेरे महबूब हक़ीक़ी से दूर करेगी जबकि ग़ैर-महरम से हटनेवाली हर नज़र मुझे महबूबे हक़ीक़ी का क़ुर्ब नसीब करेगी। लिहाज़ा मैंने अल्लाह तआला के क़ुर्ब को अपने लिए चुन लिया है। उसकी मुहब्बत में आकर ग़ैर-महरम की तरफ़ देखने से तौबा कर ली है। अब जो कोई बेपर्दा औरत सामने आएगी मुझे उससे कोई लालच नहीं। वह नीली या पीली है या पतली है या मोटी है, गोरी है या काली है, हूर है या डायन है, किसी और के लिए है मेरे लिए नहीं। जब मुझे उससे कोई मतलब पूरा नहीं करना तो देखने का क्या फ़ायदा।

गली बाज़ार से गुज़रते हुए जब नफ़्स ग़ैर-महरम की तरफ़ देखने की ख़्वाहिश करे तो फ़ौरन अपने दिल में यह ख़्याल दोहराए कि मुझे इससे कोई तमा नहीं। आपने तजुरबा किया होगा कि अगर किसी बस में य इंतिज़ारगाह में कोई मर्द आपके क़रीब वाली कुर्सी पर बैठ जाए तो आपको महसूस ही नहीं होता और अगर कोई औरत बैठ जाए तो ज़हन मुन्तशिर होकर किसी के बारे में सोचना शुरू कर देता है। यह सब इसलिए कि नफ़्स को तमा होती है। अगर वही बूढ़ी औरत हो तो परवाह ही नहीं होती। यह इस बात का सुबूत है कि नफ़्स में ख़बासत होती है। लिहाज़ा इस हवस को दिल से इरादतन दूर करने की कोशिश करे। रात के आख़िरी पहर में तहज्जुद के बाद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ माँगे ऐ मालिक! मुझे ग़ैर-महरम से बेतमा कर दे। ऐ वह ज़ात जिसकी उंगलियों में इन्सनों के दिल हैं मेरे दिल से ग़ैर-महरम की हवस निकाल दे ताकि मेरे लिए ग़ैर-महरम में और दीवार में कोई फ़र्क़ न रहे। इसकी बरकत चंद दिनों में ज़ाहिर होकर रहेगी। आज़माईश शर्त है।

4. हूर की ख़ूबियों का तसव्वुर

अगर नफ़्स ग़ैर-महरम की तरफ़ देखने की ख़्वाहिश करे तो सालिक अपने दिल में हूर की ख़ूबियों का तसव्वुर करे। मसलन

حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ख़ेमे में रुकी रहनेवाली हूरें,

قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ नीची निगाह रखनेवाली,

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ- उनसे किसी आदमी या जिन्न ने क़ुर्बत नहीं की।

أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ- हैज़ व निफ़ास से पाक बीबियाँ,

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ- याक़ूत मरजान जैसे मोतियों की तरह।

इन तमाम सिफ़ात को निगाह में रखकर ग़ैर-महरम के बारे में सोचे कि कभी हैज का बदबूदार ख़ून जारी है, कभी निफ़ास का जारी है, रोज़ाना कई बार पेशाब-पाख़ाने की गंदगी पेट से निकलती है, नाक साफ़ करती है, मुँह से बलग़म ख़ारिज़ होती है, बगलों से पसीने की बू आती है, सर में जुएँ पड़ी हुई हैं, चंद दिन न नहाए तो जिस्म से बदबू आने लगे मिस्वाक न करे तो मुँह से बदबू आने लगे, बीमार हो जाए चंद दिन में लाग़िर हो जाएगी, बूढ़ी होगी तो चेहरा छुआरे की तरह बन जाएगा, मुँह में दांत नहीं रहेंगे, पेट में आंत नहीं रहेगी, कमर झुकाकर चल रही होगी, मुँह से अल्फ़ाज़ पूरे नहीं निकलेंगे, पोशीदा हिस्सों के बाल न साफ़ करे तो जंगल का नमूना बनजाए, हर वक़्त पेट में पेशाब व पाख़ाने की गंदगी उठाए फिर रही है। क्या ऐसी औरत की तरफ़ नज़र उठाकर मैं अपने परवरदिगार को नाराज़ करूँ? जन्नत की नेमतों और हूरों से महरूम हो जाऊँ? वह हूर जो हमेशा कुँवारी रहेगी, मोतियों की तरह चमकती होगी, जिस्म से हर हिस्से से ख़ुशबम आएगी, पाक व साफ़ होगी, अगर थूक खाने पानी में डाल दिया जाए तो मीठा हो जाए, अगर उंगली अर्श से नीचे निकाले तो सूरज की रोशनी की मानिन्द पड़ जाए, अगर मुस्करा कर बात करते तो मुर्दा भी ज़िन्दा हो जाए, जिसको

किसी ग़ैर ने हाथ नहीं लगाया होगा, जिसके दिल में मुहब्बत के उठते हुए जज़्बात को इनसान अपनी आँखों से देख सकेगा। न बीमारी होगी न ख़्वारी होगी। बालाख़ाने में बैठी ख़ाविन्द का इंतिज़ार कर रही होगी। मैं ऐसी वफ़ादार हसीन व जमील बीवी ग़ैर-महरम की तरफ़ एक नज़र उठाकर देखने की ख़ातिर महरूम हो जाऊँ, यह कहाँ की अक़्लमंदी है। बस दुनिया में मेरे लिए मेरी बीवी है और आख़िरत में मेरे लिए हूरें हैं। गली बाज़ार में फिरने वालियों से मुझे कोई लालच नहीं है। मैं ग़ैर-महरम से हर-हर नज़र बचाऊँगा। अपने रब को मनाऊँगा और हूरों का हक़दार बनकर दुनिया से जाऊँगा।

5. दीदारे इलाही से महरुमी का तसव्वुर करो

हदीस पाक का मफ़हूम है कि जन्नत में जन्नतियों को अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा। कुछ को एक बार होगा, कुछ का हर साल होगा, कुछ को हर महीने होगा, किसी को हर जुमे के दिन होगा और कुछ लोगों को हर रोज़ होगा। ऐसे में वह आदमी जो दुनिया में नाबीना पैदा हुआ और उसने नेकोकारी और परहेज़गारी और सब्र व शुक्र वाली ज़िन्दगी गुज़ारी। उसको यह सआदत नसीब होगी कि वह हर वक़्त अल्लाह तआला के दीदार में धुत रहेगा अल्लाह तआला फ़रमाएँगे यह मेरा बंदा है जिसने दुनिया में किसी ग़ैर को मुहब्बत की नज़र से नहीं देखा। अब यह जब चाहे मेरे चेहर-ए-अनवर का दीदार करे।

बाज़ उलमा ने लिखा है कि जो आदमी दुनिया में अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर ग़ैर-महरम से अपनी नज़रों की हिफ़ाज़त करेगा। अल्लाह तआला जन्नत में हर-हर नज़र के बदले एक-एक बार उसे अपने चेहर-ए-अनवर का दीदार अता फ़रमाएँगें। सालिक को चाहिए कि वह इस मज़मून का मुराक़बा करे और अपने दिल को समझाए कि मैं चंद लम्हों की बदनज़री की वजह से अल्लाह तआला के दीदार से महरूम क्यों हो जाऊँ?

अल्लामा इब्ने क़य्यिम रह. ने लिखा है कि जन्नत में अमल का अज्र उसी की जिन्स से होगा। लिहाज़ा जो आदमी ग़ैर-महरम के चेहरे से आँख हटाएगा उसे अल्लाह तआला के दीदार की सआदत नसीब होगी। सालिक को चाहिए कि ग़ैर-महरम से नज़रें हटाए ताकि अल्लाह तआला के दीदार का हक़दार बन जाए।

6. अपनी माँ-बेटी का तसव्वुर करो

इन्सान का नफ़्स ग़ैर-महरम की तरफ़ ललचाई नज़रों से देखना चाहे तो फ़ौरन दिल में माँ या बेटी का तसव्वुर करे और उसके बारे में सोचना शुरू कर दे। यह इतने मुक़द्दस रिश्ते हैं कि नफ़्सानियत के तक़ाज़े इस तरह ख़त्म हो जाते हैं जिस तरह पानी डालने से आग के शोले बुझ जाते हैं। मगर यह अमल हयादार और शरिअत के पाबन्द लोगों के लिए ज़्यादा फ़ायदेमन्द है।

7. आँखों में सलाई फिरने का तसव्वुर करो

उलमा किराम ने लिखा है कि बदनज़री करनेवाला जहन्नम में पहुँचेगा तो फ़रिश्ते उसकी आँखों में पिघला हुआ सीसा डालेंगे। बाज़ किताबों मे लिखा है कि लोहे की सलाख़ें गर्म करके उसकी आँखों में घोंप देंगे। जब सालिक का नफ़्स बदनज़री पर उकसाए तो सालिक अपने ज़हन में तसव्वुर करे कि वक़्ती लज़्ज़त की ख़ातिर मेरी आँखों में गर्म सलाइयाँ फेरी जाएँगी तो क्या हाल होगा। चंद दिन लगातार तसव्वुर करने से नफ़्स की ख़बासत ख़त्म हो जाएगी।

8. उसूल की बात

जिन लोगों को बदनज़री की पुरानी आदत होती है और इब्तिदाई नुस्ख़ों से उनके नफ़्स की हठधर्मी दूर नहीं होती। उन्हें चाहिए कि अपने नफ़्स को समझाए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हा एक उसूल है, जो आदमी कुछ गुनाह करना शुरू करे। तो

अव्वल तो रब्बेकरीम उसके साथ हिल्म व बुर्दबारी का मामला फ़रमाते हैं। अगर बंदा पीछे न हटे तो कुछ अरसे सत्तारी का मामला फ़रमाते हैं। अगर फिर भी आगे बढ़ता जाए तो सज़ा का इरादा फ़रमाते हैं। और जिस बदनसीब के लिए सज़ा का इरादा फ़रमा लें फिर उसको तिगनी का नाच-नचा देते हैं। घर बैठे बिठाए ज़लील कर देते हैं। दूसरो के लिए इबरत का निशान बना देते हैं। लिहाज़ा मैं बहुत अरसे से बदनज़री वाला गुनाह कर रहा हूँ, अभी तक अल्लाह तआला सत्तारी का मामल फ़रमा रहे हैं। अगर सज़ा का इरादा कर लिया तो मैं दीन व दुनिया में बरबाद हो जाऊँगा। कहीं का न रहूँगा। इरशाद बारी तआला है :

وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ

(जिसको अल्लाह तआला ज़लील करे उसको कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं।)

इस आयत का तसव्वुर करने से बदनज़री की आदत से जान छूट जाती है।

9. अपने नफ़्स से मुनाज़रा (बहस)

जब इनसान का नफ़्स बदनज़री की कोशिश करे तो अपने नफ़्स से यूँ बात करनी चाहिए कि ऐ नफ़्स! तेरा नाम इतना बुलन्द मगर तेरी हरकतें इतनी पस्त है, तू मख़्लूक़ की नज़र में अल्लाह का दोस्त है मगर अल्लाह के दुश्मनों वाले काम कर रहा है, तू ज़ाहिर मे मोमिन है बातिन मे फ़ासिक़ है, तू ऊपर से ला इलाह है अन्दर से काली बला है, तू ज़ाहिर में अल्लाह का बंदा है तन्हाई में शैतान का पुजारी है, तेरी ज़बान अल्लाह की तलबगार है तेरी आँखो को ग़ैर-महरम से प्यार है, मख़्लूक़ की नज़र से सूफ़ी व साफ़ी है मगर ख़ालिक़ की नज़र में क़ाबिले माफ़ी है, तेरे ज़ाहिर पर सुन्नत सजी हुई है तेरे बातिन में शहवत भरी हुई है, मख़्लूक़ की नज़र से तेरी हरकतें पोशीदा हैं मगर ख़ालिक़ की नज़र में खुली हुई हैं। तू ज़ाहिर में जन्नत का

तालिब है मगर हक़ीक़त में जहन्नम का ख़रीदार है। बेहतर यही है कि नुक़सान की तिजारत से बाज़ आ, घाटे और नुक़सान के सौदे से पीछे हट जा। अल्लाह तआला ने तेरे लिए तौबा का दरवाज़ा खुला रखा हुआ है। शायद यह तेरी मोहलत का आख़िरी दिन हो। बाद में हसरत व अफ़सोस करने से क्या फ़ायदा है–

अब पछताए क्या होत
जब चिड़ियाँ चुग गयीं खेत

चंद बार नफ़्स के साथ इस तरह की जिरह करने से बदनज़री में अच्छी ख़ासी कमी आएगी।

10. मुराक़बए-मईय्यत

जब इन्सान का नफ़्स बदनज़री से बाज़ न आए तो सालिक मईय्यते इलाही का ध्यान पैदा करने के लिए हर नमाज़ के बाद चंद लम्हे अपने दिल में आयत करीमा का मज़मून सोचे यानी वह तुम्हारे साथ है तुम जहाँ कहीं भी हो। फिर अपने नफ़्स को समझाए कि देखो तुम अल्लाह तआला की नज़र से कहीं भी ओझल नहीं हो सकते। जब तुम ग़ैर-महरम को देख रहे होते हो तो परवरदिगार तुम्हारी तरफ़ देख रहा होता है। यह अल्लाह तआला की बुर्दबारी है कि तुम्हारी पकड़ नहीं फ़रमा रहे। अगर यही कुछ करते रहे तो बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनाएँगी। यह नज़र के तीर तुम्हें रूहानी मौत मिलने का सबब बनेंगे। अदले का बदला होकर रहता है। तुम ग़ैर औरत को ललचाई हुई नज़रों से देखते हो, कोई तुम्हारी औरतों को ऐसी नज़रों से देखेगा। ऐ नफ़्स! यह बात अच्छी तरह जान ले–

जैसी करनी वैसी भरनी न माने तो करके देख
जन्नत भी है दोज़ख भी है न माने तो मर के देख

इनशाअल्लाह इस मुराक़बे के करने से अल्लाह तआला की रहमते शामिल हाल होगी और बदनज़री से तौबा की तौफ़ीक़ होगी।

एक मुग़ालता

बाज़ नवजावन ये चाहते हैं कि नफ़्स में ग़ैर-महरम की तरफ़ देखने का ख़्याल और तक़ाज़ा ही पैदा न हो। इसके हासिल न होने पर बहुत परेशान होते हैं। समझते हैं कि हमारे ज़िक्र व मुराक़बे का कोई फ़ायदा नहीं। याद रखे यह शैतानी वसवसा होता है। अगर नफ़्स में बदनज़री की ख़्वाहिश ही न रहे तो इससे बचना कौन-सी बहादुरी है। अंधा कहे कि मैं ग़ैर-महरम को नहीं देखता तो ये कौन-सी फ़ख़्र की बात है। मज़ा तो यह है कि भरपूर शहवत के बावजूद गुनाह से बच जाए। दिल में नदामत व शर्मिन्दगी का पैदा होना और ग़ैर-महरम की तरफ़ नज़र उठाने से बच जाना ही बहुत बड़ा जिहाद है। ये सब कुछ ज़िन्दगी भर करना है और अपनी कोताहियों पर रोना-धोना है। जब इस हाल में मरेंगे तो क़ब्र में पुरसुकून नींद आएगी। शायद फ़रिश्ते मुन्कर नकीर आपस में गुफ़्तगू करें।

सराहने मीर के आहिस्ता बोलो
अभी टुक रोते-रोते सो गया है

बाब-3

हिजाब (पर्दे) का हुक्म

अल्लाह तआला ने इनसान को अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बनाकर अक़्ल का नूर अता किया है। इसी अक़्ले सलीम की वजह से इन्सान और हैवान की ज़िन्दगी में बुनियादी फ़र्क़ है। खाना, पीना और बीवी-बच्चे वाले काम में इनसान और हैवान सब बराबर है। मकान बनाकर रहने में भी कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं है। इनसानी ज़रूरतें ज़्यादा हैं। लिहाज़ा उसे ऐश भरी आसमान को छूती ऊँची इमारतों की ज़रूरत होती है जबकि जानवर की ज़िनदगी सादा है। उनके रहने की जगहें मामूली होती हैं। चिड़िया घोंसला बनाकर रहती है, साँप बिल में घुसता है तो शेर खचार में आराम करता है:

रह गई बात आपस में रहन-सहन की तो इसमें जानवर इनसान से पीछे नहीं हैं। चींटी की ज़िन्दगी में इत्तिफ़ाक़ व एकता की आला मिसाल है, शहद की मक्खियों में आदबे सलतनत की हद है, परिन्दों की ज़िन्दगी में ज़िक्र व इबादत है। अलबत्ता एक बात ऐसी है कि जिसमें इनसान हैवान से ऊपर है, वह शर्म व हया वाली सिफ़्त है। इसी सिफ़्त की वजह से इनसान पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारता है और अपने मालिक की क़दम-क़दम पर फ़रमाबरदारी करता है। इसी शर्म व हया वाली सिफ़्त का तक़ाज़ा है कि इनसान दूसरों के सामने आने के लिए अपनी शर्मगाह को छिपाए। चुनाँचे तारीख़ें इनसानी इस हक़ीक़त को बयान करती है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और उनकी बीवी को जन्नत में लिबास अता किया गया था। जब मना किए हुए पेड़ का फल खाया तो जन्नत की पोशाक उतार ली गई।

दोनों ने फ़ौरन अपने जिस्म के पोशीदा हिस्सों को पेड़ के पत्तों से ढाँप लिया।

इरशाद बारी तआला है :

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ

(और वे दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते चिपकाने लगे।)

सतर का पस-मंज़र

जिस्म के पोशीदा आज़ा को छिपाने के लिए अरबी में औरत और उर्दू व फ़ारसी में सतर का लफ़्ज इस्तेमाल किया जाता है। औलादे आदम पत्थर के ज़माने से ही अपने सतर को छिपाती चली आ रही है। वक़्त गुज़रने के साथ-साथ जब अक़्ल व समझ में पुख़्तगी आई और इनसान ने समाजी आदाब व अख़्लाक़ को अपनाया तो उसके लिबास में और ज़्यादा शाइस्तगी आती गई। चुनाँचे तमाम दुनिया के तमाम मज़हबों ने इनसान को मुहज़्ज़िब लिबास पहनने की तालीम दी। ईसाईयत में अगर औरत के लिबास पर ग़ौर किया जाए तो कि वह सतर ही नहीं छिपाती थी बल्कि हाथ पाँव और चेहरे के सिवा बाक़ी तमाम जिस्म को कपड़ों से छिपाती थी। कलीसा में ज़िन्दगी गुज़ारने वाली ईसाई औरतें आज भी उसी लिबास में लिपटी नज़र आती हैं। मालूम हुआ कि पर्दे के आज़ा को छिपाना क़ुदरती, अक़्ली और शरई हर लिहाज़ से लाज़मी है। तमाम अंबिया किराम की शरिअतों में यह फ़र्ज़ रहा है।

हिजाब का पस-मंज़र

दीने इस्लाम कामिल मुकम्मल ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा है। लिहाज़ा दीने इस्लाम ने हया को ईमान का हिस्सा क़रार दिया है। हया का तक़ाज़ा है समाज में से उरयानी बेहयाई सिरे से ख़त्म कर दिया जाए। इस्लाम ने ज़िना को हराम क़रार दिया तो फ़रमाया وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى यानी ज़िना के क़रीब भी न जाओ।

शरिअत मुहम्मदी ने क़यामत तक के लिए इनसानों को अपने चश्मए साफ़ी से फ़ेज़ेयाब करना था। लिहाज़ा इसमे जिन कामों को हराम क़रार दिया गया उनके ज़रियों को भी ममनू फ़रमाकर शैतान के दाख़िले के हर सुराख़ को बंद कर दिया मसलन :

- शराब को हराम क़रार दिया तो उसके बनाने, बेचने, ख़रीदने और किसी को देने का भी हराम क़रार दिया।
- सूद को हराम क़रार दिया तो मामलाते फ़ासिदा (ग़लत लेन-देन) से हासिल होनेवाले नफ़े को भी सूद की तरह माले ख़बीस क़रार दिया।
- शिर्क को हराम क़रार दिया तो तस्वीर बनाने और बुत तराशने को भी हराम क़रार दिया।
- ज़िना को हराम क़रार दिया तो अजनबी औरत को देखने, छूने, शहवत भरी बात करने और दिल में ख़्याल जमाने को भी क़रार दिया।

यह बात तयशुदा है कि बेपर्दगी ही ज़िना का सबब बना करती है। इसलिए दीने इस्लाम ने औरत को पर्दे में रहने का हुक्म दिया। पाक तबियतों ने तो हिजाब की अहमियत को ख़ुद महसूस कर लिया। लिहाज़ा 5 हिजरी में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अर्ज़ किया :

يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ إِنَّ نِسَائَكَ يَدْخُلُ عَلَيْهِنَّ الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ فَلَوْ حَجَبْتَهُنَّ
فَأَنْزَلَ اللّٰهُ آيَةَ الْحِجَابِ.(بخاری ومسلم)

ऐ अल्लाह के रसूल! आपकी बीवी के पास नेक और गुनाहगार लोग दाख़िल होते हैं तो अगर आप पर्दे का हुक्म फ़रमाए तो इस पर पर्दे की आयतें नाज़िल हुईं।

हज़रत मुफ़्ती शफ़ी साहब रह॰ ने मआरिफ़ुल क़ुरआन में लिखा है कि हिजाब के बारे में क़ुरआन मजीद की सात आयतें और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्तर हदीसें हैं। हिजाब से मुराद यह है कि जहाँ तक हो सके औरत घर में रहे। अगर

किसी ज़रूरत से निकलना पड़े तो अपने जिस्म और ज़ेब व ज़ीनत को चादर बुर्के के ज़रिए ग़ैर-महरम से छिपाए।

सतर औरत और हिजाब का मवाज़ना

बस सतर औरत यानी पोशीदा आज़ा को छिपाना और हिजाब दो अलग-अलग मसाइल हैं। इनका मवाज़ना इस तरह है :

हिजाब	सतरे औरत
● सतरे औरत तमाम शरिअतों में फ़र्ज़ रहा है।	● हिजाब का हुक्म उम्मते मुहम्मदिया को सन् 5 हिजरी में मिला है।
● सतरे औरत तन्हाई और सब के सामने ज़रूरी है।	● हिजाब औरत के लिए ग़ैर मर्दों के सामने लाज़मी है।
● सतरे औरत मर्दों और औरतों दोनों पर लाज़िम है।	● हिजाब का हुक्म सिर्फ़ औरत पर फ़र्ज़ है।
● सतरे औरत शर्म व हया की इब्तिदा है।	● औरत का हिजाब शर्म व हया की इंतिहा है।

हिजाब व पर्दे के दलाइल

आजकल साइंसी दौर में एक तरफ़ तो माद्दी तरक़्क़ी अपने उरूज पर है। दूसरी तरफ़ नंगापन व बेहयाई का सैलाब उमडने पर है। अंग्रेजी तहज़ीब के असरात ने फ़ैशनपरस्ती और बेहयाई को आम कर दिया। युनिवर्सिटी कॉलेज की पढ़ी हुई औरतों ने पर्दे को ग़ैर ज़रूरी समझना शुरू कर दिया है। इसलिए ज़रूरी है कि हिजाब की अहमियत और फ़र्ज़ियत को क़ुरआन व सुन्नत की रोशनी में बयान किया जाए।

1. क़ुरआन मजीद से दलाइल

इरशाद बारी तआला है :

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُوْلٰى

और अपने घरों में टिकी रहो और न दिखलाती फिरो जैसे कि जाहिलियत के दौर में दिखलाने का दस्तूर था।

इस आयत में औरतों को हुक्म दिया गया है कि वे अमूमी तौर पर अपने घरों में रहें। घर की चारदिवारी में रहकर अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करें। शरिअत ने औरत के ज़िम्मे कोई काम ऐसा नहीं लगाया कि जिससे उसे चारदिवारी से निकलना पड़े। वक़्ती ज़रूरत तो मजबूरी और माज़ूरी में दाख़िल है। औरत जिस क़द्र घर में रहे उतना ही अल्लाह तआला का क़ुर्ब पाएगी। हदीस पाक में आया है :

أَقْرَبُ مَا تَكُوْنُ مِنْ وَجْهِ رَبِّهَا وَهِيَ فِيْ قَعْرِ بَيْتِهَا (ابن خزیمہ، ابن حبان)

(औरत अपने रब से सबसे ज़्यादा उस वक़्त क़रीब होती है जब वह अपने घर के दर्मियान में छिपी हो।

तबरानी शरीफ़ की एक रिवायत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

لَيْسَ لِلنِّسَاءِ نَصِيْبٌ فِي الْخُرُوْجِ اِلَّا مُضْطَرَّةً. (طبرانی الجامع الصغیر)

(औरत सिर्फ़ शरई ज़रूरत पेश आने की वजह से घर से बाहर निकले।)

लिहाज़ा बहुत सख़्त ज़रूरत की वजह से औरत को घर से निकलना जाएज़ है। अरबी का मफ़ूना है :

لَا تَحْفَظُ الْمَرْأَةُ اِلَّا فِيْ بَيْتِهَا.

और कहीं महफ़ूज़ नहीं होती सिवाए अपने घर के।

अज़वाजे मुतहरात हज़र (अपने वतन) में घर की चारदीवारी में रहती थीं और सफ़र में होदज (ऊँट के ऊपर की पालकी) और ख़ेमे के अन्दर रहती थी। वाक़िआ उफ़क़ के पेश आने की

एक वजह यह थी कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने समझ लिया कि सैय्यदा आएशा सिद्दिक़ा रज़िल्लाहु अन्हा होदज में मौज़ूद होंगी जबकि वह गुम हुआ हार ढूंढ ने के लिए क़ज़ाए हाजत की जगह पर गई थीं। इस आयत में यह भी हुक्म दिया गया कि जाहिलियत की पहले वाली बेपर्दगी न करें। अजीब बात तो यह है कि इस्लाम के शुरू ज़माने में जाहिलियत ऊला बेपर्दगी का सबब थी। आज के दौर में जाहिलित उख़रा बेपर्दगी का सबब है। कुछ अंग्रेज़ी पढ़ी लिखी औरतें तो पर्दे की मुख़ालिफ़त करके अपने लिखें पढ़े जाहिल होने का सुबूत पेश करती हैं।

2. इरशाद बारी तआला है :

وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْئَلُوهُنَّ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ

जब तुम उनसे किसी चीज़ का सवाल करो तो पर्दे के पीछे से करों इसमें ज़्यादा पाकीज़गी है तुम्हारे दिलों के लिए और उनके दिलों के लिए।

इस आयत में यह तालीम दी गई है कि अगर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को अज़वाजे मुताहरात से कोई चीज़ मांगनी होती तो वे पर्दे के पीछे से मांगे यानी अगर मान लें कि चारदीवारी का पर्दा नहीं तो चादर का पर्दा ज़रूर होना चाहिए। आमना-सामना जाएज़ नहीं यहाँ पर यह बात बहुत अहम है कि एक तरफ़ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम जैसी मुक़द्दस हस्तियाँ थीं और दूसरी तरफ़ अज़वाजे मुताहरात जैसी पाकीज़ा औरतें थीं। मगर इसके बावजूद उन्हें पर्दे के पीछे रहकर बातचीत करने या लेन-देन करने का हुक्म दिया गया। साथ यह बात भी वाज़ेह कर दी गई कि यह तुम्हारे और उनके दिलों की पाकीज़गी के लिए अच्छा है।

3. इरशाद बारी तआला है :

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ

مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ

ऐ नबी! फ़रमाइए अपनी अज़वाज से और बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कि वे डाल लिया करें अपने ऊपर चादरें।

जलाबीब अरबी में जलबाबा की जमअ है। इससे मुराद वह चादर है जिसको औरतें अपने दुपट्टे ऊपर ओढ़ लेती हैं। مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ में 'मिन' तबीज़िया है यानी चादरों का कुछ हिस्सा अपने चेहरे पर लटकाएँ। इससे लोग पहचान लेंगे कि यह शरीफ़ औरत है फिर उसको सताया न जाएगा यानी कोई मुनाफ़िक़ और बदचलन उन्हें छेड़ नहीं सकेगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुसलमान औरतों को हुक्म दिया गया है कि अपने सरों और चेहरों को चादर से ढांप लिया करे। सिर्फ़ एक आँख खुली रखें ताकि चलने फिरने और देखने में आसानी हो। आजकल जो बुर्क़ा रिवाज में है इसी चादर का बदल है।

4. इरशाद बारी तआला है :

وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا

औरतें अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें मगर जो खुला रहता है।

औरतें अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें मगर जो कुछ मजबूरी में खुला रहता हो। ज़ीनत से मुराद वह चीज़ है जिससे इनसान अपने को ख़ूबसूरत और ख़ुशनुमा बनाए। इल्ला मा ज़हरा से मुराद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक कपड़े ज़ेवर या बनाव सिंगार की चीज़ें हैं। इसकी दलील क़ुरआन

मजीद की दूसरी आयत से मिलती है। इरशाद बारी तआला है:

خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ (الاعراف:٣١)

(लो अपनी ज़ीनत हर नमाज़ के वक़्त।)

इस आयत में ज़ीनत से मुराद कपड़े हैं और मस्जिद से मुराद नमाज़ है। इन माइने के मुताबिक़ औरत के लिए अपने कपड़ों की और ज़ेवर की नुमाइश करना भी मना है। बस साबित हुआ कि ज़ीनत के जिस्मानी आज़ा को ज़ाहिर करना और भी ज़्यादा मना होगा इस सूरत में मतलब बिलकुल साफ़ है कि ऊपर के कपड़े यानी बुर्क़ा या बैरूनी चादर इसे छिपाने के हुक्म से अलग है। बक़िया तमाम कपड़ों और ज़ीनत को छिपाना फ़र्ज़ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम ने ज़ीनत से मुराद आज़ाए ज़ीनत के लिए हैं। तो फिर मतलब यह बनेगा कि जब ज़रूरी काम के लिए मसलन बीमारी के इलाज के लिए या शनाख़्त के लिए या गवाही देने के लिए क़ाज़ी या हाकिम के सामने ज़ीनत के मौक़े को खोलना पड़े तो मजबूरी के तहत जाएज़ है। इस सूरत में ज़ीनत के मौक़े से मुराद चेहरा और हथेलियाँ होंगी। इस बात पर सब हज़रात मुत्तफ़िक़ हैं कि जब औरत के चेहरे की तरफ़ देखना शहवत के उभरने का सबब बने तो ऐसी सूरत में औरत के लिए चेहरा छिपाना और मर्द के लिए उसकी तरफ़ न देखना फ़र्ज़ है। लिहाज़ा क़ाज़ी या हाकिम को अगर शनाख़्त की ख़ातिर देखना पड़े तो उनके लिए भी पहली नज़र बिला शहवत जाएज़ होगी। दूसरी नज़र हराम होगी।

5. इरशाद बारी तआला है :

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۢ بِزِيْنَةٍ ۗ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۶۰﴾

और जो औरतें घरों में बैठ रही हैं (बूढ़ियाँ) जिनको निकाह की उम्मीद नहीं रही, उन पर गुनाह नहीं वह उतार रखे अपने नक़ाब को। यह नहीं कि दिखाती फिरें अपने सिंगार को।

अगर इससे भी बचें तो बेहतर है उनके लिए। अल्लाह सब बातें सुनता और जानता है।

शरअ शरीफ़ में ऐसी बूढ़ी औरतों को पर्दे मे सहूलत दी गई है कि जो न निकाह के क़ाबिल रही हों और न ही उनकी तरफ़ मर्दों को रग़बत हो। जिन आज़ा का छिपाना औरत के लिए अपने महरमों से ज़रूरी नहीं, बूढ़ी औरत के लिए उन आज़ा का ग़ैर-महरमों से छिपाना ज़रूरी नहीं। इस आयत में क़ैद लगा दी गई कि बन संवरकर सामने न आए और साथ ही यह भी कह दिया गया कि अगर ग़ैर-महरमों के सामने आने से बिलकुल ही बचे तो उनके लिए भी यही बेहतर है। मिस्ल मशहूर है हर गिरी पड़ी चीज़ का कोई-न-कोई उठानेवाला होता है।

सोचने की बात यह है कि जब बूढ़ी औरत के लिए इतनी एहतियात बताई गई तो जवान औरत के लिए पर्दे की एहतियात कितनी ज़रूरी है।

6. इरशाद बारी तआला है :

इस आयत मुबारक में माल और बेटे को दुनिया की ज़ीनत कहा गया है। बेटी का ज़िक्र नहीं किया गया। इसलिए कि वह छिपाने की चीज़ है नुमाइश की चीज़ नहीं है। इससे भी औरत के पर्दे में छिपे रहने का सुबूत मिलता है। लिहाज़ा मुसलमान औरत पर्दे का ख़ूब एहतिमाम करे और ज़हन में अच्छी तरह सोच ले :

الحجاب الحجاب قبل العذاب.

हिजाब... हिजाब... इससे पहले कि अज़ाब आ जाए।

2. हदीस पाक से दलाइल

हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह. अपनी तफ़्सीर में लिखते हैं कि नेकबख़्त और इज़्ज़तदार औरत का निशान घूंघट है ताकि

बदनीयत फ़ासिक़ और फ़ाजिर उनके साथ छेड़-छाड़ न करें। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत हैं :

أمر الله نساء المؤمنين إذا خرجن من بيوتهن في حاجته أن يغطين وجوههن من فوق رؤسهن بالجلابيب ويبدين عينا واحدة. (تفسير ابن كثير ٣/٥١٩)

अल्लाह तआला ने मोमिन औरतों को हुक्म दिया है कि वह किसी ज़रूरत के तहत घर से निकलें तो अपने चेहरों को सरों की तरफ़ से चादर से ढांप लें और सिर्फ़ एक आँख खुली रखें।

इससे मालूम हुआ कि बेपर्दगी शरीफ़ और ग़ैरतमंद औरत का काम नहीं हैं।

हदीस पाक में आया है المرأة عورة (और छिपाने की चीज़ है) बस औरत की ज़िम्मेदारी है कि अपने आपको ग़ैर-महरम मर्दों से छिपाए। अगर घर में रहकर छिपाए तो सबसे अफ़ज़ल है ताकि कोई मर्द उसकी जसामत यानी डील डौल और चाल-ढाल को न देख सके। अगर किसी शरई ज़रूरत की वजह से घर से बाहर निकलना पड़े तो जिस्म और कपड़ों की ज़ेब व ज़ीनत को चादर या बुर्के वग़ैरह से छिपाए। ऐसा न हो कि किसी नफ़्सपरस्त आदमी की नज़र पड़े और वह उस औरत की इज़्ज़त को ख़राब करने के मंसूबे तैयार करने लगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि एक दफ़ा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था। आपने सहाबा किराम से सवाल पूछा ما خير للنساء औरतों के लिए क्या चीज़ बेहतर है? सहाबा किराम ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया। इसी दौरान मुझे घर जाना पड़ा तो मैंने फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से यही सवाल पूछा। उन्होंने जवाब दिया :

خير لهن أن لا يرين الرجال ولا يرونهن

औरतों के लिए बेहतर है कि न वह तो मर्दों को देखें और न ही मर्द उनको देखें।

मैंने यह जवाब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया اِنَّهَا بِضْعَةٌ مِّنِّيْ- वह मेरे जिस्म का टुकड़ा है। (मआरिफ़ुल क़ुरआन 7/216)

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया हया ईमान का हिस्सा है।

पर्दे का मंशा हया है और हया औरत की फ़ितरत है। जब औरत ज़मीर के ख़िलाफ़ काम करती है तो बेहया बन जाती है और शर्म व हया को एक तरफ़ रख देती है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

اِذَا لَمْ تَسْتَحِيْ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ۔(مشکوۃ ۴۰۳,۲)

जब तू बेहया बन जाए तो फिर जो चाहे कर।

इससे मालूम हुआ कि बेहयाई बेपर्दगी का सबब बनती है। अल्लाह तआला किसी को हया जैसी नेमत से महरूम न फ़रमाए। (आमीन)

हदीस पाक में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया,

اِنَّ الْمَرْاَةَ عَوْرَةٌ فَاِذَا خَرَجَتْ اسْتَشْرَفَهَا الشَّيْطَانُ۔(ابن کثیر ۳/۴۸۲)

औरत छिपाने की चीज़ है जब घर से निकलती है तो शैतान उसे झांकता है।

"शैतान झांकता है" इसके दो माइने हो सकते हैं। एक तो शैतान लईन उसे घर से निकलता देखकर ख़ुश होता है कि अब मुझे इसको ग़ैर-महरम की तरफ़ और ग़ैर-महरम को इसकी तरफ़ माइल करने में आसानी हो गई। शैतान इस औरत को बदनज़री करवाता है और ग़ैर-महरम को उसके जाल में फँसाता है।

दूसरे माइने यह है कि शैतानी, शहवानी, नफ़सानी ज़िन्दगी

गुज़ारने वालें लोग औरत को घर से बाहर ललचाई हुई नज़रों से देखते है। ऐसे फ़ासिक़ लोग शैतान के नुमाइन्दे होते हैं। उनके झांकने को शैतान का झांकना कहा गया है।

नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِتْنَةً عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ. (متفق عليه مشكوة كتاب النكاح)

(मैंने अपने बाद मर्दो के लिए औरतों से ज़्यादा बड़ा फ़ित्ना कोई नहीं छोड़ा।)

इससे मालूम हुआ कि औरत मर्द के लिए सबसे बड़ी आज़माइश है। फ़ुक़्हा ने लिखा है कि पर्दा वाजिब होने का मदार फ़ित्ना है। इसीलिए बूढ़ी औरत जिसकी तरफ़ जिन्सी मैलान नहीं रहता उसके चेहरे का पर्दा करने में नरमी दी गई हैं। जवान औरत की तरफ़ मर्द का मैलान फितरी तौर पर ज़्यादा होता है लिहाज़ा उसे पर्दे में रहना चाहिए। अगर औरत किसी ज़रूरत की वजह से घर से निकले तो पर्दे के साथ निकले ताकि उसके ज़रिए से शैतान मर्दो को फित्ने में न डाल सके।

इमाम अहमद रह. ने उम्मुल-मोमिनीन सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है :

كُنْتُ أَدْخُلُ بَيْتِيَ الَّذِي فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَإِنِّي وَاضِعٌ ثَوْبِي وَأَقُولُ إِنَّمَا هُوَ زَوْجِي وَأَبِي. اى مدفونان فيه

मैं उस कमरे में दाख़िल होती जिसमें नबी अलैहिस्सलातु वस्सलम दफ़न हैं तो अपनी चादर रख देती और कहती थी कि यहाँ तो सिर्फ़ मेरे शौहर और मेरे वालिद दफ़न है लेकिन जब उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को दफ़न किया गया तो अल्लाह की क़सम मैं उनसे हया की वजह से ख़ूब अच्छी तरह पर्दा कर लिया करती थी।

इससे पर्दे की अहमियत का अंदाज़ा लगाना चाहिए कि हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा तो क़ब्र में दफ़न आदमी से भी

पर्दा कर रही हैं जबकि आज की बेपर्दा औरतें ज़िन्दा जीते जागते मर्दों से पर्दा नहीं करतीं। दीनदार औरतों के लिए हज़रत आएशा का अमल रोशनी का मीनार है।

हदीस पाक में आया है :

وكانت حفصة وعائشة (رضى الله عنهما) يوما ر عند النبى ﷺ جالستين فدخل ابن ام مكتوم (رضى الله عنه) وكان اعمى فقال النبى ﷺ احتجبا منه فقالتا يا رسول الله ﷺ اليس هو اعمى لا يبصرنا ولا يعرفنا. فقال افعمياوان انتما الستما تبصرانه. (ابو داؤد ترمذى نسائى الكبائر للذهبى ١٨٨)

एक बार उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा और आएशा रज़ियल्लाहु अन्हमा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास बैठी हुई थीं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु घर में दाख़िल हुए। ये नाबीना सहाबी थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों से फ़रमाया कि पर्दा करो। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! क्या यह नाबीना नहीं हैं, न हमें देख सकते हैं नही पहचान सकते हैं? नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया क्या तुम दोनों भी नाबीना हो? क्या तुम इसे देख नहीं रही हो?

पर्दे की अहमियत पर इससे ज़्यादा वाज़ेह और बड़ी दलील और क्या हो सकती है।

3. अक़्ली दलाइल

1. एक बुज़ुर्ग रेलगाड़ी से लाहौर से जैकबाबाद आ रहे थे। रास्ते में किसी स्टेशन पर एक कोट-पतलून पहने नई तहज़ीब के चाहने वाले नवजवान सवार हुए। थोड़ी देर के बाद नवजवान ने बुज़ुर्ग से पूछा, "आप मुझे दीने इस्लाम के आलिम नज़र आ रहे हैं, अगर आप मुझ इजाज़त दें तो क्या मैं एक सवाल पूछ सकता हूं।" बुज़ुर्ग ने जवाब दिया, "जी

हाँ आप पूछें।" नवजवान ने कहा, "इस बात की इजाज़त क्यों नही देता कि मर्द और औरतें इकठ्ठे मिलकर काम किया करें," बुज़ुर्ग ने उस नवजवान को क़ुरआन व हदीस की रोशनी में कई जवाबात दिए मगर नवजवान की तबियत मुतमइन न हुई। वह कहने लगा कि आप मुझे अक़्ली दलील से समझाएँ कि इसमें क्या रुकावट है? बुज़ुर्ग ने समझाया कि जब मर्द और औरतें मिलकर काम करेंगे तो दिल एक-दूसरे की तरफ़ माइल होंगे। कई हँसते बसते घर उजड़ जाएँगे। कई कुँवारी लड़कियाँ बिन ब्याहे माँ बन जाएँगी। समाज में फ़साद मच जाएगा। नवजवान कहने लगा कि इन्सान अगर अपनी तबियत पर कंट्रोल करे तो लड़का-लड़की की मिली जुली तालीम या नौकरी में क्या हरज है? बुज़ुर्ग ने देखा कि सीधी उंगली से घी नहीं निकल रहा तो सोचा कि टेढ़ी उंगली से निकालना पड़ेगा। ये नवजवान अक़्ल का अंधा है। इसके दिमाग़ पर भी पर्दा है। लिहाज़ा इसको दूसरे अंदाज से समझाना पड़ेगा। उनकी टोकरी में नींबू रखा था। उन्होंने निकालकर चार टुकड़े किए और चूसने लगे। नवजवान भी गर्मी की शिद्दत की वजह से ललचाई हुई नज़रों से उनकी तरफ़ देखने लगा। उन्होंने पूछा कि आप क्या देख रहे हैं? नवजवान ने कहा, नींबु देखकर मुँह में पानी आ जाता है बुज़ुर्ग ने कहा अब तबियत पर कंट्रोल का मसअला क्या बना? अगर नींबू देखकर मुँह में पानी आ जाता है तो इसी तरह नवजवान ग़ैर-महरम लड़की को देखकर दिल में गुनाह का ख़्याल आ ही जाता है और यही चीज़ ज़िना का सबब बनती है। दीने इस्लाम ने इस बुराई का रास्ता रोकने के लिए औरत को हुक्म दिया कि अव्वल तो घर में ही रहे। अगर किसी ज़रूरत के तहत निकलना पड़े तो पर्दे में निकले ताकि ग़ैर मर्दों की नज़र न पड़े और वह किसी मुसीबत में गिरफ़्तार न हो। नवजवान ने शर्म से सर झुका लिया।

2. अगर किसी आदमी के ज़िम्मे ड्युटी लगाई जाए कि एक लाख रुपये की रक़म एक शहर से दूसरे शहर किसी आदमी को पहुँचा दें। तो वह आदमी अव्वल तो रक़म ले जाने से घबराएगा कि रास्ते में जेबकतरे होते हैं ऐसा न हो कि मेरी जेब की रक़म ही ग़ायब कर दें बल्कि अगर किसी चोर डाकू को पता चल गया तो वह तो जान से भी मार देगा और रक़म भी ले उड़ेगा। इससे बेहतर है कि इसको बैंक वग़ैरह के ज़रिए ट्रान्सफ़र करवा दिया जाए ताकि किसी को पता ही न चले। अगर उसे मजबूर किया जाए कि इसके सिवा कोई चारा नहीं कि आप रक़म ख़ुद पहुँचाएँ तो वह आदमी इस रक़म को पोशीदा जेब या जगह में डालेगा और सारे रास्ते फ़िक्रमंद रहेगा। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि वह स्टेशन पर लोगों के सामने रक़म निकालकर गिनना शुरू कर दे। यह तो दूसरे लोगों को दावत देना होगी कि आ बैल मुझे मार।

बिल्कुल इसी तरह अगर कोई नेक औरत घर की चारदीवारी से बाहर निकलना चाहे तो अव्वल तो वह घबराती है कि मुझे बिना वजह को बाहर जाना पड़ा है। अगर मजबूरी और माज़ूरी और ज़रूरत हो तो वह बापर्दा होकर निकलती है और रास्ते में फ़िक्रमंद रहती है कि कोई उचक्का बदमाश उसके पीछे न लग जाए। यह कभी नहीं हो सकता कि वह ग़ैर मर्दों के मजमे में अपनी ज़ेब व ज़ीनत का इज़्हार करे और अपनी इज़्ज़त दांव पर लगाए। अगर कोई बदनीयत आदमी उसके पीछे पड़ गया तो इज़्ज़त भी लूट लेगा और जान से भी मार देगा। शरअ शरीफ़ में इसीलिए पर्दे का हुक्म दिया गया हैं ताकि औरतों की इज़्ज़त व नामूस पर कोई हाथ न डाल सके। जो लड़कियाँ बेपर्दा बाज़ारों में घूमती फिरती हैं उनके अग़वा वग़ैरह के वाक़िआत रोज़ाना अख़बारों की ज़ीनत बनते हैं। वे दूसरों को तमाशा

दिखाती-दिखाती ख़ुद ही दूसरों के लिए तमाशा बन जाती हैं।

3. अगर किसी आदमी ने क़साब की दुकान से चंद किलो गोश्त ख़रीदना है तो उसे कपड़े या थैले वग़ैरह में छिपाकर घर ले जाता है। ऐसा नहीं हो सकता कि वह गोश्त को थाल में डालकर सर पर रखे और रास्ते में चले। उसे ख़तरा होता है कि चील क़व्वे वग़ैरा झपट पड़ेंगे और गोश्त को उड़ा ले जाएँगे। इसी तरह अगर पचास किलो की नवजवान लड़की घर से बेपर्दा हालत में निकले तो इनसान भेड़िए उसके गिर्द मंडलाना शुरू कर देते हैं और कई बात तो पूरा पचास किलो को ही ग़ायब करदेते हैं। इसीलिए नेक औरतें पर्दे में लिपटकर निकलती हैं कि उनकी जान, माल और इज़्ज़त व आबरू पर कोई हमला न हो सके। सोचने की बात है कि जो लोग अपनी जवान बेटियों को बेपर्दा निकलने की इजाज़त दे देते हैं क्या उनकी नज़र में बेटी की क़द्र व क़ीमत चंद किलो गोश्त के बराबर भी नहीं है। हैरत की बात है कि परिन्दे गोश्त ले गए तो सिर्फ़ माली नुक़सान होगा जिसकी भरपाई हो सकती है और अगर किसी ने बेटी की इज़्ज़त ख़राब कर दी तो इस नुक़सान की भरपाई नहीं हो सकती। दिल कहेगा अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गयीं खेत।

4. हर इनसान को अल्लाह तआला ने फ़ितरी तौर पर ग़ैरत का जज़्बा अता किया है। वह हर्गिज़ नही चाहता कि कोई ग़ैर आदमी उसके घर की औरतों पर बुरी नज़र उठाए। अगर वह किसी को अपनी महरम औरतों से बुराई करता हुआ देखे तो हर्गिज़ बर्दाश्त नहीं कर सकता बल्कि मरने-मारने पर तुल जाता है। कई बार तो ख़ाविन्द अपनी बीवी को या बाप अपनी बेटी को, या भाई अपनी बहन को और बेटा अपनी माँ को क़त्ल कर देता है।

5. आजकल अख़बारों में इस तरह की ख़बरे छपती रहती हैं। एक औरत की बेपर्दगी कई ख़ानदानों की इज़्ज़त ख़ाक में मिला देती है। लिहाज़ा इनसानी ग़ैरत और ईमानी ग़ैरत का तक़ाज़ा है कि औरत हिजाब पहनकर निकले और मर्द लोग अपनी नज़रें नीचे रखें ताकि समाज में फ़साद न फैले।
6. नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने औरतों के बारे में फ़रमाया :

نَقِصَاتُ الْعَقْلِ وَدِيْنٍ(مشکوۃ ۱۶،۱۲)

(अक़्ल और दीन के एतिबार से नाक़िस।)

औरत की फ़ितरत है कि वह अमूमन फ़िसलती भी जल्दी है और फिध्लाती भी जल्दी है। बड़े-बड़े अक़्लमंदों की अक़्ल पर पर्दा डाल देती है। जज़्बाती होने की वजह से घड़ी में तो तोला, घड़ी में माशा होती है। इसीलिए शरअ शरीफ़ ने तलाक़ का हक़ मर्द के इख़्तियार में रखा है। अगर मान लें कि औरत को इख़्तियार दे दिया जाता तो वह एक दिन में सत्तर मर्तबा तलाक़ देती और सत्तर मर्तबा रूजू करती। किसी से ख़ुश हो तो अपना सब कुछ उसके ख़ातिर लुटा देती है अगर किसी से नाराज़ हो तो उसे ज़िन्दा भी देखना नहीं चाहती। अन्दर ख़ाने ज़्यादती भी ख़ुद करती है मगर लोगों की निगाह में मज़लूम बनकर दिखा देती है। एक काम करने को अपना दिल चाह रहा होता है मगर ज़बान से ना-ना कह रही होती है। ज़रा-सी नोक-झोंक पर शौहर की सारी ज़िन्दगी की ख़ुशअख़्लाक़ी पर पानी फेर देती है। कहती है कि मैंने तेरे घर में आकर देखा ही क्या है। तू जो कुछ करता है अपने लिए करता है मेरे लिए नहीं करता। मामूली बात पर लानत भेजना शुरू कर देती है। कमज़ोर तो है फिर अपने मरने की दुआएं करने लग जाती है। माल की मुहब्बत इस क़द्र होती है कि अगर मियाँ कहे कि हम आपके जिस्म में कीलें ठोंकना चाहते हैं मगर होंगी सोने की

तो फ़ौरन पूछेगी फिर देर क्यों कर रहे हो जल्दी करें न आप, अपना काम जल्दी समेटें। गुस्से और हसद की आग में जल-भुनकर कबाब बनी हुई होती है। फ़ैशन की इतनी दीवानी कि चाहती है कि जैसे कपड़े मैं पहनू वैसे कोई दूसरा न पहने। अगर एक बार कपड़े पहन लिए तो उताकर किसी दूसरे को दे दूँ, दोबारा धोकर न पहनने पड़ें। कोई तारीफ़ कर दे तो फूली नहीं समाती। दुश्मन को दोस्त और ग़ैर को अपना समझना शुरू कर देती है। तबियत के इस उतार चढ़ाव की वजह से कहा जाता है कि उसकी अक़्ल कामिल नहीं नाक़िस है। लिहाज़ा उसका घर की चारदीवारी में रहना ही उसके लिए बेहतर है। अगर कोई आदमी पूरा पागल हो तो उसे पागलख़ाने के कमरे में बंद रखा जाता है। और क्योंकि नाक़िसुल अक़्ल है लिहाज़ा उसे ज़रा बड़ी जगह यानी घर की चारदीवारी में रहने को कहा जाता है। अगर बाहर निकलना है तो पर्दे में लिपटकर निकले और महरम मर्द के साथ निकले ताकि न तो यह किसी का ईमान ख़राब करे न ही कोई इसकी इज़्ज़त ख़राब करे।

शरई पर्दे के तीन दर्जे

क़ुरआन मजीद फ़ुरक़ाने हमीद की मुख़्तलिफ़ आयतों पर ग़ौर करने से यह बात वाज़ेह होती है कि शरई पर्दे के तीन दर्जे हैं। एक सबसे बेहतर दर्जा, दूसरा दर्मियान दर्जा और तीसरा निचला दर्जा है। मुख़्तलिफ़ औरतों के मुख़्तलिफ़ हालात की सूरत में हर औरत किसी-न-किसी दर्जे पर अमल ज़रूर कर सकती है। शरअ शरीफ़ ने इनसानी हालात की वजह से इसमें वुसअत रखी है। पर्दे का मदार फ़ित्ने पर है और फित्ने से बचने के लिए जितनी एहतियात हो सके उतना ही ज़्यादा बेहतर है।

1. बेहतरीन दर्जा घर में रहकर पर्दा करना

इर्शाद बारी तआला है :

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ

(और तुम अपने घरों में क़रार पकड़ो।)

लिहाज़ा औरत के लिए पर्दे की सबसे आला सूरत यही है कि घर की चारदिवारी में वक़्त गुज़ारे। अपने घर को अपनी जन्नत समझे। औरत काम-काज और ज़िक्र व इबादत से फ़ारिग हो तो घर के सहन में खेलकूद सकती है। लड़कियाँ आपस में आँख मिचौली खेलें, रस्सी फलांगे, पेंगे चढ़ाएँ, हल्की-फुलकी वरज़िश करें, ट्रेडमल मशीन पर दौड़ लगाए, सहन छोटा तो पर्दे वाली छत इस्तेमाल की जा सकती है ताकि वरज़िश हो जाए और ग़ैर मर्दो की नज़रों से दूर अपने घरों में छिपी औरतें दुनिया में मस्त रहें। न डर न ख़ौफ़ न फ़िक्र न ग़म और शरई हदों में रहते हुए जिस्मानी वरज़िश की ज़रूरत पूरी हो गई। अक्सर औरतें घर में झाड़-फूंक, कपड़े धोने, इस्तरी करने, खाने-पकाना, सफ़ाई सुथराई वग़ैरह के काम करके थक जाती हैं। मज़ीद वरजिश की ज़रूरत ही महसूस नहीं होती।

लिहाज़ा घर में रहते हुए औरत की हर ज़रूरत पूरी हो जाती है। इस दर्जे पर अमल करनेवाली औरत विलायत के दर्जात पाने वाली और कुर्ब इलाही को हासिल करनेवाली होती है।

2. दर्मियान दर्जा यानी बुर्क़े का पर्दा

अगर मजबूरी में बाहर निकलना ही पड़े तो बुर्क़ा या चादर में ख़ूब अच्छी तरह लिपटकर निकलें। इर्शाद बारी तआला है :

يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَابِيبِهِنَّ

अपने ऊपर चादर ओढ़ लें।

आजकल पर्दादार औरतें बुर्क़ा पहनकर जिस्म को छिपा लेती हैं जबकि दस्ताने और मोज़े पहनकर हाथ पाँव की ज़ीनत को

छिपा लेती हैं। जबकि बाज़ इलाक़ों शिटिल-कॉक का बुर्क़ा इस्तेमाल होता है। ये सब कुछ जलबाब ही क़िस्म है। इसी तरह देखने वाले ग़ैर-मर्दों को क़द व क़ामत और जसामत का अंदाज़ा हो भी जाए तो भी ज़ीनत छिपी रहने की वजह से फ़ित्ने का अंदेशा कम होता है। यह एहतियात करनी ज़रूरी है कि बुर्क़ा इतना नक़्श व निगार वाला न हो कि देखनेवाला समझे कि अन्दर कोई हूर की बच्ची मौजूद है। आजकल मर्दों के लालची निगाहें औरत के बक़िया जिस्म पर न भी पड़े तो हाथ पाँव पर नज़र डालते ही औरत के हुस्न व जमाल का अंदाजा लगा लेते हैं। इसलिए हाथ पाँव भी छिपाने ज़रूरी है। यह पर्दे का दर्मियानी दर्जा है। इस दर्जे पर अमल करनेवाली औरत तक़्वे पर अमल करनेवालों में शुमार होती है।

३. आख़िरी दर्जा यानी (मजबूरी का पर्दा)

पर्दे का आख़िरी दर्जा यह है कि औरत मजबूरी की वजह से घर से निकले और चादर या बुर्क़ा इस तरह पहने कि उसके हाथ पाँव आँखें वग़ैरह खुली हों। इर्शाद बारी तआला है :

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا

(अपना सिंगार न दिखलाए मगर वह जो ख़ुद ज़ाहिर हो जाए।

औरत के लिए अपनी ज़ीनत की किसी चीज़ को मर्दों के सामने ज़ाहिर करना जाएज़ नहीं सिवा इसके जो अपने आप ज़ाहिर हो ही जाती हैं यानी काम-काज और नक़्ल व हरकत के वक़्त जो चीज़ें आदतन खुल ही जाती हैं और उनका छिपाना बहुत मुश्किल होता है। उनके इज़्हार में कोई गुनाह नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि इससे मुराद हथेलियाँ और चेहरा है मगर यह उस वक़्त है जब फ़ित्ने का ख़ौफ़ न हो। अगर फ़ित्ने का डर है तो फ़ुक़्हाए उम्मत का

(इज्मा) (इत्तिफ़ाक़) है कि औरत के लिए चेहरा और हथेलियाँ खोलना भी जाएज़ नहीं।

बस इस आयत से यह बात साबित हुई कि अगर लेन-देन की ज़रूरत में औरत के हाथ पाँव और आँखे खुली हों तो कोई गुनाह नहीं होगा। मगर इस आयत से यह बात कहीं साबित नहीं होती कि मर्दों को उनके आज़ा की तरफ़ देखना जाएज़ हैं मर्दों के लिए तो हुक्म वही है कि अपनी निगाहें पस्त रखें। शरई ज़रूरत के बग़ैर औरत के हाथ पाँव और चेहरे को न देखें।

चेहरे का पर्दा

आजकल कुछ नई सोच के दानिशवरों की तरफ़ से यह प्रोपगंडा भी बड़े जोश व ख़रोश से किया जा रहा है कि इस्लाम में पर्दे का हुक्म तो है लेकिन इसमें चेहरे का पर्दा शामिल नहीं है हालाकि हुस्न और ज़ीनत का असल मर्कज़ तो इनसान का चेहरा है और आज के फ़ित्ना व फ़साद और ग़लबे हवस के ज़माने में इसका छिपाना ज़्यादा ज़रूरी है। इलाज या अदालती गवाही और पहचान की शरई ज़रूरत के अलावा औरत के लिए चेहरे के खोलने की इजाज़त नहीं है। चंद दलाइल नीचे लिखे जाते है :

1. क़ुरआन मजीद ने فَاسْئَلُوهُنَّ مِن وَّرَاءِ حِجَابٍ का हुक्म देकर बात खोल दी है कि चेहरा छिपाना भी ज़रूरी है। अगर चेहरा खोलना होता तो पर्दे के पीछे से बातचीत करने का हुक्म बेमानी था।
2. जब पर्दे की आयतें يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَابِيبِهِنَّ नाज़िल हुई तो अज़्वाजे मुतह्रात को तालीम दी गई कि सहाबा किराम रज़ि॰ से अपना चेहरा छिपाए। कौन कह सकता है कि वह ख़ुदा बचाए नंगे सर फिरती थीं और पर्दे की आयतों के ज़रिए उनको सर छिपाने का हुक्म हुआ।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु इसकी तफ़्सीर फ़रमाते

हैं कि अल्लाह तआला ने मुसलमान औरतों को हुक्म दिया कि जब वह किसी ज़रूरत से निकलें तो सर के ऊपर अपनी चादरें लटकाकर अपने चेहरों को ढांप लें। (तफ़्सीर इब्ने जरीर)

इमाम मुहम्मद बिन सीरीन रह. ने हज़रत उबैद बिन सुफ़ियान बिन हारिस से पूछा कि इस हुक्म पर अमल करने का तरीक़ा क्या है? उन्होंने चादर ओढ़कर तरीक़ा बताया और अपनी माथे और नाक और एक आँख को छिपाकर सिर्फ़ एक आँख खुली रखी। (तफ़्सीर इब्ने जरीर)

3. हदीस की किताबों अबूदाऊद तिर्मिज़ी, मौत्ता वग़ैरा में लिखा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलहि वसल्लम ने औरतों को हालते एहराम में चेहरों पर नक़ाब डालने और दस्ताने पहनने से मना फ़रमा दिया था। इससे ज़ाहिर होता है कि उस दौर में चेहरों को छिपाने के लिए नक़ाब और हाथों को छिपाने के लिए दस्तानों के इस्तेमाल का रिवाज आम हो चुका था।
4. हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मर्द हमारे क़रीब से गुज़रते और हम औरतें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हालते एहराम में होती थीं तो हम अपनी चादरें अपने सरों की तरफ़ से अपने चेहरों पर डाल लेती थीं और जब वे गुज़र जाते तो मुँह खोल लेती थीं। (अबूदाऊद)
5. ज़वाज़िर में इब्ने हिजूर मक्की रह. ने इमाम शाफ़ई रह. का मज़हब नक़ल किया है कि अगरचे औरत का चेहरा और हथेलियाँ सतर औरत के फ़र्ज़ में दाख़िल नहीं है, इनको खोलकर भी नमाज़ हो सकती है मगर ग़ैर-महरम मर्दों को उनका देखना बिला शरई ज़रूरत के जाएज़ नहीं यानी औरत के लिए उनका दिखाना जाएज़ नहीं।
6. इमाम मालिक रह. का मशहूर मज़हब भी यही है कि ग़ैर महरम औरत के चेहरे और हथेलियों पर नज़र करना शरई

उज़्र के बग़ैर-जाएज़ नहीं।

7. उल्लामा शामी रह. अपने फ़तावा में लिखते हैं :

والمعنى تمنع من الكشف لخوف ان يرى الرجال وجهها فتقع الفتنة
لانه مع الكشف قد يقع النظر اليها بشهوة. (در مختار ۲۴۸۱)

औरत को चेहरा खोलने से रोका जाएगा ताकि मर्द देखने न पाएँ क्योंकि चेहरा खुलने की सूरत में शहवत भरी निगाह उन पर पड़ती है। (दुर्रे मुख़्तार 24811)

8. अंग्रेज़ी का मक़ूला है :

Face is index of mind.

चेहरा दिमाग़ का इंडेक्स होता है। लिहाज़ा किसी आदमी के चेहरे को देखकर उसकी पूरी शख़्सियत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। शर्म व हया, नेकी व बदी, ग़मी व ख़ुशी का अंदाज़ा चेहरे से ही हो जाता है। लिहाज़ा चेहरे का छिपाना ज़रूरी है।

9. जब किसी लड़की का रिश्ता पसन्द किया जाता है तो उसका चेहरा देखा जाता है। अगर किसी लड़की का चेहरा छिपा दें तो क्या जिस्म के बक़िया हिस्सों को देखकर उसकी शख़्सियत का अंदाज़ा लगा सकते हैं। इससे मालूम हुआ कि चेहरे का पर्दा इंतिहाई ज़रूरी है।

10. अगर ग़ैर-महरम मर्द व औरत एक-दूसरे का चेहरा देख लें तो बग़ैर बातचीत और गुफ़्तगू किए एक-दूसरे से मुहब्बत करने लग जाते हैं। बक़ौल शायर—

आँखों-आँखों में इशारे हो गए
हम तुम्हारे तुम हमारे हो गए

क्योंकि चेहरे ही सबसे ज़्यादा फ़ित्ने की जगह हैं। लिहाज़ा चेहरे को पर्दे से मुस्तसना (अलग) करना जिहालत और गुमराही की दलील है।

एतिराज़ात

अगर किसी मज्लिस में पर्दे का मसअला छिड़ जाए तो बेपर्दा औरतें तड़प उठती हैं और अपनी बेपर्दगी को जाएज़ साबित करने के लिए तरह-तरह के एतिराज़ात करती हैं। इस तरह बेपर्दगी जाएज़ तो नहीं हो सकती। अलबत्ता उनके गुनाह की शिद्दत में इज़ाफ़ा हो जाता है। गुनाह को गुनाह समझकर करनेवाला अगर तौबा करे तो गुनाह जल्दी माफ़ हो जाता है जबकि गुनाह को जाएज़ समझकर करनेवाला तो कुफ़्र की हदों तक पहुँच जाता है। हुज्जत क़ायम करने के लिए चंद एतिराज़ात उनके जवाबात समेत पेश किये जाते हैं :

पहला एतिराज़

चादर या बुर्क़ा पहनने से क्या होता है। असल पर्दा तो आँखों का हुआ करता है?

जवाब : लोग कहते हैं कि पर्दा आँखों का हुआ करता है, उन्हें चाहिए कि फिर नंगे फिरा करें। उन्हें कपड़े पहनने की क्या ज़रूरत है? ज़रा बेलिबास होकर घर की ही औरतों के सामने आए तो ख़ुद ही अक़्ल ठिकाने आ जाएगी। यह एतिराज़ वही औरतें करती हैं जिनकी अक़्ल पर पर्दा पड़ जाता है या जिनके मर्दों की अक़्ल पर पड़ जाता है—

बेपर्दा नज़र आयीं मुझे चंद बीबियाँ
अकबर ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गड़ गया
पूछा जो उनसे आपका वो पर्दा क्या हुआ
कहने लगीं के अक़्ल पे मर्दों की पड़ गया

हमारे ख़्याल से ऐसे एतिराज़ात उस वक़्त पैदा होते हैं जब दिल पे ग़फ़लत का पर्दा पड़ जाता है। आम दस्तूर यही है कि पहले आँखों से पर्दा उतरता है उसके बाद चेहरे से पर्दा उतारा जाता है।

दूसरा एतिराज़

पर्दा तालीम के रास्ते में रुकावट है?

जवाब : हम यह कहते हैं कि पर्दा तालीम के रास्ते में रुकावट नहीं है बल्कि मददगार हैं जिन तालीमी इदारों में लड़के लड़कियाँ इकट्ठे तालीम पाते हैं वहाँ आए दिन नए अफ़साने जन्म लेते हैं। लड़कियाँ बन संवरकर अपने हुस्न की ज़कात निकालने आती हैं और लड़के उनकी जादूगरियों की वजह से उन पर डोरे डालने में लगे रहते हैं। न लड़कों की तवज्जेह पढ़ाई की तरफ़ होती है न ही लड़कियों की तवज्जेह पढ़ाई की तरफ़ होती हैं बेचारों को हाल कुछ इस तरह होता है—

किताब खोलकर बैठू तो आँख रोती है
वर्क़ वर्क़ तेरा चेहरा दिखाई देता है

और कई जगहों पर तो प्रोफ़ेसर लड़कियों पर क़ुर्बान होते फिरते हैं—

जब मसीहा दुश्मने जाँ हो तो क्या हो ज़िन्दगी
कौन राह बतला सके जब ख़िज़र बहकाने लगे

इन तमाम मसाइल का बेहतरीन हल यही है कि लड़कियों के तालीमी इदारे अलग हों और लड़कों के तालीमी इदारे अलग हों। लड़के लड़कियाँ एक-दूसरे के चेहरे पढ़ने के बजाए किताबों के पढ़ने में मशगूल रहें।

तीसरा एतिराज़

पर्दा समाजी तरक़्क़ी में रुकावट है क्योंकि समाज का आधा हिस्सा मफ़लूज (बेकार) हो जाता है और समाज की तरक़्क़ी अपना किरदार अदा नहीं कर सकता।

जवाब : पहली बात तो यह समझने की है कि हम तरक़्क़ी किसे समझते है? क्या औरत का सिर्फ़ घर से निकलकर दफ़्तरों में, कल्बों में और पब्लिक मुक़ामात पर आ जाना समाजी तरक़्क़ी

है या यकसू होकर अपनी उन ज़िम्मेदारियों को अदा करना तरक़्क़ी है जो कुदरत की तरफ़ से उसे दी गई हैं। औरत की असल ज़िम्मेदारी यह है कि वह मआशरे को बेहतरीन नस्ल मुहैय्या करे जो मुस्तक़बिल को बनाने वाली बन सके। यह तभी हो सकता है जब औरत घर में रहकर यकसूई के साथ अपनी औलाद की तर्बियत करे।

तरक़्क़ी को यूरोप वालों के मैयार से देखने की ज़रूरत नहीं बल्कि तरक़्क़ी को उस मैयार से देखने की ज़रूरत है जो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ायम किया हैं

चौथा एतिराज़

पर्दा औरतों के लिए क़ैद की मानिन्द है?

जवाब : क़ैद और पर्दे के अल्फ़ाज़ व मानी में बहुत ज़्यादा फ़र्क़ है। क़ैद कहते हैं किसी आदमी को उसकी मर्ज़ी व मंशा के ख़िलाफ़ किसी जगह बंद कर देना। जबकि पर्दा कहते हैं औरत का अपनी ख़ुशी से ग़ैर-मर्दों की नज़र से ओझल रहना। क़ैद का मंशा होता हैं कि लोग उस आदमी के शर से बच जाए जबकि पर्दे का मंशा यह होता है कि औरत ग़ैर-मर्दों के शर से बच जाए। जब कोई आदमी अपना लिबास तब्दील करना चाहे तो वह पसन्द नहीं करता कि दूसरे लोग उसका सतर देखें। लिहाज़ा वह किसी कमरे में या दीवार वग़ैरह की ओट में लिबास तब्दील कर लेता है तो इसे क़ैद नहीं कहते पर्दा कहते हैं। मालूम हुआ कि क़ैद मजबूरी में होती है जबकि पर्दा ख़ुशी से होता है।

क़ैद अरमान के जुर्म की सज़ा के तौर पर होती है जबकि पर्दा तो ईनामाते इलाहिया हासिल करने की नीयत से होता है। बस औरत पर्दे में रहकर क़ैद नहीं होती बल्कि बहुत सारी आफ़तों मुसीबतों से आज़ाद हो जाती है।

पाँचवाँ एतिराज़

बुर्क़ा तो ढकने की मानिन्द है, बुर्क़े वालियाँ भी तो ग़लत हरकतें करती हैं?

जवाब : यह बात ज़हन में बिठा लें कि पर्दे वालियों में भी गड़बड़ बेपर्दगी की वजह से होती हैं अगर वह बेपर्दगी से पूरे तौर पर बच जाए तो गड़बड़ का सवाल ही पैदा नहीं होता। एक नुक्ता ग़ौर करने के लायक़ है कि अर पर्दे वालियाँ भी थोड़ी-सी बेपर्दगी कर बैठती हैं तो गड़बड़ हो जाती है तो फिर जो औरतें पर्दा करती ही नहीं उनसे क्या कुछ हो जाता होगा। इसलिए देखा गया है कि बेपर्दा फिरनेवाली औरतों का अक्सर वक़्त अपने कारनामों पर पर्दा डालने में गुज़र जाता है।

छठा एतिराज़

कुछ औरतें कहती हैं कि हम तीन बच्चों की माँ बन गयी, अब हमें कौन देखता है?

जवाब : देखनेवाले तो तीस बच्चों की माँ को भी देखने से बाज़ नहीं आते। फिर तीन बच्चों वाली माँ के क्या कहने। एतिराज़ करनेवाली ने कैसे फैसला कर लिया कि अब हमे कौन देखता है। हम कहते हैं कि अगर मान लें किसी ने देख लिया तो शामत तो आपकी ही आएगी। ऐसे बेकार बहानों से बेपर्दगी जाएज़ तो नहीं हो सकती। अगर कोई उनसे सवाल करे कि क्या आप तीन बच्चों की माँ बनने के बाद ख़ाविन्द की तवज्जोह के क़ाबिल नहीं रहीं। अगर ख़ाविन्द की ज़रूरत आपसे पूरी हो सकती है तो फिर ग़ैर मर्द के लिए क्या रुकावट है?

لکل ساقط لاقطه

हर गिरी पड़ी चीज़ को उठाने वाला कोई-न-कोई होता है।

सातवाँ ऐतिराज़

आप ख़ुद सोचें कि अगर पर्दे वालियों को ग़ैर मर्द इतनी

शौकिया नज़रों से देखते हैं तो फिर बेपर्दा फिरने वालियों को कैसी हवसनाक नज़रों से देखते होंगें। हमारे ख़्याल से जैसे क़साई बकरी को देखते है इस नज़र से देखते होंगे। दलील इसकी यह है कि पर्दे वाली को देखने से काले कपड़े के सिवा कुछ नज़र नहीं आता मगर बेपर्दा औरत को देखकर तो उन्हें सब कुछ नज़र आ जाता है। यह भी अन्दाजा हो जाता है कि गोश्त कितने किलो है और चर्बी कितने किलो है।

बेपर्दगी के इबरतनाक अंजाम

अंग्रेज़ी माहौल में महरम ग़ैर-महरम और पर्दा व बेपर्दगी का कोई तसव्वुर नहीं है। नंगापन और बेहयाई अपने उरूज पर है। पढ़े लिखे तहज़ीबदार लोग दीन से बेख़बर होने की वजह से हैवानों से भी परे के बने हुए हैं। घरों में बच्चों के सामने माँ-बाप एक-दूसरे को चूमने-चिपटने में मशगूल होते हैं। औरतें और मर्द घरों में शार्ट लिबास पहनकर फिरते हैं। मर्द और औरत अपनी ख़ुशी से ज़िना करें तो उसे क़ानून की नज़र में जुर्म ही तसव्वुर नहीं किया जाता। अन्दरूनी कैफ़ियत दो वाक़िओं से वाज़ेह हो सकती है :

1. एक काफ़िर ने अपने घर में गाड़ी चलाने के लिए ड्राइवर रखा जो मुसलमान था। चंद सालों के बाद काफ़िर को किसी दफ़्तरी काम की वजह से तीन माह के लिए घर से दूर किसी मुल्क में जाना पड़ा। उसने ड्राइवर को ताकीद की कि अपनी ड्यूटी ठीक-ठीक अदा करते रहना। घरवालों का ख़ूब ख़्याल रखे। ड्राइवर रोज़ाना अपनी ड्यूटी पर हाज़िर हो जाता और घर की ज़रूरत की कोई चीज़ लानी होती तो ला देता। बेगम साहिबा को किसी काम से घर से बाहर ले जाना पड़ता तो ले जाता। पंद्रह दिन गुज़रने के बाद दिन एक बेगम साहिबा ने उसे कमरे में बुलाया और कहा कि

आओ मेरे साथ ज़िना करो। ड्राइवर ने सोचा कि मैं अपने अफ़सर के साथ ख़्यानत कैसे करूँ। लिहाज़ा उसने इंकार कर दिया। बेगम साहिबा ने इस बात का बुरा मनाया और ड्राइवर को गुस्से में निकाल दिया। तीन माह में बेगम साहिबा ने ड्राइवर से आठ दस बार उस ड्राइवर से ज़िना की फ़रमाइश की जो उसने पूरी न की। जब अफ़सर वापस आया तो अगले दिन ड्राइवर से पूछने लगा कि क्या मेरी बीवी ने तुमसे ज़िना की ख़ाहिश ज़ाहिर की थी? उसने कहा, जी हाँ मगर मैंने इनकार कर दिया था। मैं आपके साथ ख़्यानत कैसे कर सकता था। अफ़सर कहने लगा, ओ बेवक़ूफ़ ख़्यानत क्या बला होती है? यह बताओ कि अगर मेरी बीवी को सदमे की वजह से कुछ हो जाता तो कौन जिम्मेदार होता, तुम्हें उसका हुक्म मानना चाहिए था तुम जैसे नाफ़रमान को घर में नौकर नहीं रख सकता। लिहाज़ा आज से तुम्हारी छुट्टी हैं तुम्हें नौकरी से फ़ारिग कर दिया गया।

2. देहाती इलाक़े में रहनेवाला काफ़िर नवजवान एक दिन नहा धोकर बन संवरकर कल्ब जाने लगा तो उसकी बहन ने रास्ते में रोककर पूछा कि कहाँ जा रहे हो? उसने कहा, नाइट कल्ब मे अपनी जिन्सी ज़रूरत पूरी करने जा रहा हूँ। नवजवान बहन कहा क्या मैं ज़िन्दा नहीं हूँ। तुम्हारी ज़रूरत मैं अच्छे तरीक़े से पूरी कर सकती हूँ। चुनाँचे नवजवान बहन के कमरे में गया और जब मुँह काला करके उठने लगा तो बहन ने कहा, भाइ! जिन्सी एतिबार से अब्बू तुम्हारे मुक़ाबले में ज़्यादा क़वी हैं।" भाई ने जवाब में कहा, "हाँ अम्मी की भी यही राय है।"

इन वाक़िआत से अन्दाज़ा हो सकता है कि काफ़िर माहौल में रज़ामंदी के साथ ज़िना कोई जुर्म नहीं है। काफ़िर की ख़ाहिश है कि मुसलमानों के मआशरे में से भी हया को ख़त्म कर दिया

जाए ताकि ज़िना आम हो सके। इसलिए पॉप-म्युज़िक और नंगी फ़िल्मों के ज़रिए उन्होंने मुसलमान मआशरे पर चढ़ाई कर दी हैं जो मुसलमान फिरंगी तौर तरीक़े अपनाकर ख़ुश होते हैं, बेपर्दगी इख़्तियार करते हैं, बच्चों को पास बिठाकर जिन्सी फ़िल्में देखते हैं उनके घरों के हालात इबरतनाक हद तक बुरे होते हैं।

फ़िरंगी मुल्क मे हमारे डाक्टर साहब के पास आनेवाली एक नीचे तब्क़े की बेपर्दा औरत ने घरों के हालात सुनाकर मशवरे तलब किए तो उनकी हैरत की हद नहीं रही। मालूम हुआ कि इन मालदार घरानों से ग़ैरत का जनाज़ा निकल चुका है। महरम औरतों से ज़िना करनेवाली कुर्बे क़यामत की निशानी पूरी हो गई। बेपर्दगी के सैलाब ने शर्म व हया के अहसासात को ख़त्म करके रख दिया। फ़िरंगी मुल्कों में रहनेवाले बाज़ मुसलमानों से हया रुख़्सत हो चुकी हैं।

जब डाइटिंग टेबल पर आम पीने की चीज़ों की जगह शराब की बोतल रखी जाएगी तो फिर अंजाम क्या होगा। निहायत अफ़सोस के साथ चंद वाक़िआत क़लमबंद किए जाते हैं :

1. फूफ़ी की ज़ुल्फ़ें

एक फ़िरंगी मुल्क में एक लड़की की उम्र 29 साल हो गई मगर कोई मुनासिब रिश्ता न मिलने की वजह से शादी न हो सकी। उसको अपने भतीजे से लगाव पैदा हो गया। लिहाज़ा मौक़े-मौक़े काम-काज की ग़र्ज़ से घर बुलाती और अपनी ख़ूबसूरत ज़ुल्फ़ः सीने पर डालकर उसको प्यार से गले लगातीं भतीजे की उम्र 18 साल थी। चंद दिन झिझकता रहा मगर फूफ़ी की नज़रें करम में इज़ाफ़ा होता देखकर उसने नाजाएज़ ताल्लुक़ात क़ायम कर लिए। मिस्ल मशहूर है सौ दिन चोर के एक दिन साध का। एक दिन राज़ खुल गया। पूरे ख़ानदान में रुसवाई हुई। मुँह दिखाने के क़ाबिल न रहे।

2. ख़ाला की मुस्कराहट

फ़िरंगी माहौल में रहनेवाली ख़ाला जब बहन के घर आती तो पंद्रह साल भांजे को कहती कि तुम हमारे घर कभी आकर रहा करो। चुनाँचे गर्मियों की छुट्टियों में भांजा अपनी ख़ाला के घर रहने के लिए गया। ख़ालू नाश्ता करके दफ़्तर चले गए तो ख़ाला ने भांजे को बुलाकर पास बिठाया और उसके मुँह से लुक़्मे डालने लगी। दो दिन के हंसी मज़ाक का नतीजा यह निकला कि भांजे ने ख़ाला का बोसा लिया तो ख़ाला नाराज़ होने के बजाए मुस्कराकर कहने लगी, आपका शुक्रिया। उसके बाद वही कुछ हुआ जो शैतान चाहता है। एक दिन ख़ाविन्द ने उनकी ग़लत हरकत को देख लिया तो लड़की को तलाक़ दे दी गई। लड़के ने भागकर जान बचाई। अब दर-ब-दर धक्के खाता फिर रहा है। धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

3. बहन के फ़ैशन

माँ-बाप किसी तक़रीब में शिरकत के लिए गए तो बेटी घर में अकेली थी। थोड़ी देर बाद भाई गंदी सैक्सी फ़िल्म लेकर आया और भाई बहन ने फ़िल्म देखी। फ़िल्म में सैक्सी मंज़र इतने थे कि भाई की नीयत ख़राब हो गई। उसने बहन की तरफ़ देखकर कहा कि आज तुम्हारे कपड़े बड़े अच्छे डिज़ाइन के बने हुए हैं दिखाओं तो यह कपड़ा कितना मुलायम और नफ़ीस है बहन भाई के क़रीब हो गई। कपड़े देखने के बजाए भाई ने हंसी मज़ाक में आज़ा की जाँच पड़ताल शुरू कर दी। और आख़िर वही हुआ जो होना चाहिए था। दूसरे दिन बहन ने पंखे से लटकर फाँसी ले ली। उसकी जेब में से उसके हाथ का लिखा हुआ पर्चा निकला जिससे इस वाक़िए का पता चला।

4. मां का लापरवाही का तर्ज़

ख़ाविन्द को गुज़रे दो साल हो गए तो बेटा आमिर सोलह

साल का हो गया। माँ बेटे का हर तरह ख़याल रखती मगर बेटा बुरी सोसाइटी में गिरफ़्तार हो गया। माँ घर मे बग़ैर दुपट्टे के खुले गले वाली क़मीज़ पहनकर काम करती रही। वक़्त गुज़ारने के लिए ख़ुद भी फ़िल्म व ड्रामे देखती और बेटे को भी दिखाती। इतना कहती बेटा बाहर न जाया करो। बेटे को कई दिन ग़लत फ़िल्में देखकर ग़लत कामों का चस्का पड़ गया। एक दिन उसने चाय की प्याली में नशे की दवा मिलाकर माँ को पिलाई और वह कुछ किया जिसको लिखना क़लम के बस में नहीं।

5. बाप की नज़रे बद बेटी पर

एक बार किसी औरत ने पढ़ने के लिए अमल पूछा कि मुझे पढ़ने के लिए कुछ बताए ताकि मेरे ख़ाविन्द के दिल से मेरी जवान बेटी का ख़्याल निकल जाए।

नातक़ा सर व गिरेबा है उसे क्या कहिए

बारीक कपड़ों का इस्तेमाल

इरशाद बारी तआला है :

غير متبرجات بزينة

अपनी ज़ीनत न दिखाती फिरें।

मुफ़स्सिरीन ने इस आयत मुबारक से साबित किया है कि औरतें के लिए इतना बारीक कपड़ा इस्तेमाल करना मना है जिससे उसका हुस्न व जमाल झलकता हो।

इब्ने अरबी ने अहकामुल क़ुरआन में लिखा है :

ومن تبرج ان تلبس المرأة ثوبا رقيقا يصفها (احكام القران ۱۳۰۲)

तबर्रुज में से यह भी है कि औरत इतना बारीक कपड़ा इस्तेमाल न करे जो चुग़ली करता हो।

एक हदीस पाक में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

رب نسا. كاسيات عاريات مائلات مميلات لا يدخلن الجنة ولا يجدن ريحها. (مشكوة ص٣٧٦)

कपड़े पहनकर नंगी रहने वाली औरतें दूसरों को माइल करती हैं, ख़ुद माइल होती हैं। ऐसी औरतें न तो जन्नत में दाख़िल होंगी न उन्हें उसकी हवा लगेगी।

इस हदीस पाक में 'कासियात' के बाद 'आरियात' का लफ़्ज़ इसीलिए आया है कि वह औरतें इतना बारीक़ कपड़ा पहनती हैं कि बदन नज़र आता हैं लिहाज़ा वह नंगी के हुक्म में हैं। फ़ुक़्हा उम्मत का इज्मा (इत्तिफ़ाक़) है औरत के लिए इतना बारीक कपड़ा पहनना जिससे बदन साफ़ नज़र आए हराम है। सतर का छिपाना फ़र्ज़ है। अगर औरत इतने बारीक दुपट्टे से नमाज़ पढ़े कि जिससे उसके सर के बाल साफ़ नज़र आते हों तो नमाज़ नहीं होती। आजकल बाज़ लोग दीनदार औरतें मोटे कपड़े की शमीज़ पर बारीक कपड़े की क़मीज़ पहन लेती हैं। इससे सतर छिप जाता है। लिहाज़ा जाएज़ हैं अगरचे तक़्वा यही है कि बारीक कपड़ा इस्तेमाल न किया जाए।

उम्मे अलक़मा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की भतीजी हफ़्सा बिन्ते अब्दुर्रहमान उनसे मिलने के लिए आयीं तो बारीक़ कपड़े का दुपट्टा पहने हुए थीं। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने देखा तो उनसे दुपट्टा लेकर फाड़ दिया और उसके बदले मोटा दुपट्टा अता फ़रमाया । (मिश्कात किताबुल्लिबास)

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया है :

خذ عليك ثوبك ولا تمشو عراة. (مشكوة ص٣٧٠)

अपने ऊपर कपड़ा लाज़िम कर लो, नंगे मत फिरो।

इससे साबित हुआ कि ऐसा बारीक कपड़ा जो सतर न छिपा सके बल्कि इनसान के आज़ाए सतर साफ़ नज़र आए उसका पहनना हराम है।

बेपर्दा औरत की सज़ा

1. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं और मेरी बीवी हज़रत फ़ातिमा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हमने आपको रोता देखा। मैंने पूछा आप पर मेरे माँ-बाप क़ुर्बान हो आप क्यों रो रहे हैं? आपने इरशाद फ़रमाया ऐ अली! मैने मैराज की रात अपनी उम्मत की औरतों को देखा कि उनके मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से अज़ाब दिया जा रहा है। आज मुझे वह मंज़र याद आया तो शफ़क़त व रहमत की वजह से मुझे रोना आ गया।

मैने पहली औरत को देखा कि उसके सर के बालों के साथ उलटा लटकाया गया है और उसका दिमाग़ उबल रहा है। दूसरी औरत को देखा कि उसको ज़बान के ज़रिए लटकाया गया है और गर्म पानी उसके हलक़ में उंडेला जा रहा है। मैंने तीसरी औरत को देखा कि उसके दोनों पाँव को उसकी छातियों के साथ और दोनों हाथों को उसकी पेशानी के साथ बांध दिया गया हैं मैंने चौथी औरत को देखा कि उसको पिस्तानों के ज़रिए लटकाया गया हैं मैंने पाँचवीं औरत को देखा कि उसका सर सुअर के सर की तरह है जबकि बाक़ी बदन गधे जैसा है। मैंने छठी औरत को देखा कि उसकी शक्ल कुत्ते जैसी है और आग उसके मुँह में दाख़िल होती है और पाख़ाने के रास्ते से बाहर निकलती है। फ़रिश्ते आग के बने हुए गुरज़ों से उसके सर पर चोट लगा रहे हैं। सुनकर हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा खड़ी हो गयीं और अर्ज़ किया मेरे प्यारे अब्बू जान! मेरी आँखों की ठंडक! इन औरतों ने क्या गुनाह किए थे जिसकी वजह से इतनी सज़ा दी जा रही है?

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलम ने फ़रमाया, बेटी!

पहली औरत जिसे सर के बालों से बांधकर लटकाया गया था वह मर्दों से अपने बालों को छिपाती न थी। (नंगे सर गली कूचा बाज़ार में फिरने की आदी थी।)

दूसरी औरत जिस ज़बान के ज़रिए लटकाया गया था उसका कुसूर यह था कि वह अपने शौहर को ईज़ा देती थी। (उसके सामने ज़बान चलाने की आदी थी।)

तीसरी औरत जिसको पिस्तान के ज़रिए लटकाया गया था वह बदकार औरत थी जो ग़ैर मर्दों से ज़िना करती थी।

चौथी औरत जिसके दोनों पाँव छाती से और दोनों हाथ पेशानी से बाँध दिए गए और उस पर सांप बिच्छू छोड़ दिए गए वह औरत हैज़ और जनाबत के बाद अच्छी तरह गुसल से बदन को पाक साफ़ नहीं करती थी और नमाज़ का मज़ाक उड़ाती थी।

पाँचवीं औरत जिसका सर सुअर जैसा और जिस्म गधे जैसे था। यह औरत चुगलख़ोरी करती थी और झूठ बोलती थी।

छठी औरत जिसकी शक्ल कुत्ते जैसी और आग उसके मुँह से दाख़िल होकर पाख़ाने के रास्ते से बाहर निकलती थी तो वह औरत थी हसद करती थी और एहसान जतलाती थी। (अल्-कबाइर लिज़्ज़हबी) इमाम ज़हबी रह. एक वाक़िआ नक़्ल फ़रमाते हैं :

तर्जुमा : एक औरत दुनिया में बहुत बन-संवर कर बेपर्दा रहती थी। इसी ज़ेब व ज़ीनत के साथ बेपर्दा घर से बाहर जाया करती थी। जब उसकी वफ़ात हुई तो उसके बाज़ रिश्तेदारों ने उसे ख़्वाब में देखा कि अल्लाह तआला के दरबार में उसे पतले बारीक कपड़ों में पेश किया गया। इतने में एक ज़ोरदार हवा का झोंका आया और उसे नंगा कर दिया। अल्लाह तआला ने उससे मुँह फेर लिया और फ़रमाया कि इसे जहन्नम की बायीं तरफ़ फेंक दो क्योंकि यह दुनिया में बन-संवरकर बेपर्दा रहा करती थी।

हज़रत मज्ज़ूब रह. के चंद अशआर हैं—

यही तुझको धुन है रहूँ सबसे बाला
हो ज़ीनत निराली हो फ़ैशन निराला
तुझे हुस्ने ज़ाहिर ने धोके में डाला
जिया करता है क्या यूँही मरनेवाला
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है

नतीज़ा : बेपर्दगी की तकलीफ़ दर्दनाक, उससे ख़तरात अज़ीम और उसके नतीजे बुरे होते हैं।

पर्देदारी की बरकात

इमाम इब्ने अरबी रह. कहते हैं कि मैं मुल्के नाबलस की तक़रीबन एक हज़ार बस्तियों मे गया। उन बस्तियों में से एक में हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम को आग में डाला गया था। मैंने नाबलस की औरतों से पाकदामन औरतें कहीं नहीं देखीं। मैंने उनकी बस्तियों में बहुत देर क़याम किया मगर मैंने दिन के वक़्त किसी औरत को बाहर निकलते नहीं देखा। हाँ जब जुमा का दिन आया तो औरतें अपने घरों से मस्जिदों की तरफ़ आतीं। यहाँ तक कि तमाम मस्जिदों के ख़ास हिस्से औरतों से भर जाते। जुमा की नमाज़ के बाद औरतें अपने-अपने घरों में वापस लौट जातीं। फिर आइन्दा जुमा तक गलियों में एक औरत भी चलती-फिरती नज़र नहीं आती थी। (तफ़्सीर क़ुरतबी 14/116)

राक़मुल हुरुफ चन्द सालों से मुझे चतराल के तबलीग़ी दौरे की सआदत नसीब होती है। वहाँ एक बुज़ुर्ग आलिमे दीन ने बताया कि यहाँ पर क़त्ल व ग़ारत गिरी की वारदातें न होने के बराबर है। जब उनसे पूछा गया कि इतना अमन व सुकून आख़िर किस वजह से है? उन्होंने जवाब दिया कि हमारी औरतें पर्दे की बहुत पाबन्द हैं कई-कई महीने गली-कूचे में बेपर्दा औरत

नज़र नहीं आ सकती। इस पर्दे की बरकत से ज़िना और बेहयाई का रास्त बंद है। लिहाज़ा ख़ानदानों में दुश्मनी और रंजिश नहीं हैं हर तरफ़ अमन और आशनी मुहब्बत और भाईचारे की फ़िज़ा है। आपको एक मुसलमान दूसरे मुसलमान भाई का ख़ैरख़ाह नज़र आएगा।

अमेरिका की एक नवजवान लड़की मुसलमान हुई तो उसने बाक़ायदा नक़ाब वाला बुर्क़ा पहनना शुरू कर दिया। उससे बहुत सारी औरतों ने सवाल पूछा कि आप तो खुले माहौल से खुले बदन फिरने वाली लड़की हैं। एकदम इतना गहरा पर्दा करने से आपको तंगी नहीं होती? दम घुटता महसूस नहीं होता? आप अपने आपको क़ैद में महसूस नहीं करतीं? उसने जवाब दिया कि मैंने अपनी जवानी की रातें नाइट कल्बों और नाचघरों में गुज़ारी हैं। मैंने हर मर्द की नज़र को हवस भरी देखा। मैं गली बाज़ारों में चलती थी तो मर्दों को अपनी तरफ़ घूरता देखती थी। मेरे दिल में हर वक़्त डर रहता था कि बदमस्त बदबख़्त नवजवान मुझ पर झपट न पड़े। क्या पता इज़्ज़त भी लूटे और जान से भी मार दे। लेकिन जब से मैंने पर्दा शुरू किया है उस वक़्त से मैं लोगों की नज़र से ओझल हूँ। न तो कोई मेरे हुस्न व जमाल को देख सकता है न मुझे दिल में किसी से ख़तरा है। मैं तो पर्दे में आकर सुख की ज़िन्दगी गुज़ार रही हूँ। काश बेपर्दा औरतों में मेरे दिल के सुकून को तक़्सीम कर दिया जाता तो उन्हें भी सुकुन मिल जाता। उसने किताब लिखी है Behind the veil (पर्दे की ओट में)।

अमेरिका का सूबा मिनीसोटा में एक नवजवान मुसलमान लड़की फ़ातिमा नक़ाब वाले बुर्के में लिपटी हुई धीरे-धीरे अपने घर की तरफ़ जा रही थी। उसने हाथ में दस्ताने और पाँव में जुराबें भी पहन रखी थीं। एक पुलिस अफ़सर ने देखा तो उसे शक हुआ कि यह कपड़े में लिपटा कौन आदमी है? उसने पाँच छः पुलिस वालों को बुला लिया और कहा कि इसे गिरफ़्तार

करके पुलिस स्टेशन पहुँचाओ। पुलिस वालों ने फ़ातिमा को रोका कहा कि चेहरे से कपड़ा हटाओ ताकि हम तुम्हें देख सकें। उसने कहा किसी औरत को लाओ ताकि वह मेरा चेहरा देख सकें। आप लोग हर्गिज़ नहीं देख सकते। पुलिस वालों ने कहा कि अगर तुमने कपड़ा न हटाया तो हम तुम्हें गिरफ़्तार कर लेंगे। क्योंकि अमेरिका में 1963 ई॰ में एक क़ानून पास हुआ था कि कोई आदमी सौ फ़ीसद जिस्म को छिपाकर नहीं चल सकता। इस तरह तो बड़े-बड़े मुजरिम बचने की राह निकाल लेंगे। फ़ातिमा ने जवाब दिया कि मैं इसी मुल्क में पैदा हुई, पली बढ़ी और तालीम पाई है। मुझे मालूम है कि हमारे मुल्के के क़ानून में हर आदमी को मज़हबी आजादी देता हैं मैंने यह पर्दा किसी मजबूरी की वजह से नहीं किया बल्कि अल्लाह तआला का हुक्म समझकर किया है। यह मेरा क़ानूनी हक़ है। यह सुनकर पुलिस वाले उसे पुलिस स्टेशन ले गए। एक औरत के ज़रिए उसकी शनाख़्त करवाई। और उसे एक कार्ड बनाकर दिया कि आइन्दा तुम्हें कोई पुलिस वाला रोके तो उसे यह कार्ड दिखा देना। कार्ड पर लिखा हुआ था कि फ़ातिमा को 1963 ई॰ के क़ानून से मुस्तसना (अलग) किया जाता है। फ़ातिमा आज भी पर्दे के साथ अमेरिका की गली कूचों में चलती है। न उसे अपनी इज़्ज़त व आबरू का डर है न जान का ख़ौफ़ है। उसकी ज़िन्दगी لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ *ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यहज़नून* का मिस्दाक़ बनी हुई है।

बाब-4

मख़्लूत (मिली-जुली) महफ़िलों से बचना

मर्दों और औरतों में खुलेआम मिलना जुलना तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक किसी नबी अलैहिस्सलाम की लाई हुई शरिअत में जाएज़ नहीं रखा गया।

हज़रत मूसा अलैहिससलाम जब मदनयन पहुँचे तो उन्होंने कुँए पर हजूम देखा जो अपने जानवरों को पानी पिला रहे थे। एक तरफ़ दो लड़कियाँ अपनी बकरियों को लेकर अलग-थलग खड़ी थी। जब हजूम चला गया तो उन लड़कियों ने बचे खुचे पानी से अपनी बकरियों को झुकाया मगर मर्दों के घमसान में घुसना पसन्द न किया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पूछने पर बताया :

قَالَتَا لَا نَسْقِىْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَاءُ

बोली हम नहीं पानी पिलातीं चरवाहों के चले जाने तक।

इससे मालूम हुआ कि शरीफ़ घरानों की औरतें आम मर्दों के साथ आज़ादाना मिलने जुलने को अपनी तबियत से भी गवारा नहीं करतीं।

जामेअ तिर्मिज़ी की रिवायत है जब सैय्यदा ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह होने लगा तो पर्दे की आयतें नाज़िल हुई। उस वक़्त ज़ैन रज़ियल्लाहु अनहा अपने चेहरा दीवार की तरफ़ करके बैठी हुई थी।

وهى مولية وجهها الى الحائط. (ترمذى شريف)

वह अपना रुख़ दीवार की तरफ़ किए बैठी हुई थीं।

इससे मालूम हुआ कि पाक तबियत अपनी तबियत से इस चीज़ की तरफ़ माइल नहीं होतीं जिनसे बचने का शरिअत ने हुक्म दिया होता है। नफ़्स व शैतान हमारे दुश्मन हैं। इनको मिलकर काम करने का मौक़ा मिल जाए तो ये धीरे-धीरे नेक लोगों को भी गुनाह में सान देते हैं।

एक नाक़ाबिले इन्कार हक़ीक़त

अगर एक तंग रास्ते पर दो तरफ़ा ट्रैफ़िक चल रही हो तो गाड़ियों के टकाराने की तादाद बहुत ज़्यादा होगी अगर एक तरफ़ चले तो टकराव की तादाद कम हो जाएगी। इसी तरह अगर किसी जगह मर्दों और औरतों का आज़ादी के साथ मिलना जुलना हो तो उनके गुनाह में फंसने की उम्मीद बहुत ज़्यादा हो जाएगी। अगर पर्दे की पाबन्दी लगाकर मर्दों और औरतों को अलग-अलग कर दिया जाए तो फिर गुनाह में फंसने की उम्मीद बहुत कम हो जाएगी। शरिअत ने इसी उसूल के तहत मुसलमान मर्द ओर मुसलमान औरतों को आज़ादी के साथ घुलने-मिलने से एकदम बचने का हुक्म दिया है। मसल मशहूर है कि न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। दूसरे अल्फ़ाज़ में अगर बांसुरी बजने को खत्म करना है तो उसमें इस्तेमाल होनेवाले बांस की पैदावार को रोकना पड़ेगा यानी एहतियाती तदबीर अपनानी पड़ेगी। जो काम न करना हो उसके मौक़े से ही बचना चाहिए। जब गाड़ियाँ आमने-सामने आएँगी तो एक-न-एक दिन ज़रूर टकराएँगी। इसी तरह जब भी ग़ैर-महरम को एक-दूसरे के क़रीब होने का मौक़ा मिलेगा तो एक-न-एक दिन मिलाप हो ही जाएगा। दो माहिर ड्राइवर भी ज़रा सी ग़फ़लत करें, तो एक्सीडेंट कर बैठते हैं। इसी तरह अगर नेक लोग पर्दे में बेएहतियाती करें तो गुनाह कर बैठेंगे।

दो सुनहरी उसूल

रोज़ाना का तजरिबे और मुशाहिदे को निगाह के सामने रखते हुए कुछ लोग अच्छे-अच्छे उसूल बना लेते हैं। उनमें से दो उसूल इस तरह हैं :

1. मरफ़ी का क़ानून (Murphy's law)

If any thing can go wrong. it will go wrong.

अगर गुनाह का मौक़ा मिलता रहेगा तो एक-न-एक दिन गुनाह हो ही जाएगा।

लिहाज़ा एहतियात का तक़ाज़ा यही है कि गुनाह के मौक़े से ही बचा जाए ताकि सनने की नहीं आए। अगर किसी जगह मर्दों औरतों की मिली जुली महफ़िलें हो रही हों तो गुनाह की सूरतें सामने आती रहेंगी।

2. एहतियात शर्मिन्दगी से बेहतर है

Rather to be safe than to be sorry.

एहतियात शर्मिन्दा होने से बेहतर है।

अगर किसी काम में शर्मिन्दगी और नदामत उठाने का खतरा हो तो उस काम में एहतियात बरतनी चाहिए। इसी तरह इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त करनी हो तो मिली जुली महफ़िलों में जाने से कतराना चाहिए।

इन दोनों उसूलों को सामने रखकर यह नतीजा निकाला जा सकता है कि न तो औरत को बेहिजाब मर्दों के सामने आना चाहिए और न ही मिली जुली महफ़िलों की ज़ीनत बनना चाहिए। इसी में इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त है और यही शरिअत का हुक्म भी है।

शरिअते मुहम्मदी का हुस्न व जमाल

दीने इस्लाम के अहकाम में हुस्न व जमाल का यह आलम है कि जिन कामों से रोका गया हो उनकी शुरूआत में भी मना कर दिया गया है। मिसाल के तौर पर ज़िना को हराम क़रार दिया गया तो मर्दों और औरतों के आज़ादाना मेलजोल को भी सख़्ती से मना कर दिया। जिन मौक़ों पर मर्दों और औरतों का घुलना मिलना मुमकिन था उनके बारे में वज़ाहत से ऐसे क़ानून लागू कर दिए कि घुलने मिलना मुमकिन ही न रहे। कुछ मिसाले इस तरह है :

औरतों की तालीम का दिन जुदा

एक बार हज़रत अस्मा बिन्ते ज़ैद रज़ियल्लाहु अनहा नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ करने लगीं, "ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने पीछे रहनेवाली मुसलमान औरतों की एक जमाअत की नुमाइन्दा और क़ासिद हूँ। सब वही कहती हैं जो मैं कहती हूँ। सबकी वही राय है जो मेरी राय है। मेरी गुज़ारिश यह है कि अल्लाह तआला ने आपको मर्दों और औरतों दोनों जमाअतों के लिए रूसल बनाकर भेजा है। हमें आप पर ईमान लायीं और आपकी पैरवी की। हम औरतें घरों में पर्दे में रहती हैं। मर्दों की जिन्सी ज़रूरत भी पूरी करती हैं। उनके बच्चों को उठाए होती हैं। जबकि मर्द लोग नमाज़ बाजमाअत में हाज़िरी, नमाज़ें ज़नाज़ा में हाज़िरी और जिहाद में शिरकत की वहज से नेक कामों में हमसे बाज़ी ले गए। मर्द लोग जिहाद के लिए निकलते हैं तो हम उनके मालों की हिफ़ाज़त करते हैं। उनके बच्चों की परवरिश करते हैं। क्या हम भी उनके अज्र व सवाब में शरीक होंगे। यह सुनकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा किराम की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और

फ़रमाया कि तुमने दीन के सिलसिले में इसे बेहतर सवाल करनेवाली किसी औरत की बात सुनी है? सहाबा किराम ने जवाब दिया जी हाँ ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (वाक़ई में इस औरत ने बेहतरीन सवाल पूछा)

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया, ऐ अस्मा! जाओ और सारी औरतों को बता दो कि तुम्हारा शौहर की ख़िदमत करना, उसकी रज़ामंदी तलब करना और उसकी बात मान लेना, उस तमाम अज्र व सवाब के बराबर हो जाएगा जो तुमने मर्दों के बारे में ज़िक्र किया हैं यह सुनकर हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा अल्लाहु अकबर कहती हुई और कलिमा तैय्यबा पढ़ती हुई ख़ुशी-ख़ुशी वापस लौट गयीं।

नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने औरतों की तालीम के लिए ख़ास दिन मुक़र्रर फ़रमा रखा था। उस दिन औतरें अपने घरो से पर्दे से निकलकर उस जगह आ जाती थी और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम उनको दीन सिखाया करते थे।

औरतों की गुज़रगाह जुदा

नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने औरतों को ख़िताब करते हुए फ़रमाया :

عليكن بحافات الطريق. (ابن كثير ٢٨٤:٣)

औरतें रास्ते के किनार चलें।

अगर किसी औरत को घर से निकलकर किसी जगह जाना हो तो वह रास्ते के दर्मियान में और मर्दों में घुसकर न चले बल्कि रास्ते के किनार पर चले ताकि मर्दों से दूर रहे। रिवायत में आया है कि इस हुक्म के बाद सहाबियात रास्ते की दीवारों के इतना क़रीब चलती थीं कि उनके कपड़े दीवारों से लगते थे।

मस्जिद में दाख़िले का दरवाज़ा

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद नबवी का एक

दरवाज़ा औरतों के लिए खास करने का हुक्म फ़रमाया ताकि औरतें उस दरवाज़े से आएँ और जाएँ। मर्द लोग इस दरवाज़े के क़रीब भी न जाएँ। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह फ़रमान सुना तो मरने तक पूरी बक़िया ज़िन्दगी दिन रात के किसी वक़्त भी उस दरवाज़े से गुज़रना गवारा न किया। उस दरवाज़े का नाम 'बाबुन्निसा' पड़ गया।

अबूदाऊद शरीफ़ की रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं :

لو تركنا هذا الباب للنساء قال نافع فلم يدخل منه ابن عمر رضى الله عنه حتى مات. (سنن ابى داؤد ۱،۲،۵۸)

यह दरवाज़ा औरतों के लिए मख़्सूस कर दिया जाए। इमाम नाफ़ेअ रह॰ ने कहा कि उसके बाद हज़रत इब्ने उमर मरते दम तक उस दरवाज़े से दाख़िल नहीं हुए।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु के इस तक़्वे के क़ुरबान जाएँ। उनका यह अमल मिल जुली महफ़िलों के हामियों के मुँह पर एक ज़ोरदार तमांचा है।

औरतों की सफ़ें मर्दों से जुदा

अल्लाह तआला को नमाज़ की सफ़ों में मर्दों का औरतों से दूर रहना और औरतों का मर्दों से दूर रहना पसन्दीदा और महबूब है हालाँकि नमाज़ पढ़ते हुए इनसान कोई गंदी हरकत कर भी नहीं सकता। इसके अलावा मर्द या औरत के लिए नमाज़ की हालत में एक-दूसरे पर बुरी निगाह डालना भी मुश्किल है।

हज़रत अबू-हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से रिवायत किया है :

خير صفوف الرجال اولها وشرها آخرها وخير صفوف النساء آخرها وشرها اولها. (ابوداؤد)

मर्दों की सफ़ों में बेहतरीन सफ़ पहली सफ़ है जबकि बुरी सफ़ पिछली है। औरतों की सफ़ों में बेहतर सफ़

आख़िरी है और बुरी सफ़ पहली है।

नमाज़ में अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह और रुजू की कैफ़ियत होता है। मोमिन को किसी-न-किसी दर्जे में यह ख़्याल होता है कि मैं अल्लाह तआला के सामने खड़ा हूँ। अगर इस यकसूई की हालत में भी मर्दों और औरतों के घुलने-मिलने को पसन्द नहीं किया गया तो फिर शादी ब्याह की ग़फ़लत भरी महफ़िलों में मर्दों और औरतों का घुलना-मिलान कहाँ जाएज़ होगा।

नमाज़ में औरतों को आख़िरी सफ़ों में खड़ा होने का हुक्म इसलिए दिया गया है कि नमाज़ के लिए मर्द लोग पहले मस्जिदों में आ जाएँ, बाद में औरतें आएँ। जब जमाअत हो जाए तो औरतें जल्दी से निकलकर घरों में पहुँच जाएँ बाद में मर्द लोग मस्जिद से बाहर निकलें। शरअ शरीफ़ की इस एहतियात पर शैतान के लिए रोने-पीटने के सिवा और कुछ नहीं बचता।

औरतों का मस्जिद में आना

बावजूद इसके कि दीन इस्लाम में औरतों को मस्जिद में आने से मना नहीं किया गया। अगर वे पर्दे की हदों और शर्तों को ध्यान में रखते हुए मस्जिद में आकर जमाअत में शरीक़ हों तो इजाज़त है फिर भी पसन्द इस बात को किया गया है कि औरतें मस्जिद में आने के बजाए अपने घर में नमाज़ पढ़ें।

उम्मे हमीद साअदिया रज़ियल्लाहु अनहा से रिवायत है कि उन्होंने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलम से अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! मेरा दिल चाहता है कि मैं आपके साथ नमाज़ पढ़ूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे मालूम है मगर तेरा एक कोने में नमाज़ पढ़ना इससे बेहतर है कि तू अपने हुजरे में नमाज़ पढ़े। और तू अपने हुज़ूरे में नमाज़ पढ़े यह इससे बेहतर है कि तू अपने घर के सेहन में नमाज़ पढ़े और तेरे घर के सेहन में नमाज़ पढ़ना इससे बेहतर है कि तू जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़े। (मुसनद अहमद व तबरानी)

आखिर यह फ़र्क़ क्यों है कि मर्द के लिए तो बड़ी जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है और औरत के लिए कोने की तन्हाई में नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है? इसमे हिकमत यह है कि मर्द व औरत को आपस में घुलने-मिलने को रोका जाए।

हज में औरतों का तरीक़ा

हज इसलाम के बुनियादी अरकान में से एक रुकन है और मर्द व औरत दोनों पर फ़र्ज़ है। अगरचे यह भी एक इज्तिमाई इबादत है लेकिन इसमें भी काफ़ी हद तक मर्द व औरत को आपस में घुलने-मिलने से रोका गया है।

हज़रत अता रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर में औरतें मर्दों के साथ तवाफ़ करती थीं। मक़सद यह है कि औरतें तवाफ़ करने की जगह के किनारे पर चलती थीं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु तवाफ़ में औरतों और मर्दों को घुलने-मिलने से रोका करते थे। एक बार एक मर्द औरतों के मजमे में देखा तो पकड़कर कोड़े लगाए। (फत्हुलबारी)

जनाज़ों में शिरकत

किसी मुसलमान का जनाज़ा पढ़ना मुसलमानों के लिए फ़र्ज़े किफ़ाया है मगर औरतों को जनाज़े मे शिरकत से मना किया गया है।

इससे यह बात साबित हुई कि दीने इस्लाम में मिली-जुली महफ़िलों की कोई गुंजाइश नहीं है।

औरतों की फ़ितरत

औरत अगर नेक बने तो दुनिया की सबसे क़ीमती पूंजी बन जाती है। अगर बिगड़ जाए तो मर्दों से ज़्यादा बेहयाई और फ़हाशी फैलाती है। बुज़ुर्गों का क़ौल है कि मर्द अगर कुदाल

लेकर भी घर को गिराना चाहे तो इस क़द्र जल्दी से नहीं गिरा सकता जितनी जल्दी और एक सूई के ज़रिए से घर को गिरा देती है। इसीलिए औरत को चाहिए कि अपने ख़ाविन्द और बच्चों को अपनी तमाम तवज्जोहात का क़िब्ला बनाए। जब फ़ुर्सत मिले तो अपने रब की इबादत में वक़्त लगाए। दूसरे लोगों के साथ ज़्यादा घुलना-मिलना औरत की तबाही का बड़ा सबब होता है। जब कोई औरत अपने ख़ाविन्द से अपनी बातें छिपानी शुरू कर देती है तो यह घर बरबाद होने की वाज़ेह अलामत हुआ करती है। मर्द जितना भी बिगड़ जाए अय्यारी और फ़हाशी में बदकार औरत से आगे नहीं बढ़ सकता। इमाम स्यूती रह० ने "दुर्रेमंसूर" में हदीस नक़ल फ़रमाई है :

क़ैस बिन उबादा से रिवायत है कि जब अल्लाह तआला ने ज़मीन को बनाया तो वह घूमने लगी। फ़रिश्तों ने कहा कि यह किसी को अपने ऊपर ठहरने नहीं देगी। फिर जब सुबह हुई तो उसमें पहाड़ लगा दिए। फ़रिश्तों को पता ही न चला कि कैसे बना दिए। फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया ऐ हमारे परवरदिगार! क्या आपकी मख़्लूक़ में से कोई चीज़ इन पहाड़ों से भी ज़्यादा सख़्त है? फ़रमाया, हाँ इससे ज़्यादा सख़्त लोहा है (जो पहाड़ों को भी तोड़ फोड़ देता है)। उन्होंने पूछा कि आपकी मख़्लूक़ में कोई चीज़ लोहे से भी ज़्यादा सख़्त है? फ़रमाया कि हाँ इससे ज़्यादा सख़्त चीज़ आग है (जो लोहे को पिघलाकर रख देती है)। फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि ऐ हमारे परवरदिगार! क्या आपकी मख़्लूक़ में इससे भी ज़्यादा सख़्त कोई चीज़ है? फ़रमाया, हाँ पानी है (जो आग को बुझा देता है)। फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! क्या आपकी मख़्लूक़ में से पानी से भी ज़्यादा सख़्त कोई चीज़ है? फ़रमाया, हाँ तेज़ हवा है (जो पानी को उछाल देती है)। पूछा क्या आपकी

मख़्लूक़ में हवा से भी ज़्यादा सख़्त कोई चीज़ है? फ़रमाया, हाँ इनसान है (हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के क़ब्ज़े में हवा रही है)। फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया, ऐ हमारे परवरदिगार क्या आपकी मख़्लूक़ में मर्दों से भी ज़्यादा कोई चीज़ है? फ़रमाया, हाँ औरत है (जो मर्दों को अपने फ़रेब में फँसा लेती है)।

इस मज़मून की ताईद इस बात से भी होती है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में शैतान के मकर व फ़रेब को बयान करने के लिए इरशाद फ़रमाया :

إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيفًا (النساء)

शैतान का मकर व फ़रेब कमज़ोर और ज़ईफ़ है

जबकि क़ुरआन पाक में अज़ीज़े मिस्र का क़ौल नक़ल किया गया है :

إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ

तुम्हारा मकर व फ़रेब बहुत बड़ा है।

मक्कार औरतों के मकर व फ़रेब के चंद वाक़िआत

1. बनी इसराईल में एक नेक मर्द था। उसकी ख़ूबसूरत बीवी ने किसी नवजवान से दोस्ती कर ली। औरत ने नवजवान को ऐसी कुँजी बता दी कि जब चाहे वह औरत के पास चला आए एक दिन उसके ख़ाविन्द ने कहा, मुझे तेरी हालत अच्छी मालूम नहीं होती। लिहाज़ा पाकिज़ा पहाड़ पर जाकर क़सम उठाओ कि कोई ख़्यानत नहीं हुई है। उसने कहा, बहुत अच्छा। जब उसका ख़ाविन्द किसी काम के लिए बाहर चला गया तो औरत ने नवजवान को बुलाकर सारा माजरा सुनाया। नवजवान ने पूछा कि इससे बचाव की क्या सूरत हो सकती है? औरत ने कहा कि किराए पर गधे की सवारी करनेवालों का लिबास पहन लेना और शहर के बाहर फ़लाँ जगह पर खड़े होकर इंतिज़ार

करना। जब औरत का ख़ाविन्द आया तो उसने कहा मुक़द्दस पहाड़ पर जाने की तैयारी करो। औरत अपने ख़ाविन्द के साथ सफ़र के लिए चल पड़ी। शहर से बाहर निकलकर जब उसने गधेवाले को देखा तो बहाना करने लगी कि मैं थक गई हूँ। बाक़ी सफ़र गधे पर सवार होकर करूँगी। ख़ाविन्द ने औरत को गधे पर सवार करा दिया। जब सवारी पहाड़ पर पहुँच गई तो औरत उतरते वक़्त जानबूझ कर गिर गई और अपने सतर से कपड़ा हटा दिया। फिर अफ़सोस करती उठ खड़ी हुई और ख़ाविन्द के सामने क़सम उठाकर कहने लगी कि ख़ुदा की क़सम तेरे सिवा मेरा पोशीदा बदन किसी ने नहीं देखा मगर हाँ इस गधे वाले ने देख लिया।

2. एक औरत की नवजवान से आशनाई हो गई। जब औरत का ख़ाविन्द घर से बाहर चला जाता तो वह औरत नवजवान को घर बुला लेती और बदकारी में अपना वक़्त गुज़ारती। एक बार किसी बात पर उस औरत की नवजवान से बात बिगड़ गई। नवजवान ने गुस्से में आकर क़सम उठा ली कि तुम्हारे ख़ाविन्द के सामने तुम्हारे साथ बदकारी करके रहूँगा। कुछ दिनों के बाद गुस्सा ठंडा हुआ तो नवजवान ने कहा कि मुझे समझ नहीं आती कि मैं अपनी क़सम को कैसे पूरा करके दिखाऊँ। औरत ने कहा तुम्हारे लिए मुश्किल है लेकिन अगर मैं चाहूँ तो मेरे लिए कोई मुश्किल नहीं हैं नवजवान ने उसकी समझदारी की तारीफ़ करते हुए कहा कि तुम वाक़ई नामुमकिन को मुमकिन बना सकती हो। उस औरत के घर में खजूर का एक बहुत ऊँचा पेड़ था जिसकी खजूरें बहुत ज़ाएक़ेदार थीं मगर उस पर चढ़ने और उतरने में बहुत देर लगती थी। एक दिन उस औरत ने ख़ाविन्द से कहा कि मेरा दिल चाहता है कि इस पेड़ की खजूरें अपने हाथ से तोड़कर तुम्हें खिलाऊँ। ख़ाविन्द ने समझा कि बीवी अपनी मुहब्बत का इज़्हार करना चाहती हैं उसने औरत को इजाज़त दे दी। वह औरत रस्सीनुमा कमन्द के ज़रिए

पेड़ पर चढ़ गई। ख़ाविन्द नीचे खड़ा इंतिज़ार कर रहा था। जब औरत ने खजूरें तोड़ ली तो उसने नीचे देखा और शोर मचाना शुरू कर दिया, रोने-पीटने लगीं ख़ाविन्द हैरान हुआ कि मेरी बीवी को क्या हो गया है? जब औरत नीचे उतरी तो उसने अपने ख़ाविन्द से झगड़ा करना शुरू कर दिया कि जब मैं उपर खजूरें उतार रही थी तो मैंने नीचे देखा तो तुम्हें एक औरत के साथ ज़िना करते हुए पाया। मुझे बताओ वह कौन थी? ख़ाविन्द ने उसे बहुत यक़ीन दिलाया कि यहाँ मेर सिवा दूसरा कोई नहीं था। मैं कैसे औरत से बदकारी कर सकता हूँ। वह औरत कहने लगी, चलो मेरी आँख ने ग़लत देखा होगा, मैं तुम्हारी मुहब्बत की वजह से तुम्हारी बात को मान लेती हूँ। बात आई गई हो गई। चंद महीनों के बाद एक दिन औरत ने नवजवान से कहा कि हमारे घर क़रीब किसी जगह आकर छिप जाना। मैं अपने ख़ाविन्द को खजूर के पेड़ पर चढ़ऊँगी। जब वह ऊपर पहुँच जाए तो तुम अचानक आकर मुझसे बदकारी कर लेना और भाग जाना। यह सब तय करने के बाद औरत ने ख़ाविन्द के लिए लज़ीज़ खाना बनाकर पेश किया और कहा कि अगर तुम्हें मुझसे मुहब्बत है तो आज अपने हाथों से इस पेड़ की खजूरें तोड़कर खिलाओ। ख़ाविन्द ने बात मान ली और रस्सीनुमा कमन्द के ज़रिए पेड़ के ऊपर चढ़ गया। जब फल तोड़ने लगा तो औरत ने नवजवान को इशारा किया तो उसने औरत के साथ बदकारी शुरू कर दी। जब ख़ाविन्द खजूर तोड़ चुका तो उसने नीचे देखा कि कोई मर्द उसकी बीवी के साथ ज़िना कर रहा हैं उसने चीख़ना शोर मचाना शुरू कर दिया। नवजवान अपना काम पूरा करते ही भाग खड़ा हुआ। जब ख़ाविन्द नीचे उतरा तो उसने बीवी से कहा, बताओ तुम्हारे साथ ज़िना करनेवाला कौन था? वह कहने लगी, तुम्हारा दिमाग़ चल गया है। यहाँ तो कोई मर्द नहीं था। जब ख़ाविन्द ने कहा कि मैंने अपनी आँखों से सारा मंज़र देखा है तो औरत कहने लगी कि हाँ जब कुछ दिन पहले में पेड़ पर

चढ़ी थी मुझे भी ऐसा ही नज़ारा नज़र आया था। मगर मैंने तुम्हारी बात को क़बूल कर लिया था अपनी आँखों पर एतिबार न किया। मुझे लगता है कि इस पेड़ पर असरात हैं जिसकी वजह से चढ़नेवाले को ऐसे महसूस होता है। आप भी आँखो पर मिट्टी डालो और मेरी बात को सच तसलीम कर लो। ख़ाविन्द ने बात मान ली। औरत ख़ाविन्द के सामने बदकारी करके भी सच्ची बन गई। इसे कहते हैं तुम्हारे मकर बहुत बड़े हैं।

3. एक औरत बदकिरदार थी और अपनी राज़ की बातें अपनी सहेली को बता देती थी। उसकी सहेली ने उसे बहुत समझाया कि ग़ैर-मर्द से ताल्लुक हराम है तुम गुनाह करना छोड़ दो। वह औरत बाज़ न आई बल्कि जब भी गुनाह करती उसकी तफ़्सील अपनी सहेली को आकर बताती। उसकी सहेली ने औरत के ख़ाविन्द को इशारों में बता दिया कि अपनी बीवी की फ़िक्र करो। यह रास्ते से भटक गई हैं औरत ऐसी ज़बान ज़ोर और मक्कार थी कि उसने अपने ख़ाविन्द के ज़हन में बिठा दिया कि मुझ जैसी नेकोकार औरत शायद कोई होगी। जब सहेली ने बार-बार ख़ाविन्द को बताया तो ख़ाविन्द ने कहा अगर मैं उस औरत की ज़बान से वाक़िआ सुन लूँ तो उसकी ख़बर लूँगा। सहेली ने कहा, बहुत अच्छा। आप मेरे घर में आकर पर्दे के पीछे बैठ जाना। मैं तुम्हारी बीवी से सारी दास्तान पूछूँगी। जब वह सुनाएगी तो आप ख़ुद भी सुन लेना। मर्द ने कहा, बहुत अच्छा। सहेली ने एक दिन उस औरत के ख़ाविन्दको पर्दे के पीछे छिपा दिया और औरत से कहा कि आज मुझे तफ़्सील से बताओ कि तुम अपने आशना के साथ कैसे वक़्त गुज़ारती हो? औरत ने उसे एक-एक बात की तफ़्सील बताई। अचानक मर्द को हल्की सी खाँसी हुई तो औरत को शुब्ह पड़ गया कि पर्दे के पीछे कोई मौजूद हैं उसने अपनी दास्तान जारी रखी और सारा वाक़िआ सुनाकर कहने कि इसके बाद मेरी आँखे खुल गई। सहेली ने पूछा कि क्या मतलब? कहने लगी मैंने तुम्हें एक ख़्वाब सुनाया

है। ख़्वाब देखने के बाद मेरी आँख खुल गई। इतनें में खाविन्द ने पर्दे के पीछे से आकर कि क्या तुमने जो कुछ बताया वह हक़ीक़त है। कहने लगी हर्गिज़ नहीं, ख़्वाब की बातें हैं और ख़ाब तो किसी का भी हो सकता हैं ख़्वाब देखने पर अल्लाह तआला पकड़ नहीं करता। आप कैसे मेरी गिरफ़्त कर सकते हैं। खाविन्द शर्मिन्दा हुआ ओर बदकारी के बावजूद मक्कारी की वजह से ग़ालिब आ गई।

4. एक औरत गाँव से तांगे पर सवार हुई कि मुझे शहर जाना हैं रास्ते में तांगे वाले का दोस्त मिला। जिसने उसे क़र्ज़ के दो हज़ार रुपए अदा किए। औरत ने देख लिया कि मर्द पैसे किस जेब में डाल रहा है। जब शहर पहुँचे तो तांगे वाले ने औरत से कहा मुझे दस रुपए किराया अदा करो। औरत कहने लगी मुझे वापस भी जाना है, मेरा छोटा-सा काम अदालत में हैं इंतिज़ार कर लो। तुम्हें वापसी पर सवारी मिल जाएगी। तांगे वाला राज़ी हो गया। औरत ने तांगे वाले से कहा मेरा अदालत में एक मामला है अगर आप क़ाज़ी के सामने जाकर ये अल्फ़ाज़ कह दें कि मैंने तुम्हें तीन तलाक़े दीं तो वापसी का किराया भी अदा करूँगी और सौ रुपए ज़्यादा भी दूँगी। मर्द लालच में आ गया। उसने अदालत में जाकर बयान दे दिया। औरत ने झूठ-मूठ रोना शुरू कर दिया। मर्द तलाक़ के अल्फ़ाज़ कहकर वापस जाने लगा तो औरत ने क़ाज़ी से कहा कि इस आदमी ने मुझे तलाक़ तो दे दी। आप इससे मुझे दो हज़ार रुपए महरे हक़ दिलवाएँ। क़ाज़ी ने मर्द से कहा कि औरत को दो हज़ार रुपए मेहर हक़ अदा करो। उसने कहा यह तो मेरी बीवी नहीं है। औरत ने कहा कि पैसे बचाने के लिए ऐसा नहीं कर सकते। तुम्हारी फ़लाँ जेब मे पैसे मौजूद हैं। मैं तुम्हारी बीवी हूँ मुझे तुम्हारी हर बात का इल्म है। जब तलाशी ली गई तो दो हज़ार रुपर मिले। क़ाज़ी ने हुक्म दिया कि औरत को हक़ मेहर दिया जाए। मर्द दो हज़ार रुपए देकर शर्मिन्दा हुआ जबकि औरत मक्कारी से दो हज़ार

रुपए लेकर बाज़ार में ग़ायब हो गई।

5. हज़रत लुक़्मान अलैहिस्सलाम ने बेटे को नसीहत की कि ऐ बेटे! किसी औरत के पीछे जाने के बजाए शेर के पीछे चले जाना बेहतर है। इसलिए कि शेर आया तो जान जाएगी अगर औरत पलट आई तो ईमान चला जाएगा। एक दाना का क़ौल है कि शरीफ़ औरत से होशियार रहो और बुरी औरत से बेकिनार रहो।

मर्द की फ़ितरत

इरशाद बारी तआला है :

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ

फ़रेफ़्ता किया है लोगों को मरग़ूल चीज़ों की मुहब्बत ने जैसे औरतें।

इस आयत से मालूम हुआ कि मर्द के नफ़्स से सबसे ज़्यादा शदीद तलब औरत के साथ अपनी शहवत पूरी करने में रखी गई है।

इसकी तस्दीक़ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की हदीस पाक से भी होती है कि फ़रमाया :

مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِتْنَةً أَشَدُّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ.(متفق عليه قرطبی ۲۰۳)

मैं अपने बाद मर्दों के लिए औरत से बड़ा फ़ित्ना नहीं छोड़े जा रहा हूँ।

औरत का फ़ित्ना सारी चीज़ों से ज़्यादा ख़तरनाक और सख़्ततरीन है। इसीलिए शैतान का क़ौल है कि औरत मेरा वह तीर है जो कभी ख़ता नहीं होता। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

النساء حبائل الشياطين.(مشكوة ۱۴۴/۲)

औरतें शैतान की रस्सियाँ हैं।

जिस तरह रस्सी के ज़रिए शिकरी अपने शिकार को फँसा लेता है उसी तरह शैतान औरत के ज़रिए मर्द को गुनाह में फँसा लेता है। चंद अहम नुक्ते नीचे इस तरह है :

मर्द को मौक़ा न दें

औरतों को चाहिए कि व ग़ैर-मर्दों से दूर रहें। अगर किसी मर्द पर एतिमाद करें तो यक़ीनी तौर पर धोका खाएँगी। अक्सर मर्द इसलिए गुनाह नहीं करते कि उन्हें मौक़ा मैयस्सर नहीं होता। अगर किसी औरत पर क़ुदरत मिले और वह गुनाह न करे तो या वली होगा या फिर बेअक़्ल होगा। आम आदमी शहवत के जोश में आकर गुनाह कर बैठता है। हमारे बुज़ुर्गों ने कहा कि आज के दौर में जवान बहन, बहन को भाई पर एतिमाद करके तन्हाई में अकेले पास नहीं रहना चाहिए। शैतान फितने में मुब्तिला कर देगा। औरत मर्द की सबसे बड़ी कमज़ोरी है।

मर्द कभी बूढ़ा नहीं होता

औरत के मामले में मर्द कभी बूढ़ा नहीं होता। उसकी उमंगे और आरज़ूएं हमेशा जवानों की तरह रहती हैं। जब किसी नवजवान लड़के का निकाह हो रहा होता है तो महफ़िल में मौजूद उसके बाप और दादा दोनों के दिल में भी हसरत भरी कैफ़ियत होती है कि काश! यह हमारे निकाह की महफ़िल होती।

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने लिखा है कि एक बुज़ुर्ग की उम्र सौ साल से पार कर गई थी। एक दिन औरतें आपस में बैठी बातें कर रही थीं कि इनकी उम्र सौ साल से ज़्यादा हो गई है, इनसे पर्दा न भी किया जाए तो ठीक है। हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने उनकी बातें सुनकर उन्हें बताया कि अभी थोड़ा अरसा पहले की बात है कि एक दिन मुझे उनके साथ किसी जगह क़याम करने का मौक़ा मिला। सुबह उठकर उन्होंने ख़ादिम से कहा कि रात को एहतिलाम हो गया, गुस्ल के लिए पानी का

इंतिज़ाम कर दो। यह सुनकर औरतें ऐसे चुप हो गयीं जैसे उन्हें किसी सांप ने सूंघ लिया हो।

दिल नहीं भरता

उलमा ने लिखा है कि चंद चीज़ों से इनसान का दिल कभी नहीं भरता, मसलन-? :

1. आसमान देखने से

हर आदमी रोज़ाना आसमान को देखता है। नीला रंग, बादल, सूरज, चाँद और सितारे वग़ैरह मगर कोई आदमी ऐसा न मिलेगा जो यह कहे कि आसमान देखे-देख कर मेरा दिल भर गया है। मैं उकता चुका हूँ। हर रोज़ नए शौक़ के साथ इनसान आसमान के सितारों को देखता है।

2. पानी पीने से

हर आदमी रोज़ाना पानी पीता है मगर इसके बावजूद उससे तबियत कभी सेर नहीं होती। एक दिन जितना भी पेट भरकर पानी पी ले। दूसरे दिन फिर प्यास की शिद्दत की वजह से पानी की तलब पैदा होगी। यह तो हो सकता है कि बनाए हुए शर्बत पीने से तबियत उकता जाए मगर पानी से तबियत नहीं उकता सकती।

3. बैतुल्लाह देखने से

अल्लाह तआला ने बैतुल्लाह शरीफ़ को देखने में ऐसी लज़्ज़त रख दी है कि आदमी एक दफ़ा देखे तो दोबारा देखने की ख़्वाहिश पैदा होती है। एक बार देखा है बार-बार देखने की तलब है। बक़ौल शायर—

يزيدك وجهه حسنا　　اذا ما زدته نظرا

ऐ महबूब जितना ज़्यादा मैं तुम्हारी तरफ़ देखता हूँ उतना ज़्यादा मेरी मुहब्बत में इज़ाफ़ा होता है।

4. मर्द का दिल औरत से

यह भी खुली हक़ीक़त है कि मर्द का दिल औरत से कभी सैराब नहीं होता। अगर वक़्ती तौर पर ज़रूरत पूरी होने की वजह से कशिश महसूस न हो लेकिन दो चार दिन के बाद तबियत के अंदर मेल-मिलाप की ख़्वाहिश पैदा होगी। और इन्सान को मिले बग़ैर चैन की नींद नहीं आएगी। अगरचें इनसान जवानी से बुढ़ापे की उम्र में पहुँच जाए मगर औरत की कशिश में कमी नहीं आती। शायद भूख, प्यास, नींद की तरह शहवानी ज़रूरत भी इनसान की फ़ितरत का हिस्सा है तो मौत तक इनसान के साथ ही रहती है।

हड़ताल फ़क़त जाँच पड़ताल

एक अमीर आदमी ने पूरी ज़िन्दगी अय्याशी में गुज़ार दी। बुढ़ापे की उम्र को पहुँचकर वह जिन्सी तौर पर औरत के क़ाबिल न रहा। मगर इसके बावजूद पेशेवर औरतों को भारी रक़म के ऐवज़ अपने पास बुलाता और लिपटा-चिपटा कर उन्हें वापस भेज देता। एक औरत ने उससे पूछा कि जब तुम औरत के साथ हमबिस्तरी के क़ाबिल नहीं रहे तो इतने पैसे ख़र्च करके तुम्हें आख़िर क्या मिलता है? उसने जवाब दिया कि चाहे मैं नाक़ाबिल हूँ मगर औरत को नंगी हालत में देखकर उसके आज़ा को हाथ लगाकर और लिपटकर मेरी शहवत पूरी हो जाती है। मेरे जिस्म में बुढ़ापे की वजह से हड़ताल है। बस मैं आज़ा की जाँच पड़ताल करके वक़्त गुज़ार लेता हूँ। सुना है कि एक शायर को खाने-पीने की बहुत हवस थी। वह दस्तरख़ान पर खाना खाते थक जाता। जब बीवी दस्तरख़ान समेटने के लिए आती तो कहता—

गो हाथ में जुंबिश नहीं आँखों में तो दम है
रहने दो अभी सागर ओ मीना मेरे आगे

यह शेर उस अय्याश अमीर की हालत की सही तर्जुमानी करता है।

बकरे बकरी का खेल

अल्लामा दमीरी ने हयातुल हैवान में लिखा है कि एक बूढ़े आदमी ने बकरियाँ और बकरे पाले हुए थे। वह रोज़ाना बैठकर घंटों बकरे और बकरियों को देखता रहता। किसी ने पूछा कि तुम अपना वक़्त ज़ाए करते हो? उसने जवाब दिया कि मैं ख़ुद तो बुढ़ापे की वजह से बीवी के क़ाबिल नहीं रहा। लिहाज़ा मैं बकरे बकरियों को देखता रहता हूँ। जब कोई बकरा शहवत के साथ बकरी पर सवारी करता है तो मुझे अपनी जवानी याद आ जाती है।

बोसीदा हड्डियों में कशिश

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि अगर किसी जगह दो बोसीदा हड्डियाँ क़रीब रख दी जाएँ तो वह भी आपस मे जुड़ने की कोशिश करेंगी। किसी ने वज़ाहत पूछी तो फ़रमाया कि अगर किसी बूढें और बुढ़िया को इकठ्ठा रहने का मौक़ा मिल जाए तो वह भी एक-दूसरे के साथ इकठ्ठे हो जाएँगे।

हज़रत सिद्दीक़ी रह. का क़ौल

उलमा और सुल्हा के इमाम हज़रत ख़्वाजा अब्दुलमालिक सिद्दीक़ी मर्द और औरत की आपसी कशिश का तज़्किरा करते हुए फ़रमाते थे कि मर्द के अन्दर औरत की शहवत इस क़द्र रख दी गई है कि अगर औरत किसी रास्ते से गुज़रे और उसके क़दमों के निशान ज़मीन पर रह जाएँ। फिर बाद में किसी मर्द को उसी रास्ते से गुज़रना पड़े और उसके पाँव औरत के पाँव के

निशान पर पड़ जाएँ तो भी मर्द के अन्दर शहवत बेदार हो जाती है।

ख़ुलासा

ऊपर लिखे हक़ाइक़ से यह बात खुलकर सामने आती है कि औरत के मामले में मर्द की हवस कभी पूरी नहीं होती। शादी-शुदा मर्दों में औरत का तज़्किरा छिड़ जाए तो हर एक नई शादी करने के लिए तैयार नज़र आता हैं एक प्रोफ़ेसर साहब घर में बैठे नाविल पढ़ रहे थे। उनकी बीवी बन-संवरकर उनके क़रीब मौजूद थी और ख़ाविन्द की नज़रे इनायत चाहती थी। प्रोफ़ेसर साहब उस तरफ़ ध्यान ही नहीं दे रहे थे। लंबे इंतिज़ार के बाद औरत ने क़रीब आकर कहा कि काश मैं भी किताब होती ताकि आप घंटों देखते रहते। प्रोफ़ेसर साहब बोले कितना अच्छा होता आप डायरी होती कि मैं उसे हर साल बदल सकता।

इससे वाज़ेह होता है कि मर्द कुँवारा हो या शादी-शुदा हो उसे ग़ैर-महरम औरत के क़रीब होने का मौक़ा ही नहीं दिया जाना चाहिए। एक नवजवान रेल में सफ़र पर जाने के लिए स्टेशन पर पहुँचा। इंतिज़ारगाह में एक पर्दानशीन औरत भी रेलगाड़ी के इंतिज़ार में बैठी थी। किसी वजह से इत्तिला मिली की गाड़ी दो घंटे लेट है। नवजवान ने सोचा चलो इस औरत से ही बातचीत बढ़ाते हैं। उसने पहले पूछा क्या आप भी गाड़ी पर जाने के लिए यहाँ बैठी हैं? औरत ने हाँ मैं सर हिला दिया। नवजवान की हिम्मत बढ़ी कि वक़्त भी तन्हाई का है और औरत बात का जवाब भी दे रही है। ज़रा और बात बढ़ाई जाए। उसने दोबारा पूछा कि मैं आपके लिए कोई शर्बत या ठंडी बोतल ले आऊँ? औरत ने पहले तो इनकार किया मगर बार-बार इसरार पर हाँ कर दी। नवजवान भागकर ठंडी बोतल ले आया। औरत ने पीकर एक तरफ़ रख दी। कुछ देर बार नवजवान ने पूछा कि क्या आपके लिए कुछ और खाने की चीज़ ले आऊँ? औरत ने

सर के इशारे से इनकार कर दिया। नवजवान बार-बार पूछता रहा। इधर स इसरार और उधर से इनकार। इसी तरह काफ़ी देर गुज़र गई। आख़िर नवजवान को दूर रेढ़ी वाला फल बेचनेवाला नज़र आया तो उसने बड़े मस्त अंदाज़ से पूछा क्या मैं आपके लिए सेब ले आऊँ? औरत ने सर हिलाकर इनकार किया। नवजवान ने बड़ी मुहब्बत भरी आवाज़ में कहा, क्या बात है आप मेरी कोई चीज़ क़बूल नहीं कर रही हैं। औरत चुप रही। जब नवजवान ने मिन्नत समाजत की हद कर दी कि आप आख़िर फल क्यों नहीं खाना चाहती? तो औरत ने तंग आकर कहा कि मेरे मुँह में दाँत नहीं हैं। मैं अस्सी साल की बुढ़िया हूं। नवजवान शर्मिन्दा हुआ और वहाँ से खिसक गया।

एक तरफ़ तो औरत के मामले में मर्दों का इतना पतला हाल है। दूसरी तरफ़ किसी औरत की नीयत में फ़ुतूर आ जाए तो मकर व फ़रेब की वजह से वह ख़ाविन्द की नाक के नीचे दिया जलाकर दिखा देती है। इसीलिए शरअ शरीफ़ ने मर्द और औरत के आज़ादाना मिलने जुलने पर क़तई पाबन्दी लगा दी है। न तो शैतान को गुनाह करवाने का मौक़ा मिले न ही इज़्ज़तों के जनाज़े निकलें और न ही मआशरे में फ़साद फैलाने की सूरत रहे।

मख़्लूत तालीम (को-एजुकेशन) के नुक़सानात

आजकल स्कूलों और कालिज़ों में लड़के-लड़कियों की एक साथ तालीम आम होती जा रही है। जिसके बुरे और ग़लत नतीजे सामने आ रहे हैं। तजुरिबात से भी यही बात साबित हो रही है :

واثمهما اكبر من نفعهما

इनके मुनाफ़े से इनके नुक़सान बहुत ज़्यादा हैं।

ग़ैर-महरम की झिझक ख़त्म

मख़्लूत तालीम वाले इदारों में पढ़नेवाले लड़कों और लड़कियों में सबसे पहली बुनियादी तब्दीली यह आती है कि ग़ैर-महरम से बात करने की झिझक ख़त्म हो जाती है। लड़कियाँ प्रोफेसरों से और अपनी क्लास के लड़कों से खुले तौर पर बातचीत करती हैं। होम-वर्क के नाम पर दुनिया जहान की बातें गुफ़्तगू का उनवान बनती हैं और बात निजी ज़िन्दगी तक पहुँच जाती है। बक़ौल किसी के—

ज़िक्र जब छिड़ गया क़याम का
बात पहुँची तेरी जवानी तक

फिर जब जवानी की बातें शुरू होती हैं तो सूरतेहाल वही बनती है—

दोनों तरफ़ है आग बराबर लगी हुई

ग़ैर-महरम से बात करते हुए तबियत में झिझक का होना अल्लाह तआला की नेमतों में से एक बड़ी नेमत है। इसकी वजह से गुनाह का दरवाज़ा बंद रहता है। आम हालात में ज़रूरत के वक़्त कोई मर्द ग़ैर औरत से बातचीत करेगा तो औरत की निगाहें शर्म व हया की वजह से नीचे झुकी रहेंगी। जब मख़्लूत तालीमी माहौल में ग़ैर-महरम से बात करने की झिझक ख़त्म हो जाती है तो फिर निगाहें झुकने के बजाए दूसरे के चेहरे पर पड़ती हैं। और यह तो हक़ीक़त है कि जहाँ निगाहें चार हुई वहीं अचार की तरह एक-दूसरे को खा जाने को दिल करता है। दिल चाहता है—

इंतिहा तक ही पहुँच जाएगी
तुम कहानी की इब्तिदा तो करो

फ़ैशनपरस्ती

जब लड़की ऐसे माहौल में रहे जहाँ ग़ैर-महरम की जुस्तजू

वाली प्यासी निगाहें उस पर पड़े तो उसका जी चाहता है कि लोग मेरे हुस्न व जमाल से मुतास्सिर हों। मेरी तारीफ़ करें। बस बन-संवरकर रहती है ताकि हूर की बच्ची नज़र आ सके। गुफ़्तगू करते वक़्त बातचीत में लोच होती है। चलने फिरने में नाज़ व अंदाज़ होता है। बक़ौल शायर—

बिजलियाँ देखने वालों पे गिराते आए
तुम जिधर आए उधर आग लगाते आए

ऐसे माहौल में तालीम की तरफ़ तवज्जोह नहीं रहती। तस्वीर की तरफ़ ध्यान रहता हैं ख़ौफ़े ख़ुदा दिलों से निकल जाता है। गुनाह से नफ़रत के बजाए गुनाही की हसरत दिल में पैदा हो जाती है। इनसान नफ़्सपरस्ती, औरतपरस्ती और शहवतपरस्ती की राह पर चल निकलता हैं लड़कियाँ फ़ैशनपरस्ती की दिलदादा बन जाती है। नतीजा लड़कियाँ और लड़के दोनों ख़ुदापरस्ती से दूर हो जाते हैं।

दोस्ती यारी के ताल्लुक़ात

मख़्लूत तालीमी इदारों में लड़के और लड़कियों के दर्मियान नाजाएज़ ताल्लुक़ात होने के वाक़िआत आए दिन पेश आते रहते हैं। शैतान का काम आसान हो जाता है। स्कूल कॉलेज आने जाने के वक़्त में मेल-मिलाप के मौक़े मिल जाते हैं। एक शहर में एक बड़ी सड़क का नाम सिक्स रोड (Six Road) है, मगर लोगों ने इसका नाम (Sex Road) रख दिया है। लड़के और लड़कियाँ अपने घरों में पहुँचकर फ़ोन के ज़रिए एक-दूसरे से घंटों बातें करते हैं। मोबाइल फ़ोन के ज़रिए बिस्तर पर लेटे-लेटे एसएमएस (SMS) पैग़ाम एक-दूसरे को पहुँचाते रहते हैं। हत्ता की बात आख़री हदों तक पहुँच जाती है।

जिन्सी गुमराही

फ़िरंगी मुल्कों में नगापन अपने उरूज पर है। मख़्लूत महफ़िलें रोज़ाना का मामूल बन गई हैं। जिन्सी गड़बड़ी अपने पिछले रिकॉर्ड तोड़ चुकी है। कुछ हक़ाइक़ पेश ख़िदमत हैं।

1. तीसरी जमाअत का तालिब-इल्म

गवर्मेन्ट स्कूलों में तीसरी क्लास के तालिब इल्म को मर्द व औरत के जिन्सी ताल्लुक़ात के बारे में बताना शुरू कर दिया जाता है। एक मुसलमान माँ ने रोते हुए फ़ोन पर कहा कि काश! यहाँ ऐसे स्कूल होते जिनमें हमारे बच्चे मुसलमान उस्तादों की निगरानी में तालीम पाते। आज मेरा बेटा स्कूल से वापस आया तो उसने मुझसे सवाल किया कि अम्मी जब अब्बू आपसे हमबिस्तरी करते हैं तो क्या गुब्बारा (Condom) इस्तेमाल करते हैं? उसके अल्फ़ाज़ मेरे दिल व दिमाग़ पर बिजली बनकर गिरे। मैंने गुस्से का इज़्हार करने के बजाए प्यार से बेटे से पूछा कि तुम्हें यह सवाल पूछने की नौबत कैसे आई? उसने कहा आज स्कूल में तीसरी क्लास के टीचर ने तमाम बच्चों और बच्चियों को मर्द व औरत के जिन्सी ताल्लुक़ात के बारे में बताया। फिर दो उंगलियों पर गुब्बारा चढ़ाकर बताया दिखाया कि इस तरह अज़्व ख़ास पर गुब्बारा चढ़ाकर हमबिस्तरी करने के दो फ़ायदे हैं, एक तो औरत के बच्चा नहीं ठहरता दूसरे बीमारी एक दूसरे को नहीं लगती। उसके बाद बच्चे ने अपनी माँ को बताया कि पीरियड ख़त्म होने के बाद लड़के लड़कियाँ आपस में मज़ाक़ कर रहे थे। एक लड़की अपने दोस्त लड़के को कह रही थी कि मैं गुब्बारे के बग़ैर तुम्हें कुछ नहीं करने दूँगी। लड़के ने जवाब दिया कि मैं घर में गुब्बारे की चोरी करके लाऊँगा फिर हम प्रैक्टिकल करेंगे। इस पर वहाँ मौजूद सब लड़के लड़कियों ने ज़ोरदार क़हक़हा लगाया।

2. शर्म मार मिकाऊ स्कीम

फ़िरंगयों के नज़दीक शर्म एक सिफ़्त नहीं बल्कि बीमारी है। इसको खत्म करने के लिए छोटी क्लास में लड़के लड़कियों को आसपास वाली सीटों पर बिठाया जाता है। रोल नंबर इस तरह दिए जाते हैं कि लड़के दोनों तरफ़ लड़के होते हैं और हर लड़के दोनों तरफ़ लड़कियाँ होती हैं। उस्ताद की ड्यूटी होती है कि वह इस बात पर नज़र रखे कि लड़के लड़कियाँ आपस में खुली बातचीत हँसी मज़ाक़ या छेड़-छाड़ करते हैं या नहीं करते। अगर कोई लड़की दूसरे लड़कों से दूर-दूर रहे तो उस्ताद उसको समझाता है कि ऐसा करना मुनासिब नहीं है। अगर लड़की फिर भी न समझे तो माहिर नफ़्सियात (साइक्लोजिस्ट) को बुलाकर उसे चैकअप करवाया जाता है कि आख़िर यह नार्मल क्यों नहीं हैं हर महीन एक या दो दफ़ा स्वीमिंग क्लास रखी जाती है जिसमें लड़के लड़कियों को हुक्म दिया जाता है कि अपने जिस्म से तमाम लिबास उतारकर नहाएं। एक लड़के ने माँ को यह बताया कि जब हम स्वीमिंग पूल में नहा रहे थे तो लड़के-लड़कियाँ एक-दूसरे के पोशीदा आज़ा बड़े ग़ौर से देख रहे थे। कुछ शरारती लड़के तो ख़ुद अपने आज़ा दूसरों को दिखाते फिर रहे थे। ये सब कुछ इसलिए किया जाता है कि लड़के-लड़कियों के दर्मियान झिझक ख़त्म हो जाए यानी शर्म का बीज ही मार दिया जाए।

इससे अगली क्लास के बच्चों को जिन्सी फ़िल्में दिखाई जाती हैं ताकि हर लड़के और लड़की को अच्छी तरह पता चल जाए कि जमाअ का तरीक़ा क्या है? अगर मुसलमान माँ-बाप स्कूल के प्रिन्सिपल को लिखकर दें कि हमारे बच्चे को यह क्लास नहीं लेनी हम ख़ुद ही मुनासिब वक़्त पर उसे शादी-शुदा ज़िन्दगी के बारे में बता देंगे तो ऐसी हालत में उसके लड़के को क्लास से जाने की इजाज़त दे दी जाती है। मगर अगले पीरियड में साथ

बैठने वाले लड़के-लड़कियाँ अपना आँखों देखा हाल इस लड़के को बता देते हैं। तालिब इल्म अगर देखता नहीं तो सुन ज़रूर लेता है। फिर इन तमाम मंज़रों को तन्हाई में ख़्याल की आँख से देखने और उससे दिल बहलाने की कोशिश करता है।

फ़ाइन आर्ट के एक तालिब इल्म ने बताया कि जब हम कॉलेज में पहुँचे तो हमारी क्लास को तस्वीर बनाने से मुताल्लिक़ थ्योरी पढ़ाई गई। फिर एक दिन प्रैक्टिकल के लिए सारी जमाअत के लड़के और लड़कियों को एक बड़े हाल में इकट्ठा किया गया। सबको कहा गया कि अपने हाथों से ड्राइंग शीट लें और पैन्सिल थाम लें। चूँकि सबको तस्वीर बनानी है। एक पेशेवर औरत को बुलाया गया। उसने सारी क्लास के सामने अपने जिस्म से कपड़े उतार दिए। फिर वह एक मेज़ पर एक ख़ास पोज़ में लेट गई। सब बच्चों को कहा गया कि इसकी हू-बहू तस्वीर बनाओं। चुनाँचे पूरे दो घंटे बच्चे उस औरत के आज़ा की पैमाइश करते रहे और ड्राइंग शीट पर उसकी तस्वीर बनाते रहे। यह तस्वीर इतनी वज़ाहत से बनवाई गई कि पोशीदा हिस्सों के बालों को भी बनवाया गया। रंग के शेड का भी ख़्याल रखा गया। जब पीरियड ख़त्म हुआ तो इस पेशेवर औरत के साथ मिलकर लड़के और लड़कियों ने चाय पी और इंतिज़ामिया की तरफ़ से उसे तोहफ़े वग़ैरा देकर रूख़्सत किया गया। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि पीरियड के बाद कितने दिनों तक इस औरत की नंगी तस्वीर बच्चों के जहनों पर नक़्श रही होगी।

कई मर्तबा शर्म व हया को ख़त्म करने के लिए युनीवर्सिटी के लड़के और लड़कियों को घर से दूर किसी यूनीवर्सिटी में दाख़िला दिया जाता है ताकि नवजवान बच्चों को माँ-बाप सेदूर आज़ाद ज़िन्दगी गुज़ारने का मौक़ा मिले। जो बच्चे होस्टल में रहते हैं तो वहाँ एक बड़े कमरे में कई लड़के और लड़कियों को इकठ्ठा ठहराया जाता है। रात दिन इकठ्ठे रहने की वजह से

दोस्ती यारी का हो जाना यक़ीनी बात है। लड़के और लड़कियों के बैतुलख़ला इकठ्ठे होते हैं। लड़की नहा रही है तो लड़का दरवाज़े पर इंतिज़ार कर रहा है। कुछ मुसलमान बच्चों ने बताया कि अक्सर मर्तबा शराती लड़कों की तरफ़ से बैतुलख़ला के दरवाज़े का लॉक तोड़ दिया जाता है। ऐसा भी होता है कि लड़की खुले दरवाज़े के बावजूद नहा रही है और आने वाले लड़के दरवाज़ा खोलकर उसके नंगे जिस्म को देखते हैं। जब सब कमरे में इकठ्ठे होते हैं तो एक दूसरे के जिस्म के बारे में अपने तास्सुरात बयान किए जाते हैं। इन बातों को तालीम से क्या वास्ता, यह सब कुछ अपनी तहज़ीब के गंदे असरात तलबा के दिल व दिमाग़ में बिठाने के लिए किया जाता है।

अक्सर बच्चे आपसी रज़ामंदी के साथ एक-दूसरे जिन्सी मिलाप करते रहते हैं। बस इतनी एहतियात की जाती है कि बच्चा न ठहरने पाए। क्योंकि तालीम में ख़लल वाकेअ होने का अंदेशा होता है। युनिवर्सिटी की लड़कियों के पर्स में से हमल रोकने की गोलियाँ निकलती हैं। एक लड़की के पर्स में से कंडोम निकला तो उसकी सहेली ने सारी क्लास के बच्चों को लहराकर दिखाया। इसलिए कि उस्ताद अभी क्लास में नहीं पहुँचा था।

ये बातें इसलिए लिख दी गई हैं कि मुसलमान माँ-बाप को अंदाज़ा हो सके कि उनके बच्चे अंग्रेज़ी के तालीमी इदारों मे कैसे माहौल में तालीम पाते हैं। और माँ-बाप को उनकी कितनी क़ीमत चुकानी पड़ती हैं।

3. एक सौ मंगेतरें

एक बार मुझे स्वीडन के कॉलेज में लेक्चर देने का मौक़ा मिला। लैक्चर का उनवान यह था कि इस्लाम में इनसानी हुक़ूक का तसव्वुर क्या हैं प्रिन्सिपल ने कहा कि हम यक़ीन से कह सकते हैं कि लैक्चर शुरू में साइंस ग्रुप के सब लड़के और लड़कियाँ मौजूद होंगे। अगर उन्हें लैक्चर में दिलचस्पी महसूस हुई

तो बैठे रहेंगे वरना उठकर चले जाएँगे। हम उन्हें ज़बरदस्ती रोक नहीं सकते।

जब लैक्चर शुरू हुआ तो मैंने ट्रान्सपैरेन्सी के ज़रिए अपने उनवान को वाज़ेह करना शुरू किया। अल्हम्दुलिल्लाह तलबा ने उठकर तो क्या जाना था दूसरी क्लास के बच्चे और उस्ताद भी कमरे में आकर बैठ गए। और कुर्सियाँ मँगवानी पड़ी। जब लैक्चर ख़त्म हुआ तो सवाल व जवाब का सिलसिला शुरू हुआ। एक लड़के ने पूछा कि आप इनसानी हुक़ूक़ की बात कर रहे हैं जबकि इस्लाम ने चार शादियों की इजाज़त दी है। मैंने वज़ाहत की इसलाम ने चार शादियों की इजाज़त दी है ताकि हर आदमी अपने हालात के तक़ाज़े सामने रखते हुए ज़रूरत के तहत मुनासिब फ़ैसला कर सके। जब उसकी मिसालें पेश कीं तो हाज़िरीन मुतमइन हो गए और कहने लगे अगले सवाल का जवाब दें। मैंने उस नवजवान से कहा, क्या आप मुतमइन हो गए? उसने कहा जी हाँ। मैंने कहा, क्या मैं भी आपसे एक सवाल पूछ सकता हूँ? उसने कहा, ज़रूर पूछें। मैंने पूछा कि आपके इस माहौल और मआशरे में जब कोई नवजवान शादी करता है तो उससे पहले यह कितनी लड़कियों से जिन्सी ताल्लुक़ात का तजरिबा हासिल कर चुका होता है? उसने कहा सच बताऊँ? मैंने कहा, हाँ सच की तलाश है। उसने जवाब दिया कि स्कूल कॉलेज युनिवर्सिटी और नाइट कल्ब वग़ैरह को गिना जाए तो कम-से-कम सौ लड़कियों से हमबिस्तरी का तजुरिबा हासिल हो चुका होता है। इस पर पूरी क्लास में मौजूद लड़के और लड़कियों ने ज़ोरदार कहक़हा लगाया।

4. औरतें बसों की तरह हैं

एक फ़ैक्ट्री में स्टीम बॉयलर लगाने के लिए फ़्रान्स से इंजीनियर आया। काम पूरा करने में दो माह की मुद्दत चाहिए थी। कुछ दिनों में फ़िरंगी इंजीनियर की मुक़ामी इंजीनियरों से

दोस्ती होने लगी। दो हफ़्ते के बाद उसने कहना शुरू कर दिया कि मुझे औरत के बग़ैर रात को नींद नहीं आती। उसे समझाया गया कि यह मुसलमान मुल्क है। यहाँ बदकारी के लिए औरतें आसानी से नहीं मिलती। उसने कहा यह तो बड़ी मुसीबत है। चुनाँचे उसने अपने साथ लाई हुई गंदी फ़िल्मों के मंज़र देख-देख कर वक़्त गुज़ारना शुरू कर दिया। जब काम मुकम्मल हुआ और उसके जाने का दिन क़रीब आया तो एक इंजीनियर ने उसे कहा कि क्या तुम्हारी गर्लफ़्राइन्ड अब तक इंतिज़ार कर रही होगी। मुमकिन है कि इन दो महीनों में उसने किसी और से दोस्ती कर ली हो। फ़िरंगी इंजीनियर ने जवाब दिया।

> In our country women are like buses. if you miss one take an other one.
>
> हमारे मुल्क में औरतें बसों की तरह हैं। अगर एक पर सवार न हो सके तो दूसरी सवारी के लिए मिल जाती है।

5. गाय पालने की क्या ज़रूरत है?

एक बार फ़ैक्ट्री में मशीन लगाने के लिए लंदन से इंजीनियर आया। दो हफ़्ते क़याम के दौरान उन मुक़ामी इंजीनियरों से ख़ूब जान पहचान हो गई। दोनों मिलकर काम किया करते थे। एक दिन उसने मुक़ामी इंजीनियर से पूछा कि तुम्हारे कितने बच्चे हैं? उसने कहा कि तीन हैं। फिर मुक़ामी इंजीनियर ने उससे पूछा कि तुम्हारे कितने बच्चे हैं? उसने कहा कि कोई नहीं। मुक़ामी इंजीनियर ने कहा कि इसकी क्या वजह है? उसने कहा कि अभी मेरी शादी नहीं हुई। मुक़ामी इंजीनियर ने पूछ, अच्छा आपकी उम्र कितनी है? उसने कहा, बावन साल। मुक़ामी इंजीनियर ने कहा कि आख़िर क्या बात है? आप पढ़-लिखे हैं, अच्छी नौकरी है ख़ूब पैसे कमाते हैं, इतनी उम्र हो जाने के बावजूद शादी न करने की आख़िर वजह क्या है? उसने मुस्कराकर कहा :

If you can get milk from market, there is no need to keep a cow in the house.

अगर तुम्हें बाज़ार से ताज़ा दूध मिल जाता है तो फिर घर में गाय पालने की क्या ज़रूरत है?

दूसरे लफ़्ज़ों में वह यह कहना चाहता था कि जब हमें बदकारी के लिए नवजवान लड़कियाँ आसानी से मिल जाती है तो घर में बीवी रखने की क्या ज़रूरत है कि रोज़ाना उसी का बासी चेहरा देखते रहें।

6. इज्तिमाई ज़िना की महफ़िलें

अंग्रेज़ी मुल्कों में शादी ब्याह की ख़ुशी मनाने के लिए कई बार एक बड़ा हाल किराए पर हासिल किया जाता है। पहले खाना पीना होता है। फिर नाच-गाने व सुरूर की महफ़िल होती है उसके बाद शराब पीकर इज्तिमाई ज़िनाकारी की जाती है। कमरे में जितने मर्द होते हैं उतनी ही औतरें होती हैं। हर मर्द को इख़्तियार होता है। जिसको चाहे मिलाप के लिए पसन्द कर लें। बताने वाले ने बताया कि उस वक़्त लाइट बंद करने की तकलीफ़ भी गवारा नहीं की जाती। हर जोड़ा अपनी मस्ती उतारने में मशगूल होता है। दूसरे की तरफ़ ध्यान ही नहीं होता।

कुछ लोग समुन्द्री किश्तियाँ किराए पर हासिल करते हैं और इज्तिमाई गुनाह की महफ़िलें समुन्द्र में मनाई जाती हैं। इसके लिए दावतनामे बांटे जाते हैं। शिरकत के लिए दावतनामे का हर मर्द व औरत के पास होना ज़रूरी होता है।

7. ज़बरदस्ती ज़िना का रुज्हान

फ़िरंगी मुल्कों में मर्दों को बुराई करने के लिए हर वक़्त औरतें मैयस्सर आ जाती है। कुछ नवजावान लड़कों को यह बात अच्छी नहीं लगती हैं वे चाहते हैं कि हम बुराई करना चाहें तो औरत ना-ना करे, रुकावट डाले फिर हम ज़बरदस्ती उसके साथ

जमअ करें तो मज़ा आता है। चुनाँचे वह जबरन ज़िना करते हैं अख़बारी ख़बर के मुताबिक़ एक ख़ाविन्द ने अपनी तीन दोस्तों के हमराह रात के अंधेरे में अपनी सोई हुई बीवी से ज़बरदस्ती ज़िना किया। अगरचे अंधेरा था औरत दूसरे मर्दों को तो पहचान न सकी लेकिन जब उसके ख़ाविन्द ने लिपटना-चिपटना किया तो उसने पहचान लिया। सुबह औरत की रिपोर्ट पर उसके ख़ाविन्द को गिरफ़्तार किया गया तो सारी हक़ीक़त खुलकर सामने आ गई। पुलिस ने ख़ाविन्द से पूछा कि तुम्हें अपनी औरत से जिन्सी ताल्लुक़ात क़ायम करने में कोई रुकावट नहीं थी तो फिर ऐसा क्यों किया। उसने कहा कि ज़बरदस्ती ज़िना करने में सही मज़ा आता है। हम चारों ने प्रोग्राम बनाया था कि बारी-बारी हर एक के घर में जाकर उसकी औरत से ज़बरन ज़िना करके मालूम करें कि किसकी बीवी ज़्यादा रुकावट डालती है और किसकी बीवी रुकावट नहीं डालती। मेरी बीवी ने ज़्यादती की है कि उसने हमें गिरफ़्तार करवा दिया।

8. कुत्ते से ज़िना

एक औरत ने घर में कुत्ता पाला हुआ था। उसके ख़ाविन्द ने मुक़दमा दर्ज किया कि मेरी बीवी रात को मेरे पास सोने के बजाए दूसरे कमरे में कुत्ते के साथ सोती है। मुझे अलग सोने पर एतिराज़ नहीं है। अलबत्ता इस बात पर एतिराज़ है कि यह मेरी ग़ैर मौजूदगी में कुत्ते से हमबिस्तरी करती है। जब औरत से पूछा गया तो उसने जवाब दिया कि हाँ जितना वक़्त कुत्ता अपनी मादा के साथ गुज़ार सकता है उतना मर्द अपनी औरत के साथ नहीं गुज़ार सकता। जब मैं कुत्ते से हमबिस्तरी करती हूँ तो मेरी ख़ूब अच्छी तरह तसल्ली हो जाती है। ख़ाविन्द मुझे तलाक़ देना चाहता है तो दे दे। मैं ख़ाविन्द को छोड़ सकती हूँ, कुत्ते को नहीं छोड़ सकती।

9. ज़िना के आलात (औज़ार)

बाज़ शहरों में 'एडलट टॉएज़' के नाम से दुकानें खुली हुई है। उनसे ऐसे खिलौने मिलते हैं जो मुबाशरत के वक़्त लज़्ज़त बढ़ा देते हैं। प्लास्टिक की बनी हुई औरतें मिलती हैं ताकि जितना चाहे जमा करें, इनकार की सूरत ही न हो। मर्दों को ऐसे आलात मिलती हैं ताकि जितना चाहे जमा करें, इन्कार की सूरत ही न हो। मर्दों को ऐसे आलात मिलते हैं जिनसे अज़ू ख़ास की मोटाई और लंबाई दुगनी हो जाती है ताकि औरत की तसल्ली के सामान उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो सके। स्प्रे और दवाईयाँ तो मामूली बात हैं ऐसी वीडियों फ़िल्में मिलती हैं जिनमें औरतें को जानवरों से जमा करते हुए दिखाया जाता है।

10. औरल सैक्स

मर्द और औरत जिन्सी ताल्लुक़ात के क़ाबिल नहीं रहते तो एक-दूसरे को पोशीदा आज़ा को चूमना शुरू कर देते हैं। और मर्द के मख़्सूस आज़ा को अपने मुँह में लेकर ख़ुश हो जाती है। मर्द औरत के पोशीदा हिस्से को चाटता है जिस तरह कुत्ता किसी हड्डी का चाट रहा होता है। जानवर भी वह काम नहीं करते जो इनसान बेईमान कर गुज़रता है।

11. चले भी आओ

फ़िरंगी माहौल में अगर किसी औरत को तीस साल की उम्र में उसका ख़ाविन्द छोड़ दे तो उसके लिए दूसरा ख़ाविन्द ढूंढना मुश्किल हो जाता है। नाइट क्लब में उससे जिन्सी ज़रूरत पूरी करनेवाले मर्द तो रोज़ाना मिल जाते हैं, उसे अपनाने वाला और बीवी बनाकर रखनेवाला कोई मर्द नहीं मिलता। चुनाँचे एक डाक्टर दोस्त के मुताबिक़ फ़िरंगी माहौल में सिर्फ़ नवजवान ही ख़तरे में नहीं होते बल्कि अगर कोई बुढ़ा आदमी भी घर से निकले तो उसे शादी के लिए कोई-न-कोई बूढ़ी औरत तैयार

मिल जाती हैं एक 32 साल की नवजवान लड़की एक घंटा मेकअप करके घर के दरवाज़े पर घंटों मुन्तज़िर रहती है ताकि उसका 65 साला ब्वाय फ्रेंड उसकी मुलाक़ात के लिए आ जाए। बक़ौल शायर—

चले भी आओ के गुलशन का कारोबार चले

पड़ोस में रहनेवाले एक मुसलमान औरत कभी गुज़रते हुए उससे पूछती कि क्या हाल है तो वह जवाब देती :

Life is very difficult

ज़िन्दगी बहुत मुश्किल हो गई है।

12. मैं आप और तन्हाई

यूरोप के अख़बरों में बड़े-बड़े सफ़हात पर मुलाक़ात के ख़्वाहिशमंद मर्दों और औरते के हज़ारों नबर छपते हैं जबकि कई-कई दिन तक कोई राब्ता नहीं करता तो फ़ोन के साथ हसरत भरे फ़िकरे लिखवाते है :

You me and heavan

मैं आप और तन्हाई।

नतीजा

ऊपर लिखे हालात व वाक़िआत से यह बात साबित होती है कि फ़िरंगी औरत ने बेपर्दा होकर मिली जुली महफ़िलों की ज़ीनत बनकर अपनी क़द्र घटा ली हैं मर्द की हैसियत एक भंवरे की सी है जिसके सामने फूलों की क़तार मौजूद हैं साफ़ ज़ाहिर है कि जब वह एक को ख़ुशबू सूंघ लेगा और रस चूस लेगा तो दोबारा उस फूल पर बैठने के बाजए किसी नए फूल पर जो बैठेगा। इस सारे खेल में खिलौना तो औरत बनी। तमाशा भी औरत बनी। बेपर्दा होकर उसके हाथ क्या आया? मर्दों ने आज़ादी के नाम पर उसे बेवक़ूफ़ बनाया। जब औरत के साथ इसतेमाल शुदा पेपर जैसा बर्ताव किया गया तो वह मजबूर होकर घर में कुत्ते

पालने लगी और उनसे अपनी जिन्सी ज़रूरत पूरी करने लगी। ज़रा ऐसी औरत के कर्बनाक बुढ़ापे का तसव्वुर करें तो महसूस होगा कि वह बेचारी जीते जी मर जाती है बल्कि ऐसे जीने से तो मरना ही बेहतर है।

आदमी के पास सब कुछ है मगर एक तन्हा आदमियत ही नहीं।

इस्लामी तालीमात में बापर्दा ज़िन्दगी गुज़ारने का सबक़ इसी लिए दिया गया है कि मर्द और निकाह के ज़रिए बाइज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारों। कुरआन मजीद ने لتسكنوا اليها 'लितसकुनू इलैहि' के अल्फ़ाज़ से साबित कर दिया कि मियाँ बीवी को एक-दूसरे से सुकून मिलता हैं लिहाज़ा मिली जुली महफ़िलों से मुकम्मल तौर पर परहेज़ करना चाहिए ताकि मियाँ-बीवी की तवज्जेह एक-दूसरे पर जमी रहे और वे दोनों मुहब्बत व प्यार के ज़रिए पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारे। आम तजुरिबा है कि भूखे आदमी को अगर घर पर बासी रोटी भी मिल जाए तो वह उसे ही नेमत समझकर शौक़ और ख़ुशी से खा लेता है। इसी तरह जब मिली जुली महफ़िलें नही होंगी, बेपर्दा ख़ूबसूरत औरतें नज़र नहीं आएँगी तो हर मर्द अपने घर में मौजूद आम शक्ल व सूरत की बीवी को भी नेमत समझेगा और ज़रूरत के वक़्त उसी से लुत्फ़अंदोज़ होगा। न तलाक़ की धमकी न बदसूरती के ताने। न हर वक़्त की ज़हनी तकलीफ़ के ख़ाविन्द रात को देर से घर आता है। ऐसे में तो हर घर औरत के लिए छोटी-सी जन्नत का नमूना बन जाएगा। और यही इस्लामी तालीमात का मक़सद है।

رضيت بالله ربا وبمحمد نبيا وبالاسلام دينا

मैं अल्लाह तआला के रब होने पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने पर और इस्लाम के अपना दीन होने पर राज़ी हूँ।

बाब-5

ज़िना के असबाब

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इनसानी नस्ल को बाक़ी रखने के लिए मर्द और औरत के दर्मियान जिन्सी कशिश और मक़्नातीसियत (चुंबकपने) को पैदा किया हैं इनसानी तबियत में जब ज़रूरत जागती है तो बाक़ी तमाम ज़रूरतें दब जाती हैं। तबियत में इंतेशार और शर्मगाह में उभार पैदा हो जाता है। नींद उड़ जाती है, ज़िक्र व इबादत में दिल नहीं लगता। जी चाहता है कि जो कुछ हो किसी-न-किसी तरह शहवत को पूरा कर लेना चाहिए। अक्सर अक़्ल बेकार हो जाती है। अच्छे बुरे की तमीज़ बाक़ी नहीं रहती। इरशाद बारी तआला है :

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ (آل عمران:١٤)

फ़रेफ़्ता किया लोगों को मरग़ूब चीज़ों की मुहब्बत ने जैसे औरतें।

ऐसी सूरतहाल में जबकि मर्द की तबियत पर शहवत का भूत सवार है। अगर कोई औरत उसे मिलाप का मौक़ा दे तो मर्द के लिए अपने नफ़्स को क़ाबू में रखना शेवा पैग़म्बरी की तरह होता है इसी तरह अगर मर्द किसी औरत को बहलाए फुसलाए तो औरत भी जाल में फंस जाती हैं रोज़ाना का तजुरिबा है कि जब ऊँट बिलबिलाता तो ऊँटनी बेख़ुद हो जाती है। जब बकरा शहवत के जोश में आवाज़ निकालता है तो बकरी मस्त हो जाती है, कबूतर गुटरग़ू करता है तो कबूतरी मज़े में आ जाती है, मुर्ग़ा कुकड़कूँ करता है तो मुर्ग़ी मज़े में आ जाती है। इसी तरह जब मर्द इश्क़ व मुहब्बत के मीठे बोल बोलता है तो औरत सर झुका देती है। आम दस्तूर यही है कि मर्द और औरत एक-दूसरे से दूर

रहे। क़रीब उसी सूरत में हों जब मिलाप जाएज़ हो। शरअ शरीफ़ ने इस तक़ाज़े को पूरा करने का लिए निकाह का हुक्म दिया है और ज़िना को हराम क़रार दे दिय है।

لَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى (بنی اسرائیل: ۳۲)

तुम ज़िना के क़रीब भी न जाओ।

इससे मालूम हुआ कि ज़िना इतना बड़ा जुर्म है कि इसके क़रीब जाने से भी मना कर दिया गया है। दूसरे लफ़्ज़ों में हर वह अमल जो ज़िना का सबब बन सकता है उसको अपनाने से रोक दिया गया है। नीचे इन्हीं असबाब की तफ़्सील से बयान किया जाता है :

1. ग़ैर-महरम को देखना

ज़िना की इब्तिदा ग़ैर-महरम को देखने से होती है। इसीलिए शरिअत ने औरतों को घरों में रहने का हुक्म दिया है। अगर शरई ज़रूरत की वजह से घर से बाहर निकलना पड़े तो बापर्दा हालत में निकलने का हुक्म है। मर्दों और औरतों को हुक्म दिया गया कि अपनी निगाहें पस्त रखें ताकि एक-दूसरे पर नज़र ही न पड़े और ज़िना का ख़्याल ही दिल में पैदा न हो। जहाँ पर्दे में कोताही और ग़फ़लत होगी और ग़ैर-महरम मर्द और औरत एक-दूसरे को देखेंगे तो तबियतों में शहवत बेदार हो जाएगी। नफ़्स और शैतान घोड़े की डाक का काम करेंगे और ज़िना करवाकर रहेंगे। अजनबी ग़ैर-महरम से मेल मिलाप मे बहुत रुकावटें होती हैं लेकिन क़रीबी रिश्तेदार ग़ैर-महरम से मेल मिलाप में बहुत आसानियाँ होती है। इसीलिए हदीस पाक में फ़रमाया गया है (देवर तो मौत है) शरिअत ने देवर और बहनोई से भी पर्दे का हुक्म दिया है। आमतौर पर ख़ालाज़ाद, मामूज़ाद, फूफ़ीज़ाद और चचाज़ाद चार बड़े रिश्ते होते हैं। बिलाशक बहुत नाज़ुक ही नहीं होते बल्कि इंतिहाई ख़तरनाक भी होते हैं। औरतें उन्हें भाई कहती हैं हालाँकि दरहक़ीक़त वह क़साई होते हैं। आम

लोग कहते हैं कि साली आधी घरवाली होती है जबकि साली ही तो सवाली होती है।

औरत की कमज़ोरी है कि जब भी किसी की शख़्सियत, हुस्न, गुफ़्तगू और अख़्लाक़ वग़ैरह से मुतास्सिर होती है तो उसके लिए नर्म हो जाती है

औरत के लिए आफ़ियत इसी में है कि न ग़ैर-महरम को देखे और न अपने आपको किसी ग़ैर-महरम को दिखाए। मर्द के लिए भी इसी में भलाई है कि अपनी निगाहें पस्त रखे। ऐसा न हो कि फ़ित्ने में पड़ जाए और क़यामत के दिन उसे जहन्नम में औंधा फेंक दिया जाए।

जिस तरह ग़ैर-महरम को देखना हराम है इसी तरह उसकी तस्वीर देखना भी हराम है अख़बरों के फ़िल्मी सफ़्हे या सड़कों के किनारे लगे हुए इश्तेहार की तरफ़ भी न देखना चाहिए। पतंग की रस्सी ढीली छोड़ेंगे तो कहीं न कहीं पेच लग जाएगा। अल्लाह तआला बचाए।

बस जो आदमी ज़िना से बचना चाहे तो अपनी ताक़त भर ग़ैर-महरम को देखने से ही बचे। जब काम की शुरूआत ही नहीं होगी तो फिर आख़िर भी नहीं होगा।

2. ग़ैर-महरम के साथ बातें करना

ग़ैर-महरम से बातें करना भी ज़िना के असबाब में से एक बड़ा सबब है। इसीलिए क़ुरआन मजीद ने औरतों को हुक्म दिया है कि अगर उन्हें किसी वक़्त ग़ैर-महरम मर्द से बातचीत करने की ज़रूरत पेश आ जाए तो अपनी आवाज़ में लोच व नरमी पैदा न होने दें। न ही बनावटी अंदाज़ से चबा-चबा कर और अल्फ़ाज़ को संवार कर बातें करें। इरशादे बारी तआला है :

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝

(الاحزاب)

और न ही चबाकर बाते करो जिसके दिल में रोग हो
वह तमन्ना करने लगे और तुम माक़ूल बात करो।

औरत अगर पर्दे की ओट में भी बात करे तो आवाज़ में शीरनी और जज़्बियत पैदा न होने दे बल्कि लब व लहजा ख़ुश्क ही रखे। ऐसी लगी लिपटी बातें जिनको सुनकर मर्द की शहवत भड़के उनसे औतरों को बचना ज़रूरी है। ग़ैर-महरम मर्द से बात अदाकारी के साथ न की जाए बल्कि साफ़ खुली और धुली बात हो, मुख़्तसर हो जो बात दो फ़िक़रों में कही जाती है उसको एक ही में कहे तो बेहतर है। मर्द को भी बिना वजह एक से दूसरी बात करने की हिम्मत न हो सके।

बात से बात बढ़ती है

जब ग़ैर-महरम मर्द और औरत के बीच बेझिझक बात करने की आदत पड़ जाए तो मामला एक क़दम और आगे बढ़ता है यानी एक-दूसरे को देखने को दिल चाहता है। इसकी दलील क़ुरआन मजीद से मिलती है कि अंबिया किराम तो एक लाख चौबीस हज़ार के लगभग आए मगर उनमें से किसी ने दुनिया में अल्लाह तआला को देखने की ख़्वाहिश ज़ाहिर नहीं की। सिर्फ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा :

رَبِّ أَرِنِيٓ أَنظُرۡ إِلَيۡكَ (الاعراف: ۱۴۳)

ऐ मेरे परवरदिगार मुझे अपना दीदार करा दीजिए।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि क्योंकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कोहे तूर पर रब्बे करीम से हम कलामी के लिए जाया करते थे। लिहाज़ा कलीमुल्लाह होने की वजह से उनके दिल में महबूबे हक़ीक़ी को देखने का शौक़ पैदा हुआ। इससे साबित हुआ कि बात से बात बढ़ती है पहले बात करने का मरहला तय होता है। फिर देखने की नौबत आती है जब देख लिया जाए तो मुलाक़ात का शौक़ पैदा होता है। दिल कहता है—

न तू ख़ुदा है न मेरा इश्क़ फ़रिश्तों जैसा
दोनों इनसान हैं तो क्यों इतने हिजाबों में मिलें

जब हिजाब उतर जाता है तो मेल-मिलाप का सिलसिला शुरू हो जाता है। जिसका नतीज़ा ज़िल्लत व रुसवाई के सिवा कुछ नहीं होता।

आवाज़ का जादू

औरत की आवाज़ अगरचे सतर नहीं है। ज़रूरत के वक़्त वह ग़ैर-महरम मर्द से बातचीत कर सकती है या फ़ोन सुन सकती है मगर यह भी हक़ीक़त है कि उसकी आवाज़ में कशिश होती हैं इसीलिए फ़ुक़्हा ने औरत को अज़ान देने से मना किया क्योंकि अज़ान अच्छे लहजे के साथ दी जाती है। इससे फ़ितने पैदा होने का खतरा होता है। इसका सुबूत इस बात से मिलता है कि एक रेडियो एनाउन्सर के कई अनदेखे आशिक़ होते हैं। आवाज़ का जादू भी अपना असर दिखाता है। इसीलिए ग़ैर-महरम से बातचीत के दौरान मुनासिब लहजे में बात करने का हुक्म दिया गया है। जो औरतें मजबूरी की वजह से ख़रीद व फ़रोख़्त और लेन-देन का काम ख़ुद करती हैं वह बहुत ख़तरे में होती हैं। दुकानदारी, दर्ज़ी, सुनार, मनीहारी, रंगरेज, डाक्टर और हकीम से बहुत मोहतात अंदाज़ में बात करनी चाहिए। मर्द लोग तो पहले ही औरत को शीशे में उतारने के लिए तैयार होते हैं। अगर कोई औरत ज़रा-सा ढीलापन दिखाए तो बात बहुत दूर निकल जाती है।

चुनाँचे वह नवजवान उन्हें माल दिखाने के बहाने स्टोर की पोशीदा जगह में ले जाता और हरामकारी करता। जो औरतें कपड़े सिलवाने के लिए दर्ज़ी के पास जाती है उन्हें जिस्म की पैमाइश भी देना पड़ती है नए-नए फ़ैशन और फिट साइज़ के कपड़े तैयार करने के बहाने दर्ज़ी को खुली बातें करने का मौक़ा मिलता है। कई मर्तबा तो नए कपड़े सिल रहे होते है जबकि

पहने हुए कपड़े उतर रहे होते हैं।

सुनारों का काम तो वैसे ही जेब व ज़ीनत से मुताल्लिक़ होता है। कई औरतें अंगूठी और चूड़ियाँ ख़रीदकर मर्द को कहती हैं कि पहना दें। जब हाथ ही हाथ में दे दिया तो पीछे क्या रहा —

मुझे सहल हो गयीं मंज़िले तो ख़िज़ा के दिल भी बदल गए
तेरा हाथ हाथ में आ गया तो चिराग़ राह के जल गए

डाक्टर को बीमारी के बारे में कैफ़ियत बतानी हो तो निहायत एहतियात बरती जाए। ऐसा न हो कि जिस्म का इलाज करवाते करवाते दिल का रोग लगा बैठें। कई डाक्टर हज़रात तो मरीज़ा का इलाज करते हुए ख़ुद मरीज़े इश्क़ बन जाते हैं।

सैल-फ़ोन का हैल-फ़ोन (जहन्नम का फ़ोन)

आजकल की साइंसी तरक़्क़ी की वजह से सेल-फ़ोन का इस्तेमाल आम होता जा रहा है। सेल-फ़ोन की कंपनियाँ इशा से फ़ज्र तक कॉलें फ़्री देती हैं। यह वक़्त शैतानी शहवानी बातें करने का होता है। नवजवान लड़के और लड़कियाँ अपने सेल-फ़ोन पर अपने कमरों में तन्हाई में बैठे घंटो बातें करते हैं। इस तरह ये सेल-फ़ोन हैल-फ़ोन बन जाते हैं। बहन-भाई, माँ-बाप क़रीब भी हो तो बिस्तर के अन्दर पड़े-पड़े एसएमएस पैग़ाम के ज़रिए बातचीत जारी होती है। सेल-फ़ोन की बैल के बजाए वाइब्रेशन पर सैट कर दें तो घंटी भी नहीं बजती। फ़ोन के हिलते ही दिल धड़कने शुरू हो जाते हैं।

सेल-फ़ोन कितनी भोली-भाली लड़कियों की इज़्ज़त का ख़ून कर देते हैं। ग़रीब घरों की लड़कियाँ अगर फ़ोन नहीं ले सकती तो आवारा नवजवान ख़ुद फ़ोन लेकर उन्हें तोहफ़े में दे देते हैं। न बिल की परवाह न बैल की आवाज़ ये जहन्नम में जाने की पक्की तदबीर नहीं तो फिर और क्या है?

चैटिंग या चीटिंग

चैटिंग कहते हैं कम्पयूटर के ज़रिए एक-दूसरे को पैग़ाम भेजने को जबकि चीटिंग कहते हैं धोका देने को। आजकल नवजवान एक-दूसरे से चैट नहीं कर रहे होते बल्कि एक-दूसरे को चीट कर रहे होते हैं। एक नवजवान कॉलेज की स्टूडेन्ट ने पूछा क मैं अपनी ज़िन्दगी के मामलात माँ-बाप के सामने नहीं बयान कर सकती। मेरे एक अंकल पाँच बच्चों के बाप हैं। उम्र में मुझसे दुगने हैं। क्या मैं कंप्युटर पर चैट कर लिया करूँ? उसे मना किया गया कि यह हराम हैं वह बाज़ न आई। छः महीने बाद पता चला कि वह दोनों हरामकारी कर गुज़रे।

ट्यूशन सेंटर या टैन्शन सेंटर

कुछ लोग अपनी नवजवान बच्चियों को मर्द उस्ताद के पास ट्यूशन पढ़ने भेजते हैं या उन्हें ट्यूशन पढ़ाने अपने घर बुलाते हैं। दोनों सूरतेहाल में नतीजे बुरे होते हैं। शरअ शरीफ़ के अहकाम से ग़फ़लत बरतने का अंजाम हमेशा बुरा होता है। शार्गिद को उस्ताद के पास बैठकर बातें करने का मौक़ा मिलता है तो शैतान मशवरा देता है कि किताबें पढ़ने के साथ-साथ एक-दूसरे की शख़्सियत के बारे मे भी मालूमात हासिल करो। जब पर्सनल लॉइफ़ की बातें शुरू हो जाती हैं तो हरामकारी के दरवाज़े खुल जाते हैं। ट्यूशन पढ़नी थी टैन्शन पल्ले पड़ गई। मर्दों को भी औरत से बातचीत करते वक़्त एहतियात करनी चाहिए। अल्लामा जज़री रह॰ ने लिखा है :

نهى رسول الله ﷺ ان يخضع الرجل امراةبالقول مما يطمعهامنه

(النهاية)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात से मना किया है कि मर्द अपनी बीवी के सिवा किसी दूसरी औरत के सामने नरमी से बातचीत करे जिससे औरत को मर्द में दिलचस्पी पैदा हो जाए।

नौकरीपेशा औरतें

कुछ लड़कियाँ हालात की मजबूरी का बहाना बनाकर दफ़्तरों या कारख़ानों में मर्दों से कंधे-से-कंधा मिलाकर काम करती हैं। शैतान के लिए इन लड़कियों को गुनाह में फंसाना बाएं हाथ का खेल होता है। अक्सर तो अफ़सर ही इज़्ज़त का सत्यानास कर देता हैं वरना साथ मिलकर काम करनेवाले लड़के ही मेल-मिलाप की राहें ढूँढ लेते हैं। मर्द लोग ऐसी सूरतेहाल पैदा कर देते हैं कि लड़कियों को गुनाहों में मुलव्विस होना पड़ता हैं एक सख़्ती करता है कि तुम अच्छा काम नहीं करतीं,, तुम्हारी छुट्टी करवा देनी चाहिए। लड़की डर जाती है, घबरा जाती है। दूसरा हिमायती बन जाता है कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा। कुछ नहीं होने दूँगा। कुछ अरसे के बाद पता चलता है कि लड़की अपने हिमायती के फंदे में फंस चुकी है। दफ़्तर में काम करनेवाली लड़कियों को कम या ज़्यादा ऐसे नापसन्दीदा वाक़िआत पेश आते रहते हैं। पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं होती। वे नौकरी पेशा औरतें जो कम बोलती हैं, किसी मर्द पर एतिबार नहीं करतीं, न ही किसी से अपनी ज़िन्दगी के बारे में बातचीत करती हैं बस काम-से-काम रखती हैं। जो मर्द उनसे आज़ाद बात करने लगे उसे डांट पिला देती हैं। वे अगरचे दफ़्तर में सड़ियल मशहूर हो जाएँ मगर कम-से-कम अपनी इज़्ज़त बचा लेती है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु का अमल

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के दौर में एक आदमी किसी जगह से गुज़रा तो एक मर्द व औरत को आपस में नरम बातचीत करते सुना। मालूम करने से पता चला कि वे आपस में ग़ैर-मरहम थे। उस आदमी ने मर्द के सर पर इस ज़ोर से कोई चीज़ मारी कि सर फट गया। जब मुक़दमा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु के पास पहुँचा तो उन्होंने सर फाड़ने वाले आदमी को कोई सज़ा न दी। अल्लामा इब्ने तैमिया रह. लिखते हैं कि इस तरह सख़्ती से

शर और बुराई के बीज को ही ख़त्म कर देना चाहिए ताकि दूसरे इससे इबरत पकड़ें।

३. ग़ैर-महरम के साथ तन्हाई में बैठना

औरत का ग़ैर-महरम के साथ तन्हाई में बैठना ज़्यादा ख़तरनाक होता है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

يخلون رجل ما مرأة الا كان ثالثها الشيطان (مشكوة:٢٦٩)

कोई मर्द किसी औरत से तन्हाई में नहीं मिलता मगर तीसरा शैतान मौजूद रहता है।

ऐसी हालत में शैतान दोनों की शहवत में उभर पैदा करता है और दिलों में गुनाह का वसवसा डालता है। अगर इसमें कामयाब न भी हो सके तो किसी तीसरे को बहकाता है कि उन पर तोहमत लगाए।

हसन बसरी रह० और राबिया बसरी रह०

मशाइख़ ने लिखा है कि अगर हसन बसरी रह० उस्ताद हो और राबिया बसरिया रह० शागिर्द हों और दोनों तन्हाई में क़ुरआन पढ़ रहे हों तो भी शैतान कोशिश करेगा कि दोनों को एक-दूसरे की तरफ़ माइल करे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि अगर दो बोसीदा हड्डियाँ एक-दूसरे के क़रीब रख दी जाएं तो वह भी इकट्ठा होने की कोशिश करेंगे यानी बूढ़ा मर्द ओर बूढ़ी औरत भी ज़िना कर गुज़रेंगे।

बरसीसा राहिब (सन्यासी) का इबरतनाक अंजाम

शैतान के मकर व फ़रेब के बारे में हदीस पाक में बहुत अजीब वाक़िआत आया हैं। इब्ने आमिर ने उबैद बिन यसार से लेकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक इस वाक़िए की सनद पहुँचाई है। यह वाक़िआ 'तलबीस-इब्लीस' में भी नक़ल किया गया है।

बनी इस्राईल में बरसीसा नाम का एक राहिब था। उस वक़्त बनी इस्राईल में उस जैसा कोई इबादत गुज़ार न था। उसने एक इबादतख़ाना बनाया हुआ था। और उसी में दिन रात इबादत में मस्त रहता था। उसे लोगों से कोई लेना-देना नहीं था। न तो वह किसी को मिलता था और न ही किसी को पास आता जाता था। शैतान ने उसे गुमराह करने का इरादा किया।

बरसीसा अपने कमरे से बाहर ही नहीं निकलता था। वह ऐसा इबादतगुज़ार था कि अपना वक़्त हर्गिज़ ज़ाए नहीं करता था। शैतान ने देखा कि जब कभी दिन में वह कुछ वक़्त के लिए थक जाता तो कभी-कभी खिड़की से बाहर झांक कर देख लेता था। इधर क़रीब कोई आबादी नहीं थी। बरसीसा के इबादतख़ाने के इर्द-गिर्द खेत और बाग़ थे। जब शैतान ने देखा कि वह दिन में एक दो मर्तबा खिड़की से देखता है तो उस मरदूद ने इनसानी शक्ल में आकर उस खिड़की के सामने नमाज़ की शक्ल व सूरत बना ली।

चुनाँचे जब बरसीसा ने खिड़की से बाहर झांका तो एक आदमी को क़याम की हालत में खड़े देखा। वह बड़ा हैरान हुआ। जब दिन के दूसरे हिस्से में उसने दोबारा इरादतन बाहर देखा तो वह आदमी रुकू की हालत में था। फिर तीसरी मर्तबा सज्दे की हालत में देखा। कई दिन इसी तरह होता रहा। आहिस्ता-आहिस्ता बरसीसा के दिल में यह बात आने लगी कि यह तो कोई बड़ा ही बुज़ुर्ग इनसान है जो दिन-रात इतनी इबादत कर रहा है। वह कई महीनों तक इसी तरह शक्ल बनाकर क़याम, रुकू और सज्दे करता रहा। यहाँ तक कि बरसीसा ने दिल में सोचा कि मैं इससे पूछूँ तो सही कि यह कौन है?

जब बरसीसा के दिल में ख़्याल आया तो शैतान ने खिड़की के क़रीब मुसल्ला बिछाना शुरू कर दिया। जब मुसल्ला खिड़की के क़रीब आ गया तो बरसीसा ने बाहर झांका और शैतान से पूछा, तुम कौन हो? वह कहने लगा कि आपको मुझसे क्या ग़रज़

है। मैं अपने काम में लगा हूँ, मेहरबानी करके आप मुझे डिस्टर्ब न करें। वह सोचने लगा कि अजीब बात है कि यह आदमी किसी की कोई बात सुनना गवारा ही नहीं करता। दूसरे दिन बरसीसा ने फिर पूछा कि आप अपना तार्रुफ़ तो करवाएँ। वह आदमी कहने लगा कि मुझे अपना काम करने दो। मैं फ़ारिग नहीं हूँ।

अल्लाह तआला की शान एक दिन बारिश हो गई। वह आदमी बाहर नमाज़ की शक्ल बनाकर खड़ा हो गया। बरसीसा के दिल में बात आई कि जब यह इतना इबादतगुज़ार है कि इसने बारिश की भी कोई परवाह नहीं की क्यों न मैं अच्छे अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा करूँ और इससे कहूँ कि आप अन्दर आ जाएँ। चुनाँचे उसने शैतान को पेशकश की कि बाहर बारिश हो रही है, आप अन्दर आ जाएँ। वह जवाब में कहने लगा ठीक है, मोमिन को मोमिन की दावत क़बूल कर लेनी चाहिए। लिहाज़ा मैं आपकी दावत क़बूल कर लेता हूँ। शैतान तो चाहता ही यह था। चुनाँचे उसने कमरें में आकर नमाज़ की नीयत बांध ली। वह कई महीनों तक उसके कमरे में इबादत की शक्ल बनाकर खड़ा रहा था। लेकिन बरसीसा यही समझ रहा था कि वह नमाज़ ही पढ़ रहा है।

जब कई महीने गुज़र गए तो बरसीसा ने उसे वाक़ई बहुत बड़ा बुज़ुर्ग समझना शुरू कर दिया और उसके दिल में उसके साथ अक़ीदात पैदा होना शुरू हो गई। इतने अरसे के बाद शैतान बरसीसा से कहने लगा कि अब मेरा साल पूरा हो चुका है लिहाज़ा में अब यहाँ से जाता हूँ। मेरा मुक़ाम कहीं और है। रवानगी के वक़्त वैसे ही दिल नरम होता है। लिहाज़ा शैतान बरसीसा से कहने लगा, अच्छा मैं आपको जाते-जाते एक ऐसा तोहफ़ा दे जाता हूँ जो मुझे अपने बड़ों से मिला था। वह तोहफ़ा यह है कि अगर तुम्हारे पास कोई बीमार आए तो उस पर कुछ पढ़कर दम कर देना, वह ठीक को जाया करेगा। बरसीसा ने

कहा मुझे इस अमल की कोई ज़रूरत नहीं है। शैतान कहने लगा कि हमें यह नेमत तवील मुद्दत की मेहनत के बाद मिली है। वह नेमत् तुम्हें तोहफ़े में दे रहा हूँ और तुम इनकार कर रहे हो। तुम बड़े नालायक़ इनसान हो। यह सुनकर बरसीसा कहने लगा, अच्छा जी मुझे भी सिखा ही दें। चुनाँचे शैतान ने उसे एक अमल सिखा दिया और यह कहते हुए रुख़सत हो गया कि अच्छा फिर कभी मिलेंगे।

शैतान वहाँ से सीधा बादशाह के घर गया। बादशाह के तीन बेटे और एक बेटी थी। शैतान ने जाकर उसकी बेटी पर असर डाला और वह मजनूना सी बन गई। वह ख़ूबसूरत और पढ़ी लिखी लड़की थी लेकिन शैतान के असर से उसको दौरे पड़ने शुरू हो गए। बादशाह ने उसके इलाज के लिए हकीम डाक्टर बुलवाए। कई दिनों तक वह उसका इलाज करते रहे लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ।

जब कई दिनों के इलाज के बाद भी कुछ फ़ायदा न हुआ तो शैतान ने बादशाह के दिल में बात डाली कि बड़े हकीमों और डाक्टरों से इलाज करवा लिया है, अब किसी बुज़ुर्ग से ही दम करवाकर देख ले। यह ख़्याल दिल मे आते ही उसने सोचा कि हाँ किसी आबिद को तलाश करना चाहिए। चुनाँचे उसने अपने सरकारी आदमी भेजे ताकि वह पता करके आएं कि इस वक़्त सबसे ज़्यादा नेक बंदा कौन है। सबने कहा कि इस वक़्त सबसे ज़्यादा नेक आदमी तो बरसीसा है और वह तो किसी से मिलता ही नहीं। बादशाह ने कहा कि अगर वह किसी से नहीं मिलता तो उनके पास जाकर मेरी तरफ़ से दरख़ास्त करो कि हम आपके पास आ जाते हैं।

चुनाँचे कुछ आदमी बरसीसा के पास गए। उसने उन्हें देखकर कहा कि आप मुझे डिस्टर्ब करने क्यों आए हैं? उन्होंने कहा कि बादशाह की बेटी बीमार हैं हकीमों और डाक्टरों से बड़ा इलाज करवाया है लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बादशाह

चाहते हैं कि आप बेशक यहाँ न आएँ ताकि आपकी इबादत में ख़लल न आए, हम आपके पास बच्ची को ले आते हैं। आप यही उस बच्ची को दम कर देना। हमें उम्मीद है कि आपके दम करने से वह ठीक हो जाएगी। बरसीसा के दिल में ख़्याल आया कि हाँ मैंने एक दम सीखा था, उसको आज़माने का अच्छा मौक़ा है, चलो यह तो पता चल जाएगा कि वह दम ठीक भी है या नहीं। चुनाँचे उसने उन लोगों को बादशाह की बीमार बेटी को लाने की इजाज़त दे दी।

बादशाह अपनी बेटी को लेकर बरसीसा के पास आ गया। उसने जैसे ही दम किया वह फ़ौरन ठीक हो गई। मर्ज़ भी शैतान ने लगाया था और दम भी उसी ने बताया था। लिहाज़ा दम करते ही शैतान उसको छोड़कर चला गया और वह बिल्कुल ठीक हो गई। बादशाह को पक्का यक़ीन हो गया कि मेरी बेटी इसके दम से ठीक हुई है।

एक डेढ़ माह के बाद शैतान ने फिर इसी तरह बच्ची पर हमला किया और वह उसे फिर बरसीसा के पास ले आए। उसने दम किया तो वह फिर उसे छोड़कर चला गया। यहाँ तक कि दो चार मर्तबा के बाद बादशाह को पक्का यक़ीन हो गया कि मेरी बेटी का इलाज इसके दम में हैं अब बरसीसा की शहर में शोहरत हुई कि इसके दम से बादशाह की बेटी ठीक हो जाती है।

कुछ अरसे के बाद उस बादशाह के मुल्क पर किसी ने हमला किया तो वह अपने शहज़ादों के साथ दुश्मन का मुक़ाबला करने के लिए तैयारी करने लगा। अब बादशाह सोच में पड़ गया कि अगर जंग में जाएँ तो बेटी को किसी के पास छोड़कर जाएँ। किसी ने मशवरा दिया कि किसी वज़ीर के पास छोड़जाएँ और किसी ने कोई और मशवरा दिया। बादशाह कहने लगा कि अगर इसको दोबारा बीमारी लग गई तो फिर क्या बनेगा? बरसीसा तो किसी की बात भी नहीं सुनेगा। चुनाँचे बादशाह ने कहा कि मैं

ख़ुद बरसीसा के पास अपनी बेटी को छोड़ जाता हूँ। चुनाँचे बादशाह अपने तीनों बेटों और बेटियों को लेकर बरसीसा के पास पहुँच गया और कहने लगा कि हम जंग पर जा रहे हैं, ज़िन्दगी और मौत का पता नहीं है। मुझे इस वक़्त सबसे ज़्यादा भरोसा आप पर है और मेरी बेटी का इलाज भी आप ही के पास हैं लिहाज़ा मैं चहता हूँ कि यह बच्ची आपके पास ही ठहर जाए। बरसीसा कहने लगा, तौबा! तौबा!!! मैं यह काम कैसे कर सकता हूँ कि यह अकेली मेरे पास ठहरे। बादशाह ने कहा नहीं कोई ऐसी बात नहीं है बस आप इजाज़त दे दें। मैं इसके रहने के लिए आपके इबादतख़ाने के सामने एक घर बनवा देता हूँ तो यह उसी घर में ठहरेगी। बरसीसा ने यह सुनकर कहा, चलो ठीक है। जब उसने इजाज़त दे दी तो बादशाह ने उसके इबादतख़ाने के सामने घर बनवा दिया और बच्ची को वहाँ छोड़कर जंग पर रवाना हो गया।

बरसीसा के दिल में बात आई कि मैं अपने लिए खाना तो बनाता ही हूँ अगर बच्ची का खाना भी मैं ही बना दिया करूँ तो इसमें क्या हरज़ है क्योंकि वह अकेली है, पता नही अपने लिए खाना पकाएगी भी या नहीं पकाएगी। चुनाँचे बरसीसा खान बनाता और आधा खाना ख़ुद खाकर बाक़ी आधा खाना अपने इबादतख़ाने के दरवाज़े से बाहर रख देता और अपना दरवाज़ा खटखटा देता। यह उस लड़की के लिए इशारा होता था कि अपना खाना उठा लो। इस तरह वह लड़की खाना उठाकर ले जाती और खा लेती। कई महीनों तक यही मामूल रहा।

उसके बाद शैतान ने उसके दिल में यह बात डाली कि देखो, वह लड़की अकेली रहती है, तुम खाना पकाकर घर के दरवाज़ें के बाहर रख देते हो और लड़की को खाना उठाने के लिए गली में निकलना पड़ता हैं अगर कभी किसी मर्द ने देख लिया तो उसकी इज़्ज़त ख़राब कर देगा। इसलिए बेहतर है कि खाना बनाकर उसके दरवाज़े के अन्दर रख दिया करो ताकि उसको

बाहर न निकलना पड़े। चुनाँचे बरसीसा ने खाना बनाकर उस लड़क के घर के दरवाज़े के अन्दर रखना शुरू कर दिया। वह खाना रखकर कुँडी खटखटा देता और लड़की खाना उठा लेती। यही सिलसिला चलता रहा।

जब कुछ और महीने इस तरह गुज़र गए तो शैतान ने उसके दिल में डाला कि तुम तो इबादत में लगे होते हो। यह लड़की अकेली है, ऐसा न हो कि तन्हाई की वजह से और ज़्यादा बीमार हो जाए। इसलिए बेहतर है कि उसको कुछ नसीहत कर दिया करो ताकि वह भी इबादत गुज़ार बन जाए और उसका वक़्त ज़ाए न हो। यह ख़्याल दिल में आते ही उसने कहा, हाँ यह बात तो बहुत अच्छी हैं लेकिन इसकी क्या तर्तीब होनी चाहिए। शैतान ने इस बात का जवाब भी उसके दिल में डाला कि लड़की को कह दो कि वह अपने घर की छत पर आ जाया करे और तुम भी अपने घर की छत पर बैठ जाया करो और उसे वअज़ व नसीहत किया करो। चुनाँचे बरसीसा ने इस तर्तीब से वअज़ व नसीहत करना शुरू कर दी। उसके वअज़ का उस पर बड़ा असर हुआ। उसने नमाज़ें पढ़नी और वज़ीफ़े करने शुरू कर दिए। अब शैतान ने बरसीसा के दिल में बात डाली कि देख तेरी नसहीत का लड़की पर कितना असर हुआ। ऐसी नसीहत तुम्हें हर रोज़ करनी चाहिए। चुनाँचे बरसीसा ने रोज़ाना नसीहत करना शुरू कर दी।

इसी तरह जब करते-करते कुछ वक़्त गुज़र गया तो शैतान ने फिर बरसीसा के दिल में यह बात डाली कि तुम अपने घर की छत पर बैठते हो और लड़की अपने घर की छत पर बैठती है, रास्ते में गुज़रने वाले क्या सोचेंगे कि ये कौन लोग बाते कर रहे है। इस तरह तो बहुत ग़लत तास्सुर पैदा हो जाएगा। इसलिए बेहतर है कि छत पर बैठकर ऊँची आवाज़ से बात करने के बजाए तुम लड़की के घर के दरवाज़ें से बाहर खड़े होकर तक़रीर करो और वह दरवाज़े के अन्दर खड़ी होकर सुन ले, पर्दा तो

होगा ही सही। चुनाँचे अब इस तर्तीब से वअ़ज़ व नसीहत शुरू हो गई। कुछ अरसे तक इसी तरह मामूल रहा।

इसके बाद शैतान ने फिर बरसीसा के दिल में ख़्याल डाला कि तुम बाहर खड़े होकर तक़रीर करते हो, देखनेवाले क्या कहेंगे कि यह आदमी पागलों की तरह ऐसे ही बातें कर रहा है। इसलिए अगर तक़रीर करनी ही है तो चलो किवाड़ के अन्दर खड़े होकर कर लिया करो। लड़की दूर खड़ी होकर सुन लिया करेगी। चुनाँचे अब बरसीसा ने दरवाज़े के अन्दर खड़े होकर तक़रीर करना शुरू कर दी। जब उसने अन्दर खड़े होकर तक़रीर करना शुरू कर दी तो लड़की ने उसको बताया कि इतनी नमाज़ें पढ़ती हूँ और इतनी इबादत करती हूँ। यह सुनकर उसे बड़ी ख़ुशी हुई कि मेरी बातों का लड़की पर बड़ा असर हो रहा हैं अब मैं अकेला ही इबादत नहीं कर रहा होता बल्कि यह भी इबादत कर रही होती है। कई दिन तक यही सिलसिला चलता रहा।

आख़िर शैतान ने लड़की के दिल में बरसीसा की मुहब्बत डाल दी और बरसीसा के दिल में लड़की की मुहब्बत डाली। चुनाँचे लड़की ने कहा कि आप जो खड़े-खड़े बयान करते हैं मै आपके लिए चारपाई डाल दिया करूँगी आप उस पर बैठकर बयान करना और मैं दूर बैठकर सुन लिया करूँगी। बरसीसा ने कहा, बहुत अच्छा। लड़की ने दरवाज़े के क़रीब चारपाई डाल दी। बरसीसा उसपर बैठकर नसीहत करता रहा और लड़की दूर बैठकर बात सुनती रही। इस दौरान शैतान ने बरसीसा के दिल में लड़की के लिए बड़ी शफ़क़त और हमदर्दी पैदा कर दी। कुछ दिन गुज़रे तो शैतान ने बरसीसा के दिल में यह बात डाली कि नसीहत तो लड़की को सुनानी होती है, तुम्हें दूर बैठने की वजह से ऊँचा बोलना पड़ता है, गली से गुज़रने वाले लोग भी सुनते हैं। कितना अच्छा हो कि यह चारपाई ज़रा आगे करके रख लिया करें और दोनों पस्त आवाज़ में बातचीत कर लिया करें। चुनाँचे बरसीसा की चारपाई लड़की की चारपाई के क़रीब हो गई और

वअज़ व नसीहत का सिलसिला जारी रहा।

कुछ अरसा इसी तरह गुज़रा तो शैतान ने लड़की को सजाकर बरसीसा के सामने पेश करना शुरू कर दिया और वह उस लड़की के हुस्न व जमाल का दीवाना होता गया। अब शैतान ने बरसीसा के दिल मे जवानी के ख़्यालात डालना शुरू कर दिए। यहाँ तक कि बरसीसा का दिल इबादतख़ाने से उचाट हो गया और उसका ज़्यादा वक़्त लड़की से बात करने में गुज़र जाता। साल गुज़र चुका थ। एक दफ़ा शहज़ादों ने आकर शहज़ादी की ख़बर ली तो शहज़ादी को ख़ुश व ख़ुर्रम पाया और बरसीसा के गुन गाते देखा। शहज़ादों को लड़ाई के लिए दोबारा सफ़र पर जाना था इसलिए वे मुतमइन होकर चले गए। अब शहज़ादों के जाने के बाद शैतान ने अपनी कोशिशे तेज़ कर दीं। चुनाँचे उसने बरसीसा के दिल में लड़की का इश्क़ पैदा कर दिया और लड़की के दिल में बरसीसा का इश्क़ पैदा कर दिया। यहाँ तक कि दोनों तरफ़ बराबर की आग सुलग उठी।

अब बरसीसा जिस वक़्त नसीहत करता तो सारा वक़्त उसकी निगाहें शहज़ादी के चेहरे पर जमी रहतीं। शैतान लड़की को नाज़ व अंदाज़ सिखाता और वह सरापा नाज़नीन और रश्के क़मर अपने अंदाज़ व अदाओं से बरसीसा का दिल लुभाती। यहाँ तक कि बरसीसा ने अलग चारपाई पर बैठने के बजाए लड़की के साथ एक ही चारपाई पर बैठना शुरू कर दिया। अब बरसीसा की निगाहें जब शहज़ादी के चेहरे पर पड़ीं तो उसने उसे सरापा हुस्न व जमाल और नज़र को जज़्ब करने वाली पाया। चुनाँचे बरसीसा अपने शहवानी जज़्बात पर क़ाबू न रख सका और उसने शहज़ादी की तरफ़ हाथ बढ़ाया। शहज़ादी ने मुस्कुरा कर उसकी हौसला अफ़ज़ाई की। यहाँ तक कि बरसीसा ज़िना कर बैठा। जब दोनों के दर्मियान से हया की दीवार हट गई और ज़िना कर लिया तो वह आपस में मियाँ-बीवी की तरह रहने लगे। इस दौरान शहज़ादी को हमल ठहर गया।

बरसीसा को फ़िक्र हुई कि अगर किसी को पता चल गया तो क्या बनेगा। मगर शैतान ने उसके दिल में ख़्याल डाला कि कोई फ़िक्र की बात नहीं, जब बच्चा पैदा होगा तो बच्चे को ज़िन्दा दरगोर कर देना और लड़की को समझा देना। वह अपना ऐब भी छिपाएगी और तुम्हारा ऐब भी छिपाएगी। इस ख़्याल के आते ही उसके डर और ख़ौफ़ के तमाम पर्दे दूर हो गए और बरसीसा बेख़ौफ़ व ख़तर हवस परस्ती और नफ़्सपरस्ती में मशगूल रहा।

एक वह दिन भी आया जब उस शहज़ादी ने बच्चे को जन्म दिया। जब बच्चे को दूध पिलाते काफ़ी अरसा गुज़र गया तो शैतान ने बरसीसा के दिल में यह ख़्याल डाला कि अब तो डेढ़ दो साल गुज़र गए हैं। बादशाह और दूसरे लोग भी जंग से वापस आनेवाले हैं, शहज़ादी तो उनको सारा माजरा सुना देगी। इसलिए तुम इसका बेटा किसी बहाने से क़त्ल कर दो ताकि गुनाह का सुबूत न रहे।

चुनाँचे एक दफ़ा शहज़ादी सोई हुई थी तो बरसीसा ने उसके बच्चे को उठाया और क़त्ल करके घर के सेहन में दबा दिया। माँ तो माँ ही होती है। जब वह उठी तो उसने कहा, मेरा बेटा किधर है? बरसीसा ने कहा मुझे तो कोई ख़बर नहीं। माँ ने इधर-उधर देखा तो बेटे का कहीं सुराग़ नहीं मिला। चुनाँचे वह उससे ख़फ़ा होने लगी तो शैतान ने बरसीसा के दिल में यह बात डाली कि यह माँ है, यह अपने बच्चे को हर्गिज़ नहीं भूलेगी। पहले तो न मालूम बताती या न बताती, अब तो ज़रूर बता देगी। लिहाज़ा अब एक ही इलाज़ बाक़ी है कि लड़की को भी क़त्ल कर दो ताकि न रहे बांस न बजे बांसुरी। जब बादशाह आकर पूछेगा तो बता देना कि लड़की बीमार हुई और मर गई थी। जैसे ही उसके दिल मे यह बात आई तो कहने लगा बिल्कुल ठीक है। चुनाँचे उसने लड़की को भी क़त्ल कर दिया और लड़के के साथ ही सहन में दफ़न कर दिया। उसके बाद वह अपनी इबादत में

मशग़ूल हो गया।

कुछ महीनों के बाद बादशाह वापस आ गए। उसने बेटों को भेजा कि जाओ अपनी बहन को ले आओ। वे बरसीसा के पास आए और कहने लगे कि हमारी बहन आपके पास थी हम उसे लेने आए हैं। बरसीसा उनकी बात सुनकर रो पड़ा और कहने लगा कि आपकी बहन बहुत अच्छी थी, बड़ी नेक थी और ऐसे-ऐसे इबादत करती थी लेकिन वह अल्लाह को प्यारी हो गई। यह सहन में उसकी क़ब्र है। भाईयों ने जब सुना तो वे रो-धो कर वापस चले गए।

घर जाकर जब वे रात को सोए तो शैतान ख़्वाब में बड़े भाई के पास गया और उससे पूछने लगा कि बताओ तुम्हारी बहन का क्या बना? वह कहने लगा कि हम जंग के लिए गए हुए थे और उसे बरसीसा के पास छोड़ गए थे, अब वह मर चुकी है। शैतान कहने लगा, वह मरी नहीं थी। उसने पूछा कि अगर मरी नहीं तो फिर क्या हुआ था? शैतान कहने लगा, बरसीसा ने उससे ज़िना किया, जब बच्चा पैदा हुआ तो उसने ख़ुद उसको क़त्ल किया और फ़लाँ जगह दफ़न कर दिया और बच्चे को भी उसी के साथ दफ़न किया था। उसके बाद वह ख़्वाब में ही उसके दर्मियाने भाई के पास गया और उसको भी यही कुछ बताया और फिर उसके छोटे भाई के पास जाकर भी यही कुछ कहा।

तीनों भाई जब सुबह उठे तो एक ने कहा मैंने यह ख़्वाब देखा है, दूसरे ने कहा कि मैंने भी यही ख़्वाब देखा हैं तीसरे ने कहा मैंने भी यही ख़्वाब देखा है। वह आपस में कहने लगे कि यह अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि सबको एक जेसा ख़्वाब आया है। सबसे छोटे-भाई ने कहा, यह इत्तिफ़ाक़ की बात नहीं बल्कि मैं तो जाकर इसकी तहक़ीक़ करूँगा। दूसरे ने कहा, भाई छोड़ो भाई यह कौन-सी बात है जाने दो। वह कहने लगा नहीं मैं ज़रूर तहक़ीक़ करूँगा। चुनाँचे छोटा भाई गुस्से में आकर चल पड़ा। उसे देखकर बाक़ी भाई भी उसके साथ हो लिए। उन्होंने जाकर

अब ज़मीन को खोदा तो उन्हें उसमें अपनी बहन की हड्डियाँ भी मिल गयीं और साथ ही छोटे बच्चे की हड्डियों का ढांचा भी मिल गया।

जब सुबूत मिल गया तो उन्होंने बरसीसा को गिरफ्तार कर लिया। जब क़ाज़ी के पास ले जाया गया तो उसने क़ाज़ी के सामने अपने घिनोने और मकरूह फेअल का इक़रार कर लिया और क़ाज़ी ने बरसीसा को फाँसी देने का हुक्म दे दिया।

जब बरसीसा को फाँसी के तख़्ते पर लाया गया तो उसके गले में फँदा डाला गया और फँदे को खींचने का वक़्त आया तो फँदा खिंचने से ठीक दो-चार लम्हे पहले शैतान उसके पास वही इबादतगुज़ार आदमी की शक्ल में आया। वह उसे कहने लगा, मुझे पहचानते हो कि मैं कौन हूँ? बरसीसा ने कहा, हाँ मैं तुम्हें पहचानता हूँ, तुम वही इबादतगुज़ार आदमी हो जिसने मुझे दम करना सिखाया था। शैतान ने कहा सुनो, वह दम भी आपको मैंने बताया, लड़की को भी अपना असर डालकर बीमार किया था, फिर उसे क़त्ल भी मैंने ही तुझसे करवाया था और अगर अब तू बचना चाहे तो मैं ही तुझे बचा सकता हूँ। बरसीसा ने कहा, अब तुम मुझे कैसे बचा सकते हो? शैतान कहने लगा, तुम मेरी एक बात मान लो। मैं तुम्हारा यह काम कर देता हूँ। बरसीसा ने कहा, मैं आपकी कौन-सी बात मानूँ? शैतान ने कहा, बस यह कह दो कि ख़ुदा नहीं हैं बरसीसा के हवास ख़राब हो चुके थे। उसने सोचा चलो, मैं एक दफ़ा कह देता हूँ, फिर फाँसी से बचने के बाद दोबारा इक़रार कर लूँगा। चुनाँचे उसने कह दिया। ख़ुदा मौजूद नहीं है। ऐन उसी वक़्त खींचने वाले ने रस्सा खींच दिया और यूँ इस इबादतगुज़ार की कुफ़्र पर मौत आ गई।

इससे अंदाज़ा लगाइए कि शैतान कितनी लंबी प्लानिंग करके इनसान को गुनाह के क़रीब करता चला जाता है। इससे इनसान ख़ुद नहीं बच सकता। बस अल्लाह तआला ही उसे बचा सकता है। हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर यूँ दुआ माँगनी चाहिए :

اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيٰطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ

ऐ अल्लाह! हमें शैतान मरदूद के शर से महफ़ूज़ फ़रमा, ऐ परवरदिगार! मैं आपकी पनाह माँगता हूँ इससे कि शैतान मेरे पास आएँ।

सजाह और मुस्लिमा कज़्ज़ाब

सजाह बिन हारिस हवाज़न के क़बीले बनी तमीम में पैदा हुई उसकी परवरिश के शुमाल मशरिक़ में उस सरज़मीन पर हुई जो आजकल इराक़ कहलाती हैं इसको दो दरियाओं (दजला और फ़रात) के दर्मियान होने की वजह से अलजज़ीरा कहा जाता है। सजाह मज़हब से ईसाई और निहायत तेज़ तर्रार और बुलन्द हौसला औरत थी। उसे तक़रीर व बोलने में ख़ूब महारत हासिल थी। समझदारी, ख़र्च करने और रायत की पुख़्तगी में अपनी मिसाल आप थी। अपने ज़माने की मशहूर काहिन थी और सबसे बढ़कर यह कि शबाब और दिलरुबाई में चाँद को शर्माती थी।

जब नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम ने वफ़ात पाई तो सजाह नबुव्वत और "वही-ए-इलाही" की दावेदार बन बैठी। सबसे पहले बनी तग़ल्लुब ने उसको नबुव्वत को तसलीम किया। सजाह ने क़ाफ़िए भरी इबारतों में ख़त लिखकर तमाम अरब क़बीलों को अपने नए दीन की दावत दी। बनी तमीम का सरदार मालिक इब्ने हवीरा उसके ख़त की फ़ुसाहत व बलाग़त को देखकर उसका दीवाना हो गया। थोड़े अरसे मे सजाह के झंडे तले एक ज़बरदस्त लश्कर हो गया। सजाह ने सबसे पहले बनी तमीम पर हमला किया। सख़्त घमासान की लड़ाई हुई लेकिन बनी तमीम के लोगों ने उससे सुलह कर ली।

सजाह ने अगले रोज़ एक पुरअसर इबारत तैयार की और सुबह के वक़्त फ़ौज के सरदारों को कहने लगी कि मैं "वही-ए-इलाही" की वजह से यमामा पर हमला करना चाहती हूँ।

यमामा वह जगह थी जहाँ मुस्लिमा बिन कज़ाब अपनी फ़ौज के साथ मौजूद था। जब मुस्लिमा को सजाह के आने की ख़बर मिली तो उसने अय्यारी और मक्कारी से काम लिया। अपने लोगों को क़ीमती तोहफ़े वग़ैरह देकर सजाह के पास पैग़ाम भेजा कि पहले अरब के सारे शहर आधे हमारे थे और आधे कुरैश के थे। क्योंकि कुरैश ने बदअहदी की लिहाज़ा वे आधे तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ। यह पैग़ाम भी दिया कि मुझे आपसे मुलाक़ात का शौक़ हैं अगर इजाज़त हो तो हाज़िर हो जाऊँ। सजाह ने उसे मुलाक़ात की इजाज़त दे दी।

मुसैलमा कज़्बा अपने चालीस होशियार और मक्कार फ़ौजियों को लेकर सजाह के पास पहुँचा और तपाक से मिला। उसने सजाह के हुस्न व जमाल को देखा तो दीवाना हो गया। उसे यक़ीन था कि लड़-झगड़ कर औरत ज़ात को जीतना मुश्किल है। अलबत्ता इश्क़ व मुहब्बत के काँटे में फँसाकर सीधा करना आसान है। मुस्लिमा ने सजाह की तारीफ़ों के पुल बांध दिए और दरख़्वास्त पेश की कि आप मेरी दावत क़बूल करके मेरे ख़ेमे तक तश्रीफ़ ले चलें। वहाँ हम दोनों तन्हाई में एक-दूसरे से बात करेंगे और अपनी-अपनी नबुव्वत का तज़्किरा दर्मियान में लाएँगे। सजाह अपनी तारीफ़े सुन-सुन कर जोशे मुसर्रत में फूली नहीं समाती थी। उसने हामी भर ली और वायदा भी कर लिया कि दोनों के हामी ख़ेमे से दूर रहेंगे, किसी को अन्दर जाने की इजाज़त न होगी। इस कामयाबी पर मुस्लिमा की बांछे खिल गयीं। उसने वापस आकर हुक्म दिया कि एक ख़ुशनुमा और पुरतकल्लुफ़ ख़ेमा गाड़ा जाए। उसमें आला क़िस्म के असबाब ऐश व निशात रखे जाएँ। सजा-सँवार कर क़िस्म-क़िस्म के इत्र मुहैय्या किया जाएँ और ख़ेमे को सजा-धजा कर सेज बना दिया जाए। जब सब तैयारी पूरी हो गयीं तो उसने सजाह को आने की दावत दी। सजाह गरचे इश्के क़मर और हुस्न व जमाल का पैकर थी मगर इस मुलाक़ात के लिए वह ख़ूब बन-संवरकर और

जोबन निखारकर हुस्न व लताफ़त के फूल बरसाती और मशूक़ाना अन्दाज़ा मस्ती में चलती हुई मुस्लिमा कज़ाब के ख़ेमे में आ पहुँची। मुसैलमा अगरचे सजाह से उम्र में दुगना था मगर डील-डौल के एतिबार से मज़बूत था। उसने सजाह का मुस्कराहटों से इस्तिक़बाल किया। निहायत नरम व मुलायम रेशमी गदीले पर बिठाया और मीठी-मीठी और चिकनी चुपड़ी बातें करने लगा।

ख़ुशबू की लपटों ने सजाह को मस्त व मसरूर कर दिया था। मुसैलमा जानता था कि औरत जब ख़ुशबू की वजह से मस्त हो जाती है तो मर्द की तरफ़ माइल हो जाती है। मुस्लिमा ने सजाह से कहा कि अगर आप पर हाल में कोई "वही" नाज़िल हुई है तो सुनाइए। सजाह बोली कि नही पहले आप सुनाइए। मुसैलमा तो पहले ही शहवत भरी गुफ्तगू करने के लिए तैयार बैठा था। उसने सजाह का रवैय्या मालूम करने के लिए कहा कि मुझपर यह "वही" उतरी है :

الم تر الى ربك كيف فعل بالحبلى اخرج منها نسمة تسعى بين صفاق وحشى

क्या तुम नहीं देखते कि तुम्हारा रब हामला औरतों से क्या सुलूक़ करता है उनसे चलते-फिरते जानदार निकालता है जो पर्दों और झिल्लियों के दर्मियान लिपटे रहते हैं।

क्योंकि मुसैलमा की वही सजाह की नफ़्सानी ख़्वाहिश के मुताबिक़ थी। शबाब की उमंगों ने उसे गुदगुदाना शुरू कर दिया। वह ग़ैर मर्द के साथ तन्हाई में बैठी थी और चाहती थी कि शहवानी गुफ्तगू जारी रहे। बोली अच्छा कोई और वही भी सुनाइए।

जब मुसैलमा ने देखा कि इस नाज़नीन ने इतनी फ़हश गुफ्तगू को गवारा कर लिया और बुरा मानने के बजाए ख़ुश हुई तो उसका हौसला बढ़ा। उसने मस्त-मस्त निगाहों से सजाह की

तरफ़ देखा। उसके हुस्न व जमाल की खूब तारीफ़ की और कहा हक़ तआला ने यह आयत भी नाज़िल फ़रमाई है :

ان الله خلق للنساء افراجا وجعل الرجال لهن ازواجا فتولج فيهن ايلا
جا ثم نخرج اذا نشاء اخراجا . فينتجن لنا سخالا وانتاجا.

इस शर्मनाक और शवहतअंगेज़ इब्लीसी कलाम को सुनकर सजाह के अन्दर शहवत बेदार हो गई। उसकी आँखों में सुर्ख डोरे आने लगे। मुसैलमा बहुत चालाक और मक्कार और औरत की तबियत को जानता था। कहने लगा, सुनो ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर ने आधी ज़मीन मुझे दी है और आधी क़ुरैश को दी है। मगर क़ुरैश ने नाइंसाफ़ी की। लिहाज़ा मैंने क़ुरैश का आधा हिस्सा तुम्हें दे दिया है। मैं बड़े खुलूस से मशवरा देता हूँ कि अगर हमारी फ़ौजें मिल जाएँ तो हम सारे अरब पर क़ब्ज़ा कर लेगे। तुम अरब की मालिका कहलाओगी, तुम्हारी फ़ौज की देखभाल का काम मैं करूँगा। हम आपस में निकाह कर लेते हैं। हमारी नबुव्वत भी ख़ूब चमकेगी। सजाह पर मुसैलमा का जादू चल चुका था वह बोली मुझे आपका मशवरा मंज़ूर है।

यह सुनकर मुसैलमा मुस्कराया और कहने लगा मुझे ऐसा ही हुक्म मिला है। अलग़र्ज़ मियाँ बीवी राज़ी तो क्या करेगा क़ाज़ी की तरह दोनों ने बिना किसी गवाह के ख़ुद ही निकाह कर लिया। और सुहागरात मनानी शुरू कर दी। तन्हाई में ग़ैर मर्द के साथ बातचीज करने का अक़्ली अंजाम यही होता है।

ख़ेमे से बाहर दोनों नबुव्वत के दावेदारों के पैरोकार यह गुमान कर रहे थे कि ख़ेमे के अन्दर हर मसअले पर बहुत कुछ जिरह हो रही होगी। बहस व इख़्तिलाफ़ की महफ़िल अपने उरूज पर होगी। लोग अंजामे मुलाक़ात मालूम करने के लिए चश्में वराह और कानलगाए हुए थे जबकि ख़ेमे के अन्दर दुल्हा और दुल्हन बेहतरीन बिस्तर पर जवानी के मज़े लूट रहे थे। शौके विसाल का यह आलम था कि तीन दिन तक ख़ेमे से बाहर

न निकले। मुसैलमा ने जी भरकर सजाह से नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी की और अरमान भरे दिल की आरज़ूए पूरी कीं।

तीन दिन में अपनी नबुव्वत को ख़ाक में मिलाकर और मुसैलमा के हाथों अपनी इज़्ज़त लुटकार शर्मिन्दगी में डूबी हुई सजाह लड़खड़ाते क़दमों से चलती हुई अपने लश्कर में वापस हुई। उसके सरदारों ने पूछा कि तीन दिन की मज्लिस का क्या नतीजा निकला। कहने लगी, वह भी नबी बरहक़ हैं मैंने उसकी नबुव्वत को तसलीम करते हुए निकाह कर लिया है। फ़ौजियों के सब्र व इंतिज़ार का पैमाना लबरेज़ हो चुका था। एक ने पूछा कि गवाह कौन था और मेहर कितना था। सजाह ने शर्मिन्दगी से आँखें नीची कर लीं। नादिम चेहरा अपनी बाज़ी हारने की वजह से ज़मीन की तरफ़ झुक गया। कहने लगी कि मैं मुसैलमा से हक़ महर पूछना भूल गई। मौतिक़िदों ने मशवरा दिया कि आप इसी वक़्त दोबारा जाएं और मेहर का तसफ़िया करें। उसके बग़ैर निकाह ठीक नहीं होता। उनके मजबूर करने पर सजाह नदामत और शर्मिन्दगी की तस्वीर बनी हुई वापस लौटी। मुसैलमा ने ख़ेमें के दरवाज़े बंद कर लिए थे। वह इस बात पर घबराया हुआ था कि कहीं सजाह के पैरोकार इसे अपनी तौहीन समझकर उसके क़त्ल पर न उतार आएं। जब मुसैलमा का पता चला कि सजाह दरवाज़े पर आई है तो उसने एक सुराख़ से झांकर पूछा कि दोबारा कैसे आना हुआ? सजाह ने कहा कि मैं अपना महर पूछना भूल गई थी। मुसैलमा ने मुस्कराकर कहा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वस्ल्लम मैराज में अर्शे बरी से पाँच नमाज़ें लाए थे। रब्बुलइज़्ज़त ने मोमिनीन को सजाह के महर के बदले फ़ज्र और इशा की नमाज़ें माफ़ कर दीं। सजाह वापस आई तो उसके लश्कर के मर्द हज़रात को शक पड़ गया कि दाल में काला है। वह सजाह जो लोगों के सामने चहकती थी, अपनी बोलने के ज़रिए उनके दिल मोह लेती थी, अब सहमी और घबराई हुई कैफ़ियत से दो चार थी। ज़बान से बे-ढंगे अलफ़ाज़

निकल रहे थे। औरत जब अपना जौहरे असमत लुटा बैठे तो उसका यही हाल होता है। वह अपनी जीती बाज़ी हार चुकी थी। उसकी फ़ौज के लोग बद दिल होकर घरों को वापस जाने लगे।

इसी दौरान हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अनहु इस्लामी लश्कर को लेकर यमामा पहुँचे। मुसैलमा क़त्ल हुआ, सजाह ने भागकर जान बचाई और जज़ीरे में जाकर मुक़ीम हो गई। नबुव्वत के दावे से तौबा की और इस्लाम क़बूल कर लिया। क़बीला बनी तुग़लब से उसका ननिहाली रिश्ता था। उसमें जाकर ख़ामोशी की ज़िन्दगी गुज़ारने लगी। उसके कहने पर उसकी क़ौम ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो वह बसरा मुन्तक़िल हो गई और नेकोकारी और परहेज़गारी को अपना शिआर बना लिया। सैय्यदना अमीर माविया रज़ियल्लाहु अनहु के ज़माने में उसकी वफ़ात हुई और एक सहाबी हज़रत समरा बिन जुंदुब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसका जनाज़ा पढ़ाया।

इस पूरे वाक़िए से यह बात खुलकर सामने आई कि अगर सजाह मुस्लिमा क़ज़्बा से तन्हाई में मिलने वाली ग़लती न करती तो मुसैलमा उसकी मातहती को क़बूल कर लेता। बूढ़े मर्द ने तन्हाई का फ़ायदा उठाकर जवान लड़की को पूरी ज़िन्दगी के लिए नाकारा बना दिया। उसके हाथ नदामत और शर्मिन्दगी के सिवा कुछ न आया। चंद लम्हों की ग़लती ने पूरी ज़िन्दगी की इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी। सजाह ने इस सदमे की वजह से इस्लाम क़बूल कर लिया। क्योंकि उसे अपनी और मुसैलमा की हक़ीक़त का पता चल गया था। एहसासे नदामत भी कितनी अजीब नेमत है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने सजाह का अंजाम अच्छा कर दिया। सच है कि तौबा का दरवाज़ा हर वक़्त खुला है। गुनाहगार जब चाहे अपने रब को मनाए।

4. ग़ैर-महरम से छिपी आशनाई (दोस्ती) करना

इन्सान कभी-कभी ऐसी ग़ल्तियाँ कर बैठता है जो पूरी

ज़िन्दगी के लिए दिल का रोग बन जाती हैं। इन ग़लतियों में एक ग़लती यह है कि औरत किसी ना-महरम मर्द से अपने ज़ाती मामलात में बातें करनी शुरू कर दे। उसकी इब्तिदा कितने ही ख़ुलूस पर क्यों न हो उसका आख़िर हमेशा बुरा होता है। कुछ लड़कियाँ अपने माँ-बाप से बात करने में दुश्वारी महसूस करती हैं। न ही कोई ऐसी बहन होती है जो राज़दार बन सके। लिहाज़ा वे अपने किसी चचेरे भाई से या सहेली के भाई से या मौहल्लेदार लड़के या क्लास फ़ैलो से बात कर बैठती हैं। मर्द बड़ी फ़राख़ दिली से उसकी बात सुनते हैं, उसकी मदद करते हैं मगर साथ-ही-साथ उस लड़की में दिलचस्पी लेना भी शुरू कर देते हैं। शुरू में दोनों को इसमें कोई बुराई नज़र नहीं आती लेकिन वक़्त के साथ-साथ ही दोनों में नाजाएज़ ताल्लुक़ात की सूरत बन जाती है। आजकल नवजवान लड़के भोली-भाली लड़कियों को जाल में फँसाने और उनको दाना डालने में महारत हासिल कर चुके हैं। अमूमन लड़कियाँ अनाड़ी होती हैं जबकि लड़के मुहब्बत की पेंगे बढ़ाने का तजुरिबा हासिल कर चुके होते हैं। लिहाज़ा वे हर नई लड़की को ऐसी तर्कीब से क़रीब करते हैं कि अक़्ल दंग रह जाती है। अगर लड़की उन्हें दीनी ज़हन की नज़र आती है तो उससे नेकी और नमाज़ की बातें करनी शुरू कर देते हैं। उस लड़की का कहते हैं कि तुम्हारी वजह से मेरे दिल में नेक बनने का शौक पैदा हो गया है। अगर लड़की की तबियत में हमदर्दी नज़र आती है तो उसके सामने अपनी वालिद की सख़्ती और कढ़वेपन या अपनी बीवी के कढ़वा बोलने का ऐसा मंज़र पेश करते है। कि लड़की को उस पर तरस आ जाता हैं वह सोचती है कि अगर मैं इससे बात नहीं करूँगी तो ये लड़का कहीं ख़ुदकशी न कर लें। अगर लड़की ग़रीब नज़र आती है तो उसको नौकरी दिलवाने या अपने पाँव पर खड़ा होने का मशवरा देते हैं। अगर लड़की नख़रे वाली और चंचल नज़र आती है तो उसकी जूती और कपड़ों की तारीफ़ों के पुल बाँध देते हैं। उसके जिस्म

से रीह भी ख़ारिज़ हो तो कहते हैं वाह क्या गुलाब की ख़ुशबू आ रही है। कलर मैचिंग की तारीफ़ करके उसको क़रीब कर लेते हैं। जो लड़की देखने में आम सी शक्ल व सूरत रखती हो उसको कहते हैं कि तुम्हारे चेहरे पर सादगी का नूर नज़र आता है। जो लड़की उम्र में बड़ी हो जाए उसको कहते हैं तुम्हारे चेहरे पर बड़ी मासूमियत है। जो लड़की बेवक़ूफ़ नज़र आए तो उसकी अक़्लमंदी की ख़ूब तारीफ़ें करते हैं। जो लड़की मोटी हो उसको कहते हैं कि तुम्हारी सेहतमंदी का क्या राज़ है, हमें भी बताएं कि आप कौन-से विटामिन इस्तेमाल करती हैं। अगर कुछ और समझ में न आए तो कहते हैं कि मेरे दिल में आपका बड़ा एहतिराम है। आपकी शराफ़त मुझे अच्छी लगी है। ग़र्ज़ कोई-न-कोई ऐसी बात करते हैं जो उस लड़की की दुखती रग होती है कि वह लड़की महसूस करे कि मुझे भी कोई चाहने वाला है। साथ यह भी यक़ीन दिलाते है कि मैं आम लड़कों की तरह नहीं हूँ, मैं तो किसी से बात ही नहीं करता। पता नहीं क्यों मेरे दिल में आपका बड़ा मुक़ाम हैं। जब लड़की बातचीत करने लग जाती है तो फिर आहिस्ता-आहिस्ता उसे शीशे में उतारते हैं। उसकी तारीख़ पैदाइश लिखकर रखते हैं, ताकि उसे मुबारकबादी दी जा सके। ख़त के जरिए राब्ता हो तो ऐसे-ऐसे शेर लिखते हैं कि पढ़ने वाला दिल थामकर रह जाए। कभी कहते हैं कि आप मुझे खाना खाते याद आयीं। आप मुझे सोते वक़्त याद आयीं, आप मुझे नमाज़ पढ़ते वक़्त याद आयीं अगरचे वह बैतुलख़ला में याद आई हो। अगर लड़की में शराफ़त नज़र आए तो कहते हैं कि आपने मुझे सीधे रास्ते पर डाला है मैं तो गंदगी के दलदल में फंस रहा था। अगर लड़की नमाज़ी हो तो कहते हैं कि मेरे लिए दुआ करना मुझे तुम्हारी दुआओं की क़बूलियत पर बड़ा यक़ीन है। अगर लड़की में कोई बीमारी नज़र आए तो उसके इलाज वग़ैरह की बातें करते हैं।

मक़सद यह होता है कि कोई ऐसी बात की जाए जो लड़की

को अच्छी लगे और वह भी कोई बात करे तो फिर बात से बात बढ़े। जब महसूस करते हैं कि लड़की ने बेझिझक बात करना शुरू कर दी है तो बातचीत के दौरान कभी कभार कहते हैं कि आप मुझे बातएं नाँ कि आप मुझे अच्दी क्यों लगती हैं? जब देखते हैं कि उसने मुस्कराकर देखा है तो कहते हैं प्लीज़ मुझे याद न आया करें। मेरी नीयत साफ़ है, ऐसा न हो कि मुझे आपको भुलाना मुश्किल हो जाए। कभी-कभी बातचीत के दौरान कहते हैं, हैरानगी की बात है कि मेरी और आपकी पसन्द और नापसन्द मिलती है। कभी-कभी यह कहते हैं कि आप बहुत अक़्लमंद हैं, आपने फ़लाँ मशवरा बड़ा ही अच्छा दिया। कभी साफ़ लफ़्ज़ों मे कह देते हैं कि मैं आपको अपनाना चाहता हूँ। मेरा मक़सद बुरा नहीं है। इन तमाम हथकंडों का निचोड़ यह होता है कि लड़की हम से बातचीत करे, हंसी मज़ाक करे और अपनी ज़िन्दगी की बाते खोलना शुरू कर दे। जब लड़की ने अपनी ज़ाती बातें शुरू की तो वह समझ लेते हैं कि यह परिन्दा अब जाल में फंस गया।

दूसरे मरहले में उस लड़की को यक़ीन दिलवाते हैं कि मेरी नीयत बुरी नहीं है मगर मुझे आपसे मुहब्बत हो गई। ज़बान से कहते हैं कि आई लव यू मगर दिल में कहते हैं आई नीड यू (मुझे आपकी ज़रूरत है)।

जब देखते हैं कि अब एक क़दम और आगे बढ़ाया जा सकता है तो उस लड़की को अपने फ़र्ज़ी और झूठे इश्क़ की दास्तान सुनाते हैं। अगर वे ग़ौर से सुन ले तो उसे अपने ख़्वाब सुनाते हैं कि आज रात मैंने ख़ाब में लड़की से यह किया, वह किया। अगर इस पर लड़की अच्छा रवैय्या ज़ाहिर करे तो उससे फ़िल्मों ड्रामों और गानों के बारे में तबादला ख़्यालात करना शुरू कर देते हैं। पूछते हैं कि तुम्हें कौन-सा गाना पसन्द है मुझे तो यह पसन्द है तुम्हें कौन-सी फ़िल्म पसन्द है मुझे तो यह पसन्द है।

ग़र्ज़ जब इस क़िस्म की नाशाइस्ता बातें खुलेआम होने लगें तो समझते हैं कि अब कामयाबी के इम्कान रोशन हैं।

तीसरे मरहले में उस लड़की से कहते हैं कि मेरा दिल चाहता है कि आपके पास बैठकर आमने-सामने जी भरकर बाते करूँ। मेरे लिए कुछ और मौक़ा निकाल लो। कभी कहते मेरा जी चाहता है कि समुद्र का किनारा हो और हम दोनों बातें करते-करते दूर चले जाएं। गर्मी के मौसम में कहते हैं कि मेरा जी चाहता है कि ठंडी सड़क हो और हम दोनों नंगे पाँव उस पर चलते-चलते थक जाएँ तो उसी पर सो जाएँ चाहे कोई हमारे ऊपर से ट्रक ही गुज़ार दे। सर्दी के मौसम में कहते हैं कि मेरा जी चाहता है कि हम एक चारपाई पर बैठे बातें करते रहें और हमारे हाथ-पाँव कंबल में लिपटे हों। अगर लड़की ऐसी बातचीत को ख़ुशी-ख़ुशी सुन ले तो समझते हैं कि मंज़िल क़रीब है।

चौथे मरहले में उस लड़की से तन्हाई में मुलाक़ात की ख़्वाहिश ज़ाहिर करते हैं और थोड़ी बातचीत के बाद कहते है कि थोड़ी देरे के लिए गले मिल लो। एक बार आँख का बोसा लेने दो। आइन्दा कभी ऐसा नहीं करूँगा। अगर इजाज़त मिल गई तो हर मुलाक़ात में खुलते-खुलते आख़िर ज़िना कर गुज़रते हैं। एक आवारा नवजवान ने तौबा की तो उसने यह सारी राम-कहानी सुनाई। यह भी बताया कि एक-एक वक़्त में पाँच-पाँच, छः-छः लड़कियों से मुहब्बत चल रही होती हैं एक से बातचीत करके फ़ोन बंद करते हैं तो दूसरी लड़की को कॉल करके कहते हैं कि आज मैं आपके लिए बहुत उदास हूँ। जब फ़ोन बंद करते हैं तो तीसरी लड़की को कॉल करके कहते हैं कि हाय मैं तो आज आप से बातचीत करने के लिए तरस गया था। शैतानी काम के लिए क़दम-क़दम पर झूठी क़समें खाते हैं।

मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ लड़की से अपनी शहवत पूरी करना होता है। लेकिन जिस लड़की से एक दफ़ा शहवत पूरी कर लें उससे कभी शादी के लिए तैयार नहीं होते। दिल में यह बात

होती है कि जो लड़की कुँवारेपन में मेरे साथ नाजाएज़ ताल्लुक़ात बना सकती है वह मेरी बीवी बन गई तो औरों से ताल्लुक़ात क्यों नहीं जोड़ेगी। लिहाज़ा इस प्यार को ख़त्म भी मरहलावार (तर्तीब से) करते हैं।

मरहला न.—1 (Use the girl)

लड़की से अपनी नफ़्सानी ख़ाहिश पूरी करो जितना अरसा भी दांव लग सके। जब लड़की मजबूर करे कि आप मेरे घर अपनी वालिदा को रिश्ते के लिए क्यों नहीं भेजते तो बहाने बनाओ। अगर लड़की समझदार हो और हटने लगे तो उसे बुराई के लिए मजबूर करो।

मरहला न.—2 (Abuse the girl)

लड़की को मजबूर करके उससे ख़ाहिश पूरी करो। कभी कहो मैं गोलियाँ खा लूँगा, मैं पंखे से लटक जाऊँगा, मैं जेब में तुम्हारे नाम ख़त लिखकर छत से छलांग लगा दूँगा वरना तुम मुझसे ज़रूरत मिलो। इस तरह जितना अरसा गुज़र सकता है गुज़ारने की कोशिश करो।

मरहला न.—3 (Confuse The Girl)

अगर लड़की के माँ-बाप इसका रिश्ता कहीं और करना चाहते हैं तो उसके सामने उदासी के फ़िक़रे बोलो। मैं तुम्हारे बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकूँगा। तुमने मेरा सुकून तबाह कर दिया है। तुम्हारी वजह से मेरा पढ़ाई में दिल नहीं लगता। लिहाज़ा मैं फ़ेल हो गया हूँ। अगर तुमने मेरे साथ शादी न की तो मैं ऐन उस वक़्त ख़ुदकशी करूँगा जब तुम्हारी डोली जा रही होगी। याद रखना अगर तुमने मेरे साथ शादी नहीं की तो मैं तुम्हारे होने वाले ख़ाविन्द को सब कुछ बता दूँगा। मैं तुम्होर ख़ाविन्द को तुम्हारे ख़त दिखाऊँगा। तुम्हारी तस्वीरें, तुम्हें तलाक़ दिलवाकर रहूँगा। अब तुम मेरी बीवी बनकर ही ज़िन्दा रह सकोगी। लड़की बेचारी इन झूठी मक्कारियों से मुतास्सिर होकर अच्छे-अच्छे रिश्तों से इनकार कर देती है। माँ-बाप के सामने ज़िल्लत व रुसवाई

बर्दाश्त करती है मगर ज़िद करती है कि मेरा रिश्ता फ़लाँ लड़के से है किया जाए वरना मैं ख़ुदकशी कर लूँगी, कहीं चली जाऊँगी, सबकी नाक कटवाकर रहूँगी। अगर माँ-बाप तैयार हो जाएँ तो कि चलो उसी आवारा लड़के से तुम्हारी शादी कर देते हैं और लड़की उस लड़के से कहे कि आप अपनी ख़ाविन्द को हमारे घर रिश्ता माँगने के लिए भेजो, मेरे माँ-बाप हाँ कर देंगे। तो लड़का समझ लेता है कि चौथा मरहला शुरू हो गया।

मरहला न.—4 (Refuse the Girl)

लड़का जब देखता है कि लड़की हर तरफ़ से हट-कटकर मेरे लिए फारिग हो गई है तो उससे जिन्सी ताल्लुक़ात क़ायम रखता है मगर माँ को भेजने के बारे में बहाने करता है। कभी कहता है कि फ़लाँ काम की वजह से अम्मी मसरूफ़ हैं, कभी कहता है कि फ़लाँ बात पेश आ गई। लिहाज़ा अब मैं घर में यह बात कैसे करूँ। जब लड़की ज़्यादा मजबूर करती है तो लड़का कह देता है कि मेरी अम्मी नहीं मानतीं, क्या करूँ, मेरे अब्बू नहीं मानते। इसी टाल मटोल में वक़्त गुज़ार देता है। लड़की को मुसीबत में डाल देता है वह न आगे की रहती है न पीछे की। ऐसे मोड़ पर पहुँकर कुछ लड़कियाँ ख़ुदकशी कर लेती हैं, कुछ दिन रात वीज़फ़े करती है कि लड़का अपनी माँ को भेज दे। कुछ मन्नतें मागती हैं या तावीज़ धागे के पीछे वक़्त जाए करती हैं। कुछ अपनी ग़लती तसलीम करने के बजाए नमाज़ें पढ़ना छोड़ देती हैं कि अल्लाह तआाल ने मेरी दुआ क़बूल नहीं की हालाँकि ग़लती तो अपनी होती है। लड़का उस लड़की से अपनी शहवत पूरी कर चुका होता है। अब वह लड़की उसकी नज़र में इस्तेमालशुदा टायलेट पेपर की तरह होती है। लिहाज़ा वह हीले-बहाने करके लड़की को टालता है और मिलना बंद कर देता है। यूँ समझें कि लड़की को बंद गली में पहुँचाकर ख़ुद गायब हो जाता है।

नतीजा

अक्सर औक़ात तो छिपी हुई दोस्ती वाली शादियाँ होती ही नहीं अगर हो भी जाएं तो दो वजूहात की बिना पर तलाक़ होने के चान्स होते हैं।

1. ख़ाविन्द अपनी बीवी के बारे में शक्की मिज़ाज बन जाता है। यहाँ तक कि वह लड़की अपने सगे भाई से भी मुस्कराकर बात कर ले तो ख़ाविन्द को नाजाएज़ ताल्लुक़ात का शुब्ह हो जाता है। लड़की अगर माँबाप को मिलने के लिए घर जाने की इजाज़त मांगे तो ख़ाविन्द इसलिए इजाज़त नहीं देता कि मैके जाकर कहीं किसी मर्द के साथ मुलव्विस न हो जाए।
   एक पढ़ी-लिखी लड़की की पसन्द की शादी हुई तो शौहर दफ्तर जाते हुए घर को ताला लगाकर जाता था। किसी ने पूछा कि घर में बीवी को एमरजन्सी ज़रूरत पेश आ सकती है कि वह बाहर निकले। आप इसे बंद क्यों कर देते हैं? उसने जवाब दिया जो लड़की माँ-बाप से छिप छिपाकर मुहब्बत कर सकती है वह मुझसे छिप-छिपाकर किसी पड़ोसी से मुहब्बत क्यों नहीं कर सकती। इससे अंदाजा लगाना चाहिए कि छिपी दोस्ती करनेवाली लड़कियाँ सारी उम्र के लिए अपना एतिबार खो बैठती हैं।
2. शादी के नाकाम होने की दूसरी वजह यह होती है कि शादी से पहले लड़का हर बात में लड़की की तारीफ़ करता था, उसकी हर उल्टी बात को सीधी कहता है। अब शादी के बाद हक़ीक़त में ख़ाविन्द बनकर रहता है। ठीक को ठीक और ग़लत को ग़लत कहता है। लड़की समझती है कि पहले मैं अच्छी थी अब क्या हुआ कि इसे मेरे अंदर ऐब नज़र आने लगे। इसी तरह आपस में झगड़े शुरू हो जाते हैं। शादी से पहले लड़का जिस तरह लड़की की तारीफ़ों के पुल

बाँधता था उसे आए दिन तोहफ़े वग़ैरह देता था शादी के बाद वह मामला चल नहीं सकता तो लड़की समझती है कि इसे मुझसे अब कोई दिलचस्पी नहीं रही। कभी-कभी लड़का शादी तो कर लेता है मगर उसको छिपी आशनाई की लत पड़ी होती हैं लिहाज़ा वह किसी और लड़की से वही प्यार व मुहब्बत के मरहलों का सिलसिला शुरू कर देता है जिसकी वजह से पहली शादी नाकाम हो जाती है।

नसीहत की बात

यह बात खुली हुई है कि औरत किसी ग़ैर-मर्द की झोली में उस वक़्त गिरती है जब उसके अपने घर के हालात अच्छे नहीं होते। अगर माँ मर जाती है तो सौतली माँ मुहब्बत नहीं देती। अगर माँ अनपढ़ होती है तो बेटी के हालात से बेख़बरी रहती है। अगर मियाँ-बीवी आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं तो औलाद की तरफ़ से ग़फ़लत होती है या अनपढ़ माँ बात-बात में बेटी को डांटती है जबकि बेटों की हर बात मानती है या बेटी को हर छोटी सी ग़लती पर कोसने देती है यहाँ तक कि वह बेटी माँ के सामने अपनी किसी ग़लती का इज़्हार नहीं करना चाहती या फिर माँ बेटी को घर में अकेले छोड़कर घर से बाहर चली जाती है और टेलीफ़ोन कॉल पर ग़ैर-महरम मर्द को उसकी बेटी से बात करने का मौक़ा मिल जाता है या क़रीब के ग़ैर-महरम मर्दों को अकेली लड़की से मुहब्बत बढ़ाने का मौक़ा मिल जाता है या ख़ाविन्द बीवी को मुहब्बत नहीं दे पाता और वह मुहब्बत की भूखी ग़ैर-महरम की मीठी आवाज़ पर क़ुर्बान हो जाती है या ख़ाविन्द घर से दूर रहता है और बीवी ग़ैर-मर्द के चक्कर में फंस जाती है या ख़ाविन्द का रवैय्या बीवी के साथ इंतिहाई सख़्त होता है। लिहाज़ा बीवी को जहाँ से खिंच पड़े वह खिंची चली जाती है। या औरत को अकेले बाहर जाने की खुली इजाज़त होती है, खरीद व फ़रोख़्त के लिए बाज़ार जाती है और ग़ैर-मर्द

से आशनाई का मौक़ा निकल आता है या लड़की स्कूल कॉलेज अकेली जाती है या सहेली के साथ जाती हे और रास्ते में ग़ैर-महरम लड़के उसे अपनी तरफ़ मुतव्वजेह कर लेते हैं। ऐसी तमाम सूरतों में पहला क़ुसूर घरवालों का होता है कि वे लड़की को य औरत को ग़ैर-महरम की तरफ़ माइल होने का मौक़ा ही क्यों देते हैं। दूसरा क़ुसूर ग़ैर-मर्द का होता है कि वह मुख़्तलिफ़ हथकंड़ों से औरत या लड़की को मुहब्बत के जाल में फँसा लेते हैं। तीसरा क़ुसूर औरत या लड़की का अपना होता है कि अगरचे हालात ख़राब ही सही मगर वह ग़ैर-महरम के क़रीब जाती है। अपनी इ़ज़्ज़त का जनाज़ा निकालती है और ज़िन्दगी भर की बदनामी का दाग अपने माथे पर सजाती है। जहाँ क़ुसूर दूसरों का होता है वहाँ अपना भी होता है। बक़ौल शायद—

कुछ अंवा ही राहवाँ ओखियाँ सुन
कुछ गल विच ग़माँ दा तौक़ वी सी
कुछ शहर दे लोग वी ज़ालिम सुन
कुछ सानू मरन दा शौक़ वी सी

जो लड़कियाँ अपनी इ़ज़्ज़त व नामूस की क़द्र व क़ीमत जानती हैं वे लाखों परेशानियों के बावजूद ग़ैर-महरम की तरफ़ बाल बराबर भी मुतव्वजेह नहीं होतीं। न ही किसी को क़रीब होने का मौक़ा देती हैं। ऐसी औरतों को अल्लाह तआला अपने क़रीब कर लेते हैं और विलायत का नूर अता फ़रमाते हैं।

5. तन्हा या ग़ैर-मर्द के साथ सफ़र करना

दीने इस्लाम में औरत के लिए तन्हा सफ़र करना या ग़ैर-महरम के साथ सफ़र करना जाएज़ नहीं। यहाँ तक कि इमाम आज़म रह॰ के साथ सफ़र करना जाएज़ नहीं औरत चाहे जवान हो या बूढ़ी दोनों के लिए यही हुक्म हैं हम्माद रह॰ ने कहा कि औरत के लिए कोई कराहियत नहीं कि वह बग़ैर महरम के नेक और सालेह लोगों के साथ सफ़र करे। यही क़ौल इमाम मालिक

रह. का हैं इमाम शाफ़ई रह. का क़ौल है कि परहेज़गार औरतों के साथ सफ़र करे और इमाम मालिक व इमाम शाफ़ई रह. का एक क़ौल यह भी है कि अगर औरत अपने नफ़्स को अमन में समझती हो अकेली निकले। फ़ुक़्हा अहनाफ़ (हनफ़ी आलिमों) के नज़दीक अगर औरत ने बिला महरम के हज किया तो उसका हज जाएज़ होगा मगर वह बग़ैर महरम के हज की तरफ़ निकलने की वजह से गुनाहगार होगी। महरम को भी उस वक़्त सफ़र में जाना जाएज़ है जबकि उसको अपने ऊपर शहवत व फ़ित्ने का अंदेशा न हो। महरम के बग़ैर सफ़र की मुसाफ़त अगर एक दिन की मुसाफ़त से कम हो तो औरत के लिए सफ़र करना मुबाह है।

हदीस पाक में आया है :

لا يحل لا مرأة تومن بالله واليوم الأخران تسافر مسيرة يوم و ليلة ليس معها حرمة .(متفق عليه)

मोमिना औरत के लिए जाएज़ नहीं है कि वह बग़ैर महरम के एक दिन और एक रात की मुसाफ़त में तन्हा सफ़र करे।

महरम वह आदमी होता है जिससे कभी भी निकाह जाएज़ न हो जैसे बाप, भाई, बेटा वग़ैरह। यह बात वैसे भी समझ में आती है कि औरत तन्हा सफ़र में निकले तो उसकी जान, माल और आबरू तीनों चीज़ें ख़तरे में होती हैं। अगर मान लें कि उसको किसी वजह से बेहोशी का दौरा पड़ जाए तो फिर या तो उसकी जान ख़तरे में होगी या फिर कोई ग़ैर-महरम मर्द उसकी देखभाल करेगा। ऐसे में उसकी आबरू लुटने की क़वी उम्मीद है। औरत नाक़िसुल अक़्ल होती है। बाहर की दुनिया को नहीं जानती। लिहाज़ा कोई ग़ैर-महरम आदमी उसको बहला फुसलाकर धोका देकर उसकी इज़्ज़त लूट सकता है। माल लेकर उसे क़त्ल कर सकता है। औरत बदनी एतिबार से मर्द के मुक़ाबले कमज़ोर

होती है। लिहाज़ा यह भी मुमकिन है कि कोई आदमी तन्हाई का फ़ायदा उठाते हुए उससे जबरन ज़िना कर ले या उसे अग़वा कर के ले जाए। अगर महरम मर्द साथ होगा तो हर चीज़ से महफ़ूज़ होगी।

हदीस पाक में आया है :

لا تسافر امرأة الا ومعها محرم فقام رجل فقال يارسول الله ﷺ اكتب فى غزوة كذا كذا وخرجت امرأتى حاجة قال اذهب فحج مع امرأتك. (متفق عليه)

कोई औरत बग़ैर महरम के सफ़र न करे। एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी बीवी हज को जा रही है और मैंने गज़बे में जाने का इरादा किया है। आपने फ़रमाया कि तू अपनी बीवी के साथ हज्ज को जा।

इससे मालूम हुआ कि मर्द के लिए जिहाद में निकलने से अफ़ज़ल है कि वह अपनी महरम औरत के साथ हज्ज का सफ़र करे ताकि औरत अमन में रहे। हैसम बिन अदी ने वाक़िआ लिखा है कि एक ख़ूबसूरत औरत मक्का मुकर्रमा हज करने के लिए आई। उमर बिन रबी ने उसे देखा तो उसका दीवाना हो गया। उमर बिन रबीअ ने बातचीत करना चाही मगर उस औरत ने उसकी बात सुनी अनसुनी करदी और कोई जवाब नहीं दिया। दूसरे दिन जब उमर बिन रबीअ फिर उसके सामने हुआ तो औरत ने कहा, दफ़ा हो जाओ। तुम अल्लाह के हरम में हो और हुरमत वाले अय्याम में हो। उमर बिन रबीअ पर इसका कुछ असर न हुआ, वह इसरार करता रहा। औरत नेक पाक थी, समझ गई कि यह मर्द मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा, इसका इलाज करना पड़ेगा। लिहाज़ा तीसरे दिन उसने भाई से कहा मेरे साथ चलो और मुझे हज व उमरा के अहकाम अच्छी तरह सिखाओ। उस दिन भी उमर भी रबिआ उसके इंतिज़ार में था। जब उसने

औरत के भाई को देखा तो वहाँ से खिसक गया। यह सूरतेहाल देखकर औरत ने शेर पढ़ा—

تعدو الذئاب علی من لا کلاب له۔

وتتقی صولة المستاسد الضاری۔

भेड़िए इस शख़्स पर हमला कर देते हैं जिसकी पास मुहाफ़िज़ कुत्ते न हों। मगर वह ख़ुद ख़ूंखार शेर के हमले से डरते हैं।

इस वाक़िए का ख़लीफ़ा मंसूर अब्बासी को इल्म हुआ तो उसने कहा :

मेरी ख़्वाहिश है कि यह वाक़िआ क़ुरैश की तमाम लड़कियों को सुनाया जाए यहाँ तक कि कोई लड़की भी सुने बग़ैर न रहे।

अरबी का मक़ूला है :

لا یحفظ المرأة الا فی بیتها او زوجها او قبرها۔

औरत की हिफ़ाज़त या घर करता है या ख़ाविन्द करता है क़ब्र करती है।

मर्द के लिए लाज़िम है कि अगर उसे ज़रूरी काम की ग़र्ज़ से घर से दूर रहना पड़े तो अपनी बीवी-बच्चों का बंदोबस्त करे। इसके अलावा सफ़र पर निकलते हुए यह दुआ पढ़े :

اللهم انت الصاحب فی السفر الخلیفة فی الاهل. اللهم انی اعوذبك من وعثاء السفر وکابة النظر وسوء المنقلب فی المال والاهل. (ریاض الصالحین)

अल्लाहुम्म अन्-तस्साहिबु फ़िस्स-फ़रि वल्-ख़ली-फ़तु फ़िल अह्लि। अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबि-क मिंव्व असाइस-सफ़रि व कआ-बतिल मन्ज़रिए व सूइल मुन् क़-ल-बि फ़िल मालि वल अह्लि।

ऐ अल्लाह! तू सफ़र में मालिक है और अहल व अयाल में ख़लीफ़ा ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि

सफ़र की मशक़्क़त और बुरा मंज़र देखे और इससे कि माल व अवाल की बुराई देखूँ।

सफ़र में निकलने वालों को भी हिदायत दी गई है कि वे मक़सद पूरा होते ही जल्दी घर वापस लौट आएं। हदीस पाक में है :

السفر قطعة من العذاب يمنع احدكم طعامه وشرابه ونومه فاذا قضى نهمة من سفره فليعجل الى اهله.(رياض الصالحين)

सफ़र अज़ाब का टुकड़ा है। तुम्हें खाने-पीने ओर सोने से रोक देता है लिहाज़ा जूँ ही सफ़र की ज़रूरत ख़त्म हो जल्दी से बाल-बच्चों में पलट आओ।

जो लोग दीन की मेहनत के लिए दावत व तबलीग़ के लिए घरों से दूर रहते हैं, इस्लाम ने उनकी औरत की हुरमत को आम औरतों की हुरमत से बढ़ाकर पेश किया है।

हदीस पाक में आया है :

حرمة النساء المجاهدين على القاعدين كحرمة امهاتهم.ما من رجل من القاعدين يخلف رجلا من المجاهدين فى اهله فيخونه فيهم الاوقف له يوم القيامة فياخذمن حسناته ماشاء حتى يرضى.(رياض الصالحين)

मुजाहिदीन की बीवियों की इज़्ज़त घर पर रहनेवालों के लिए उनकी माँ की बराबर है। अगर कोई घर में रहने वाला किसी मुजाहिद के घरवालों से ख़्यानत करेगा तो क़यामत के दिन उस मुजाहिद को लाया जाएगा और वह इस ख़ाइन की जितनी नेकियाँ चाहेगा ले लेगा।

दीने इस्लाम ने इन तालीमात की रोशनी में वाज़ेह कर दिया है कि अव्वल तो औरत घर से तन्हा बाहर न निकले। अगर सफ़र पर जाना भी पड़े तो महरम मर्द साथ हो। इसी तरह मर्द अपनी औरतों को घर पर अकेला छोड़कर न जाएं। अगर सफ़र

पर जाना ज़रूरी हो तो अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में छोड़े और मक़सद पूरा होते ही घर वापस आएं। अगर दीन की मेहनत के लिए अल्लाह के रास्ते में जाना भी ज़रूरी हो और घर में औरत भी अकेली हो तो हदीस पाक के मुताबिक मुसलमानों के लिए उस औरत से ज़िना करना ऐसा ही है जैसा कि अपनी माँ से ज़िना करना। साफ़ ज़ाहिर है कि कोई हया की रत्ती रखनेवाले आदमी भी अपनी माँ से ज़िना नहीं कर सकता।

6. गाना-बजाना ज़िना का ज़ीना

सलाम में गाने-बजाने की मज़म्मत :

इरशादे बारी तआला है—

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝

और लोगों में से ऐसे भी हैं जो ख़रीदार हैं खेल की बातों के ताकि बहकाएँ बग़ैर समझे अल्लाह की राह से और ठहराएँ इसको हँसी मज़ाक। वे लोग है जिनको ज़िल्लत का अज़ाब होगा।

रूहुलमआनी में 'लहवल हदीस' के माने लिखे हैं कि हर वह चीज़े जो इबादते इलाही से ग़ाफ़िल कर दे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अनहु से इस लफ़्ज़ की तशरीह पूछी गई तो आपने तीन बार क़सम खाकर फ़रमाया, अल्लाह की क़सम इससे मुराद गाना और राग रागनियाँ हैं।

इससे मुताल्लिक़ कुछ हदीसें और क़ौल इस तरह हैं :

- हज़रत अबूउमामा रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गाने वाली लौंडियों के ख़रीदने और बेचने और उनको गाने बजाने की तालीम देने, से मना फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि इनकी क़ीमत खाना हराम है फिर ऊपर वाली आयत तिलावत फ़रमाई।

- हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे दो आवाज़ों से मना फ़रमया, एक नग़मा दूसरे नोहा करना।
- नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया जो आदमी गाने वाली लौंडी की मज्लिस में बैठकर उसका गाना सुने, क़यामत के दिन उसके कानों में पिघला हुआ सीसा डाला जाएगा।
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मौसिक़ी (बाजा) दिल में ज़िना के ख़्याल को इस तरह पैदा करती है जिस तरह पानी सब्ज़ी को उगाता है।
- नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम ने चरवाहे की बांसुरी की आवाज़ सुनी तो कानों मे उंगलियाँ डाल ली जब तक दूर नहीं चले गए।
- हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह. ने फ़रमाया कि गाना बजाना ज़िना का मन्तर है। ज़हाक रह. ने फ़रमाया ज़िना दिल को ख़राब करता है ओर ख़ुदा को नाराज़ करता है। यज़ीद बिन वलीद रह. ने कहा ऐ बनी उमैय्या! तुम ग़िना से दूर रहो क्योंकि ग़िना शहवत को बढ़ाता है।
- एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि अपनी औरतों को गाने बजाने से दूर रखो इसलिए कि गाना बजाना ज़िना की दावत है।
- हज़रत सफ़वान बिन उमैय्या से रिवायत है कि एक बार उमर बिन क़र्रा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़हज गाने के अलावा गाने बजाने की इजाज़त माँगी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं तुझे हरगिज़ इसकी इजाज़त नहीं दूँगा। न तुम्हारी इज़्ज़त करूँगा। न तुम्हें चश्मे अता से देखूँगा। ऐ अल्लाह के दुश्मन तू झूठ बोलता है। अल्लाह तआला ने तुझे हलाल और पाकीज़ा रिज़्क़ अता फ़रमाया है मगर हराम इख़्तियार करता है।

अगर मैं तुझे पहले मना कर चुका होता तो इस वक़्त तुझसे बुरी तरह पेश आता। चल मेरे पास से उठ जा, अल्लाह तआला के सामने तौबा कर। याद रख अगर तूने गाना बजाना किया तो मैं तुम्हें दर्दनाक सज़ा दूँगा, तेरा मुँह बिगाड़ दूँगा, तुझे तेरे घर से निकाल दूँगा, तेरा साज़ व सामान मदीना के लड़कों में लुटवा दूँगा। जब उमर बिन क़र्रा परेशान होकर चला गया तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया यही लोग गुनाहगार और नाफ़रमान हैं जो कोई इनमें से तौबा के बग़ैर मरेगा। हश्र में अल्लाह तआला उसको नंगा करके उठाएँगे। एक चीथड़ा भी बदन पर नहीं होगा। जब खड़ा होने लगेगा तो लड़खड़ाकर गिर पड़ेगा। (तलबीस इब्लीस)

● हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आख़िरी ज़माने में कुछ लोग बंदर और ख़िन्ज़ीर की शक्ल में मसख़ हो जाएँगे। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या वे तौहीद व रिसालत का इक़रार करते होंगे? फ़रमाया हाँ (बराए नाम) नमाज़, रोज़ा, हज भी करेंगे। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया आख़िर उनका ऐसा हाल क्यों होगा? फ़रमाया, आलाते मौसीक़ी (गाने बजाने का सामान), नाचने वाली औरतें और तबलासाज़ी के शौक़ीन होंगे, शराब पिएंगे। रात भर लहू (बुराई) में मसरूफ़ रहेंगे जब सुबह होगी तो ख़िंज़ीरों की शक्ल में मसख़ हो चुके होंगे।

गाने बजाने के बुरे असरात (एक तहक़ीक़ी जाएज़ा)

1. फ़िरंगी माहौल में 1920 से 1950 ई॰ तक गाने बजाने को तफ़रीही मक़सद के लिए इसतेमाल किया जाता था। कामकाज से थके हुए लोग या इज़्दिवाजी ज़िन्दगी के मसाइल में उलझे हुए लोग गाना बजाना सुनकर महसूस करते थे कि व थोड़ी देर के लिए अपनी परेशानियों को भूलकर अपने दिमाग़ को

फ़िक्रों से आज़ाद कर लेते थे। तबियत का बोझ हलका फुलका हो जाता है और वह थोड़ी देर के बाद सुकून की नींद सो जातें या फिर दोबारा अपने कामकाज में मसरूफ़ हो जाते हैं।

2. 1950-1985 ई॰ तक गाने बजाने को सरमायाकारों ने अपने तिजारती मक़सदों के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। मसलन किसी गाने वाली या गाने वाले का गाना लोगों में मक़्बूल आम हो गया तो वह उस गाने वाली से अपनी तिजारती चीज़ों की तशहीर (एडवरटाइज़) करवाते थे। मसलन टीवी पर उसे पेप्सी को पीते दिखाते थे तो उनके शर्बत की माँग बढ़ जाती। या गाने वाली को ख़ास क़िस्म का लिबास पहना कर उसका इंटरव्यू दिखाते तो नवजवान नस्ल उस क़िस्म का लिबास पसन्द करने लग जाती थी। लिहाज़ा मालदार लोग अपने कारख़ानों में वैसा लिबास तैयार करके ख़ूब पैसा कमाते थे। तशहीद पर अगर सौ डॉलर लगते थे तो हज़ारों डॉलर नफ़ा कमा लेते थे। यह इनसानी फ़ितरत है कि जब वह किसी से मुतास्सिर होता है या किसी को पसन्द कर लेता है तो उसकी तरह बनना चाहता है, उसकी तरह खाना-पीना पसन्द करता है। गाने वालियों को एक-एक चीज़ पर दस्तख़त (Endoresment) के लिए लाखों डॉलर मिलने शुरू हो गए तो नवजवान नस्ल ने अपनी ताक़त गाने के लिए इस्तेमाल करनी शुरू कर दीं मौसिक़ी के मैदान में आने वालों की क़तार लग गई। एक से बढ़कर एक ख़ूबसूरत नवजवान अपनी जादू भरी आवाज़ के जौहर दिखाने के लिए बेताब नज़र आने लगा।

1985-2000 ई॰ तक मौसीक़ी से माहौल व समाज पर अपने गहरे असरत डाल दिए तो शैतान ने लोगों के ज़हनों में नए-नए राग और रांगतनियों डालनी शुरू कर दीं। गाने बजाने वालों ने गाने के साथ ख़ास अंदाज़ की मौसिक़ी और नाच को भी शामिल कर लिया। यह मौसिक़ी और गाने बहुत मक़्बूल हुए तो इसे पॉपलर लफ़्ज से पॉप म्युज़िक का नाम दिया गया। ऐसे गानों का

मक़सद मर्द व औरत के दर्मियान जिन्सी मुहब्बत व उलफ़त का तज़्किरा करना था! मसलन :

To be in love. मुहब्बत कैसे करें।

Guy missing a girl. महबूब अपनी महबूबा के बग़ैर।

Painn is real but no one knows. दर्द हक़ीक़ी है लेकिन वजूहात मालूम नहीं।

ऐसे गानों ने फ़िरंगी माहौल में जिन्सी मुहब्बत और ब्वाए फ्रैन्ड या गर्ल फ्रैन्ड के तसव्वुर को आम कर दिया। इसका मक़सद नफ़्सानी मुहब्बत के माहौल (Romance Culture) को आम करना था। स्कूल कॉलेजों युनिवर्सिटियों के नवजवान लड़के लड़कियाँ एक-दूसरे से नाजाएज़ रिश्ते मुहब्बत के जोड़ने लगे। इब्तिदा में उन्हें वह गाने अच्छे लगते जो यह कैफ़ियत बयान करते कि मुहब्बत कैसे करें। जब थोड़े दिनों की दोस्ती के बाद मसाइल पैदा होते हैं और नाराज़गियाँ होना शुरू होतीं तो उन्हें वे गाने अच्छे लगते हैं जो महबूब अपनी महबूबा की जुदाई में गाता है। ग़र्ज़ यह कि हर नवजवान को अपने हालात के मुताबिक़ जिस गाने के बोल अच्छे लगते वह अपने घर और गाड़ी बल्कि हर जगह उस गाने को सैंकड़ों बार सुनता। इस तरह मौसिक़ी के चाहने वालों में इज़ाफ़ा होता चला गया। वक़्त ने साबित किया कि यह काम मुहब्बत के नाम से शुरू हुआ और आहिस्ता-आहिस्ता उसने शहवत (Lust) का रूप धार लिया। आजकल पॉप म्युज़िक के गाने में शहवत को उभारते हैं। उसको जिन्सी ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए बेक़रार करते हैं। गाने वाला गा रहा होता है तो उसके पसमन्ज़र (बैकग्राउन्ड) में तक़रीबन नंगी ख़ूबसूरत माडल लड़कियों को डान्स करते हुए दिखाया जाता है जो जलती पर पैट्रोल का काम करती है। नवजवान गाना सुनकर अपने क़ाबू में नहीं रहते और किसी-न-किसी सूरत अपनी शहवत को पूरा करने का इंतिज़ाम कर लेते हैं। लिहाज़ा प्यार की नीयत से गाने बजाने का

सिलसिला शुरू हुआ वह आख़िर अपने अंजामे शहवत तक पहुँच गय। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की हदीस से भी सुबूत मिलता है कि मौसिक़ी सुनने से दिल में ज़िना का ख़्याल इस तरह पैदा होता है जिस तरह बारिश बरसने से ज़मीन में घास पैदा होता है।

4. फ़िरंगी माहौल में कसरत से ज़िना की वजह से बिन ब्याही माएँ बहुत ज़्यादा होती हैं। कई लड़कियाँ तो दस साल की उम्र में पेट से हो जाती हैं। ग्यारह बारह साल और तेरह साल की लड़कियों को पेट से हो जाना तो आम सी बात हैं। ऐसी लड़कियों अमूमन अपने बच्चे को अपने से दूर कर देती हैं। नतीजा यह निकलता है कि ऐसे बच्चे स्कूल के माहौल में जाते ही अपनी तन्हाई दूर करने के लिए किसी-न-किसी को अपना दोस्त बना लेते हैं। ये नवउम्र बच्चे अपनी वक़्त गुज़ारी के लिए मुस्तक़िल अपना ग्रुप बना लेते हैं जिसे गैंग कहते हैं। क्योंकि इन नवजवान लड़कों के लिए फ़ैमली का सिलसिला तो होता नहीं लिहाज़ा उनका ग़ैंग उनका ख़ानदान बन जाता है। वे अपनी-अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए छोटे-छोटे जुर्म करने से काम शुरू करते हैं तो वे वक़्त के साथ बड़े मुजरिम बन जाते हैं। उनके दिलों में माहौल मआशरे के ख़िलाफ़ ग़म व गुस्सा भरा हुआ होता है। आपस में इख़्तिलाफ़ और झगड़ों की वजह से नफ़रत की इंतिहा होती है। ये अपने आपको बदक़िस्मत लोग समझते हैं। लिहाज़ा दूसरों से हर चीज़ छीनकर लेना चाहते है। ऐसे जुर्म करनेवालों नवजवानों की ज़िन्दगी का मक़सद सिर्फ़ इतना रह जाता है कि दूसरों से इंतिक़ाम लो और अपना गुस्सा ठंडा करो। चुनाँचे Take anger out यानी गुस्सा निकालों की नयीत से इन लोगों ने मौसिक़ी और गाने का एक नया अंदाज़ शुरू किया जिसे रेप म्युज़िक कहते हैं। इन गानों में बाक़ायदा अशआर की बजाए आज़ाद इबारत और दर्द भरी कहानी को पुरसोज़ आवाज़ में म्युज़िक के साथा इस तरह सुनाते हैं कि

सुनने वालों के दिल मुतास्सिर होते हैं। सुनने वाले हमदर्दी के जज़्बात में आकर मौसिक़ी की इस क़िस्म के रसिया बन जाते हैं। यहाँ तक कि मुसलमान नवजवान भी इस ख़तरनाक मौसिक़ी को अच्छा समझते हैं। अपने वालदैन को कहते हैं कि हम गाने नहीं सुनते बल्कि स्ट्रीट स्टोरी सुनते हैं। ऐसे गाने वाले अपने लंबे बालों, बेढंगे लिबास, नंगे बदन पर बने हुए रंगीन निशानात टैटो और हाथों में गिटार की वजह से पहचाने जाते हैं। यह मौसिक़ी अफ़्रीक़ी अमरीकन बाशिन्दों ने शुरू किया मगर वक़्त के साथ सब गोरे-काले इसकी लपेट में आ गए। आज रैप म्युज़िक नवजवानों की पसन्दीदा मौसिक़ी हैं लड़के और लड़कियाँ रास्ते में आते जाते और भागते हुए (Jogging) हर वक़्त वाकमैन जेब में रखते हैं। और हेडफ़ोन के ज़रिए हर वक़्त म्युज़िक सुन रहे होते हैं। कुछ अरसे के बाद सुनने वालों पर इसका असर पैदा होना शुरू हो जाता है। लिहाज़ा आम घरों के अच्छे बच्चे भी वही काम करने की तमन्ना करते हैं जो गैंग के लोग करते हैं। वे कोई-न-कोई बड़ा जुर्म करके टीवी स्क्रीन पर आना चाहते हैं और अख़बारों की ज़ीनत बनना चाहते हैं। ऐसे नवजवानों से पूछा जाए कि अब आपका मक़सद क्या है तो वे जवाब देते हैं। Angola Prison अंगोला ख़तरनाक मुजरिमों की जेल में पहुँचना है। बक़ौल शायर–

पहुँची वहीं पे ख़ाक जहाँ का ख़मीर था

मौसिक़ी की इस क़िस्म को इब्तिदा में फ़िरंगी अवाम ने नापसन्द किया बल्कि अपने ग़म व ग़ुस्से का इज़्हार किया मगर वक़्त के साथ-साथ नवजवान लोगों की वजह से ये मौसिक़ी आम हो गई। आज के दौर में यह पसन्दीदा मौसिक़ी की बेहतरिन क़िस्म है। उसकी सीडी वग़ैरह कसरत से बिकती हैं। सरमायाकारो ने उसे अपने मुल्कों के हर कच्चे पक्के मकान में पहुँचा दिया है।

5. गाने-बजाने वालों ने जब कुछ अरसे अपनी मज़लूमियत

का ख़ूब चर्चा किया और अवाम के चहेते बन गए तो उन्होंने चार क़दम और आगे बढ़कर ऐसी मौसिक़ी के सुरताल ईजाद किए जो मायूस जिन्दगी गुज़ारने वालों के दिलों को तड़पाने लगी। फ़िरंगी माहौल में मायूस (depressed) लोगों की बहुतात है। कोई फ़ेमली से दूर, कोई घर से दूर, कोई महबूब से दूर, कोई बुढ़ापे में तन्हाई का शिकार लेकिन हक़ीक़त में अल्लाह तआला से दूर होने की वजह से मायूसी का शिकार होता है। ऐसे लोग डिप्रेशन की गोलियाँ इसतेमाल करते हैं। उनका ख़ुदकशी करने को जी चहता है। उन्हें मौसिक़ी की नई क़िस्म हेवी मैटल बहुत अच्छी लगने लगी। मौसिक़ी की इस क़िस्म में गानेवाला चीखता है, चिल्लाता है, ऊँची-ऊँची आवाज़ों से गाता है, ख़ूब शोर मचाता है और बदतमीज़ी का तूफ़ान बर्पा करता है। जिस तरह उकताया हुआ पागल अपना गुस्सा दिखाता है या मर जाने वाला शोर शअब के ज़रिए दिल का बोझ हल्का करता है। इस तरह की मौसिक़ी और गानों की यह क़िस्म भी बहुत मक़्बूल हो गई है। रॉक-म्युज़िक की एक क़िस्म कहलाती है।

6. शैतान ने लोगों को ख़ुदा बेज़ार बनाने के लिए और अपनी पूजा करवाने के लिए कुछ गाने वालों के दिलों में मौसिक़ी की नई क़िस्म के नग़मे पैदा किए। इस मौसिक़ी का नाम ही शैतानी इबादत (Satanic worship) रखा गया। यह रॉक म्युज़िक की दूसरी क़िस्म कहलाती है। इस मौसिक़ी में ऐसे गाने गाए जाते हैं जो नफ़्स और शैतान की पूजा करने के बारे में होते हैं। खुले अल्फ़ाज़ में कहा जाता है कि हम शैतान के पुजारी हैं, नफ़्स के गुलाम हैं। यही हमारा मक़सदे ज़िन्दगी हैं इस क़िस्म के गाने बजानेवाली औरतें स्टेज पर बहुत नंगे बदन के साथ आकर गाना गाती हैं। अपने जिस्म के चंद इंच के सिवा हर हिस्से की नुमाइश करती हैं। नवजवानों की शहवत को ख़ूब उभारती हैं। उनकी हरकतों को देखकर और उनके नग़मों की आवाज़ सुनकर नवजवान उन्हें अपनी बाहों में लेने के लिए बेचैन हो जाते हैं।

ख़ौफ़े ख़ुदा के नाम की चीज़ को इस तरह मिटाया जाता है कि हर बोल शैतान की पूजा करना सिखा रहा होता है। ऐसे गाने वाले मर्द बेढंगे लिबास पहनते हैं। अव्वल जीन का लिबास पहना गया, फिर फटी हुई जीन का लिबास शुरू हुआ, आजकल स्टोन वाश जीन का लिबास आम हो गया हैं सरमायाकारों ने इसकी ख़ूब शोहरत की। क्योंकि कुछ सालों के बाद नई क़िस्म की जीन कारख़ानों में तैयार करने का मौक़ा मिला। उनके कारख़ानों का मुनाफ़ा बढ़ गया। मार्केट में उनके बने हुए लिबास की ख़ूब मांग पैदा हो गई। नए से नए आर्डर मिलना शुरू हो गए। मौसिक़ी की इस क़िस्म में अक्सर गाने वाला मर्द काले रंग के कपड़े पहनते हैं। चेहरे के मुख़्तलिफ़ हिस्सों मे सुराख़ करके छल्ले पहनते हैं। कभी नाक में, कभी कान, मैं कभी आबरू में, कभी होंठ में, कभी ज़बान में, ग़र्ज़ अजीब व ग़रीब जगहों में छल्ले पहनने का रिवाज आम हो गया है। ज़ाहिर में अपनी शक्ल ऐसी बनाते हैं कि जैसे शैतान का बच्चा कहीं से आ गया है। देहाती इलाक़ों में रहनेवाले किसानों ने अपनी मौसिक़ी कंट्री म्युज़िक के नाम से मशहूर कर ली है।

7. मौसिक़ी की इस नई दौड़ ने नए-नए रंग दिखाए। चुनाँचे हर म्युज़िक की वीडियों बनती है। इस मक़सद के लिए एक टीवी चैनल शुरू किया गया है जो एमटीवी (MTV) के नाम से मशहूर है। मौसिक़ी के चाहने वाले हर वक़्त इस चैनल के नग़मात से लुत्फ़अंदोज़ होते रहते हैं। यह टीवी चैनल फ़िरंगी मुल्कों के अलावा हर छोटे-बड़े मुल्क में खोला जा सकता। इसके असरात नवजवान नस्ल पर बड़ी तेज़ी से पड़ते महसूस होते हैं। ये चैनल सिर्फ़ मौसिक़ी ही नहीं सुनाता बल्कि फ़िरंगी तहज़ी फैलाने का ज़रिय बनता जा रहा है। इसको कहा जाता है तहज़ीब को मीडिया के ज़रिए (Culture Through Media) लोगों के दिल व दिमाग़ में उतार दो। नवजवान को बताया जाता है कि दुनिया में हमारे पैदा होने का मक़सद ये है :

(Live Love and Laugh)
ज़िन्दा रहो, मुहब्बत करो, हंसों और मुस्कराओ,

Your dreams will come true
तुम्हारे ख़्वाब पूरे हो जाएँगे।

8. शैतान की गहरी साज़िशें :

ग़ैर-महसूस इत्तिलाएं :

मौजूदा साइंसी दौर में इनसानी दिमाग़ पर तहक़ीक़ का काम बहुत तेज़ हो गया है। दुनिया के हज़ारों साइंसदान रोज़ाना अपनी रिसर्च लैब में बैठे हुए दिमाग़ की हक़ीक़त व माहियत को समझने के लिए तजुरिबात कर रहे होते हैं। लिहाज़ा दिन-ब-दिन नई मालूमात सामने आ रही हैं। यह अजीब सी हक़ीक़त खुल चुकी है कि इनसानी दिमाग़ अपने ज़ाहिरी आज़ा को कंट्रोल करने के लिए 15 फ़ीसद इस्तेमाल हुआ करता है जबकि दिमाग का 85 फ़ीसद हिस्सा इस्तेमाल में नहीं रहता। सवाल पैदा होता है कि यह बक़िया 85 फ़ीसद दिमाग़ क्या काम करता है। अभी तक यह राज़ पूरी तरह किसी को मालूम नहीं हुआ। यह बात वाज़ेह हो चुकी है कि हमारे हवास हमारे दिमाग़ को ऐसे सिग्नल भी पहुँचा देते हैं जो हम महसूस करते हैं और ऐसे सिग्नल भी पहुँचा देते हैं जो हम महसूस नहीं करते। मगर दिमाग़ में उनकी इन्फ़ार्मेशन के आने की वजह से बंदे की शख़्सियत पर इसका असर पड़ता है। मिसाल के तौर पर हमने किसी रास्ते पर गाड़ी देखी तो दिमाग़ को यह इत्तिलात मिलीं :

महसूस इत्तिलात : गाड़ी चल रही थी, रंग सुर्ख़ था, स्पीड आहिस्ता थी, मर्द चला रहा था।

ग़ैर-महसूस इत्तिलात : गाड़ी क़ीमती थी, सड़क वीरान नहीं थी, तन्हाई में लुटने का ख़तरा नहीं था।

दूसरी मिसाल रंगों के बारें में दी जा सकती है। इन्सनी आँखों पर सब्ज़रंग का असर बहुत मसबत (पोज़िटिव) होता है इसीलिए अल्लाह तआला ने पेड़ों और सब्ज़ी घास वग़ैरह को हरा

बनाया है। आजकल युनिवर्सिटी में ब्लैक बोर्ड की जगह ग्रीन बोर्ड ने ले ली है। ट्रैफ़िक के सिग्नल में चलने के लिए हरे रंग की लाइट को इस्तेमाल किया गया है। लाल रंग की लाइट हमेशा ख़तरे की निशानी रहा है। आँख जैसे ही सुर्ख़ रंग को देखती है तो दिमाग़ फ़ौरन ख़तरा महसूस कर लेता है। इसलिए सुर्ख़ रंग की लाइट रुकने के लिए इस्तेमाल होता है। साइंसदानों ने दिन व रात की मेहनत से यह राज़ मालूम करने की कोशिश की कि हम दिमाग़ तक अपना पैग़ाम कैसे पहुँचा सकते हैं। सरमायादारान निज़ाम ने इस रिसर्च से फ़ायदा उठाने की भरपूर कोशिशें की हैं। मसलन एक ख़ास क़िस्म की ख़ुशबू को अगर सूंघ लिया जाए तो इनसान पर शहवत सवार हो जाती है। पेशेवर औरतों ने इस ख़ुशबू को ख़ूब इस्तेमाल करना शुरू कर दिया ताकि उनका कारोबार ख़ूब चल सके। एक दूसरी क़िस्म की ख़ुशबू सूंघने से इनसानी दिमाग की कैफ़ियत ऐसी हो जाती है कि उसका दिल व दिमाग़ दौलत को ख़र्च करने को चाहता हैं लिहाज़ा यूरोप के बड़े-बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर ने इस ख़ुशबू को एयर-कंडीशन की हवा के साथ मिलाकर छिड़कना शुरू कर दिया। यह बात तज़रिबे से साबित हो गई कि जो आदमी घर में एक सौ रुपए का सौदा ख़रीदने के लिए आता था वह इस माहौल में कई सौ रुपए की चीज़ें लेकर जाता था। जब यह तहक़ीक़ सामने आई तो सरमायादारों ने सोचा कि क्यों न हम भी कोई ऐसा सिलसिला करें कि लोग बेइख़्तियार हमारी चीज़ों को ख़रीदने पर मज़बूर हो जाएँ। लिहाज़ा उन्होंने रिसर्च यूनिवर्सिटियों को रिसर्च प्रोजेक्ट के लिए भारी रक़म मुहैय्या कीं कि बताए कि हम ग्राहक को अपना माल ख़रीदने के लिए कैसे मुतवज्जेह कर सकते हैं? सांइसदानों ने पाँचों हवास के ज़रिए इनसानी दिमाग़ को मन-मर्ज़ी की इत्तिलात ग़ैर-महसूस तरीक़े से पहुँचाने के तरीक़े ढूंढ लिए।

इश्तिहारबाज़ी या शिकारबाज़ी

जब टीवी स्क्रीन पर मुख़्तलिफ़ चीज़ों के इश्तहार दिए जाते हैं। तो उनके साथ म्युज़िक भी शामिल की जाती है। इस मौसिक़ी में एक पैग़ाम (Jingle) शामिल कर दिया जाता है जो इनसानी दिमाग़ में पहुँचकर अटक जाता है। जब इनसान चीज़ें ख़रीदने के लिए बाज़ार जाए तो उस चीज़ को ख़रीदे बग़ैर इत्मिनान नहीं मिलता। इस तरीक़े को क़ानूनी हैसियत मिल गई है। लिहाज़ा इश्तेहारबाज़ी हक़ीक़त में शिकारबाज़ी बन गई है।

शैतानी जाल

मौसिक़ी के ज़रिए ग़ैर-महसूस तरीक़े से इनसानों के दिमाग़ में अपना पैग़ाम भेजने के तजुरिबात जब कामयाब हुए तो सिर्फ़ कारोबारी लोगों ने और कंपनियों ने ही इससे फ़ायदा नहीं उठाया बल्कि शैतान के चेलों ने इसे अपने बुरे मक़सदों के लिए ख़ूब इस्तेमाल किया। नंगापन और बेहयाई फैलाने वाले लोगों ने उसे नग़मों की मौसिक़ी के साथ शमिल कर दिया। उन्हें मालूम था कि जो गाना ख़ूब मशहूर होगा उसे लोग सैंकड़ों दफ़ा नहीं बल्कि हज़ारों दफ़ा सुनेंगे। लिहाज़ा हज़ारों दफ़ा शैतानी पैग़ाम उनके दिमाग़ तक पहुँच जाएगा। इसे पस-मंज़र पैग़ाम (Back Track) कहा जाता है। मसलन सुनने वाला अपनी समझ में गाना सुन रहा है मगर उसके दिमाग़ में शैतानी ख़्यालात जन्म ले रहे होते हैं। इसलिए कि गाने के पस-मंज़र पैग़ाम मिल रहा होता है। शैतान की पूजा करो। (Worship the devil)। एक दूसरा गाना सुनने वाले लोगों में माँ के ख़िलाफ़ नफ़रत के जज़्बात पैदा होते थे। जब पता लगाया गया तो उसके पस-मंज़र मौसिक़ी में पैग़ाम था। माँ को क़त्ल करो (Kill your Mom)।

कुछ साल पहले फ़िरंगी माहौल में हम-जिन्स परस्त को निहायत बुरी नज़र से देखा जाता था। मगर जब क़ानून ने

इजाज़त दे दी तो आम राय को हमवार करने के लिए मशहूर गानों की मौसिक़ी में पस-मंज़र पैग़ाम शामिल किए गए।

हम जिन्स-परस्ती ठीक है (Gays life style)

लिहाज़ा फ़िरंगी माहौल में अगर कोई हमजिन्स-परस्ती को बुरा कहे तो उस आदमी को बुरा समझा जाता है। मर्द और औरतें सब इस तर्ज़ ज़िन्दगी को दिल व जान से क़बूल कर चुके हैं। यहाँ तक कि डाक्टर लोग पहले डाक्टर लोग इसके डाक्टरी नुक़सान गिनवाया करते थे। अब उनकी ज़बाने भी गूंगी हो गई हैं। उनके लबों पर चुप्पी की मुहर लग गई हैं।

अब यह बात समझ में आती ही है कि कुछ कंपनियाँ जो अपनी इश्तेहारबाज़ी पर लाखों डॉलर ख़र्च करती हैं। इश्तेहार बनाने की क़ीमत लाखों डॉलर होती हैं। हालाँकि वह इश्तेहार तो दस फ़ीसद रक़म में भी बन सकते थे। उन्हें हक़ीक़त में इश्तेहारों अपने पसमंज़र पैग़ाम भरवाने में भारी रक़में अदा करनी पड़ती हैं। मगर उन्हें फ़ायदा यह होता है कि ग्राहक उनकी चीज़ों को ख़रीदने के मतवाले बन जाते हैं। एक कंपनी ने ऐलान किया कि हम अपनी सालाना आमदनी का नव्वे फ़ीसद इश्तेहारी बाज़ी पर लगाते है जबकि हमारी चीज़ों की बिक्री इतनी ज़्यादा होती है कि बाक़ी दस फ़ीसद रक़म हमारी कंपनी को चलाने के लिए काफ़ी है।

पसमंज़र पैग़ाम (Subliminal messaging)

हमारे एक करीबी दीनदार दोस्त पीएचडी के स्टूडेंट थे। उन्हें प्रोफ़ेसर ने क्लास में पढ़ाया कि इनसान कुछ पैग़ाम शऊरी तौर पर हासिल करता है और कुछ लाशऊरी तौर पर हासिल कर लेता है। बच्चो ने कहा कि यह कैसे हो सकता है? उसने क्लास में शामिल तीन सौ लोगों के सामने एक मशहूर गाने की टेप चलाई और पूछा कि क्या तुम्हें इस गाने में कोई ग़ैर-मामूली पैग़ाम मिल

रहा है? तीन सौ तुलबा ने इनकार किया। जब काफ़ी बहस हुई तो उस प्रोफ़ेसर ने उस टेप की आवाज़ को कम फ्रीक्वेन्सी पर यानी आहिस्ता रफ़्तार पर चलाकर सुनाया तो उसमें वक़्फ़े से यह पैग़ाम भरा गया था, 'ऐ शैतान! ऐ शैतान!'

बच्चों की आँखें हैरत में खुली की खुली रह गयीं।

प्रोफ़ेसर ने यह भी बताया कि हुकूमते इसे अपने बुरे मक़सद के लिए इसतेमाल कर रही हैं। मसलन अगर आम राय को मुसलमानों के ख़िलाफ़ करना है तो पसमंज़री पैग़ाम के ज़रिए लोगों के दिमाग़ में मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत भर देते हैं।

अगर दुनिया के किसी हिस्से में बड़ी तादाद में मुसलमान मर्द और औरते, बच्चे, बूढ़े मर जाएँ तो ख़बर सुनाने से पहले ऐसी म्युज़िक लगाई जाती है जिससे पसमंज़र पैग़ाम पहुँचता है कि ऐसा तो होता ही रहता हैं यह कौन-सी नई बात है। जब ख़बरे सुनाई जाती हैं तो पूरी दुनिया में कोई मुसलमान इससे टस से मस नहीं होता। सबका रवैय्या ऐसे होता है जैसा कि कुछ हुआ ही नहीं।

आज फ़िरंगी क़ौमें बड़ी दिलेरी से अपनी मनमानी कर रही हैं। उन्हें दुनिया के लोगों की आम राय की कोई परवाह नहीं है। वे समझती हैं कि दुनिया इसमें जितना बुरा कहे हम अपना मक़सद पूरा कर लें। बाद में पसमंज़र पैग़ाम के ज़रिए हम लोगों के ज़हन अपनी तरफ़ मुतवज्जेह कर लेंगे। जो लोग आज हमें गालियाँ निकाल रहे हैं वे कल हमारी तारीफ़ों के पुल बाँधा करेंगे।

यह बात समझनी आसान हो गई है कि जो आदमी मौसिक़ी और गाने सुनने का आदी होता है वह बहुत जल्दी दीन से दूर हो जाता है बल्कि वह बेहिस हो जाता है। घर के लोग जितनी नीसहतें करें वे उस पर असर ही नहीं करतीं। वह आदमी ऐसा चिकना घड़ा बन जाता है कि गुनाह को गुनाह नहीं समझता। दीन की तरफ़ आना भी चाहे तो बेइख़्तियार बेदीनी की तरफ़

खिंच जाता है। ये सब कुछ पसमंज़र पैग़ाम के कारनामे हैं जो मौसिक़ी के ज़रिए नेकोकार नवजवानों को बदकार बनाकर दिखा देता है।

9. म्युज़िकल इंडस्ट्री

मौसिक़ी ने आजकल म्युज़िकल इंडस्ट्री (Musical Industry) का रूप धार लिया है। रिसर्च लैब में इस पर बहुत ज़्यादा तहक़ीक़ी काम हो रहा है। युनिवर्सिटी में बायो-मेडिसन (Bio medicine) और मसनवी ज़हानत (Artificial Intellegence) के मज़मनों की तरह आडियो प्रोसेसिंग (Audio Processing) के मज़मून में दाख़िला मिलना मुश्किल हो गया है। रिजयाज़ीदान (हिसाब के माहिरीन) हज़रात अब कम्पयुटर के ज़रिए आवाज़ का माडल (Mathematical Modeling) बनाते हैं। लिहाज़ा किसी इनसान की आवाज़ में अपना पैग़ान भरकर सुनाना मामूली बात बन गई हैं मर्द की आवाज़ को औरत की आवाज़ की तरह बनाना और औरत की आवाज़ को मर्द की आवाज़ की तरह बनाना बाएँ हाथे का खेल बन गया है। मजमे की आवाज़ों में किसी ख़ास बंदे की आवाज़ का पहचानना बहुत आसान हो गया है। इसको लहरों का तजज़िया (Wavelet Analysis) कहते हैं। आवाज़ की पहचान (Wave Recognistion) के कम्पूयटर प्रोग्राम के ज़रिए किसी आदमी की आवाज़ को आसानी से पहचना और रिकार्ड किया जा सकता है। सिंगर के गाने को (Echo System) के ज़रिए उसकी अपनी आवाज़ से बेहतर आवाज़ में पेश किया जा सकता है।

पहले ज़मान में मौसिक़ी सिर्फ़ इस वजह से हराम थी कि इसमें राग और रागनियों की आवाज़े शामिल होती हैं। आज तो उसमें अय्याशी और फ़हाशी की तरफ़ माइल करनेवाले पस-मंज़र भी शामिल होते हैं। लिहज़ा मौसिक़ी पहले से कई गुना ज़्यादा दर्जे की हराम हो गई है। पहले मौसक़ी सुनने वाले के आमाल

ज़ाए होने का खतरा होता था आज तो मौसिक़ी सुनने वाले का ईमान जाए होने का ख़तरा होता है। पहले मौसिक़ी अपने सुननेवालों को नेकी से बेज़ार बना देती थी और आज तो मौसिक़ी अपने सुनने वाले को ख़ुदा बेज़ार बना देती है। लिहाज़ा आज की मौसिक़ी सुनना हराम दर हराम दर हराम अमल है।

10. एक मुस्लिमा हक़ीक़त

यह मानी हुई हक़ीक़त है कि मौसिक़ी के शौक़ीन आदमी नेक लोगों के साथ मिलकर कितना ही नेक क्यों न हो जाए उसके दिल में अन्दर मौसिक़ी नफ़रत पैदा नहीं होती बल्कि बीस साल की नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारने के बावजूद अगर कभी वह बाज़ार या दुकान के क़रीब से गुज़रे और उसे कोई पुराना गाना सुनाई दे तो वह फड़क जाता हैं एक साल में बीस साल की मेहनत धरी की धरी रह जाती है। पुरानी यादें ताज़ा हो जाती हैं। इस वजह से मौसिक़ी बहुत ज़्यादा खतरनाक हो गई है कि बचपन के गाने बचपन में भी नहीं भूलते। मौसिक़ी के जरासीम मरने तक बंदे के दिमाग़ में मौजूद रहते हैं। अच्छा वही आदमी होता है जो इस मुसीबत के क़रीब भी न जाए। अपने दिल व दिमाग़ को सुरताल से ख़ाली रखे।

7. फ़िल्में और ड्रामे

स्टेज और स्क्रीन पर तमाशा देखने की तारीख़ तो बहुत पुरानी है मगर मौजूदा दौर में रियासत कैलिफ़ोर्निया के हालीवुड को मर्कज़ी हैसियत हासिल है। लोग इसे दुनिया को जिन्सी दारुल-ख़िलाफ़त (Sex capital of the world) कहते हैं। युनर्विसल, सोनी, कोलम्बिया, फ़ोकस और एमजीएम जैसे प्रोडयूसरों ने फ़िल्मी पेशे पर क़ब्ज़ा जमा लिया है।

ड्रामा (Drama)

ड्रामा उस फ़िल्म को कहते हैं जिसमें बनाने वाला कोई

सबक़ सिखाना चाहता है। यह कड़वा सच है कि लोगों ने फ़िल्मों के ज़रिए हज़ारों नवजवानों को बिगड़ते तो देखा है मगर एक को भी संवरते नहीं देखा। इससे ड्रामे के बदअसरात का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

थ्रीलर एक्शन (Thriller Action)

थ्रीलर उस फ़िल्म को कहते हैं जिसमें मार कटाई हो, दिल दहलाने वाले मंज़र हों। ऐसी फ़िल्मों को देखकर बच्चे मार कटाई के तरीक़े सीखते हैं। चोरी करना और क़त्ल करना सीखते हैं। कभी-कभी नासमझी की वजह अपनी ज़िन्दगी को बरबाद कर डालते हैं।

कॉमेडी (Comedy)

कॉमेडी उस फ़िल्म को कहते हैं जिसमें हंसी मज़ाक का पहलू ग़ालिब हो। देखने वाले सिर्फ़ वक़्ती तौर पर ही ख़ुश नहीं होते बल्कि वे पूरी ज़िन्दगी की कॉमेडी बनाने के चक्कर में ऐसे उलझते हैं कि उसे ट्रेज्डी बना बैठते हैं।

कार्टून (Cartoon)

कार्टून बच्चो के दिल बहलाने के लिए मुख़्तलिफ़ शक्लों वाले जानवरों के किरदारों के ज़रिए फ़िल्म बनाई जाती हैं बचपन से ही बच्चों के अन्दर से हया को निकाल दिया जाता है। पसमज़ंर पैग़ाम के ज़रिए बच्चे को अनानियत (अकड़-मकड़ सिखाई जाती है। कार्टून को देखने का ऐसा चस्का पड़ जाता है कि नमाज़ क़ज़ा होती है तो हो जाए मगर कार्टून देखने में फ़र्क़ न आए।

साइंस (Science Fiction)

साइंसी तसव्वुरात के मुताबिक़ मुस्तक़्बिल के हालात की अक्सबंदी की जाती है।

रोमान्स (Romance)

रोमान्स उन फ़िल्मों में मुहब्बत करना, इसको परवान चढ़ाना और निभाना, सिखाया जाता है ताकि नवजवान बच्चे बच्चियों को इश्क़ माशूकी के डायलाग बोलने में आसानी हो। इसकी कई

क़िस्में हैं जिनके हिसाब से उनके कोड-वर्ड होते हैं :

जी G : जर्नल रोमान्स से मुताल्लिक़ फ़िल्म

पीजी PG : Parental Guidience माँ-बाप खुद पास बैठ कर अपने बच्चे को फ़िल्म दिखाएँ और समझाएँ।

13. पीजी (13PG) : माँ-बाप 13 साल तक की उम्र के बच्चो को अपने पास बैठकर फ़िल्म दिखाएँ।

17. एनसी : (No Chiled less than 17) : ये फ़िल्में बेहयाई और नंगापन सिखाने के लिए होती हैं।

आर Restricted : ये फ़िल्में हर आदमी नहीं देख सकता क्योंकि अख़्लाक़ी गंदगियों से भी होती हैं।

एक्स लस्ट (X Lust) : ऐसी फ़िल्में जो इनसान में शहवत को पैदा करती हैं।

एस (Nude) : वह फ़िल्म जिसमें काम करने वाले मर्द और औरतें अपने जिस्म के पोशीदा हिस्सों का लिबास उतार देते हैं।

एस (सैक्स) (S Sex) : वे फ़िल्म जिसमें काम करनेवाले मर्द और औरतें आपस में ज़िनाकारी करते हुए दिखाए जाते हैं।

यह तफ़्सील इसलिए दी गई है कि माँ-बाप को अन्दाज़ा हो सके कि उनके बेटे और बेटियाँ अगर किराए पर वीडियो फ़िल्म लाकर देखते हैं तो वे इसमें क्या कुछ देख सकते हैं। स्कूल के नवजवान लड़कों से इत्तिला मिली है कि लड़के हीले बहाने से लड़की को नंगी से नंगी फ़िल्म दिखाते हैं। फ़िल्म देखकर लड़की पर शहवत का इतना ज़ोर हो जाता है कि वह ज़िनाकारी के लिए तैयार हो जाती हैं कुछ औरतें बच्चों के ज़रिए अपने घरों के मर्दो के चोरी छिपे किराए की वीडियो मंगाकर देखती हैं। यह इतना बड़ा शौक़ है कि एक दफ़ा इसकी आदत पड़ जाए तो छूटने का नाम नहीं लेती। कभी-कभी मर्द फ़िल्मों में मर्द व औरत को गंदे-गंदे तरीक़ों से अपनी शहवत पूरी करता हुआ देखते है फिर वही सब कुछ अपनी बीवी के साथ आज़माने की कोशिश करते हैं। इससे मियाँ-बीवी में मुहब्बत के बजाए फ़ासले

बढ़ने शुरू हो जाते हैं। औरतें फ़िल्मों में काम करने वाली एक्ट्रेसों का लिबास देखकर वैसा ही लिबास बनवाने की कोशिश करती है। इसी से फ़ैशन परस्ती में इज़ाफ़ा होता जा रहा है।

कुछ माँ-बाप अपने बच्चों को साथ बिठाकर फ़िल्में देखते हैं। एक पाँच साल के बच्चे ने बताया कि मैं शाम के वक़्त माँ-बाप के साथ बैठा फ़िल्म देखता हूँ। जब कोई नंगा फ़हश मंज़र आ जाता है तो अम्मी मुझे आँखे बंद करने के लिए कहती हैं। मैं आँखें बंद कर लेता हूँ। मगर बारीक सुराख़ से देखता रहता हूँ। पहले लोग फ़िल्में देखने सिनेमा हाल में जाया करते थे तो उन्हें बदनामी का डर होता था। आज वीसीआर ने हर-हर घर को सिनेमा हाल बना दिया हैं पहले आवारा लोग किसी लड़की को छेड़ना चाहते थे तो मिलने के लिए हज़ारों पापड़ बेलने पड़ते थे। आज तो स्क्रीन के ज़रिए वे जो चाहें लड़की को दिखाएँ, वालिदेन को ख़बर ही नहीं होती आज तो फ़िल्मों के सैक्सी मंज़र देख देखकर लड़की पहले ही तैयार होती है कि काश कोई मर्द उसके पास आ जाए। फ़िरंगी टीवी स्टेशनों पर रात बारह से दो बजे तक नंगों का क्लब (Nude Club) की फ़िल्में दिखाई जाती हैं जिसमें मर्द व औरत बेलिबास हालत में मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से जिन्सी अमल करते हैं। मुसलमान मुल्कों के नवजवान बंद कमरों में सुबह-सुबह ये सब करतूत होते हुए देखते हैं तो उन्हें इस्लाम में पाबन्दियाँ और सख़्तियाँ नज़र आने लगती हैं।

आज के दौर में टीवी का देखना कई गुना ज़्यादा नुक़सानदेह और हराम हो गया है। जिस घर में टीवी हो समझ लो कि उस घर में शैतान की एक बिग्रेड मौजूद है। कुछ लोग घर में टीवी रखने का यह उज़्र पेश करते हैं कि हमारे बच्चे पड़ौसियों के घर जाकर टीवी देखते हैं। इस मजबूरी की वजह से हमने अपने घर में टीवी रख लिया है। यह तो ऐसी मिसाल हुई जैसे ये यह कह रहे हो कि क्या करें हमारे बच्चे बाहर जाकर ज़हर खाते हैं

लिहाज़ा हमने घर में अपने हाथों से उन्हें ज़हर खिलानी शुरू कर दी है।

टीवी के बुरे असरात घर के लोगों में सबसे ज़्यादा बीवी पर पड़ते हैं। मर्द लोग स्क्रीन पर रोज़ाना ख़ूबसूरत औरतों को देखते हैं तो उन्हें अपनी बीवी में कोई कशिश महसूस नही होती। उन्हें ख़ूब से ख़ूब तर की हवस हो जाती है। घरों में मिया-बीवी के दर्मियान झगड़ों और तलाक़ की शरह बढ़ने का एक सबब यह भी है। वैसे भी टीवी और बीवी में हम वज़न अलफ़ाज़ हैं। यूँ लगता है जैसे कि कज़िन हैं।

इंटरनेट या ऐन्टरनेट (Internet or Enternet)

इंटरनेट कम्पुयटर कंनक्शन को कहते हैं। जबकि ऐन्टरनेट जाल में फंस जाने को कहते हैं।

मौजूदा दौर की तालीमी सहूलतों को सामने रखते हुए फ़िरंगी मुल्कों ने इंटरनेट का सिलसिला इसलिए शुरू किया था कि तालिब इल्म हज़रात को मालूमात के हासिल करने में आसानी हो जाए। इसमें कोई शक नहीं कि मालूमात हासिल करने का यह बेहतरनी ज़रिया है।

मुसीबत यह है कि इसका अच्छा इस्तेमाल तो अपनी जगह मगर बुरा इस्तेमाल बहुत ज़्यादा होने लग गया है। शैतान और शैतान के कारिन्दों ने इंटरनेट क्लब को ग़लत इस्तेमाल कर दिया। लड़के लड़कियाँ एक दूसरे से दोस्ती करेन के लिए इंटरनेट पर चैटिंग करते हैं। अब तो एक दूसरे को नंगी तस्वीरें भी भेजते हैं। चुनाँचे मिसाले भी सामने आयीं कि मुसलमान लड़कियों ने काफ़िर लड़कों के साथ इंटरनेट पर दोस्ती करने ली। कुछ जगह तो यह भी सुनने में आया है कि इंटरनेट दोस्ती की वजह से लड़की अपना घर छोड़कर अपने दोस्त लड़के के पास चली गई। अपने ख़ानदान की इज़्ज़त को ख़ाक में मिला गई

अक्सर माँ-बाप समझते हैं कि हमारे हर वक़्त पढ़ाई करने मे

लगे रहते हैं। उन्हें क्या मालूम कि वे कम्पयुटर पर बैठे घंटों अपने दोस्तों से इश्क़ व मुहब्बत की बातें करते रहते हैं। इस मर्ज़ में सिर्फ़ नवजवान ही गिरफ़्तार नहीं हैं बल्कि कुछ बूढ़े भी बराबर शरीक हैं। वे भी नौजवान लड़कियों से इस तरह चैटिंग करते हैं जैसे कोई नवजवान लड़का कर रहा हो।

नंगेपन और बेहयाई वाले पेशेवर लोगों ने इंटरनेट को अपने बुरे मक़सद के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। लिहाज़ा उनको क्रेडिट कार्ड के ज़रिए रक़म भेज दी जाए तो वे नंगी नवजवान लड़की तस्वीर पेश करते हैं। फिर मुक़र्रर किए हुए बीस मिनट या आधा घंटे के लिए वह लड़की शहवत भरी हरकते करती हैं इंतिहाई बहयाई की बातचीत करती हैं। नवजवान उसकी तस्वीर देखकर गुफ्तगू को सुनकर बेहाल हो जाते हैं। फिर जाएज़ न नाजाएज़ तरीक़ों से शहवत को पूरा करते हैं। अगर कोई तालिब इल्म इंटरनेट पर बैठा हुआ अपना काम कर रहा हो तो अचानक स्क्रीन पर पेशेवर नंगी लड़कियों की तस्वीरें आ जाती हैं। नीचे लिखा होता है कि अगर हमारे साथ राब्ता करना चाहें तो इस नंबर पर राब्ता करें। कुछ लम्हां के लिए ये इश्तेहार नेक नवजवानां की ज़िन्दगियों को बरबाद करने का ज़रिया बन जाते है।

कभी-कभी इ-मेल में इतने बुरे मज़मून मिले हैं कि जिनको पढ़ना रूहानियत की मौत होता हैं इंटरनेट इसलामी नाम की वेबसाइट होती है लेकिन इस्लाम के ख़िलाफ़ काम होता है। एक बार तहक़ीक़ की गई तो पता चला कि एक हिन्दू इस्लामी वेबसाइट के नाम पर इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा करने में लगा हुआ था। नवजवान इंटरनेट से मुख़्तलिफ़ मज़मून पढ़कर समझ लेते हैं कि यह इस्लाम है हालाँकि उसका इस्लाम से दूर का वास्ता निकलता है कि इंटरनेट हक़ीक़त में ऐन्टरनेट (जाल में फंसों) बन चुका है। नवजवानों का इससे दूर रहना ही अच्छा है।

वीडियों-गेम

फ़िरंगी कम्पनियों ने बच्चों का दिल बहलाने के लिए कम्पयुटर पर ऐसे-ऐसे गेम तैयार कर रखे हैं कि बच्चे जिनको खेलकर थकते ही नहीं हैं। एक गेम बनाने के लिए कई टीमों को मिलकर काम करना पड़ता है। मसलन :

1. ग्राफ़िक डिज़ाइनर (Graphic Designer)
2. गेम डिज़ाइनर (Game Desginer)
3. कम्पयुटर प्रोग्रामर (Programmer)
4. म्युज़िक डिज़ाइनर (Music Designer)
5. रंग या शेड डिज़ाइनर (Color Designer)
6. माहिर नफ़्सियात (Phycologist)

गेम डिज़ाइन करने के लिए तक़रीबन 200 माहिरीन फ़न मिल कर काम करते हैं। माहिर नफ़्सियात हज़रात बच्चों की नफ़्तियात को सामने रखकर ऐसे गेम बनाते हैं कि बच्चे का दिल उस पर आशिक़ हो जाए। वे किसी हाल में गेम की जान ही न छोड़े। इसीलिए जब बच्चे गेम खेलने बैठते हैं तो उन्हें न स्कूलन की पढ़ाई याद रहती है न नमाज़ तिलावत का ध्यान रहता है। एक क़रीब अज़ीज़ ने अपने बच्चे का वाक़िआ सुनाया कि वह ईशा की नमाज़ के बाद गेम खेलने बैठता और उसी जगह बैठे-बैठे सुबह कर दी हालँकि गेम खेलने में आँख भी मशगूल और दोनों हाथ भी मशगूल होते हैं मगर घंटो स्क्रीन के सामने बैठे रहना भी अजीब मामला है। ज़ाहिर में तो यह नज़र आता है कि गेम के ज़रिए बच्चे अपना वक़्त ज़ाए करते हैं, नमाज़ पढ़ने में कोताहि करते हैं लेकिन गेम की म्युज़िक में जो पसमंज़र पैग़ाम दिए जाते है वे ता`आम लोगों को मालूम नहीं होते। इन गेमों के अन्दर ऐसा ज़हर भरा हुआ होता है कि बच्चे बहुत जल्द दीन से दूर हो जाते हैं।

बड़ी उम्र के लड़कों के लिए जो गेम तैयर किए जाते हैं

उसमें लड़कियों की नंगी तस्वीरें दी जाती हैं। साफ़ ज़ाहिर है कि जब बिजली कड़केगी तो शहवत भड़केगी। नतीजा ज़िनाकारी पर जा निकलेगा।

8. नाविल और अफ़साने

आजकल इश्क़बाज़ी की नई-से-नई स्टोरी वाले नाविल लिखे जा रहे हैं। अख़बार "जहाँ" वग़ैरह मैगज़ीन में भी ऐसी कहानियों से भरे हुए होते हैं। तीन औरतें तीन कहानियाँ के उनवान पर ऐसे-ऐसे वाक़िआत लिखे जाते हैं कि नवजवान लड़के और लड़कियाँ उन्हें शौक़ से पढ़ते हैं और कभी-कभी तो ख़ुद भी वैसा ही करना शुरू कर देते हैं। जो नवजवान किसी से ताल्लुक़ नहीं बना सकते वे तन्हा अफ़सानों की कहानियाँ अपने ज़हन में सोचकर गुनाहों में मुलव्विस हो जाते हैं। ख़्यालात नापाक हो जाते हैं। चाहे देखने में नमाज़, रोज़ा भी करते हों मगर दिल में ख़्याली महबूब की तस्वीर सजाए फिरते हैं। नमाज़ पढ़ते हुए भी उसकी याद में लगे रहते हैं। यूँ लगता है कि जैसे एक ख़्याली बुत की पूजा कर रहे हों।

फ़िरंगी मुल्कों मं पोरनोग्राफ़ी (Pornography) के नाम पर बिल्कुल नंगी तस्वीरें छापी जा रही हैं। बालिग लोगों के लिए औरतों के जिस्म के पोशीदा आज़ा की क़रीब से ली गई तस्वीर छपती है। इन तस्वीरों को देखन इस क़द्र फ़साद का बाइस है कि शहवत के मारे बूढ़े गधे भी जवान बन जाएं। एक फ़िरंगी मुल्क में एक पेशेवर औरत की तस्वीर दिखाई गई जो कि सैक्स चैंपियन कहलाई। ऐलान किया गया कि इसने एक के बाद दूसरे तीन सौ मर्दों से ज़िना करने का आलमी रिकार्ड क़ायम किया। काफ़िरों ने जिन्सी मिलाप को भी फुटबाल के खेल की तरह समझना शुरू कर दिया है। जितना चाहो उतने गोल करों। मैदान खुला हुआ मौजूद है।

9. ख़ानदानी मंसूबा-बंदी (Family Planing)

आजकल ख़ानदानी मंसूबा-बंदी की सरकीर मुहिम भी ज़िना और बेहयाई के फ़रोग का एक बहुत बड़ा ज़रिया है। आबादी की फ़लाह के नाम पर एक गुलाम बनाने की साज़िश है जिसे हमारे ऊपर मुसल्लत कर गया है। अंजाम और नतीज़ा की परवाह किए बग़ैर मीडिया के ज़रिए उसे अवाम के जहनों में उतारा जा रहा है। ग़ौर से जाएज़ा लिया जाए तो इस मुहिम के दीनी अख़्लाक़ी और मआशी और समाजी नुक़सान बहुत ज़्यादा हैं लेकिन अफ़सोस कि इश्तेहारी चालों के ज़रिए इनके फ़ायदे बताकर पेश किया जा रहा है :

ख़िरद का नाम जुनूँ रख दिया और जुनूँ का ख़िर्द
जो चाहे उनका हुस्न करिश्मा साज करें

इस प्रोग्राम के समाज पर पड़ने वाले कुछ मुंज़िर असरात को बयान किया जाता है :

शरिअत के क़ानून से बग़ावत

1. अल्लाह आला ने मर्द व औरत में एक-दूसरे के लिए जिन्सी कशिश और लज़्ज़त इसलिए रख दी ताकि नस्ले इनसानी में इज़ाफ़ा हो सके लेकिन मंसूबाबंदी वाले ये चाहते हैं कि सिर्फ़ लज़्ज़त और शहवत तो पूरी हो लेकिन नस्ले इनसानी में इज़ाफ़ा न हो। जो मशियत ईज़दी के बिल्कुल ख़िलाफ़ है।
2. नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया :

تزوجوا الولود الودود فانی مکاثر بکم الامم یوم القیامة

ज़्यादा मुहब्बत करनेवाली और ज़्यादा बच्चे जनने वाली औरत से निकाह करो। मैं क़यामत के दिन तुम्हारी कसरत की बिना दूसरी उम्मतों पर फ़ख़्र करूँगा।

तो मंसूबा-बंदी वाले नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ख़्र को तोड़ना चाहते हैं।

3. इनसानी नस्ल को बाक़ी रखने के लिए अल्लाह तआला ने इनसान की पैदाइश और मरने की दर में एक तवाज़ुन क़ायम कर रखा है और इसमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हिकमतें हैं। जिस जान को भी दुनिया में उतारते हैं उसके लिए रिज़्क़ भी उतारते हैं। इसमें अगर कोई अपनी अक़्ल दौड़ाए कि इतने बच्चे होने चाहिए और इतने नहीं होने चाहिए और आबादी कम करने के मंसूबे भी बनाए तो यह ऐसा ही है जैसे मअज़ल्लाह कोई अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ख़ुदाई में बेजा दख़ल करना चाहता हो। यह महज़ एक बेवक़ूफ़ी और ईमान की कमज़ोरी की दलील है।
4. ज़ब्ते विलादत (Birth Control) के सिलसिले कभी हमल नाजाएज़ तौर पर गिरा दिया जाता है। जो एक जान के क़त्ल के दायरे में आता है जिस पर क़यामत के दिन पूछ होगी।
5. ज़ब्ते विलादत (Birh Control) के किसी जाएज़ तरीक़े को इख़्तियार करना उसी सूरत में जाएज़ है जबकि वालिदा की सेहत को किसी क़िस्म का ख़तरा हो। उसकी जान बचाने के लिए कोई हमल रोकने का तरीक़ा इख़्तियार करना दुरुस्त है। लेकिन इसका मक़सद एक जान को बचाना है न कि आबादी को कम करना।

तहज़ीबी असरात

ख़ानदानी मसूबा-बंदी की इस मुहिम में रेडियों, टीवी अख़बारात और दूसरे अबलाग़ (Comunication) के ज़रियों से बर्थ-कंट्रोल की तर्ग़ीब कुछ इस अंदाज से दी जाती है कि मियाँ-बीवी के जिन्सी ताल्लुक़ात की वे बाते जिनको खुलेआम बयान करना पहले हमारे मआशरे में शर्म का बाइस समझा जाता था अब उनको बयान करना इतना बाइसे शर्म नहीं समझा जाता

बल्कि अब यह हमारे कल्चर का हिस्सा बनता जा रहा है। जनरल स्टोर, मार्केट और दूसरी अवामी जगह पर हमल रोकने वाली दवाई और आलात को बड़े नुमाया अँदाज़ में रखा जाता है। जिन पर बड़ी उम्र के लोगों के साथ-साथ कम उम्र बच्चों की भी नज़र पड़ती है और फ़ितरी तजस्सुस की वजह से वे जल्दी ही जान जाते हैं कि इनका मक़सद क्या है और इस्तेमाल का तरीक़ा क्या है। गोया मंसूबा-बंदी की स्कीम समाज से शर्म व हया की जड़ों को उखाड़ने मे बड़ा असरदार क़िरदार अदा कर रही है।

ज़िना को फ़रोग़

हमल रोकने वाले आलात और दवाओं के खुलेआम मिलने की वजह से इस स्कीम का नतीज़ा नाजाएज़ जिन्सी ताल्लुक़ात की कसरत की सूरत में निकल रहा है क्योंकि जब इन चीज़ों से आगाही नहीं थी और मिलती नहीं थी तो औरत को बदनामी का डर होता था जिसकी वजह से वह किसी ग़लत हरकत का सोच भी नहीं सकती थी लेकिन अब मंसूबा-बंदी का लिट्रेचर और दवाईयों के मिलने से नाजाएज़ ताल्लुक़ात क़ायम करने में जो एक डर था था वह ख़त्म हो गया है। इस तरह ख़ानदानी मंसूबा-बंदी की यह मुहिम ज़िना के फ़रोग देने का एक अहम ज़रिया बन गई है।

मआशी असरात

ख़ानदानी मंसूबा-बंदी वाले इस बात को बहुत उछालते हैं कि बच्चे ज़्यादा होंगे तो वसाइल में कमी आएगी। यह बात कहने वाले सिर्फ़ यह सोचते हैं कि हर नया आने वाला वसाइल कों इस्तेमाल करेगा जिससे वसाइल में कमी आएगी। वह यह नहीं सोचते कि अल्लाह तआला ने इनसान को वसाइल पैदा करने की सलाहियत भी दी है। इसे खाने वाला मुँह तो एक ही दिया है लेकिन काम करने वाले हाथ दो दिए हैं। सच्ची बात तो यह है

कि जितनी अफ़रादी कुव्वत ज़्यादा होती है उतनी ही वसाइल पैदा करने की कुव्वत भी बढ़ जाती है। मंसूबा-बंदी वालों का यह नारा है कि "बच्चे दो ही अच्छे" इसका अगर अक़्ले सलीम के साथ जाएज़ा लिया जाए तो मालूम होगा कि अगर सब लोग इस पर अमल करें तो एक नस्ल के बाद मआशरे में जवानों के बजाए बूढ़ों की तादाद बढ़ जाएगी। अब वसाइल को इस्तेमाल करने का नहीं बल्कि वसाइल को पैदा करने वाले हाथों का मसअला आ जाएगा। तजरिबे की बात है कि जिन मुल्कों में अमल रोकने वाली चीज़ों का इस्तेमाल बढ़ गया है, उन्हें अफ़रादी कुव्वत के लिए दूसरे मुल्कों से रुजू करना पड़ रहा हैं।

इनसानी सेहत पर असर

मंसूबा-बंदी के तहत हमल रोकने वाली जितनी भी दवाईयाँ इस्तेमाल की जाती हैं या नसबन्दी वग़ैरह के आप्रेशन किए जाते हैं उसकी इनसान की सेहत पर बहुत बुरे असरात पड़ते हैं। अक्सर देखा गया है कि ये सूरतं अपनाने से जिस्म में ज़हरीले मादूदे (Toxication) पैदा होते हैं जो बहुत ही तकलीफ़देह होते हैं। और कुछ केसां में तो इतनी पेचीदा सूरतेहाल बन जाती है कि नतीजा मौत की सूरत में निकलता है। जी हाँ यह अमल की सज़ा होती है।

ऊपर बयान किए तमाम नुक्तों का ख़ुलासा यह है कि ख़ानदानी मंसूबा-बंदी क़ानूने क़ुदरत के सरासर ख़िलाफ़ है। इससे फ़ायदे हासिल होने के बजाए उल्टा बेहयाई और ज़िना को बढ़ावा मिल रहा है। लिहाज़ा इसका इलाज ज़रूरी है।

शरीअते मुहम्मदी और रसद के ज़रिए

शरिअते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्न व जमाल देखिए कि समाज से नंगापन और बेहयाई को ख़त्म करना था तो न सिर्फ़ ज़िना से बचने का हुक्म दिया बल्कि उसके ज़रियों को हराम क़रार दे दिया। मिसाल मशहूर है कि न रहेगा

बांस न बजेगी बांसुरी। जिस मंज़िल पर नहीं जाना उसका रास्ता क्या पूछना। लिहाज़ा हर वह काम जो ज़िना में मुलव्विस होने का ज़रिया बन सकता है शरीअत में उसे मना क़र दिया गया।

कुछ मिसाले इस तरह हैं :

1. औरत का नाम

फ़ुक़्हा ने इस बात को पसन्द किया है कि औरत का नाम ग़ैर-महरम के सामने ज़ाहिर न किया जाए। अगर कहीं बताना भी पड़े तो उम्मे हबीब (हबीब की माँ), हमशीरा सैफ (सैफ़ की बहन), ज़ौजा फ़क़ीर (फ़क़ीर की बीवी) और बिन्ते अहमद (अहमद की बेटी) जैसे अपने महरम मर्दों के हिसाब से बता दिए जाए। अलबत्ता शानाख़्ती कार्ड या पासपोर्ट का मामला हो तो ज़ाती नाम लिखा जाए। जाती नाम में भी कशिश होती है। मुमकिन है कि आमिरा नामी नवजवान को आमिरा नामी लड़की से तारुफ़ का मौक़ा मिले तो नाम की मुनासबत की वजह से दोनों क़रीब आ जाए।

2. औरत की आवाज़

औरत अपने घर में आहिस्ता से बोलने की आदत डाले। इतनी ऊँची आवाज़ से बोलना मना है जिससे औरत की आवाज़ बिला मक़सद ग़ैर-महरम तक पहुँचे। इसीलिए अगर औरत जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ रही है और इमाम को सज्दा सहू पेश आ जाए तो औरत आवाज़ से सुब्हानअल्लाह वग़ैरह न कहे बल्कि एक हाथ की पुश्त को दूसरे हाथ की हथेली पर मारकर आवाज़ पैदा करे। बाज़ फ़ुक़्हा ने औरत की आवाज़ को सतर में शामिल किया है मगर जम्हूर का मज़हब यह है कि आवाज़ सतर में शामिल नहीं है।

3. औरत की आवाज़ में लोच न हो

अगर किसी अजनबी मर्द से पर्दे की ओट से भी बातें करनी

पड़े तो भी आवाज़ में लोच और शीरनी पैदा न होने पाए ताकि किसी बद बातिन को मैलान न होने पाए। इरशाद बारी तआला है :

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا

और चबाकर बातें न करो कि जिसके दिल में रोग है वह लालच करे और तुम माक़ूल अंदाज़ा से बात करो।

औरत जिस नाज़ व अंदाज़ और नरमी और शीरनी से ख़ाविन्द के साथ बात करती है वह उसी के लिए ख़ास होती है। दूसरे मर्द से इस अंदाज़ में नहीं कर सकती। ग़ैर-मर्द से बात करने में लब व लहजा ख़ुश्क रखा जाए। ऐसी लगी लिपटी बातें करना जिससे मर्द की तबियत में नफ़सानी ख़्वाहिश बेदार हो उससे परहेज़ किया जाए।

अल्लामा शामी रह० ने लिखा है कि कोई नासमझ صوت المرأة का मतलब यह न समझे कि हम बातचीत को ना जाएज़ कहते हैं। हम ज़रूरत के वक़्त ग़ैर-महरम से औरत की बातचीज को जाएज़ कहते हैं मगर इसको जाएज़ नहीं समझते कि औरत अपनी आवाज़ में शीरनी और जज़्बियत पैदा करे जिससे मर्दों के दिल उनकी तरफ़ माइल हों इसी वजह से औरतों को अज़ान देने की इजाज़त नहीं देते कि उसमें ख़ुशआवज़ी से काम लिया जाता है। (रद्दे मुख़्तार 1/284)

4. औरत को सलाम करना

जिस तरह मर्दों को हुक्म दिया गया है कि वे रास्ता चलते हुए वाक़िफ़ और नावाक़िफ़ सब मर्दों को सलाम करें। इस तरह औरत के लिए यह हुक्म नहीं। औरत रास्ता चलते हुए ग़ैर-महरम मर्दों से सलाम न करे। हाँ अगर वाक़िफ़यत हो या रिश्तेदारी का ताल्लुक़ हो तो पर्दे में रहकर सलाम कर ले तो जाएज़ है। अफ़ज़ल यही है कि महरम मर्दों के ज़रिए से सलाम पहुँचा दे।

5. औरत का झूठा पानी

औरत के लिए जाएज़ नहीं है कि वह अपना बचा हुआ पानी या खाना किसी ग़ैर मर्द को भेजे। यह बात ख़ुफ़िया पैग़ाम रसानी का हिस्सा है। हाँ अगर मेहमान मर्दों का बचा हुआ खाना हो तो औरत उसमें से बरकत के लिए या ज़रूरत के लिए खा सकती है। मगर मामले का मदार नीयत पर है। नेकी की नीयत है तो जाएज़ और बुरी नीयत है तो नाजाएज़ है।

6. औरत के कपड़े

औरत अपने कपड़े ऐसी जगह न लटकाए या रखे जहाँ ग़ैर-महरम मर्द की निगाह पड़ती हो या जहाँ ग़ैर-महरम मर्द को देखने और छूने का मौक़ा मिल सकता हो।

7. औरत के बाल

औरत अगर अपने सर में कंघी करे और बाल गिरें तो उन्हें किसी पोशीदा जगह पर छिपा दिया जाए। ऐसी जगह न रखे जहाँ ग़ैर-मर्द उसको देख सकें।

8. औरत छिपी ज़ीनत ज़ाहिर न करे

औरतें अपने हाथ और पाँव में मुख़्तलिफ़ ज़ेवरात पहनती है। अगर उसमें घुंघरु वग़ैरह की आवाज़ पैदा होती है तो मना है क्योंकि ज़ेवर की आवाज़ या चमक-दमक कभी-कभी फ़ितने फ़साद का सबब बन जाती हैं तफ़्सीर कबीर में है कि जब मर्द औरत की पाज़ेब की आवाज़ सुनता है तो उसके अंदर जिन्सी ख़्वाहिश उभर जाती है।

मिशकात शरीफ़ में रिवायत है कि एक आजादकर्दा लौंडी एक बच्ची का लेकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुई। लड़की के पाँव मे बजने वाला ज़ेवर था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे काट दिया और फ़रमाया कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है :

مَعَ كُلِّ جَرَسٍ شَيْطَانٌ

हर घंटी के साथ शैतान होता है। (अबूदाऊद)

एक दफ़ा सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में एक औरत बजने वाला ज़ेवर पहनकर दाख़िल होने लगी। आपने उसे रोककर फ़रमाया कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है :

لَا تَدْخُلُ الْمَلٰٓئِكَةُ بَيْتًا فِيْهِ جَرَسٌ

उस घर में फ़रिश्ता दाख़िल नहीं होता जिसमें घंटी बजे।

9. औरत बेपर्दा होकर न निकले

इरशाद बारी तआला है :

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ

और ज़ाहिर न करें अपनी ज़ीनत

एक हदीस पाक में वारिद है कि जब औरत बेपर्दा होकर घर से निकलती है तो उस पर अल्लाह तआला के फ़रिश्तें लानत करना शुरू कर देते हैं अब तक वह लौटकर वापस घर में नहीं दाख़िल हो जाती।

10. औरत बन-संवरकर न निकले

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

الرافلة فى الزينة فى غير اهلها كمثل ظلمة يوم القيامة لا نور لها۔ (ابن كثير ٣،٢٨٤)

अपने अहल व अयाल के सिवा दूसरे लोगों में बन-संवरकर जाना ऐसा है जैसे क़यामत के दिन की तारीकी जिसके लिए कोई रोशनी न हो।

11. औरत के लिए ख़ुशबू

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

المرأة اذا استعطرت فمرت بالمجلس فهی كذا و كذا يعنی زانية.(ابن كثير ٣،٢٨٧)

जो औरत ख़ुश्बू लगाकर मज्लिस पर गुज़रती है वह भी ज़ानिया है।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की एक औरत से रास्ते में मुलाक़ात हुई जिससे ख़ुशबू फूट रही थी। आपने पूछा कि मस्जिद से आ रही हो? कहने लगी, जी हाँ। फ़रमाया क्या तुमने ख़ुशबू लगाई हुई है? कहने लगी, जी हाँ। आपने इरशाद फ़रमाया कि मैंने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जो औरत ख़ुशबू लगाकर मस्जिद में आती है उसकी नमाज़ अल्लाह तआला क़बूल नहीं फ़रमाता है। चुनाँचे वह औरत पलटकर घर गई और कपड़ों को अच्छी तरह धोया। (इब्ने कसीर 3/287)

आजकल औरतें इतनी ख़ुशबू लगाती है कि नाबीना मर्द को भी पता चल जात है कि औरत क़रीब से गुज़र रही हैं।

12. औरतों की गुज़रगाह

औरतों को चाहिए कि फ़ितून से बचने की ख़ातिर रास्ते के दर्मियान से न गुज़रा करें। जहाँ मर्दों की रेल-पेल होती है। नबी अलैहिस्लातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

ليس لكن ان تحتضن الطريق عليكن بحافات الطريق.(ابن كثير ٣،٢٨٦)

तुम्हारे लिए सदर रास्ते पर चलना ठीक नहीं। तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि रास्ते के किनारों पर चलो।

इस हुक्म के बाद सहाबियात का इसी पर अमल रहा। इस तरह चलती थीं कि उनक कपड़ा दीवार से लगता था।

13. औरत ग़ैर-मर्दों से मुसाफ़ा न करे

फ़िरंगी माहौल में अजनबी ग़ैर-महरम एक दूसरे को मिलते

वक़्त मुसाफ़ा कहते हैं, दीने इस्लाम ने इसे हराम क़रार दिया, ग़ैर-महरम मर्द व औरत एक-दूसरे से मुसाफ़ा नहीं कर सकते।

एक हदीस में उमैय्या बिन्त रुकैय्या फ़रमाती हैं कि एक दफ़ा हमने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलम से बैअत के मौक़े पर अर्ज़ किया कि अब आप हमारी तरफ़ तशरीफ़ लाइए कि हम आपके हाथ पर बैअत करें तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं औरतों से मुसाफ़ा नहीं करता, सिर्फ़ ज़बानी इक़रार काफ़ी है।

एक हदीस मुबारक में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "जो शख़्स किसी औरत का हाथ छूएगा जिसके साथ उसका जाएज़ ताल्लुक़ न हो, उस हथेली पर क़यामत के दिन अंगारा रखा जाएगा।"

सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने कभी किसी ग़ैर-महरम औरत को छुआ तक नहीं।

14. औरत ग़ैर-महरम मर्द को ख़त न लिखे

औरत अगर किसी ग़ैर-महरम को पैग़ाम पहुँचाना चाहे तो अपने महरम मर्दों के वास्ते से पहुँचाए। अगर ख़त लिखना हो तो महरम मर्दों की इजाज़त से लिखे। मसलन दीन के मसाइल पूछने के लिए मुफ़्ती हज़रात से ख़त व किताबत करने की इजाज़त है।

15. मर्द दूसरों के घरों में न झांकें

मर्दों को चाहिए कि वह अगर किसी घर में दाख़िल होना चाहें तो घरवालों से इजाज़त मांगे। नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

الاستيذان ثلاث فان اذن لك والا فارجع-(متفق عليه)

इजाज़त तीन दफ़ा माँगे अगर मिल जाए तो ख़ैर वरना

वापस हो जाना चाहिए।

इजाज़त की ज़रूरत इसलिए है कि आनेवाला अचानक घरवालों को न देख ले। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वाक़िआ है कि आप एक बार हुजरे में एक छुरी लिए सर खुजला रहे थे कि कोई आकर झांकने लगा। आपको ख़बर हुई तो आपने नाराज़गी का इज़्हार फ़रमाया और कहा कि अगर मुझे इल्म होता तो इसकी आँखें फोड़ देता। क्या इसको मालूम नहीं :

انما جعل الاستیذان من اجل البصر۔ (بخاری ۹۰۲)

तलबे इजाज़त का क़ानून देखनेवालों के लिए ही बनाया गया है।

यह भी याद रहे कि इजाज़त माँगने वाला दरवाज़ा खटखटाने के बाद सामने न खड़ा हो बल्कि दाएँ या बाएँ खड़ा हो। इसी तरह दरवाज़ें की दराज़ से या खिड़की वग़ैरह की ताक-झाँक करना भी मना है। सहिहैन की रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

لو امرأ اطلع علیک بغیر اذن فخذ فتہ بحصاۃ ففقأت عینیہ ما کان علیک من جناح۔ (ابن کثیر ۲۸۳)

अगर कोई बग़ैर इजाज़त तुम्हारे घर मं झाँके तो उसको कंकरी उठाकर मारो जिससे उसकी आँख फूट जाए तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है।

इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि दूसरों के घरों में ताक-झाँक करना कितना बड़ा जुर्म है। कुछ नवजवान अपने घरों की छतों पर बैठकर दूरबीन के ज़रिए दूर के घरों की औरतों को इस तरह देखते हैं जिस तरह कोई एक फ़िट के फ़ासले पर खड़ा देख रहा हो। यह भी हराम है।

16. मर्द अपनी माँ से भी इजाज़त माँगे

हदीस पाक में है कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या घर में दाख़िले के लिए अपनी माँ से

भी इजाज़त तलब किया करूँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, हाँ इस्तेज़ान (इजाज़त माँगना) माँ से भी है। उसने कहा, मैं तो उनके साथ घर में रहता हूँ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि उनसे भी इजाज़त लिया करो। उसने कहा, मैं उनकी ख़िदमत मे मशगूल रहता हूँ, इससे तो दुश्वारी हो जाएगी। आपने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपनी माँ को नंगी देखना पसन्द करोगे? उसने कहा, नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं फिर ही इसी वजह से कहता हूँ कि इजाज़त हासिल करके जाओ।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जब किसी ज़रूरत के लिए अंदर आते तो पहले दरवाज़े पर आकर रुक जाते, खाँसते और आवाज़ निकालते, उसके बाद अंदर आते।

इब्ने अरबी रह. लिखते हैं कि ग़ैर के घर में इज़्न (इजाज़त) हासिल करना ज़रूरी हैं अपना घर हो तो इज़्न वाजिब नहीं है। हाँ अगर घर में माँ, बहन भी साथ रहती हो तो दरवाज़े पर आकर ज़ोर से पाँव मोर जिससे औरतों को खबर हो जाए क्योंकि कभी माँ, बहन भी ऐसी हालत में होती हैं जिस हालत मं देखना हम पसन्द नहीं करते।

17. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की एहतियात

एक दफ़ा किसी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु को देखा कि दहलीज़ पर बैठे हुए हैं। उसने उन्हें सलाम किया और आगे चला गया। थोड़ी देर के बाद वह फ़िर वापसी पर उसी रास्ते से गुजरने लगा तो देखा कि अभी तक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु दरवाज़ें की दहलीज़ पर बैठे हुए थे। वह हैरान होकर पूछने लगा, अमीरुल मुमिनीन! आप दरवाज़े पर उस वक़्त से बैठे हुए हैं? आप फ़रमाने लगे, मेरी बेटी हफ़्सा उम्मुल-मुमिनीन आज घर

आई हुई हैं और मेरी बीवी घर पर नहीं है जिसकी वजह से वह घर में अकेली है। इसलिए मैंने घर में उसके अकेले बैठने के बजाए यहाँ दरवाज़े पर बैठना पसन्द किया।

18. मर्द रास्तों में न बैठें

मर्द लोग अगर रास्ते में इस तरह कि आती जाती औरतों पर नज़र पड़ सके तो यह हराम है। कुछ स्कूल कॉलेज की लड़कियाँ जब अपने घरों से निकलतीं है तो कुछ आवारा नवजवान रास्तों मे खड़े हाकर उनपर फ़िक़रे कसते हैं या उन्हें छेड़ते हैं। अव्वल तो लड़कियों को अकेले घर से निकलना नहीं चाहिए। अगर मजबूरी हो तो कई लड़कियाँ ग्रुप बनाकर जाए। दूसरे मौहल्ले वाले इस क़िस्म के नवजवान को देखें तो उसकी ख़ूब मरम्मत करें ताकि उसका नशा हिरन हो जाए।

19. मर्द के साथ ग़ैर औरत का हाल

शरअ शरीफ़ ने इस बात का हुक्म दिया है कि कोई औरत अपने मर्द के सामने दूसरी औरत का हाल खोलकर बयान न करे। मुमकिन है कि उस मर्द के दिल में इस औरत का हुस्न व जमाल घर कर जाए और वह उसके पीछे पड़ जाए।

नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम ने इरशाद फ़रमाया :

لا تباشر المرأة المرأة فتنعتها لزوجها كانه ينظر اليها. (بخاری)

औरत औरत के साथ इस तरह न रहे सहे कि वह अपने शौहर से उसकी हालत इस तरह खोलकर बयान करे कि गोया उसे देख रहा है।

20. मर्द अपनी बीवी का राज़ न खोले

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलम ने मर्द को भी मना फ़रमाया कि वह अपनी बीवी की तन्हाई की बातें किसी ग़ैर-मर्द से बयान करें।

हदीस पाक में आया है :

ان من اشر الناس عند الله منزلة الرجل يفضى الى امرأته وتفضى اليه ثم ينشر سرها. (مسلم ۱،۴۶۴)

अल्लाह तआला के नज़दीक बद्दतरीन शख़्स वह है कि अपनी बीवी के साथ यकजा हो और फिर मर्द उसके भेद को खोल दे।

इमाम नव्वी रह. फ़रमाते हैं कि मुजमलन जमा का तज़्किरा भी मकरुह है, हाँ ज़रूरत की बात और है।

21. मर्द व औरत शहवत अंगेज़ बातों से बचें

मर्द दूसरे मर्दों के साथ औरत दूसरी औरतों के साथ इश्क़ व मुहब्बत की ऐसी दास्तानें न छेड़े कि शहवत भड़क उठे और दिल गुनाह करने के लिए तैयार हो जाए। हंसी मज़ाक़ में भी ऐसा कलाम न किया जाए जो शहवानी जज़्बात को उभारे।

22. दो मर्द या दो औरतें एक साथ न लेटें

इस्लाम ने इस बात से रोका है कि दो मर्द और दो औरतें एक कपड़े में लेटें।

हदीस पाक में है :

ولا يفضى الرجل الى الرجل فى ثوب واحد ولا تفضى المرأة الى المرأة فى ثوب واحد. (مسلم شريف)

एक मर्द दूसरे मर्द के साथ एक कपड़े में न लेटे और न कोई औरत दूसरी औरत के साथ एक कपड़े में लेटे।

मर्दों और औरतों का इस तरह एक दूसरे के इतना क़रीब आना भी बदकारी का सबब बन जाता है। हज़रत शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह. फ़रमाते हैं कि यह चीज़ शहवत में जोश पैदा होने का सबब होती है। जिससे औरतों में सहाक़ की रग़बत होती है और मर्दों में लवातित की आदत पैदा हो जाती है।

23. चारपाई अलग करना

नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया

مروا اولادکم بالصلوۃ وھم ابناء سبع سنین واضربوھم علیھا وھم ابناء عشر وفرقوا بینھم فی المضاجع۔ (ابی داؤد ۱۵۹)

तुम्हारे बच्चे सात साल के हो जाएँ तो उन्हें नमाज़ का हुक्म करो और दस साल की उम्र के हो जाएँ तो नमाज़ न पढ़ने पर मारो और अलग-अलग बिसतर पर सुलाओ।

उम्र के इस हिस्से में इनसानी में जिन्सी मैलान शुरू हो जाता है। लिहाज़ा बच्चों को अलग-लगल चारपाई पर सुलाना ज़रूरी है। जब ज़िस्म क़रीब होते है तो नींद या बेदारी में शैतान नियत में फ़तूर पैदा कर देता है। एक-दूसरे के साथ शवहत पूरी करने की नौबत आ सकती है। इस हदीस की बिना पर इमाम राज़ी रह. फ़रमाते हैं :

لا یجوز للرجل مضاجعۃ الرجل وان کان کل واحد منھما فی جانب الفراش۔ (تفسیر کبیر ۱۰:۲۵۹)

दो मर्दों का एक साथ सोना और लेटना जाएज़ नहीं चाहे दोनों बिस्तर के किनार-किनारे ही क्यों न हों।

नफ़्सियात के माहिरीन भी जदीद साइन्स की रोशनी में इस हक़ीक़त की तस्दीक़ करते हैं।

24. शादी में बिला वजह देर

ज़िना और बेहयाई की बहुत बड़ी वजह शादी में बिना वजह देर करना है। माँ-बाप सोचते हैं कि बेटा पढ़ेगा, फिर नौकरी करेगा, फिर घर बनाएगा, तब शादी की जाएगी और इसी में बच्चे की उम्र तीस साल की हो जाती है। कभी-कभी बड़े लड़के की शादी में देर होती है तो नीचे के तीन भी जवानी की उम्र को पहुँच चुके होते है। कभी-कभी लड़के किसी आइडियल की

तलाश में होते हैं और उन्हें अपनी पसन्द की हूर परी नहीं मिल रही होती। कभी-कभी बड़ा भाई सोचता है कि मैं छोटे बहन भाईयों की शादी पहले कर लूँ बाद में ख़ुद शादी करवा लूँगा। और इसी में उसकी उम्र चालीस साल हो जाती है। मर्द के लिए शादी की बेहतर उम्र 25 साल है और औरत के लिए 18 साल है। जितनी देर होगी उतने भी बुराई के इम्कानात बढ़ते जाएंगे। बच्चे जवान हो जाए और माँ-बाप शादी में देर करें तो बच्चे जितने जिन्सी गुनाह करेंगे माँ-बाप उसकी सज़ा में शरीक़ होंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि मुझे मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन चीज़ों में जल्दी करने की तलक़ीन फ़रमाई :

1. नमाज़ पढ़ने में जब वक़्त हो जाए,
2. मुर्दे को दफ़न करने में,
3. लड़की का निकाह करने में जब जोड़ का खाविन्द मिल जाए।

कुछ घरों में लड़कियाँ 25 साल की उम्र पहुँच जाती हैं मगर माँ-बाप आइडियल रिश्ते की तलाश में लगे होते हैं। इतनी देरी बहुत नुक़सानदेह होती है। हमारे बुज़ुर्ग अगर मालूम कर लेते कि फ़लाँ घर में जवान लड़की मौजूद है और माँ-बाप शादी में सुस्ती कर रहे हैं तो उस आदमी के कुँए से पानी भी नहीं पीते थे। लड़की की शादी देर से की जाए तो उसमें एक नुक़सान यह भी है कि शादी के बाद उसके बच्चे की विलादत में मुश्किलात पेश आती हैं। अगर लड़के की शादी देर से की जाए तो लड़के जिन्सी बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। किसी-न-किसी तरीक़े से अपनी शहवत की प्यास बुझाते रहते हैं। जब शादी होती है तो पता चलता है कि बीवी से जमा के क़ाबिल ही नही होते।

लड़का अगर पद्रंह साल की उम्र में बालिग़ हो जाता है तो उसका 30 साल की उम्र तक पाक रहना नामुमकिन तो नहीं मुश्किल तरीन काम है। वह माँ-बाप से चोरी छिपे किस-न-किसी

लड़की से नाजाएज़ ताल्लुक़ात बनाएगा। इसी तरह अगर लड़की की उम्र 25 साल हो जाए तो वह भी छिपी आशनाई के लिए क़दम उठाएगी। माँ-बाप की नाक के नीच दिया जलाएगी। नौकरी पेशा औरतों की शादी में अक्सर देर हो जाती है जो बहुत ख़तरनाक हो जाती है। कुछ देहातों में लड़कियों की शादियाँ ही नहीं की जाती ताकि जाएदाद तक़्सीम न करनी पड़े। कुछ जाहिल लोग लड़की की शादी क़ुरआन से कर देते हैं। यह कितनी वाहियात बात है।

सैय्यद अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० को मालूम हुआ कि किसी घर में फ़लाँ लड़की मौजूद है मगर माँ-बाप शादी करने में सुस्ती कर रहे हैं। उन्होंने लड़की की वालिदा से कहा कि इसकी जल्दी शादी कर दो। माँ ने कहा, अभी इसकी उम्र ही क्या है, मुँह से दूध की ख़ुशबू आती है। हज़तर शाह साहब रह० ने फ़रमाया बीबी! अगर दूध फट गया तो बदबू भी आएगी और फिर यह दूध इनसानों के बजाए कुत्तों के काम आएगा।

एक शहर में सैय्यदज़ादी रहती थी जो बहत नेक और पारसा थी मगर उसकी शादी न हुई थी। वह दिन भर रोज़ा रखती और रातभर नफ़्लों में गुज़ार देती। इलाक़े की औरतों में उसकी बड़ी वाह-वाह थी। उस सैय्यदज़ादी से दुआएँ करवाती थीं, उसकी ख़िदमत में नज़राने पेश किया करती थीं। एक दफ़ सैय्यदज़ादी इतनी बीमार हुई कि हालत नाज़ुक हो गई। मौहल्ले की नौवजवान लड़कियाँ उसकी ख़िदमत के लिए उसके घर इकठ्ठी हो गयी। बातचीत चल निकली कि हमें वसीयत करें जो ज़िन्दगी भर काम आए। सैय्यदज़ादी ने फ़रमाया कि हाँ मैं तुम्हें ज़िन्दगी की बेहतरीन नसीहत करती हूँ और वह यह कि जब तुम्हारा मुनासिब रिश्ता आ जाए तो तुम शादी करवाने में हर्गिज़ देर न करना। यह सुनकर लड़कियाँ बहुत हैरान हुईं। एक ने पूछा कि आपने ख़ुद तो शादी करवाई नहीं। हमें जल्दी करवाने की नसीहत कर रही हैं। वह फ़रमाने लगीं। कि मैं अपने दिल का

हाल आप लोगों के सामने कैसे खोलूं। मेरी शादी में देर हो गई तो मेरा नफ़्स मुझे जिन्सी तक़ाज़ा पूरा करने के लिए उकसाता था, मेरा दिल नमाज़ में न लगता था न तिलावत में लगता था। मैं दिन में रोज़ा रखती और रात में जागती, इसके बावजूद शहवत के मारे मेरा बुरा हाल होता था। अगर मैं रात को क़ुरआन मजीद की तिलावत कर रही होती और गली में से बूढ़ा चौकीदार आवाज़ लगाता हुआ गुज़रता तो मेरा जी चाहता कि इस बूढ़े को अपने पास बुला लूँ और अपनी जिन्सी ख़्वाहिश पूरी करूँ। कई मर्तबा मैंने उठकर दरवाज़ा खोलना चाहा मगर बदनामी के डर से सहम गई कि सारी ज़िन्दगी की बनी बनाई इ़ज़्ज़त खाक में मिल जाएगी। लोग बातें करेंगे कि सैय्यदज़ादी होकर उसने ऐसा काम किया। मैं तड़प तड़पकर रात गुज़ारती, किसी करवट चैन न आता। मैं इस अज़ाब को भुगत चुकी हूँ लिहाज़ा चाहती हूँ कि तुम्हें कोई परेशानी न उठानी पड़े। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सच फ़रमाया कि जब लड़की के जोड़ का ख़ाविन्द मिल जाए तो उसकी शादी कर दो। रही जहेज़ की बात तो वह रस्म व रिवाज के सिवा कुछ नहीं है।

बाब-6

ज़िना की क़िस्में

मर्द व औरत अपनी शहवत को मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से पूरा कर लेते हैं। इनमें से निकाह के बाद मियाँ-बीवी का या बाँदी मालिक का एक-दूसरे से मिलाप के ज़रिए शहवत के पूरा करना हलाल है। बक़िया सूरतें हराम हैं। शहवत को पूरा करने की हर नाजाएज़ सूरत ज़िना में दाख़िल है जिसकी तफ़सील नीचे लिखी जाती है :

1. जिना की पहली क़िस्म ख़ुद-लज़्ज़ती

मर्द और औरत जब अपने आप ही से शहवत को पूरा कर लें तो इसे ख़ुदलज़्ज़ती (Sex Solo) कहते हैं। इसकी दो सूरतें हैं:

1. ख़्याली ज़िना

जब मर्द अपनी सोच में किसी औरत के साथ हमबिस्तरी का तसव्वुर बांधे या औरत मर्द का तसव्वुर जमाए तो इससे उसके जज़्बात गर्म होने लगते हैं। नवजवान हज़रात इस कैफ़ियत से लुत्फ़अंदोज़ होते हैं। कुछ को इंज़ाल की सूरत भी पेश आ जाती है जिससे ग़ुसल फ़र्ज़ हो जाता है। यह ज़िना की अदना तरीन क़िस्म हैं इससे दिल में ज़ुलमत आती हैं इसको दिल व दिमाग़ का ज़िना कहते हैं। इस्तिग़फ़ार से यह गुनाह माफ़ हो जाता है। ज़िना की पहली सीढ़ी है।

2. इस्तिमना बिलयद यानी मुश्तज़नी (Masterbation)

कोई मर्द शहवत के जोश के वक़्त अपने हाथ से अज़ू ख़ास को हिलाकर मनी निकाल दे यानी मुश्तज़नी करे या कोई औरत अपनी शर्मगाह में उंगली डालकर शहवत पूरा करे यानी

अंगुश्तज़नी करे तो इसे ख़ुद लज़्ज़ती कहते हैं। यह भी नाजाएज़ है। इरशाद बारी तआला है :

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ (المومنون)

पस जब कोई इसके अलावा तलाश करे, पस वह हद से बढ़ने वाले हैं।

अल्लामा आलूसी रह॰ अपनी तफ़्सीर में लिखते है :

جمهور الائمة على تحريمه وهو عندهم داخل فيما وراء ذالك. (روح المعانى ١٨-١١)

पस जम्हूर उलमा इस (ख़ुदलज़्ज़ती) की हुरमत पर मुत्तफ़िक़ हैं। उनके हाँ यह चीज़ 'वर-अ ज़ालि-क' में दाख़िल है।

अबूहिबान उन्दलूसी रह॰ अपनी तफ़्सीर "अल्-बहरुल मुहीत" में लिखते हैं :

والجمهور على تحريم الاستمناء. (البحر المحيط ٦/٣٩٦)

और जम्हूर हाथ के ज़रिए मनी निकालने की हुरम पर मुत्तफ़िक़ हैं।

अल्लामा क़ुरतबी अपनी तफ़्सीर में इस आयत के तहत लिखते हैं :

وعامة العلماء على تحريمه. (تفسير قرطبي سورة المومنون)

और आम उलमा इसकी हुरमत पर मुत्तफ़िक़ हैं।

अल्लाह इब्ने अरबी रह॰ अपनी तफ़्सीर में लिखते हैं :

وعامة العلماء على تحريمه وهو الحق الذى لا ينبغى ان يدان الا به (احكام القرآن ٣/١٣١)

ख़ुद-लज़्ज़ती के असरात

अगर किसी नवजवान को ख़ुद-लज़्ज़ती की आदत पड़ जाए तो जिस्मानी तौर पर भी उसके बुरे असरात ज़ाहिर होते हैं। तफ़्सील इस तरह है :

चेहरे पर असरात

ऐसे नवजवान का चेहरा पीला पड़ जाता हैं चेहरे की चमक ख़त्म हो जाती है। क़ुदरती चमक और नूर चेहरे से ख़त्म हो जाता है। गाल पिचक जाते हैं, आँखों के चारों तरफ़ स्याह हलक़े पड़ जाते हैं। इनसान ख़ून की कमी की वजह से देखनेवाले को पहली नज़र में ही मरीज़ लगता है।

आसाब पर असरात

आसाब कमज़ोर होकर तबियत में बेसुकूनी आ जाती है। बेचैनी की वजह से मिज़ाज में बर्दाश्त करने में कमी आ जाती है। जिस्म हर वक़्त थकावट महसूस करता है। ऐसे लोग हर वक़्त लेटे रहने को पसन्द रकते हैं। कोई काम करने को दिल नहीं करता। इनसान सुस्त होकर पड़ा रहता है। काम चोर बन जाता है। गुस्सा बढ़ जाता है।

दिल पर असरात

चलने-फिरने या काम करने से दिल की धड़कन तेज़ हो जाती है। नवजवान भूलने का मरीज़ बन जाता है। पढ़ने वालों की तालीम में रुकावट आ जाती हैं सबक़ मुश्किल से याद होता है और जल्दी भूल जाता है। ज़हनी काम करने को दिल नहीं करता बच्चों को पढ़ाई के सिवा हर चीज़ अच्छी लगती है।

जिस्मानी क़ुव्वत पर असरात

वज़न कम होते-होते इनसान हड्डियों का ढांचा नज़र आता है। देखने वाले भी कहते हैं कि आप मरियल से क्यों नज़र आते हैं। ज़रा सा काम करने से थकावट हो जाती है। जवानी में बुढ़ापे की सी हालत हो जाती है। ख़ून की कमी की वजह से काम के वक़्त हाथ-पाँव कांपते हैं। बैठते हुए उठें तो आँखों के सामने अंधेरा आ जाता है। हाज़मा कमज़ोर होकर रीह (गैस) या क़ब्ज़ की बीमारी हो जाती है। पेशाब करने के बाद भी क़तरे आते रहते हैं।

जिन्सी कुव्वत पर असरात

जिन्सी एतिबार से बहुत ज़्यादा कमज़ोरी आ जाती है। सुरअते इंज़ाल (जल्दी इंज़ाल) की बीमारी लग जाती हैं एहतिलाम की ज़्यादती हो जाती है। अज़्व ख़ास में टेढ़ापन आ जाता हैं शवहत के वक़्त सख़्ती पूरी नहीं होती जिससे बीवी के हमबिस्तरी के क़ाबिल नहीं रहता। ज़िल्लत व ख़्वारी के सिवा कुछ हाथ नहीं आता। लड़कियाँ आमतौर पर लिकोरिया की मरीज़ बन जाती हैं। हाज़मे की कमज़ोर की वजह से खाने-पीन को दिल नहीं करता। दिल की तसल्ली के लिए अपने आपको स्मार्ट समझती हैं मगर हक़ीक़त देखकर दिल से आवाज़ आती है—

अल्लाह तआला की शान है, लड़की में भी जान है

अगरचे इस गुनाह के जिस्मानी नुक़्सानात बहुत ज़्यादा होते हैं लेकिन बंदे ने क्योंकि हाथों से अपनी ज़िनदगी ख़ुद तबाह की होती है, अपनी ही नुक़सान किया होता है। लिहाज़ा तौबा इस्तिग़फ़ार और नदामत से यह गुनाह भी जल्दी माफ़ हो जाता है। अल्लाह तआला के साथ बंदे का अपना मामला है।

هو الذی یقبل التوبة عن عبادہ ویعفوا عن السیات.

वह ज़ात तो तौबा क़बूल करती है और गुनाहों से दरगुज़र करती है।

2. ज़िना की दूसरी क़िस्म जिन्से मुख़ालिफ़ से शहवत पूरी करना

अल्लाह तआला ने मर्द को औरत के लिए और औरत को मर्द की जिन्सी ख़्वाहिश पूरा करने के लिए पैदा किया है। बालिग़ औरत की शर्मगाह में मर्द के अज़्व ख़ास के दाख़िल होने को जमा कहते हैं। अगर यह जमा ग़ैर-महरम मर्द व औरत के दर्मियान हो तो इसे ज़िना कहते हैं। इसकी मुख़्तलिफ़ सूरते हैं जिनको अपनी शिद्दत व बुराई के एतिबार से तर्तीबवार दर्ज

किया जाता है :

आज़ा का ज़िना

अगर कोई मर्द ग़ैर-महरम औरत की तरफ़ या औरत ग़ैर-महरम मर्द की तरफ़ शहवत भरी नज़र से देखे तो यह आँख का ज़िना है। हदीस पाक में है :

العینان تزینان وزناهما النظر .(بخاری ومسلم)

आँखें भी ज़िना करती हैं और उनका ज़िना देखना है।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि जिस आदमी ने शहवत भरी निगाह से ग़ैर-महरम को देख लिया, वह अप
ने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका।

इरशाद नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है :

والاذنان زناهما الاستماع.

.और कानों का ज़िना सुनना है।

मालूम हुआ कि ग़ैर-महरम मर्द व औरत का आपस में जिन्सी बात करना या हंसी मज़ाक करना कान का ज़िना है। एक-दूसरे के जिस्म को छूना हाथ का ज़िना है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद है :

لان يطعن فی احد راسکم بمخیط من حدید خیرله من ان یمس امراة لا تحل له.(طبرانی الجامع الصغیر ۲۰۲

तुममें से किसी के सर में लोहे की सूई से ज़ख़्म कर दिया जाए यह ज़्यादा बेहतर है कि किसी ऐसी औरत को हाथ लगाए जो उसके लिए हलाल नहीं।

कपड़ों समेत ग़ैर-महरम मर्द और औरत का आपस में चिपटना, बोसा व किनार करना, एक-दूसरे के आज़ा को गदगदाना चाहे इंज़ाल हो या न हो ये सब कुछ आज़ा के ज़िना में शामिल हैं। तौबा इस्तिग़फ़ार से माफ़ हो जाती है।

बीवी से ज़िना

अल्लाह तआला ने मियाँ-बीवी के लिए मुबाशरत को बाइसे अज्र बनाया लेकिन हैज़ व निफ़ास की हालत में इस अमल को मना फ़रमा दिया। इरशाद बारी तआला है :

فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي الْمَحِيْضِ

हैज़ की हालत में औरत से अलग रहो।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद है :

من اتی حائضاً او امرأتً فی دبرھا او کاھنا فقد کفر بما انزل علی محمد ﷺ
(ترمذی مشکوۃ ۵۱۶)

जो आए हैज़ वाली औरत के पास या औरत की दुबर (पीछे के रास्ते) या काहिन के पास, बस असने कुफ़्र किया उस चीज़ से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ।

इमाम अहमद रह॰ ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है :

عن النبی ﷺ فی الذی یاتی امرأته وھی حائض یتصدق بدینار او نصف دینار. (ترمذی)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नक़ल करते हैं कि उस शख़्स के बारे में जो अपनी औरत के पास हैज़ की हालत में आता है वह एक दीनार या निस्फ़ दीनार सदक़ा करे।

हम्हूर अइम्मा ने इस बात पर इज्मा किया कि तौबा इस्तिगफ़ार और नदामत से यह गुनाह भी जल्दी माफ़ हो जाता है।

ग़ैर-महरम औरत से ज़िना

जब ग़ैर महरम मर्द और औरत इस तरह मिलें कि मर्द का अज़ू ख़ास औरत की शर्मगाह में दाख़िल हो जाए तो यह ज़िना

की कामिल सूरत है। जिस पर हद जारी होती है।

इरशाद बारी तआला है :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝ (بنی اسرائیل)

ज़िना के क़रीब मत जाओ बेशक वह बेहयाई का रास्ता है।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया है :

یا امة محمد ﷺ والله مامن احد اغیر من الله ان یزنی عبده اوتزنی امته والله لو تعلمون مااعلم لضحکم قلیلا وبعیکتم کثیرا۔(مشکوۃ ۲۹۱)

ऐ उम्मत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह की क़सम इस बाप पर कि अल्लाह तआला से बढ़कर किसी को ग़ैरत नहीं आती कि कोई मर्द या औरत ज़िना करे। और अल्लाह की क़सम जो कुछ मैं जानता हूँ अगर तुम जानते तो बहुत कम हंसते और ज़्यादा रोते।

शादी-शुदा औरत से ज़िना

अगर ग़ैर-शादीशुदा मर्द औरत ज़िना करें तो उनकी सज़ा सौ कोड़े लगाना है। लेकिन अगर शादीशुदा ज़िना करें तो उनकी सज़ा संगसारी है। इससे मालूम हुआ कि शादीशुदा औरत क्योंकि किसी की अमानत है उससे ज़िना करना ज़्यादा सख़्त गुनाह है। अमानत में ख़्यानत भी, किसी के नसब को दाग़दार करना भी, शौहर के दिल को ईज़ा पहुँचाना भी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

مامن ذنب بعد الشرك اعظم عندالله من نطفة وضعها رجل فی رحم لا یحل له۔(ابن کثیر ۳۸۲)

शिर्क के बाद कोई गुनाह इससे बढ़कर नहीं कि कोई शख़्स अपना नुत्फ़ा ऐसे रहम में रखे जो उसके लिए हलाल नहीं।

पड़ोसन से ज़िना

हदीस पाक में है कि नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम से अज़ीम तरीन गुनाह के बारे में पूछा गया तो आपने शिर्क और क़त्ल के बाद फ़रमाया ان تزنی حلیلة جارك.(بخاری) यानी तेरा अपने पड़ौसी से ज़िना करना।

दूसरी हदीस पाक में इरशाद फ़रमाया है :

لا يدخل الجنة من لا يامن جاره بوائقه.(بخاری)

जन्नत में नहीं दाखिल हो सकेगा वह शख़्स जिसकी शरारतों से उसका पड़ौसी बचा न हो।

एक हदीस पाक में इरशाद फ़रमाया है :

अल्लाह की क़सम मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम मोमिन नहीं। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया कौन या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम? फ़रमाया, वह शख़्स जिसकी शरारतों से उसका पड़ौसी महफ़ूज़ न हो।

उलमा ने लिखा है कि घर के चारों तरफ़ के चालीस-चालीस घरों तक के लोग पड़ोसी कहलाते हैं। पड़ौसन से ज़िना करने में ज़िना के साथ-साथ पड़ोसी के हुक़ूक़ पामाल करने का गुनाह भी शामिल है।

क़रीबी रिश्तेदार औरत से ज़िना

अगर पड़ोसी रिश्तेदार हो तो उसकी बीवी, बेटी से ज़िना करना और भी ज़्यादा सख़्त गुनाह है चूँकि इसमें पड़ौसी की दिल आज़ारी के साथ-साथ क़ता रहमी (रिश्ता तोड़ने) का गुनाह भी शामिल है। इरशादे बारी तआला है :

وَيَقْطَعُونَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ

और तोड़ते हैं उसको जिसको अल्लाह तआला ने मिलाने का हुक्म दिया। (बक़रा : 27)

हदीस पाक में है कि क़ता रहमी करनेवाले की शबे-क़द्र में

भी मग़फ़िरत नहीं की जाती। आमतौर पर देखा गया है कि रिश्तेदारों में मर्द व औरत खुले तौर पर मिलने की वजह से इश्क़ व माशूक़ी की बीमारी जल्दी फैलती है, ज़िना होता है। आम रस्म व रिवाज की ज़िन्दगी गुज़ारने वाली लड़कियाँ अपने ख़ालाज़ाद, मामूज़ाद, फूफीज़ाद और चचाज़ाद लड़कों को भाई कहकर पर्दे का ख़्याल नहीं करती। हक़ीक़त यही है कि मामला "दिल को भाई रात को चारपाई" वाला बन जाता है। जब नाजाएज़ ताल्लुक़ात का भांडा फूटता है तो रिश्तेदारों में हमेशा के लिए दूरी हो जाती है।

मुजाहिद की बीवी से ज़िना

वे लोग जो अलाए कलमतुल्लाह के लिए अल्लाह के रास्त में निकलते हैं और उनकी बीवियाँ घरों में तन्हा रह जाती हैं शरअ शरीफ़ में उनका दर्जा और हुरमत को आम मुसलमान औरतों की हुरमत से ज़्यादा कहा गया है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद है :

حرمة النساء المجاهدين على القاعدين كحرمة امهاتهم۔ما من رجل من القاعدين يخلف رجلا من المجاهدين فى اهله فيخونه فيهم الاوقف له يوم القيامة فياخذمن عمله۔ثم التفت الينا رسول الله ﷺ فقال ما ظنكم۔(مسلم ۱۵۰۸۳)

मुजाहिदीन की बीवियों की इज़्ज़त पीछे रहने वालों के लिए उनकी माँओं की इज़्ज़त की तरह हैं कोई शख़्स ऐसा नहीं कि जो मुजाहिदीन में से किसी का ख़लीफ़ा बने उसके अहल (घरवालों) में। फिर वह उसकी ख़्यानत करे मगर खड़ा किया जाएगा वह क़यामत के दिन। फिर वह उसके आमाल में से जो चाहेगा ले लेगा। फिर वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारी तरफ़ मुतवज्जोह होकर फ़रमाया क्या ख़्याल है तुम्हारा?

इसमें तशरीह करते हुए उलमा ने लिखा है :

يماظنكم،،ای ما ظنكم ان يترك الادب لابنه ولا الصديق لصديقه حقا يجب عليه.

यानी तुम्हारा क्या ख़्याल है कि बाप बेटे के लिए या दोस्त-दोस्त के लिए ऐसा काई हक़ छोड़गा जो उसके लिए साबित हो।

तालिबे इल्म के लिए मदरसों में जाने वाले या दावत व तबलीग के काम में जाने वाले मुजाहिदीन के ज़ुमरे में दाख़िल हैं।

महरम औरत से ज़िना

आजकल घरों में टीवी, वीडिया और इंटरनेट केबिल वग़ैरह ने अख़्लाक़ी हालत में इस क़द्र गिरावट पैदा कर दी है कि मर्द अपनी महरम औरतों को शहवत की निगाह से देखते हैं बल्कि बाज़ तो ज़िना कर गुज़रते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से रिवायत की है :

من وقع على ذات محرم فاقتلوه.(ابن ماجه٢٥٦٤

जिस शख़्स ने महरम औरत के साथ ज़िना किया उसको क़त्ल कर दो।

एक-दूसरी हदीस में वारिद है :

من وقع على ذات محرم فاقتلوه.(ابن ماجه٢٥٦٠

नबी सल्लल्लाहु अलहि वसल्लम ने उनको एक शख़्स की तरफ़ भेजा जिसने अपने बाप की बीवी से निकाह किया तो उन्होंने उसको क़त्ल किया और माल को ग़नीमत बनाया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मतरफ़ रज़ियल्लाहु अनहु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रियायत की है :

من تخطى الحرمتين فخطوا وسطه بالسيف.(طبرانی)

जिसने महरम से निकाह किया उसके पेट से तलवार गुज़ार दो यानी उसको क़त्ल कर दो।

तलाक़शुदा बीवी से ज़िना

क़ुर्ब क़यामत की निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि ख़ाविन्द बीवी को तलाक़ देने के बावजूद अपने पास रखेगा और ज़िना करेगा। बैरून मुल्क में मुसलमानों में ये वाकिआत बढ़ते जा रहे हैं कि ख़ाविन्द गुस्से में अपनी बीवी को तीन तलाक़ें दे देता है। फिर बच्चों की वजह से मियाँ-बीवी एक-दसूरे से दूर होना मुश्किल समझते हैं। लिहाज़ा "मियाँ-बीवी राज़ी तो क्या करेगा क़ाज़ी" वाला मामला हो जाता है। दुनिया वालों के सामने शर्मिन्दगी के डर से तलाक़ का इज़्हार नहीं करते और क़यामत के दिन की शर्मिन्दगी को भूल जाते हैं।

तफ़सीर रूहुल-मआनी में लिखा है :

واشد الزنى الرجل يطلق امرأته وهو بقيه معهابالحرام ولايقرعند
الناس مخافة الفضيحة فكيف لايخاف فضيحة الخرة يوم تبلى
السرائر يعنى تظهر الاسرار فاحذر فضيحةاليوم واجتنب الزناولا
تصر عليه فانه لاطاقة لك على عذاب الله وتب الى الله فان الله يقبل
التوبة عن عبادالله كان توابارحيما.(النساء:١٥)

और सबसे सख़्त ज़िना वह है कि कोई मर्द अपनी औरत को तलाक़ दे दे फिर वह हराम होने के बावजूद उसके साथ रहे।

बूढ़ का ज़िना

अगर बूढ़ा आदमी ज़िना करे तो यह ज़िना की बददतरी शक्ल है। उलमा ने लिखा है :

فان كان شيخاكان اعظم اثما وهو احد الثلاثة الذين لا يكلمهم الله
يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم.

अगर वह बूढ़ा है तो उसका गुनाह बहुत बड़ा है और वह उन तीन शख़्सों में से है जिनसे अल्लाह तआला रोज़े क़यामत कलाम नहीं फ़रमाएँगे और न उसे पाक करेंगे और उसके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

3. ज़िना की तीसरी क़िस्म हमजिन्स से ज़िना

कभी-कभी दो मर्द या दो औरतें एक-दूसरे से अपनी शहवत को पूरा कर लेते हैं। इसकी दो क़िस्में हैं :

लवातत

लवातत के माने हैं एक मर्द दूसरे मर्द के पाख़ाने के सुराख़ में अपना अज़ू ख़ास दाख़िल करे। यह गंदी आदत हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम से शुरू हुई। इसीलिए इसका नाम लवातत रखा गया। इसका तज़्किरा क़ुरआन मजीद में भी है कि अल्लाह तआला ने क़ौमे लूत के बारे में फ़रमाया :

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ
أَزْوَاجِكُم ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾ (الشعراء)

क्या तुम मर्दों के पास आते हो जहान वालों से और छोड़ते हो जो तुम्हारे रब ने बीवियाँ बनाई हैं बल्कि तुम हद से गुज़रने वाली क़ौम हो।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मर्द की शहवत को पूरा करने के लिए औरत को बनया है। अगर कोई शख़्स औरत के बजाए मर्द से शहवत पूरी करे तो यह उसकी गंदी ज़हनियत की दलील है। ऐसा आदमी फ़ितरते इनसानी के ख़िलाफ़ काम करता है। उसकी बसीरत छिन गई और अक़्ल से ख़ाली हो चुका है। इसकी मिसाल उस शख़्स की तरह है जो बेहतरीन तैयार शुदा भुने हुए गोश्त को खाने के बजाए सड़ा बदबूदार कच्चा गोश्त खाने की ख़्वाहिश करे। क़ौमें लूत से पहले यह अमल तारीख़े इनसानी में कभी नहीं किया गया।

इरशादे बारी तआला है :

أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾

क्या तुम बेहयाई के काम को करते हो जो कि पहले

दुनिया में किसी ने नहीं किया। (आराफ़ : 80)

इनसान को तो अल्लाह तआला ने अक़्ल के नूर से नवाज़ा है। अजीब बात तो यह है कि जानवर भी लूती अमल नहीं करते। अगर क़ौमे लूत इस बुरे अमल को शुरू न करती तो शायद इनसान इस गुनाह से बचे हुए होते। अब्दुल मालिक बिन मरवान का क़ौल है :

لولا ان الله تعالیٰ ذکر آل لوط فی القرآن ما ظننت ان احد یفعل بها

अगर अल्लाह तआला ने क़ौम लूत का ज़िक्र क़ुरआन पाक में न किया होता मैं ख़्याल न करता कि किसी ने इस फ़ेअल को किया होगा।

लवातत करने पर अज़ाब

अल्लाह तआला ने इस क़ौम पर लवातत के गुनाह पर पाँच तरह से अज़ाब दिय ताकि दूसरे लोग इससे इबरत हासिल करें।

हलाकत

पूरी क़ौमे लूत को हलाक कर दिया गया सिवाए चंद मोमिनीन के। इससे मालूम हुआ कि लती अमल करने वाले को खिलाफ़ फ़ितरत काम करने की वजह से ज़िन्दा रहने का कोई हक़ नहीं है। उसके ज़िन्दा रहने से उसका मर जाना बेहतर है। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।

बस्ती का उलटना

क़ौमे लूत की बस्ती को उन पर उलट दिया गया। इब्ने क़य्यिम रह॰ फ़रमाते हैं :

واذا بدیارهم قد اقتلعت من اصلها ورفعت نحو السماء حتی سمعت الملائکة نباح الکلب ونهیق الحمیر.

और उनके घरों को जड़ों से उखाड़कर आसमान की तरफ़ इतना ऊँचा उठाया कि फ़रिश्तों ने कुत्तों के भौंकने और गधों के हेंगने की आवाज़ सुनी।

पत्थरों की बारिश

क़ौमे लूत पर पत्थरों की बारिश की गई। लिसानुल अरब में सजल के लफ़्ज़ की तशरीह में लिखते हैं :

حجارة من طين طبخت بنار جهنم مكتوب فيها اسماء القوم ومعنى منضود اى متتابع يتبع بعضه بعض

उस मिट्टी स बने हुए पत्थर जिसको दोज़ख़ की आग पर पकाया गया। उन लोगों के नाम लिखे हुए थे और मंज़ूर के माइने हैं पे दर पे लगातार।

अल्लामा आलूसी रह० अपनी तफ़्सीर रूहुल मानी में लिखने है कि अल्लाह तआला ने पत्थरों की ऐसी बारिश बरसाई कि उनके हाज़िर व ग़ायब सब लोगों को हलाक कर दिया।

حتى ان تاجرا منهم كان فى الحرم فوقفت له حجرا يوما حتى قضى تجارته وخرج من الحرم فوقع عليه. (روح المعانى ١٠٨)

हत्ता कि उनमें से कोई ताजिर हरम में था तो उसके लिए पत्थर चालीस दिन तक ठहरा रहा। हत्ताकि वह तिजारत से फ़ारिग होकर हरम से निकला तो उसको लगा।

अज़ाब की शिद्दत इस बात की दलील है कि अल्लाह तआला को लवातत से बहुत ज़्यादा नफ़रत है।

धंसाना

पूरी क़ौम को ज़मीन में धंसा दिया गया। बता दिया गया कि लूती क़ौम के लिए ज़मीन के ऊपर वाले हिस्से की निसबत ज़मीन के अंदर वाला हिस्सा ज़्यादा बेहतर है!

रुसवाई

अल्लाह तआला ने पूरी क़ौमे लूत का तफ़्सीली तज़्किरा क़ुरआन मजीद में फ़रमा कर ख़ूब रुसवा किया। किसी क़ौम के

लिए इतने हिज्जो और ज़िल्लत भरे अलफ़ाज़ इस्तेमाल नहीं किए जितने कि क़ौमे लूत के बारे में किया गया। लवातत इतना बड़ा जुर्म है कि नरमी और शफ़क़त को एक तरफ़ रखकर सख़्ती और शिद्दत की इंतिहा कर दी गई। इस क़द्र इबरतनाक अजाब इसलिए दिया गया ताकि दूसरे लोग कानों को हाथ लगाए और इस गुनाह के बारे में दिल व दिमाग़ में ख़्याल भी न लाएँ।

ज़िना और लवतत एक-दूसरे से जाएज़ा

ज़िना और लवातत दोनों गुनाहे क़बीरा हैं लेकिन लवातत ख़िलाफ़ते फ़ितरत होने की वजह से ज़्यादा बड़ा और ज़्यादा बुरा गुनाह है। तफ़्सील इस तरह है :

ज़िना	लवातत
मर्द और औरत मिलकर ज़िना करते हैं।	दो मर्द आपस में मिलकर लवातत करते हैं।
ज़िना अगरचे गुनाह है मगर मर्द और का मिलाप फ़ितरती तक़ाज़ा है।	लवातत फ़ितरते इनसानी के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा ज़्यादा बुरा काम है।
ज़ानी अपना मनी ऐसी जगह डालता है जहाँ से नस्ले इनसानी आगे बढ़ती है।	लूती अपना मनी ऐसी जगह डालता है पर बीज ज़ाए होने के सिवा कोई चारा नहीं।
ज़िना के लिए क़ुरआन मजीद में 'फ़ाहिशा' का लफ़्ज़ इसतेमाल किया गया है तो कि नकरह है। इसका मतलब यह हुआ कि ज़िना भी गुनाहों में से एक गुनाह है। इरशादे बारी तआला है	लवातत के लिए क़ुरआन मजीद में 'अलफ़ाहिशा' का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया जो कि मारिफ़ा है। इस का मतलब यह हुआ कि यह ऐसा गुनाह है कि इस जैसा गुनाह पहले कभी नहीं हुआ। इरशादे बारी ताआल है हदीस पाक में लूती पर तीन दफ़ा लानत की गई

لعن الله من عمل عمل قوم لوط،لعن الله من عمل عمل قوم لوط،لعن الله من عمل عمل قوم لوط،	हदीस पाक में ज़ानी पर एक दफ़ा लानत की गई है انه كان فاحشة وساء سبيلا
क़ौमे लूत के लिए क़ुरआन मजीद में बहुत से बुरे लफ़्ज़ इस्तेमाल किए मसलन फ़ासिक़ीन, मुसरिफ़ीन, मुफ़सिदीन, ज़ालिमीन, आदून।	ज़िना करनेवाले को क़ुरआन पाक में ख़बीस का लफ़्ज़ दिया गया है।
लूती को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने पत्थरों की बारिश बरसाकर ख़ुद संगसार किया।	ज़ानी को रजम करने के लिए इनसानों को हुक्म दिया गया।

नतीजा :

लवातत ज़िना की बनिस्बत ज़्यादा बड़ा गुनाह है। इसीलिए फ़ुक़्हा किराम ने लिखा है कि अगर कोई निगरान एक तरफ़ मर्द स औरत को जमा करता देखे और दूसरी तरफ़ दो मर्दों को लवातत करता देखे तो उसे चाहिए कि पहले मर्दों को अलैहिदा करे और गिरफ़्तार करे। बाद में मर्द व औरत को अलग करके गिरफ़्तार करे। इसलिए कि मर्द व औरत के जमा में हलाल का इम्कान है कि शायद मियाँ-बीवी हों या मालिक और बांदी हों। लेकिन लवातत में हलाल का इम्कान ही नहीं। ज़िना बुरा काम है तो लवातत बहुत ज़्यादा बुरा काम है।

लवातत इस्लाम की नज़र में

दीने इस्लाम ने लवातत को इंतिहाई नापसन्दीदा और बुरा काम समझा है। लूती के लिए कड़ी सज़ाए मुताइय्यन की गयी हैं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद है :

لا ينظر الله عزوجل الى رجل اتى رجل او امرأة فى دبرها ۔(ترمذی)

अल्लाह तआला ऐसे मर्द की तरफ़ देखेंगे ही नहीं जो मर्द या औरत की दुबुर की तरफ़ से आए।

लवातत के घिनावने पर का अंदाजा इससे किया जा सकता है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त लूती की शक्ल देखना भी पसन्द नहीं फ़रमाते। एक और हदीस पाक में इरशाद फ़रमाया गया है :

من وجد تموه يعمل عمل قوم لوط فاقتلوا الفاعل والمفعول به.(ابن حبان ترمذی ۱۱۳۸۲احمد)

जब किसी को क़ौमे लूत का अमल करते देखो तो करने और करवाने वाले दोनों को क़त्ल कर दो।

गोया लुती अमल करनेवाले और करवाने वाले दोनों को जीने का हक़ हासिल नहीं रहा।

बीवी से लवातत करना

दीने इस्लाम ने मियाँ-बीवी को एक-दूसरे से जिन्सी मिलाप करने की इजाज़त दी है और इसे इबादत का दर्जा दिया है लेकिन शौहर को मना कर दिया है कि वह बीवी की दुबुर (पाख़ाने के मुक़ाम) में जमा न करे।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलम ने इरशाद फ़रमाया है 5

ائتها على كل حال اذا كان ذالك فى الفرج.(رواه احمد)

तुम अपनी औरत से किसी भी तरह से जमा कर सकते हो अगर वह फ़रज (आगे की रहा) में हो।

बीवी से हर तरह लुत्फ़अंदोज हो सकते हो जबकि दाख़िला शर्मगाह में किया जाए।

नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है :

اقبل وادبرواتق الدبر والحيضه.(رواه احمد)

आगे से करो या पीछे से करो लेकिन दुबुर से, हैज़ वाली औरत से बचो।

मालूम हुआ कि ख़ाविन्द बीवी से सामने रुख़ से जमा करना

या पुश्त की तरफ़ से जमा करे मगर पाख़ाने की जगह में और हैज़ की हालत में दाख़िल होने से मना फ़रमा दिया गया है। नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम से एक अंसारी औरत ने मियाँ-बीवी के मिलाप के बारे में पूछा तो फ़रमाया :

صماما واحدا اى الفرج فقط۔ (رواہ احمد والترمذی)

एक सूराख़ में होना चाहिए यानी फ़रज में।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

ملعون من اتی امرأة دبرها۔ رواہ احمد ۵۸۶

लानती हो वह जो औरत से दुबुर में जामा करे।

उमर बिन शुऐब रह. अपने वालिद और दादा की वास्ते से रिवायत नक़ल करते हैं कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

الذی یاتی امرأته فی دبرها هی الوطية الصغرى۔ (رواہ احمد)

वह जो और के पास दुबुर (पीछे के रास्तें से आता है तो यह छोटी लवातत है।

इमाम दारमी रह. ने अपनी मुसनद में रिवायत किया है कि सईद बिन यसार रह. ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा की बीवी के दुबुर में जमा करना कैसा है? उन्होंने जवाब में फ़रमाया :

هل يفعل ذالك احد المسلمين۔ (سنن دارمی)

क्या यह मुसलमानों मे से किसी ने किया है?

लूती सज़ा

क़ुरआन मजीद में लवातत करनेवालों के बारे में फ़रमाया गया :

والذان ياتيانها منكم فاذوهما۔

तुममें से जब दो मर्द बुरा काम करें तो उन्हें ख़ूब सज़ा दो।

नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने लवातत के घिनावनेपन को कई हदीसों में वाज़ेह फ़रमाया और साथ अपनी उम्मत के बारे में ख़तरे का भी इज़्हार फ़रमा दिया :

انی اخوف ما اخاف علی امتی عمل قوم لوط۔(جمع الفوائد)

तुझे अपनी उम्मत पर सबसे ज़्यादा क़ौमे लूत के अमल का ख़तरा है।

इस बुराई का जड़ ख़त्म करने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

من وجد تموه يعمل عمل قوم لوط فاقتلواه الفاعل والمفعول به۔
(ترمذی)

जो शख़्स कि तुम पाओ उसको क़ौमे लूत वाला अमल करता बस फ़ाइल (करनेवाले) और मफ़ऊल (करवाने वाले) दोनों को क़त्ल कर दो।

इस हदीस की बिना पर फ़ुक़्हा किराम में इस बात पर तो इज्मा है कि लवातत करने और करवाने वाले दोनों को मौत के घाट उतार दिया जाए लेकिन किस तरह क़त्ल किया जाए इसके तरीक़े में दो क़ौल हैं :

इमाम इब्नूहनीफ़ा रह॰ और हाकिम का मज़हब यह है कि ज़िना और लवातत में बड़ा फ़र्क़ है। ज़िना पर हद मुक़र्रर है जबकि लवातत पर मुक़र्रर नहीं। इसलिए लूती को ज़्यादा दर्दनाक सज़ा दी जानी चाहिए। चाहे पहाड़ से गिरा दिया जाए या हाथी के पाँव के नीचे डालकर कुचल दिया जाए या आग में जला दिया जाए। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अनहु के मशवरे पर एक लूती को जलाने का हुक्म दिया था। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सज़ा जारी की थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर, ख़ालिद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुम, अब्दुल्लाह बिन मौमर ज़हरी, इस्हाक़ बिन राहविया, इमाम मालिक और इमाम अहमद

बिन हंबल रहमतुल्लाहि अलैहिम इसी बात के क़ायल हैं कि लूती की सज़ा ज़ानी की सज़ा की निस्बत ज़्यादा सख़्त होनी चाहिए।

दूसरी जमाअत का क़ौल है कि जो ज़ानी की सज़ा शरिअत में मुताइय्यन है वही लूती की भी होनी चाहिए। इनमें हसन, बसरी अता बिन रबाह, सईद बिन मुसैय्यब, इब्राहीम नख़ई, क़तादा, औज़ाई, इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहिम शामिल है।

मालूम हुआ कि लवातत का काम क़त्ल से भी ज़्यादा बुरा है। इसलिए कि अगर मक़्तूल का वारिस चाहे तो क़ातिल को क़त्ल से बचा सकता है मगर लूती के लिए क़त्ल से बचने की कोई सूरत नहीं है।

शरिअते मुहम्मदिया का हुस्न व जमाल

शरअ शरीफ़ की ख़ुबियों में से एक ख़ूबी यह भी है कि जिस सुंराख़ से शैतान हमलावर हो सकता है उसे बंद कर दिया गया। जिस मंज़िल पे जाना नहीं उस रास्ते पर पहला क़दम उठाने से ही रोक दिया गया। मसलन लवातत से मना करना मक़सूद था लिहाज़ा बग़ैर दाढ़ी के लड़कों की तरफ़ शहवत के साथ देखने से रोक दिया। लड़कपन की उम्र में जिस्म नरम व नाज़ुक होता है और मर्द के साथ रहने में क़बाहत भी महसूस नहीं होती। लिहाज़ा गुनाह में पड़ना भी आसान होता है।

बे-रीश लड़कों (जिनकी दाढ़ी न आई हो) को देखना

نهى رسول الله ﷺ ان يحد الرجل النظر الغلام الامرد.

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया है कि इनसान किसी बे-रीश लड़के की तरफ़ निगाह न डाले।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जनाबे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

لا تجالسوا ابناء الملوك فان الانفس تشتاق اليهم ما لا تشتاق الى الجواری العوائق.(ذم الهوی امام جوزی

तुम अमीरज़ादों के साथ न बैठा करो क्योंकि नफ़्स उनसे ऐसी चीज़ की ख़ाहिश करते हैं जिसकी ख़ूबसूरत लौंडियों से भी नहीं करते।

हज़रत सुफ़ियान सौरी रह. फ़रमाया करते थे :

فانی اری امراۃ شیطانا ومع کل صبی بضعة عشر شيطانا.(مفتاح الخطابه۲۱۳)

औरत के साथ एक शैतान दिखाई देता है मगर लड़के साथ दस से ज़्यादा शैतान नज़र आते हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह. इसके बारे में लिखते हैं :

मालदार लोगों के लड़कों के साथ उठने-बैठने से परहेज़ करना चाहिए। ये अपनी श्क्ल व सूरत और लिबास व पोशाक से सरापा फ़ितना होते हैं। ऐसा फ़ितना कि कभी-कभी औरतों से बढ़कर फ़ितना साबित होते हैं।

अल्लामा शामी रह. रद्दे मुख़्तार में लिखते हैं :

فانه يحرم النظرالى وجهها و وجهها الامرداذا شك فى شهوة.

(ردالمختار حاشیه۲۵۸۱)

जिन्सी मैलान का ख़तरा हो तो औरत और बे-रीश लड़के के चेहरे पर नज़र डालना हराम है।

बाज़ उलमा ने लिखा है कि अगर लड़का ख़ूबसूरत हो तो औरत के हुक्म में है। गोया सर से पाँव तक उसका जिस्म छिपाने के क़ाबिल हैं मुहद्दिस इब्नुल-अतक़ान रह. फ़रमाते हैं :

قال ابن القطان اجمعوا على انه يحرم النظر الى غير الملتحى بقصد التلذذ و تمتع البصر بمحاسنه واجمعوا على جواز بغير اللذة والناظر مع ذالك امن الفتنه.(ردالمختار ۲۸۵)

इब्ने अल-क़तान रह. फ़रमाते हैं जिस लड़के की दाढ़ी

नहीं निकली, लुत्फ़अंदोज़ होने और ख़ूबसूरती से लज़्ज़त पाने की नज़र से देखना हराम है। अगर लज़्ज़त मक़सद न हो तो और देखने वाला फ़ित्ने से अमन में हो तो जाएज़ है।

शहवत की तफ़्सीर अल्लामा शामी रह. ने बहुत अच्छे अंदाज़ से की है :

انہا میل القلب مطلقا

दिल के मैलान का नाम शहवत है।

हज़रत अबू सहल रह. फ़रमाते हैं कि अन्क़रीब इस उम्मत में एक क़ौम होगी जिनको लौंडिबाज़ कहा जाएगा। उनकी तीन क़िस्में होंगी :

1. एक क़िस्म सिर्फ़ हसीन लड़कों को देखने वाली,
2. दूसरी उनसे मुलाक़ात व मुसाफ़ा करेगी,
3. तीसरी उनसे बद-फ़ेअली (बुरा काम) करेगी।

बे-रीश के बारे में अकाबिर का तर्ज़े अमल

- हज़रत इमाम मालिक रह. हदीस सुनने के लिए बग़ैर दाढ़ी वाले लड़कों को अपनी मज्लिस में बैठने से मना फ़रमाते थे। एक बार हिशाम बिन अम्मार जो उस वक़्त बे-रीश थे लोगों के मजमें में छिपकर बैठ गए और इमाम रह. से सोलह हदीसें सुन लीं। इमाम मालिक रह. को जब इसकी ख़बर हुई तो उन्होंने उनको बुलाया और सोलह दुर्रे मारे।
- हज़रत इमाम अबू-हनीफ़ा रह. की ख़िदमत में जब इमाम अबू-यूसुफ़ रह. दर्से हदीस सुनने के लिए पहली बार तश्रीफ़ लाए तो अभी बे-रीश थे। इमामे आज़म रह. ने उनको कहा कि आप मेर सामने नहीं पुश्त की तरफ़ बैठकर दर्स हदीस सुना करें। चुनाँचे कई बरस तक वह पुश्त की जानिब बैठकर दर्से हदीस सुनते रहे। हज़रत इमाम अबू-हनीफ़ा रह. की एहतियात का आलम यह था कि इस अरसे में एक बार भी उनकी तरफ़ निगाह उठाकर नही देखा। यहाँ तक कि

एक बार अबू-यूसुफ़ रह॰ कोई हदीस मुबारक सुना रहे थे कि उनका साया दीवार पर पड़ रहा था। उनके साए को देखकर इमामे आज़म रह॰ को अंदाज़ा हुआ कि उनकी दाढ़ी आ चुकी हैं फिर उनको सामने बैठने की इजाज़त दी। सुब्हानअल्लाह इस मामले में अकाबिर इतनी एहतियात किया करते थे।

- हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ की ख़िदमत में एक आदमी हाज़िर हुआ जिसके साथ एक लड़का था। आपने पूछा कि यह कौन है? उसने कहा मेरा भांजा है। फ़रमाया इसे दोबारा हमारे पास न लाना और ख़ुद इसे लकर बाज़ार के चक्कर न लगाना। ऐसा न हो कि किसी को तुम्हारे बारे में बुरा गुमान करने का मौक़ा मिल जाए।
- हज़रत शेख़ फ़तेह मूसली रह॰ फ़रमाते थे कि मैं ऐसे तीस मशाइख़ के पास रहा हूँ जो अब्दाल के दर्जे पर थे। उन सबने मुझे नसीहत फ़रमाई कि तुम बे-रीश लड़कों की सोहबत से बचे रहना।
- हज़रत इमाम याह्या बिन मुईन रह॰ के एक शागिर्द मुहम्मद बिन हुसैन रह॰ ने चालीस साल तक आसमान की तरफ़ निगाह नहीं उठाई। हज़रत मुहम्मद बिन आबि क़ासिम रह॰ फ़रमाते है कि हम उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए, हमारे साथ एक नवउम्र लड़का था जो उनके सामने बैठ गया। आपने उससे फ़रमाया कि तुम मेरे सामने से उठ जाओ और मेरी पुश्त की तरफ़ बैठो।

दो मर्दों का एक बिसतर पर लेटना

इसी एहतियात की वजह से दो मर्दों का एक चादर में लेटना मना कर दिया। इरशादे नबवी है :

لا يفضى الرجل الى الرجل فى ثوب واحد. (مسلم مشكوة)

एक मर्द दूसरे मर्द के साथ एक कपड़े में न लेटे।

इस हदीस पाक की रोशनी में इमाम राज़ी रह. फ़रमाते हैं :

ولا يجوز للرجل مضاجعة الرجل وان كان كل واحد منهما في جانب من الفراش. (تفسير كبير ٢٥٩/٦)

दो मर्दों का इकठ्ठा सोना जाएज़ नहीं अगरचे दोनों बिस्तर के किनारे-किनारे ही क्यों न लेटें।

इसीएलि बच्चे दस साल की उम्र के हो जाएँ तो इरशाद नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताबिक़ बिस्तर अलग कर देने चाहिए।

लवातत के नुक़सान

अक़्ल व नक़्ल की रोशनी में लवातत के नुक़सान की तफ़्सील इस तरह है :

औरत से नफ़रत

लूती शख़्स क्योंकि ख़िलाफ़े अमल करके ख़ुश होता है। लिहाज़ा वह अक़्ले सलीम और फ़ितरते सलम से कोरा होता है। उसे औरत के बजाए लड़कों में ज़्यादा रग़बत महसूस होती है। लवातत की कसरत से कभी-कभी मर्द अपनी बीवी से जमा के क़ाबिल भी नहीं रहता। इसलिए घर उजड़ते हैं लूती की बीवी न तो तलाक़ शुदा कही जा सकती है न ही शादीशुदा कही जा सकती है। उसके दिल को सुकून कैसे नसीब हो सकता हैं जबकि ख़ाविन्द को बीवी में कशिश ही महसूस नहीं होती। ऐसे हालात में बीवी को घर में रखना ज़िन्दा दरगोर करने जैसा है।

नस्ल-कशी का गुनाह

लूती आदमी अपने नुत्फ़े को ऐसी जगह डालता है जहाँ नस्ल बढ़ना मुमकिन ही नहीं हो सकता। लिहाज़ा लूती अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की दी हुई अमानत में ख़्यानत करता है। लवातत के गुनाह के साथ-साथ उसको नसले इनसानी जाए करने का गुनाह भी होता है।

जिन्सी तस्कीन से महरूमी

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने औरत की शर्मगाह को मर्द की शहवत पूरा होने के लिए कामिल ठिकाना बनाया है। जब कोई मर्द अपनी बीवी से जमा करता है तो औरत की शर्मगाह में मर्द का नुत्फ़ा आता है जबकि मर्द के अज़ू ख़ास में भी औरत के जिस्म से ऐसी रतूबत जज़्ब होती है जो मर्द को जिन्सी तोर पर तसल्ली और तस्कीन दे देता हैं इसीलिए औरत से कई मर्तबा जमा करने से भी इतनी कमज़ोरी महसूस नहीं होती जो ग़ैर-फ़ितरी तरीक़े से एक दफ़ा शहवत पूरी करने से महसूस होती है। यूँ समझें की औरत मर्द की ग़िज़ा है। लूती शख़्स वक़्ती तौर पर शहवत को पूरा कर भी ले फिर भी उसके अंदर जिन्सी प्यास रहेगी। तबियत में बेचैनी और बेक़रारी रहेगी। सुकून नाम की कैफ़ियत लवातत से हासिल हो ही नहीं सकती। जबकि औरत के साथ जमा करने से तस्कीन कामिल नसीब होती है। सच्चे परवरदिगार के सच्चे कलाम की गवाही है :

ان خلق لكم من انفسكم ازواجا لتسكنوا اليها

> तुममें से तुम्हारे जोड़े बनाए ताकि तुम उससे सुकून पा सको।

आसाबी कमज़ोरी

लवातत ग़ैर-फ़ितरी अमल होने की वजह से आसाबी कमज़ोरी का सबब बनता है। तवनाईयाँ ख़त्म हो जाती हैं। ख़ून की कमी हो जाती है। लूती आदमी को ऐसे महसूस होता है कि जैसे उसके जिस्म को किसी ने निचोड़ दिया हो। थकावट ख़त्म होने का नाम ही नहीं लेती। आसाब कमज़ोर हो जाते हैं।

याद्दाश्त कमज़ोर

लूती आदमी की क़ुव्वते हाफ़िज़ा बहुत कमज़ोर हो जाती है। अव्वल तो कुछ याद ही नहीं रहता। अगर कर भी ले तो जल्दी भूल जाता है। लवातत करनेवाले नवजवान तालिब इल्म अगर

मेहनत कोशिश से सबक़ याद भी कर लें तो सुनाते वक़्त या लिखते वक़्त ऐसे भूल जाते हैं जैसे सबक़ याद ही नहीं किया था।

चेहरा बे-नूर

लूती शख़्स के चेहरे की चमक-दमक ख़त्म हो जाती है। जवानी में चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ने लग जाती हैं। आँखों के चारों तरफ़ स्याह हलक़े बन जाते हैं। चेहरे की जाज़्बियत और कशिश न होने के बराबर रह जाती है।

अज़्व ख़ास की ख़राबी

लवातत की वजह से मर्द के अज़्व ख़ास में टेढ़ापन आ जाता है। कभी-कभी फोड़ा भी बन जाता है। आतिश्क और सुज़ाक जैसी ख़तरनाक बीमारियाँ इसी काम की वजह से लगती है। इन बीमारियों की वजह से इनसान की ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है।

ला-इलाज पेरशानी

लूती शख़्स के अंदर लड़कों या मर्दों को देखकर शहवत बेदार हो जाती है जबकि ज़ानी शख़्स में औरत को देखकर शहवत भड़कती है। ज़ानी के लिए औरत से पर्दा करना और दूर रहना आसान है मगर लूती के लिए मर्दों से दूर रहना मुश्किल काम हैं लिहाज़ा लूती की पेरशानी ला-इलाज है। जहाँ भी जाए बैठना-उठना, रहना-सहना मर्दों के साथ होता है। यहाँ तक कि नमाज़ पढ़ने मस्जिद में जाए तो लोगों के दिल ख़शियते इलाही से लबरेज़ होते हैं। जबकि लूती की नज़र किसी मर्द पर पड़ने से उसका दिल शहवत से लबरेज़ होता है। नमाज़ ब-जमाअत के वक़्त अगली सफ़ में मर्द को रुकू-सज्दा करता देखकर अज़्व ख़ास में तनाव आ जाता है।

अल्लामा इक़बाल रह॰ ने सही कहा—

मैं सर बसज्दा हुआ कभी तो ज़मीं से आने लगी सदा
तेरा दिल तो सनम आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में

हैवान से भी बुरा

लूती शख़्स एक ऐसा अमल करता है कि जो हैवान भी नहीं करते। लिहाज़ा वह हैवान से भी बद्-तर होता हैं लवातत का असर इनसानी अख़्लाक़ पर बहुत बुरा पड़ता है। इसलिए लूती लोगों से मेल मिलाप करते हुए घबराता है।

ला-इलाज बीमारी

लूती शख़्स को एड्स जैसी मुहलिक बीमारी लग जाती है जिसका अभी तक कोई इलाज भी नहीं है। वह बीमारी इससे उसकी बीवी को भी लग सकती हैं आइन्दा औलाद में भी इस बीमारी के बुरे असरात मुन्तक़िल हो जाते हैं। लवातत की वजह से आख़िरत का अज़ाब तो होगा ही सही यह दुनिया का अज़ाब भी क्या कुछ कम है। एड्स वाला शख़्स तो ज़मीन पर चलती फिरती लाश की तरह होता है।

ला-इलाज नजासत

लवातत ऐसी बंदी बीमारी है कि इससे लूती दाइमी तौर पर नजिस हो जाता है। मुहद्दिस इब्ने अबिद्दुनिया रह. ने मुजाहिद रह. से नक़ल किया है :

ان الذی یعمل ذالك العمل لواغتسل بکل قطرۃمن السماء وکل قطرۃمن الارض لم یزل نجسا.

जो कोई यह अमल करे वह अगरचे आसमान व ज़मीन के हर क़तरे से ग़ुस्ल कर ले फिर भी हमेशा के लिए नजिस रहेगा।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह. से सही असनाद के साथ नक़ल किया गया है :

لوان لوطیا اغتسل بکل قطرۃمن السماء لقی اللہ غیر طاھر.

अगरचे लूती आसमान के हर क़तरे से ग़ुस्लकर ले फिर भी अल्लाह तआला को नापाक ही मिलेगा।

इससे बड़ी ज़िल्लत औ क्या हो सकती है कि लूती आदमी ज़मीन व आसमान के सब पानी से भी गुस्ल कर ले तब भी क़यामत के दिन अल्लाह तआला के सामने नजिस हालत मे पेश होगा।

अल्लामा आलूसी रह. अपनी तफ़्सीर रूहुल-मआनी में इसकी वजह बयान करते हैं :

ان الماء لا يزيل عنه ذالك الاثم العظيم الذى بعده عن ربه.

बेशक नहीं ज़ाएल करता पानी उससे इस बड़े गुनाह को जिसने उसको उसके रब से दूर कर दिया।

इसी लिए लूती शख़्स को अल्लाह तआला क़यामत के दिन देखना भी गवारा नहीं करेंगे। हदीस पाक में है :

لا ينظر الله عزوجل الى رجل اتى رجل او امرأة فى دبرها۔(ترمذی)

अल्लाह तआला ऐसे मर्द की तरफ़ देखेंगे ही नहीं जो मर्द या औरत की दुबुर की तरफ़ से आए।

बुरा ख़ात्मा बुरा अंजाम

लूती शख़्स अगर लवातत से सच्ची तौबा न करे तो उसे मौत के वक़्त कलिमा पढ़न की भी तौफ़िक़ नसीब नहीं होती। नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

من اتى النساء فى اعجازهن فقد كفر۔(رواه الطبرانى)

जो औरतों के साथ लवातत करे उसने कुफ़्र किया।

दूसरी हदसी पाक में है :

من اتى حائضا او امرأة فى دبرها او كاهن فقد كفر انزل الله على محمد ﷺ.

जो हैज़ वाली औरत या अपनी औरत के दुबुर में आता है या काहिन के पास जाता है बेशक उसने कुफ़्र किया उससे जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा है।

इन अहादीस से साबित होता है कि लवातत इतना बड़ा

गुनाह है कि बुरे ख़ात्मे और बुरे अंजाम का डर रहता है। अल्लामा इब्ने क़य्यियम रह॰ ने अलजवाब काफ़ी में एक क़िस्सा नक़्ल किया है कि एक शख़्स को ख़ूबसूरत लड़के से मुहब्बत थी जबकि उस लड़के को उससे नफ़रत थी। वह शख़्स इसी नफ़्सान मुहब्बत में ऐसा फंसा कि बीमार हो गया। उसने चाहा कि उसका महबूब लड़का 'असलम' उसके पास आ जाए मगर वह न आया। जब उस पर मौत के आसार जाहिर होने लगे तो उसने शेर पढ़े—

اسلم يا راحلة العليل
وياشفاء المدنف النحيل
رضاك اشهى الى فوادى
من رحمة الخالق الجليل

असलम! ऐ बीमार की राहत! और ऐ कमज़ोर और लागिर शख़्स की शिफ़ा मेरे दिल को तेरी रज़ा की ज़्यादा चाहता है बनिस्बत ख़ालिक़े जलील की रहमत के।

जब क़रीब वाले शख़्स ने उससे कहा (अल्लाह से डर)। उसने कहा यानी ऐसा ही है और उसकी रूह निकल गई। अल्लाह तआला बुरे ख़ात्मे से महफ़ूज़ फ़रमाए, आमीन।

अल्लामा इबने क़य्यिम रह॰ ने इसके बारे में लिखा है :

ان هذاالمرض و هذاالعشق تاره يكون كفرا كمن اتخذ معشوقه ندايحبه كما يحب الله

यह मर्ज़ और यह इश्क़ कभी कुफ़्र की तरफ़ होता है जैसे कि वह अपने माशूक़ के बुलाने को अल्लाह तआला की मुहब्बत की तरह महबूब रखता है।

लूती शख़्स के लिए कुछ अश-आर भी उन्होंने लिखे हैं :

فياناطق الذكر ان بينكم البشرى

فیوم معاد الناس ان لکم اجرا

ऐ टकराने वाले अपनी शर्मगाहों को! तुम्हारे लिए बशारत है कि लोगों के लौटने के दिन तुम्हारे लिए अज्र है।

کلو واشربوا وازنوا ولوطوا وابشرو

فان لکم زنا الی الجنة الجزا

खाओ-पियो और ज़िना करो और ख़ुश हो जाओ। बेशक तुम्हारी ज़िना तुम्हें उस जन्नत तक पहुँचाने वाला है।

فاخوانکم قد مھدوا الدار قبلکم

وقالوا الینا عجلوا لکم بشرا

बेशक तुम्हारे भाईयों ने तुमसे पहल घर बना लिए हैं और वे कहते हैं कि हमारी तरफ़ आने में जल्दी करो, तुम्हारे लिए बशारत है।

وما نحن اسلاف لکم فی انتظارکم

سیجمعنا الجبار فی نارہ الکبرائی

और यह कि हम तुम से पहले वाले हैं। तुम्हारे इंतिज़ार में है। अनक़रीब वह हमें जमा करेगा बड़ी आग मे।

وما نحن اسلاف لکم فی انتظارکم

سیجمعنا الجبار فی نارہ الکبرائی

बस गुमान करो कि जिनसे तुमने जमा किया था वे ग़ायब होंगे। नहीं बल्कि तुम उनको सामने देखोगे।

ویلعن کل منکم الخلیلہ

ویشقی بہ المغرورن فی الکرۃ الاخری

और तुममें से हर एक लानत करेगा अपने दोस्त को।

يعذب كل منهما بشريكه

كما اشتركا في لذة توجب الوزر

फिर उन दोनों में से हर एक का अपन शरीक के साथ अज़ाब दिया जाएगा जैसे कि दोनों एक ऐसी लज़्ज़त में शरीक थे जो गुनाह को वाजिब करती है।

(अलजवाबुल-काफ़ी 197-198)

अलसहाक़

जब दो औरतें एक-दूसरे के साथ मिलाप करके अपनी शहवत को पूरा करें तो इसे सहाक़ कहते हैं। इब्ने क़ुदामा रह. कहते हैं कि नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने फ़रमाया :

اذا اتت المرأة المرأة فهما زانيتان.

पस जब औरत औरत के पास आए तो वे दोनों ज़िना करने वालियाँ हैं।

हज़रत वासला बिन असक़अ रह. फ़रमाते हैं कि जनाबे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

سحاق النساء زنا بينهن.

औरत का औरत से गुनाह करना उनका आपस में ज़िना है।

अगरचे इस अमल पर ज़िना करने का गुनाह होगा मगर इस पर ताज़ीर (तंबीह) की सज़ा दी जाएगी, हद जारी नहीं होगी। इसकी मिसाल ऐसे है जैसे कोई मर्द किसी औरत से बग़ैर दाख़िल हुए लिपट-चिपटकर कर अपनी शहवत पूरी कर ले। यह अमल भी क़ौमे लूत से शुरू हुआ। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है :

انما حق القول على قوم لوط عليه السلام حين استغنى النساء بالنساء والرجال بالرجال۔(در منثور ۳-۱۰۰)

बेशक यह बात दरुस्त है क़ौमे लूत अलैहिस्सलात के बारे में कि औरतें औरतों के साथ और मर्दों के साथ मुतमइन थे।

अल्लामा आलूसी रह॰ फ़रमाते हैं कि अबि हम्ज़ा रह॰ ने मुहम्मद बिन अली से पूछा कि अल्लाह तआला ने क़ौमे लूत की औरतों को मर्दों की वजह से अज़ाब दिया? उन्होंने फ़रमाया :

الله اعدل من ذالك استغنی الرجال بالرجال والنساء بالنساء۔ (بیہقی ابن عساکر)

अल्लाह बड़े इनसाफ़ करनेवाले हैं। उनसे मर्द मर्दों की वजह से और औरत औरतों की वजह से मुस्तग़नी थीं।

لا کن لا یجب فیہ الحد ای فی اسحاق لعدم الایلاج وان اطلق علیہما اسم الزنا العالم کزنی العین والید والرجل والفم۔ (الجواب الکافی ۲۰۱)

लेकिन इसमें हद वाजिब नहीं यानी सहाक़ में दख़ूल न होने की वजह से। अगरचे इन दोनों पर ज़िना का लफ़्ज़ बोला जाता है जैसे आँख का ज़िना, हाथ का ज़िना, पाँव का ज़िना और मुँह का ज़िना।

इससे साबित हुआ कि शरअ शरीफ़ ने ज़ाहिरी तौर पर दख़ूल साबित न होने की वजह से इस पर हद जारी होने का हुक्म नहीं दिया। लेकिन शहवत पूरी होने की नज़र से देखा जाए तो एक औरत दूसरी औरत के ज़रिए अपनी जिन्सी प्यास बुझाती है। उसके जिस्म से ख़ारिज़ होनेवाली मनी जाए होकर इनसान की नस्लकशी का ज़रिया बनती है।

यह शहवत परस्ती का रास्ता आँख से शर्म और दिल से हया को ख़त्म कर देता है। जिस औरत को शर्म व हया का

मुजस्समा होना चाहिए था दूसरी औरतों का लड़कियों को बुरे रास्ते पर लाने का सबब बनती है। शैतान की मंशा पूरी करती हैं जिस तरह बद किरदार मर्द औरतों को फंसने के चक्कर में रहते हैं इसी तरह ये औरतें किसी लड़की को जाल में फंसाती हैं। दूसरी लड़की को देखकर उसके अन्दर शहवत का समुन्दर जोश मारता है और यह फ़ाएला (करनेवाली) बनकर अपनी मस्ती उतारती है। इरशाद बारी तआला है :

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝

पस जो इसके अलावा को चाहे वही हद से बढ़ने वाले है। (मआरिज :31)

4. ज़िना की चौथी क़िस्म जानवर से ज़िना

इनसान अपने ग़लबा शहवत में इस क़द्र हद से बढ़ जाता है कि वह जानवर से ज़िना कर लेता है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलम ने इरशाद फ़रमाया है :

ملعون من اتی شیئا من البہائم۔ (طبرانی)

लानत की गई है उस आदमी पर जो जानवरों के पास आता है (यानी फ़ेअले हराम करता है)।

जानवर से ज़िना करना लवातत से भी बड़ा गुनाह है। हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह. फ़रमाते हैं :

لاریب ان الزاجر عن اتیان البہیمۃ اقوی من الزاجر الطبعی عن اللوط۔ (الجواب الکافی)

बेशक जानवर से ज़िना करने के अज़ाब लवातत करने के अज़ाब से भी ज़्यादा सख़्त है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलम से रिवायत की है :

من اتی بہیمۃ فاقتلوہا معہ۔ (احمد ۲۶۹،ابوداؤد ۴۴۶۴)

जिस शख़्स ने जानवर से बद फ़ेअली की उसको क़त्ल कर दो।

इस मामले में उलमा के दो क़ौल हैं। एक जमाअत का क़ौल है कि उस पर ज़ानी की हद जारी होनी चाहिए। दूसरीजमाअत का क़ौल है कि उसको लूती की सज़ा मिलनी चाहिए। बहरहाल जो भी हो यह अमल क़ाबिले सज़ा है।

बाब-7

ज़िना के नुक़्सानात

बुराई का अंजाम हमेशा बुरा होता है बल्कि बुराई जितनी बड़ी होगी अंजाम उतना ही बुरा होगा। ज़िनाकर इनसान क्योंकि बहुत बड़ा गुनाह करता है लिहाज़ा उसे कई तरह के नुक़्सानात का सामाना करना पड़ता है।

जैसी करनी वैसी भरनी वाला मामला पेश आता है। अल्लाह तआला का बनाया हुआ क़ानून जज़ा व सज़ा उसे आख़िर अपनी गिरफ़्त में ले लेता है। इरशादे बारी तआला है :

مَنْ يَعْمَلْ سُوْءًا يُجْزَ بِهٖ

जो बुराई करेगा वह सज़ा पाएगा।

आगे ज़ानी को पेश आने वाले बहुत से नुक़्सानात की तफ़्सील पेश की जाती है।

1. मआशी (कारोबारी) नुक़्सानात

ज़ानी को मआशी नुक़्तए नज़र से मुख़्तलिफ़ तरह की परेशानियाँ घेर लेती हैं, मसलन :

1. बेबरकती

ज़िना की वजह से ज़ानी बरकतों से महरुम कर दिया जाता है जबकि तक़्वे और परहेज़गारी की वजह से बरकतों के दरवाज़ों को खोल दिया जाता है। इरशादे बारी तआला है :

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ

अगर ये बस्तियों वाले ईमान लाएँ और तक़्वा इख़्तियार

करें तो हम उन पर ज़मीन व आसमान की बरकत को खोल दें। (आराफ़ : 96)

रिज़्क़ में बेबरकती होने का नतीजा यह निकलता है कि ज़ानी अपना माल पानी की तरह बहा दे तो भी उसके काम सिमटे हुए नज़र नहीं आते। ऐसे लोग करोड़पति होने के बावजूद कर्ज़दार रहते हैं। कभी लोगों का क़र्ज़ देना होता है कभी बैंकों का क़र्ज़ देना होता है। लाखों कमाने के बावजूद उन्हें कुछ समझ ही नहीं आता कि पैसा कहाँ जा रहा हैं माल आता नज़र आता है जाता नज़र नहीं आता। सब कुछ होने के बावजूद खर्चे पूरे नहीं होते। खाऊँ किधर की चोट बचाऊँ किधर की चोट वाला मामला पेश आता है।

2. रिज़्क़ में तंगी

इरशादे बारी तआला है :

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا

जिस शख़्स ने मेरी याद से मुँह मोड़ा उसके लिए रिज़्क़ में तंगी कर दी जाएगी। (ताहा : 124)

ज़ानी क्योंकि अहकामे ख़ुदावन्दी से मुँह मोड़ता है लिहाज़ा अक्सर उसकी ज़िन्दगी को तंग कर दिया जाता है। हलाल रिज़्क़ की कमी हो जाती है जिसकी वजह से वह हराम कमाई के दरवाज़े खोल लेता है। फिर हराम कमाई से हरामकारी करता फिरता है। कितने लोगों की मिसालें सामने हैं कि खाते-पीते या इज़्ज़तदार घराने के चश्म व चिराग़ थे। जवानी में क़दम रखा तो शहवत के तूफ़ान को रोक न सके। ज़िना करने लगे। ऐसी बरबादी आई कि बैंक बैलेंस ख़त्म हो गए, जाएदादें बिक गयीं। सर छिपाने की जगह भी न रही। बाप जिस शहर का सेठ या नवाब समझा जाता था बदकार ज़ानी बेटा उसी शहर की गलियों में भीख माँगता और सदा लगाता फिरता है—

इतने बड़े जहान में कोई नहीं हमारा

3. कामयाबी के रास्ते बंद

ज़ानी अगर अपने गुनाह से तौबा न करे तो वक़्त के साथ-साथ उस पर कामयाबी के दरवाज़े बंद हो जाते हैं। उसका हर काम अधूरा रहता है। सारा दिन मेहनत व मशक़्क़त में गुज़ारने के बावजूद उसे अपने काम सिमटते नज़र नहीं आते। जब भी कोई काम मुकम्मल होने के क़रीब आता है कोई-न-कोई रुकावट पेश आ जाती है। कभी कारोबार की डील मुकम्मल नहीं होती। कभी बेटों के रिश्ते तय नहीं होते। जिस काम में हाथ डाले वही काम अधूरा रह जाता हैं ख़ुद कहता है कि एक वक़्त था मैं मिट्टी को हाथ लगाता था सोना बन जाती थी, आज सोने को हाथ लगाऊँ तो वह मिट्टी बन जाता है। ऐसे लगता है कि किसी ने कुछ कर दिया है। रिज़्क़ बाँध दिया है, रिश्ते बाँध दिए हैं हालाँकि किसी ने कुछ नहीं किया होता, उसकी अपनी करतूतों की वजह से कामयाबी के रास्ते बन्द हो जाते हैं।

4. मुसीबतें और परेशानियाँ

ज़ानी अगर ज़िना का आदी बन जाए तो उस पर मुसीबतों व परेशानियों की बारिश होती है। इरशादे बारी तआला है :

وَمَآ أَصَابَكُم مِّن مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ

जो तुमको मुसीबत पहुँची वह तुम्हारी हाथों की कमाई है। (शूरा : 30)

जिस तरह तस्बीह का धागा टूट जाए तो उसके दाने लगातार नीचे गिरते हैं ऐसे ही ज़िनाकार पर ऊपर से मुसीबत और परेशानियों की भरमार हो जाती है। जब पूछा जाए कि क्या हाल है? जवाब मिलता है, (Life is very difficult) ज़िन्दगी बहुत दुश्वार है।

गोया ज़िनाकार अपनी ज़बान से इक़रार करता है कि ज़िन्दगी कांटों की सेज है। इरशादे बारी तआला है :

كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ

इस तरह है अज़ाब और आख़िरत का अज़ाब ज़्यादा बड़ा है। (अल-क़लम : 33)

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु जब ख़लीफ़ा बनाए गए तो बैअत आम होने के बाद आपने ख़ुत्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया :

जिस क़ौम में बदकारी फैल जाती है ख़ुदा उसमें मुसीबत को फैला देता है।

5. ख़ुश्कसाली (सूखा पड़ना)

अगर किसी आबादी में ज़िनाकारी आम हो जाए तो उसके इज्तिमाई बुरे असरात होते हैं। मिश्कात शरीफ़ की रिवायत है :

ما من قوم يظهر فيهم الزنا الا اخذوا بالسنة. (رواه احمد، مشكوة)

जब किसी क़ौम में ज़िना फैल पड़ता है तो उसे क़हतसाली की मुसीबत में मुब्तिला कर दिया जाता है।

कहीं बारिशें बंद हो जाती हैं और कहीं पानी की सतह ज़मीन में कमी हो जाती है. अगर सब्ज़ी फल हो भी जाएँ तो बीमारियों का हमला इतना शदीद होता है. कि फ़सल की बरदाश्त बहुत ज़्यादा घट जाती हैं हर तरफ़ मंहगाई का दौर होता है। फूलों में ख़ुशबू नहीं रहती। फलों में ज़ाएक़ा नहीं रहता, बंदों में वफ़ा नहीं मिलती। ऐसे लगता है जैसे किसी ने चीज़ों के अंदर से असल यह को निकाल दिया हो—

ये ख़िलाफ़ हो गया आसमान यह हवा ज़माने की फिर गई कहीं गुल खिले भी तो बू नहीं कहीं हुस्न है तो वफ़ा नहीं

2. मआशरती (समाजी) नुक़सानात

ज़िना के मआशरती नुक़सानों की तफ़्सील इस तरह है :

1. अवाम से वहशत

ज़ानी के दिल में आम लोगों से वहशत पैदा हो जाती है।

ज़ानी का लोगों में मेल मिलाप बहुत कम हो जाता है। उसे तन्हाई बेचैन करती है जबकि महफ़िलों में भी बैठने को दिल नहीं करता। किसी शायर ने सूरतेहाल की निशानदिही ख़ूब की है—

बाग़ में लगता नहीं सहरा से घबराता है दिल
अब कहाँ ले जा के बैठें ऐसे दीवाने को हम

ज़ानी की ज़िन्दगी नार्मल नहीं गुज़रती। वह लोगों से दूर रहने की कोशिश करता है। बक़ौल किसी के—

रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहाँ काई न हो
हमनवा कोई न हो और राज़दाँ कोई न हो
पड़िए गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार
और अगर मर जाइए तो नूहाख़्वाँ कोई न हो

2. आबाद घर बरबाद

ज़िनाकारी की वजह से अक्सर आबाद घर बरबाद हो जाते हैं। ज़िनाकार ख़ाविन्द के लिए अपनी बीवी में कशिश नहीं रहती हालाँकि उसके पास हुस्न व जमाल की कमी नहीं होती। इसी तरह ज़ानी बीवी अपने ख़ाविन्द और घरदारी पर तवज्जेह नहीं देती।

नतीजा यह निकलता है कि आबाद और हंसते बसते घर उजड़ जाते हैं। जिस घर के गुलशन पर बहार की ताज़गी होती है उस पर ख़िज़ां के साए दराज़ हो जाते हैं। जब हालात खुलते हैं तो तलाक़ तक नौबत आ जाती है—

ज़ानी तुम्हें उस मोड़ पर ले आएँगे हालात
हंसना तो बड़ी बात है तुम रो न सकोगे

3. ज़िल्लत व रुसवाई

ज़िनाकार अपने हाथों से अपनी इज़्ज़त ख़ाक में मिला बैठता है। न ख़ालिक़ की निगाह में क़द्र रहती है न मख़्लूक़ की निगाह में रहती है। लोग सामने जी हुज़ूर भी करें तो पीठ पीछे क्या इल्ज़ाम धरते हैं। शादीशुदा इनसान ज़िनाकारी करे तो उसकी

अपनी औलाद उसकी इज़्ज़त नहीं करती। क़ुरआन मजीद में हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम के बारे में आया है :

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ ۝

हमने उसके ऊपर को उसके नीचे कर दिया और उस पर पत्थरों की बारिश कर दी। (हिज्र : 74)

दुनिया में यह सज़ा का इंतिहाई दर्जा है कि उन पर पत्थरों की बारिश की गई और ऊपर के हिस्से को नीचे कर दिया गया। इब्तिदा इसकी यूँ होती है कि इनसान ज़िनाकारी की वजह से इज़्ज़त के बजाए ज़िल्लत और बुलन्दी के बज़ाए पस्ती का शिकार होता है और हर तरफ़ से उस पर तअन तश्नीअ की बारिश होती है। बक़ौल—

यूँही ज़रा ख़मोश जो रहने लगे हैं हम
लोगों ने कैसे-कैसे फ़साने बना लिए

अगर कुँवारेपर की हालत में ज़िना करे तो उसके साथ बड़ों को भी ज़िल्लत का सामना करना पड़ता हैं क़ुरआन मजीद में इसका सबुत मिलता है। जब बीवी मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा अपने बेटे को लेकर क़ौम की तरफ़ आयीं तो लोगों ने कहा :

يَا أُخْتَ هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ۝

ऐ हारून की बहन! तेरा बाप बुरा नहीं था ओर न तेरी माँ बदकार थी। (मरयम : 28)

देखिए इल्ज़ाम तो बीवी मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा पर था मगर क़ौम ने माँ-बाप और भाई की तरफ़ भी इशारा कर दिया। इसी तरह अमल छोटे करते हैं मगर ताने बड़ों को भी मिलते हैं। उन्हें घर बैठे बिठाए ज़लील होना पड़ता है।

दूसरी मिसाल पर ग़ौर कीजिए कि हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम की बदकारी से मना किया। क़ौम बाज़ न आई और गुनाह करती रही यहाँ तक कि अल्लाह तआला की तरफ़ से अज़ाब आ गया। इस मामले में हज़रत लूत अलैहिस्सलाम तो

बरी ज़िम्मा थे। उन्होंने क़ौम को समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। मगर इस सबके बावजूद जब बाद में आने वालों ने हालात का तज़्किरा किया तो उन्होंने मर्द का मर्द के साथ ज़िन्सी गुनाह करने का नाम लवातत या लूती अमल रख दिया।

4. नसब पर धब्बा

ज़िना के नतीजे में अगर औरत के हमल रह जाए तो बच्चा जनने की वजह से एक घराने की नहीं बल्कि ख़ानदार की इज़्ज़त ख़ाक में मिल जाती है। नसब पर धब्बा लग जाता है। इस तरह औरत ज़ानिया तो पहले ही थी, अब क़ातिला भी बन जाती है। क़यामत के दिन बच्चा गिरेबान पकड़ेगा कि मुझे किस लिए क़त्ल किय गया। दुनिया की भी ज़िल्लत और आख़िरत की भी ज़िल्लत मिली। इरशादे बारी तआला है :

خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝

यह ख़सारा है दुनिया और आख़िरत का और यह खुला ख़सारा है।

5. रिश्ते नाते ख़त्म

जब रिश्तेदार मर्द व औरत छिपी आशनाईयों के नतीजे में ज़िना करते हैं तो राज़ खुल जाने पर उनमें ताल्लुक़ात ख़त्म हो जाते हैं। जिन रिश्तों को अल्लाह तआला ने जोड़ने का हुक्म दिया था, इनसान उन रिश्तों को तोड़ता है। इरशादे बारी तआला है :

وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ

और तोड़ते हैं उनको जिनको अल्लाह तआला ने मिलाने का हुक्म दिया है। (बक़रा : 37)

इस सूरतेहाल में ज़िना के गुनाह के साथ रिश्तेदारी तोड़ने का भी गुनाह हुआ। शादीशुदा औरत को ज़िनाकरी की वजह से तलाक़ हो जाए तो दो ख़ानदान एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं। अगर देवर ने भाभी से गुनाह किया तो दो सगे भाई एक-दूसरे के

चेहरे को देखना पसन्द नहीं करते। जिन रिश्तों को तलवार के ज़रिए ख़त्म नहीं किया जा सकता था उन रिश्तों को किरदार की गंदगी ने ख़त्म कर दिया।

6. क़त्ल व फ़साद

ज़िनाकारी के नतीजे में कभी-कभी दो घरों में या दो ख़ानदानों में फ़ितना व फ़साद खड़ा हो जाता है और मरने-मारने की नौबत आ जाती है। औरत को उसके अपने घर के लोग ही क़त्ल कर देते हैं या मर्द को औरत के घरवाले क़त्ल कर देते हैं। कभी-कभी मर्द औरत को ज़बरन ज़िना करने के बाद क़त्ल कर देता है। कभी औरत अपने आश्ना से मिलकर ख़ाविन्द को क़त्ल कर देती है। कभी ज़िना की बदनामी और ज़िल्लत के ख़ौफ़ से ज़ानी मर्द या ज़ानिया औरत ख़ुदकशी कर लेती है।

तारीख़ इनसानी पर नज़र डाली जाए तो रूए ज़मीन पर सबसे पहला क़त्ल भाई के हाथों भाई का हुआ और वह भी औरत की ख़ातिर हुआ—

हुस्ले ज़न से है सारी काएनात में जंग

3. तबई नुक़सानात

ज़िना के तबई नुक़सानत की तफ़्सील इस तरह है :

1. सुकूने दिल से महरूमी

ज़ानी अगरचे कामयाबी से गुनाह क्यों न करे। किसी को पता न चलने दे, उसे समझाने वाला कोई न हो, रोकने वाला कोई न हो, मगर ज़िना के बदअसरात में से एक यह है कि ज़ानी के दिल का सुकून लुट जाता है। एक अजीब सी परेशानी उसके दिल पर हावी हो जाती है। महफ़िल में बैठा होगा तो ख़्यालात की दुनिया में खोया हुआ। अगर तन्हाई में होगा तो अपने ज़मीर का क़ैदी बना होगा। न दिन में सुकून न रात में चैन। किसी की सोते कटे है किसी की रात रोते कटे है। ज़ानी की रात न सोते कटे है न रोते कटे—

तारो का गो शुमार में लाना मुहाल है
लेकिन किसी को नींद न आए तो क्या करे

ज़ैबुन्निसा मख़्फ़ी के अश-आर सूरतेहाल को ख़ूब बयान करते हैं—

مرغ دل را گلشن بجز کوئی یار نیست
طالب دیدار را شوق گل و گلزار نیست
گفتم از عشق بتاں اے دل چہ حاصل کردہ ای
گفت مارا جز نالہ ہائے زار نیست

दिल के मुर्ग़ को यार की गली बाग़ से ज़्यादा बेहतर लगती है। दीदार के तालिब को गुल व गुलज़ार का शौक़ नहीं होता। मैंने यह पूछा कि ऐ दिल! तुझे हसीनों के इश्क़ से क्या हासिल हुआ। बोला कि सिवाए आह व फ़रियाद के कुछ हासिल नहीं हुआ।

चंद लम्हों की वक़्ती लज़्ज़त की ख़ातिर हमेशा का रोग दिल में पाल लेना कहाँ की अक़्लमंदी है।

2. अक़्ल में फ़साद

ज़ानी अगर तौबा ताएब न हो तो उसकी सोच नार्मल नहीं रहती। वह अपने जुर्म को छिपाने की ख़ातिर आम मामूल से हटकर अमल करेगा। उसकी सोच एक तरफ़ा सोच बन जाएगी। अगर कुँवारी लड़की ने कहीं यारान ताल्लुक़ात जोड़ लिए तो वह उसी आवारा लड़के से शादी कराने के लिए तैयार हो जाएगी। उसे लाख समझाया जाए कि तुम अपने ख़ानदान को देखो, अपनी शख़्सियत को देखो, तालीम को देखो, उस लड़के का तुम्हारे साथ कोई जोड़ नहीं बनता। ख़ानदान में इससे बेहतर रिश्ते तुम्हारे लिए मौजूद हैं। उस लड़के के पास न तालीम है न माल है न दुनियावी इज़्ज़त हैं आख़िर किस लिए तुम उसकी झोली में गिर रही हो? वह हर बात सुनी अनसुनी कर देगी और

कहेगी कि कि जैसा भी हो मैं उसी से शादी करूँगी। उसे कहा जाए कि तुम्हारे इस अमल का तुम्हारे छोटे बहन-भाईयों पर बुरा असर पड़ेगा। उसे इससे कोई ग़र्ज़ नहीं होगी। वह नफ़ा व नुक़सान को सोचने की सलाहियत से महरुम हो जाएगी। इसी को अक़्ल का फ़साद कहते हैं। इसी तरह ज़ानी शख़्स को समझाया जाए कि आप शादीशुदा हो बाल बच्चेदार हो, चाँद सी बीवी तुम्हारे घर में तुम्हारा इंतिज़ार कर रही है। जाओ अपना घर आबाद करो। क्यों इस बदकिरदार लड़की के पीछे लग गए। अपना माल और अपनी जवानी इस लड़की के लिए बरबाद कर रहे हो। ये सब सुनकर भी शख़्स अनसुनी कर देगा। एक ज़ानिया औरत की ख़ातिर हंसते बसते घर को बरबाद कर देगा। बाद में भले ख़ून के आँसू रोए मगर वक़्ती तौर पर अपने समझानेवालों को भी अपना दुश्मन समझेगा। इसी को अक़्ल का फ़साद कहा जाता है। बक़ौल–

मैं उसे समझूँ हूँ दुश्मन जो मुझे समझाए है

3. दिल बदन कमज़ोर

ज़ानी आदमी के दिल में एक अन्जाना सा ख़ौफ़ पैदा हो जाता है जिसक वजह से वह जुर्रात व बेबाकी वाली नेमत से महरुम हो जाता है। बुज़दिली उसका मुक़द्दर बन जाती है। कसरत अय्याशी की वजह से ज़्यादातर बदन भी कमज़ोर हो जाता है। रातों की नींद न आने से जिस्मानी सेहत गिरना शुरू हो जाती है। बक़ौल शायर–

आशिक़ाँ रा सह निशानी ऐ पिसर
रंग ज़र्द ओ आह सर्द जो चश्मतर

4. चेहरे का नूर

ज़ानी शख़्स के चेहरे पर ज़ुलमत व स्याही के असरात साफ़ नज़र आते हैं। चेहरी की मासूमियत ख़त्म हो जाती हैं। चमक ख़त्म होकर वहशत का रूप धार लेती हैं दिल की ज़ुलमत का

असर आँखों पर पड़ता है तो हया ख़त्म हो जाती है। चेहरे पर पड़ता है तो जाज़्बियत ख़त्म हो जाती है। जब देखो चेहरे पर नहूसत टपक रही होती है। चेहरा चुगली खाता है कि मैं तन्हाई की ज़ुलमतों के दरिया में ग़ौताज़न रहता हूँ।

5. उम्र घट जाना

ज़ानी आदमी की ज़िन्दगी से बरकत ख़त्म हो जाती है कभी-कभी तो उम्र के माह व साल कम हो जाते हैं और कभी-कभी बीमारियों की वजह से उम्र का फ़ायदेमंद वक़्त कम हो जाता है। एक हदीस पाक में वारिद है कि ज़िना की तीन सज़ाए दुनिया में दी जाती हैं, उनमें से एक उम्र का घट जाना है।

6. मौतों की कसरत

जब किसी आबादी मे जिना की कसरत हो जाए तो उसमें मरनेवालों की तादाद भी बढ़ जाती हैं नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

ولا فشا الزنا قوم الا كثر فيهم الموت. (عن مالك مشكوٰة ٢٠٥)

किसी क़ौम में ज़िना आम हो जाता है तो मौतों की भी कसरत हो जाती है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

ما ظهر الربا والزنا فى قرية الا اذن الله باهلاكها. (الجواب الكافى)

नहीं ज़ाहिर होता सूद और ज़िना किसी बस्ती में मगर अल्लाह तआला उसकी हलाकत का ऐलान कर देते हैं।

7. ताऊन का फैलना

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से एक लंबी हदीस में पाँच गुनाह और उसके बुरे असरात का तज़्किरा किया गया है। उन्हीं में से यह भी इरशाद फ़रमाया कि जिस क़ौम में ज़िनाकारी फैल

जाती है यानी खुल्लम-खुल्ला होने लगते हैं तो अल्लाह तआला उनको ताऊन में मुब्तला कर देता है और ऐसे दुख दर्द में डालता है जिससे उनके बड़े अन्जाम होते थे।

8. ख़तरनाक बीमारियों का फैलना

ज़िनाकारी की वजह से इन्तेहाई ख़तरनाक और जान लेव बीमारियाँ फैल जाती हैं मसलन एड्स, आतिश्क, सूज़ाक वग़ैरह।

इब्ने माजा में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब किसी कौम में पाँच गुनाह आम हो जाते हैं तो उनमें पाँच असरात पैदा हो जाते हैं :

- जो क़ौम नाप-तोल में कमी करती है तो उस पर ज़ालिम हाकिम मुसल्लत कर दिए जाते हैं।
- जो क़ौम ज़कात का तावान समझती हे उस पर कहतसाली मुसल्लत कर दी जाती है।
- जो क़ौम अहद शिकनी करती है उस पर दुश्मन मुसल्लत कर दिया जाता है।
- जो क़ौम अहकामे शरिअत को हल्का समझती है उसमें नाइत्तेफ़ाक़ी और ख़ानाजंगी मुसल्लत कर दी जाती है।
- जो क़ौम फ़हाशी और बेहयाई में मुब्तला हो जाती है उस पर मुहलिक बीमारियों को फैला दिया जाता है।

4. दीनी नुक़सानात

ज़िना के दीनी नुक़सानात की तफ़्सील इस तरह है :

1. बुराई का एहसास ख़त्म

ज़िना का एक अज़ीम नुक़सान यह है कि ज़ानी के दिल से धीरे-धीरे बुराई का एहसास ख़त्म हो जाता है। ग़ैर-महरम से शहवत अंगेज़ मज़ाक़ करना, उसे सलाम व पयाम भेजना, उसके साथ तन्हाई में वक़्त गुज़ारना, उसको बुरा महसूस नहीं होता। यहाँ तक कि कभी-कभी वह नज़्र मानता है कि और दुआएँ करता है कि उसको ज़िना का मौक़ा नसीब हो जाए। यह भूल

जाता है कि गुनाह की दुआ करना भी बड़ा गुनाह है। बाज़ फ़ासिक़ व फ़ाजिर आदमी तो अपने नाजाएज़ ताल्लुक़ात की तफ़्सीलात बड़े फ़ख्र से अपने दोस्तों की महफ़िल में बयान करते हैं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

كل امتى معافى الا المجاهرين. (الجامعة الصغير ٢،٦٩،٢)

हर गिरोह के लिए माफ़ी है मगर वह जो बुराई को ज़ाहिर करनेवाले हों।

अजीब बात है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त बंदे के जिन गुनाहों को छिपाता है, बंदा अपनी ज़बान से वे सब कुछ लोगों को बताता है। ऐसी सूरतेहाल में कि जब दिल से बुराई का एहसास ख़त्म हो जाए, बंदे की ज़बान से कलिमाते कुफ्र का सादिर हो जाना कुछ मुश्किल नहीं रहता—

वाए नाकामी मताए कारवाँ जाता रहा
कारवाँ के दिल से एहसासे ज़ियाँ जाता रहा

एक बुज़ुर्ग ने अपने मुरीदीन से फ़रमाया करते थे कि तुम गुनाहों से डरते हो मुझे अपने ऊपर कुफ्र का ख़ौफ़ रहता है। यह भी सच है कि जब बुरे आमाल को इनसान गुनाह ही नहीं समझता तो उनसे तौबा की तौफ़ीक़ भी नसीब नहीं होती।

2. गुनाहों की कसरत

ज़िनाकारी के बदअसरात में से एक यह भी है कि ज़ानी पर गुनाहों के दरवाज़े खुल जाते हैं। एक गुनाह दूसरे गुनाह करने पर मजबूर कर देती है। ज़िना को छिपाने के लिए लोगों के सामने झूठ बोलना आम सी बात है। अगर लोगों को शक हो जाए तो उनको यक़ीन दिलाने के लिए झूठी क़सम उठा लेना मामूली बात हैं कॉलेज की एक लड़की ने अपने नाजाएज़ ताल्लुक़ात को छिपाने के लिए अपने वालिद के सामने क़सम उठाई कि अगर फ़लाँ लड़के से मेरे ताल्लुक़ात हों तो मुझे मौत के वक़्त कलिमा भी नसीब न हो। मेल मिलाप के वक़्त नमाज़ क़ज़ा होनाया गुस्ले जनाबत में जल्दी न करने की वजह से नमाज़ का क़ज़ा हो जाना

आम सी बात है। शादीशुदा औरत से ज़िना करने के लिए उसके ख़ाविन्द से नफ़रत पैदा करने वाली बातें गुनाह महसूस नहीं होतीं। उलमा ने लिखा है कि मियाँ-बीवी के दर्मियान जुदाई डालने वाले की शबक़द्र में भी मग़फ़िरत नहीं होती। ज़िनाकारी के लिए नाजाएज़ तरीक़े से पैसे हासिल करने पड़ते हैं। कभी-कभी तो शबाब के साथ शराब का दरवाज़ा खुल जाता है। फिर उम्मुल ख़बाइस गुनाहों का पंडौरा खोल देती है।

3. ग़ैरत ख़त्म

ज़ानी के दिल से ग़ैरते ईमानी कम होते-होते ख़त्म ही हो जाती हैं ज़ानिया औरत अपनी बेटी औरत को ग़लत रास्ते पर चलता देखती है तो मना करने की अपने अन्दर हिम्मत नहीं पाती। ज़ानी मर्द अपनी बीवी, बेटी को फ़िस्क़ व फ़िजूर वाले काम करता देखता है तो रोक नहीं पाता। ज़ानी मर्द कभी-कभी तो महरम औरतों से ज़िना कर लेता हैं कभी-भी माँ अपनी बेटी की, बहन अपनी बहन की, दोस्त अपने दोस्त की उसके आशना से मुलाक़ात करने का इंतिज़ाम करता है। साथ मिलकर दोनों को गुनाह करने का मौक़ा देते हैं।

बाहर मुल्कों में एक मुसलमान नवजवान ने काफ़िर लड़की से दोस्ती कर ली। दोनों बहुत अरसे तक ज़िना करते रहे। इस दौरान नवजवान की वादा खिलाफ़िओं पर नाराज़ होकर काफ़िर लड़की इस्लाम के बारे, में बुरा भला कहती रहती मगर नवजवान के सर पर जूँ भी न रेंगती। दीनी हमियत और ग़ैरत का जनाज़ा ही निकल गया।

4. तौफ़ीक़े तौबा का छिनना

ज़ानी अपने नाजाएज़ ताल्लुक़ात में इस क़द्र पुख़्ता हो जाता है कि कभी-कभी आशिक़ माशूक़ इकठ्ठा मरने जीने की क़स्में खाते हैं। औरत को पता होता है कि मैं बीवी किसी और की हूँ। मर्द को पता है कि यह औरत पराई है इससे मिलना मेरे लिए

हराम है मगर मुहब्बत के नशे में ज़िन्दगी भर मिलते रहने की यक़ीन दिहानियाँ करवाते हैं। ऐसे में तौबा की तौफ़ीक़ कहाँ नसीब होती है। कभी-कभी ज़ानी मर्द और ज़ानिया औरत के दिल में यह एहसास भी हो कि हम गुनाह कर रहे हैं तो भी एक-दूसरे को मुलाक़ात के लिए तैयार करते हुए कहते हैं कि बस आख़िरी दफ़ा मिल रहे हैं, आइन्दा नहीं मिलना। फिर जब मिले हुए थोड़ा वक़्त गुज़र जाता है तो आख़िरी दफ़ा की नीयत से फिर मिलते हैं। इस तरह तौबा को टालते-टालते या तो राज़ खुलकर बदनाम हो जाती है या हालात दोनों में हमेशा के लिए जुदाई डाल देते हैं। अपने इख़्तियार से गुनाह से तौबा की ताफ़ीक़ नसीब नहीं होती।

5. दिल में सख़्ती

ज़िनाकारी की वजह से दिल सख़्त हो जाता है। नसीहत की बातों का दिल पर असर ही नहीं होता। ख़ौफ़े ख़ुदा से पत्थर कांप जाते हैं मगर इनसान का दिल टस से मस नहीं होता। यह पत्थरों से भी परे पार हो जाता है। इनसान ज़ाहिर में ज़िन्दा होता है मगर रूहानी मौत मर जाता है। ज़मीन पर चलती-फ़िरती लाश की मानिन्द होता है।

6. ताआत से महरूमी

ज़िना की नहूसत ज़ानी को रूहानी तौर पर अपाहिज कर देती है। उसकी दिल नेक आमाल की तरफ़ नहीं चलता। उसकी हालत एक बीमार की तरह होती है जिसके लिए चलना-फिरना उठना-बैठना दुश्वार होता है। इसी तरह ज़ानी के लिए भाग-भागकर नेक आमाल करना मुश्किल होते हैं। मुनाजात की लज़्ज़त से महरूमी, तहज्जुद से महरूमी, तकबीरे ऊला से महरूमी, रोज़ाना के मामूलात पूरे करने से महरूमी, इत्तिबाए सुननत से महरूमी, अल्लाह वालों की मज्लिस में हाज़िरी से महरूमी, इसकी चंद मिसाले हैं। बक़ौल शायर—

जानता हूँ सवाब ताअत ओ ज़ोहद
पर तबियत इस तरफ़ नहीं आती

7. अल्लाह तआला से वहशत

ज़ानी को अल्लाह तआला से वहशत महसूस होने लगती है। न यादे इलाही में दिल लगता है न तिलावत क़ुरआन में और न ही मुराक़बा और ज़िक्रे क़ल्बी में। मुसल्ले पर बैठना दुश्वार होता है। मसिजद में हाज़िरी मुश्किल लगती है। नेकी करने में तबियत पर बोझ होता है जबकि फ़िस्क़ व फुजूर के मोक़े पर तबियत बाग़-बाग़ होती है। दीनी महफ़िलों में जाते वक़्त तबियत में घुटन महसूस होती है। सुन्नत की इत्तिबा बोझ महसूस होती है जबकि रस्म व रिवाज की पाबन्दी और यहूदी ओर ईसाइयों को पैरवी करते हुए ख़ुशी महसूस होती है। अल्लाह तआला के बारे में बदगुमानी पैदा हो जाती है कि मेरी दुआएँ क़बूल नहीं होतीं। मैंने इतनी नमाज़ें पढ़ीं मगर मेरा फ़लाँ काम तो हुआ नहीं है। नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने एक हदीस पाक में इरशाद फ़रमाया है :

> "जो शख़्स अपने दिल में अल्लाह तआला से ख़ुश होता है। अल्लाह तआला उससे ख़ुश होते हैं और जो शख़्स अपने दिल में अल्लाह से नाराज़ होता है। अल्लाह तआला उससे नाराज़ होते हैं।"

8. लानत नबवी का मुस्तहिक़

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने कई गुनाह करनेवालों पर लानत फ़रमाई है, मसलन :

- शराब पीनेवालो पर, पिलानेवाले पर, निचोड़नेवाले पर, बेचनेवाले पर, ख़रीदनेवाले पर और लादकर लानेवाले पर।
- सूद लेनेवाले और देनेवाले पर, लिखनेवाले पर, गवाह बननेवाले पर और चोरी करनेवाले पर।
- मुसलमान को धोका देनेवाले पर, ज़रर पहुचानेवाले पर,

मुसलमान पर लोहे से इशारा करनेवाले पर।

- बाप को बुरा कहनेवाले पर, बाप के बजाए किसी और से निसबत मिलानेवाले पर।
- रिश्वत लेनेवाले पर, देनेवाले पर और दर्मियान में पड़नेवाले पर।
- ख़ुदा के हुक्मो को छिपानेवाले पर, दीन में नई बात निकालनेवाले पर, ग़ैरुल्लाह के पर के नाम पर ज़िब्ह करनेवाले पर, बेमक़सद जानवर को निशाना बनानेवाले पर।
- शर्त के साथ हलाला करनेवाले पर, करवानेवाले पर, लुत्फ़अंदोज़ होने के लिए ज़िन्दा तस्वीर बानानेवाले पर।
- उन औरतों पर जो क़ब्रों पर जाएँ या सज्दा करें।
- जो अल्लाह जल्लेजलालूहू और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ईज़ा पहुँचाए। सहाबा किराम को बुरा कहे, क़ता रहमी करे (ताल्लुक़ात तोड़े) और ज़मीन में फ़साद पहुँचाए। मुसलमानों के मुकाबले में काफ़िरों का साथ देनेवाले पर।
- जो बीवी को ख़ाविन्द के ख़िलाफ़ भड़काए (या ख़ाविन्द को बीवी के ख़िलाफ़ भड़काए), गुलाम को आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काए (मामूर (मातहत) को अमीर के ख़िलाफ़ भड़काए)।
- उस औरत पर जो गोदे और गुदवाए या ग़ैर के बालों को अपने बालों में मिलाए।
- उन औरतों पर जो मर्दों की मुशाबिहत करें या उन मर्दों पर जो औरत की मुशाबिहत करें।
- बीवी की दुबुर (पिछले हिस्से) में जमा करनेवाले पर, लूती अमल करनेवाले पर, जानवर से जमा करनेवाले पर यानी दूसरे अल्फ़ाज़ में ज़िना करनेवाले पर।
- जो नेक औरत पर तोहमत लगाए।
- उस बीवी पर जो ख़ाविन्द को नाराज़ करके अलग रहे यानी जमा न करने दे।

9. रहमते ख़ुदावन्दी से महरूमी

ज़ानी के दिल पर ज़ुलमत व स्याही की ऐसी तह चढ़ जाती है कि वह ज़रा-ज़रा सी बात पर अल्लाह तआला की रहमत से मायूस हो जाता है। डिप्रेशन का शिकार हो जाता है।

10. ग़ैरते ख़ुदावन्दी का सबब

ज़िनाकार इनसान पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को बड़ी ग़ैरत आती है। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है :

يا امة محمد! والله ما من احد اغير من الله ان يزنى عبده او تزنى امته
(مشكوة ۲۱۸)۔

ऐ उम्मते मुहम्मद! अल्लाह की क़सम इस बात पर कि अल्लाह तआला से बढ़कर किसी को ग़ैरत नहीं आती कि कोई मर्द या औरत ज़िना करे।

11. हालते ईमान दौराने ज़िना

मिश्कात बाबुल-कबाइर में एक हदीस मुबारक नक़ल की गई है :

اذا زنى العبد خرج منه الايمان فكان راسه كالظلة فاذا خرج من ذالك العمل يرجع اليه الايمان۔

जब बंदा ज़िना करता है तो ईमान उससे निकल जाता है। बस वह उसके सर पर साए की तरह होता है। जब वह इस अमल से फ़ारिग़ होता है तो ईमान लौट आता है।

इस हदीस मुबारक से मालूम हुआ कि ज़िना इतना बुरा अमल है कि ईमान दिल से निकल जाता है। एक और रिवायत में है :

لا يزنى الزانى حين يزنى وهو مومن (مشكوة باب الكبائر)

ज़ानी जब ज़िना करता है तो उस वक़्त मोमिन नहीं होता।

12. शिर्क के बाद अज़ीम गुनाह

हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह० ने अपनी तफ़्सीर में एक हदीस नक़्ल की है :

ما من ذنب بعد الشرك اعظم عند الله من نطفة وضعها رجل فى رحم لا يحل له (ابن كثير ٢٨٢)

'शिर्क के बाद इससे बड़ा गुनाह कोई नहीं कि कोई आदमी अपने नुत्फ़े को ऐसे रहम में रखे जो उसके लिए हलाल न हो।

13. ज़िना जुर्मे अज़ीम है

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अनहु ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा कि अल्लाह तआला के नज़दीक अकबरुल-कबाइर यानी सबसे बड़ा गुनाह कौन-सा है? फ़रमाया अल्लाह तआाल के साथ किसी को शरीक बनाना। उससे पूछा उसके बाद कौन-सा गुनाह बड़ा है? फ़रमाया अपने बच्चे को इस ख़ौफ़ से मार डालना कि वह साथ खाएगा। उसने पछा उसके बाद कौन-सा गुनाह बड़ है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

ان يزنى حيلة جارك (بخارى)

अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करना।

एक और रिवायत में है कि अगर किसी शख़्स ने शादीशुदा औरत से ज़िना किया तो अल्लाह तआला उस औरत के ख़ाविन्द को क़यामत के दिन ज़ानी के आमाल पर क़ुदरत अता करेंगे कि वह जिस क़द्र चाहेगा उसकी नेकियाँ ले लेगा। साफ़ ज़ाहिर है कि उस दिन की हौलनाकी और दहशत की वजह से थोड़ी नेकियों पर कोई राज़ी नहीं होगा। ज़िना के वक़्त लज़्ज़त के बदले सारी उम्र की नेकियाँ किसी दूसरे को दे बैठना कहाँ की अक़्लमंदी है।

14. सुए (बुरे) ख़ात्मे का डर

ज़िना की ज़ुलमत ईमान को इतना कमज़ोर कर देती है कि सूए ख़ात्मा का डर रहता है। अहले कश्फ़ हज़रात ने इसका मुशाहिदा किया है कि ज़िना से तौबा न करनेवाला आख़िरी वक़्त में ईमान से महरूम हो जाता है।

बाब-8

ज़िना की सज़ा

फ़ितरी तौर पर दुनिया का हर इनसान बाइज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता है। इसीलिए दीने इस्लाम ने मोमिन की इज़्ज़त का बड़ा ख़्याल रखा है। चुनाँचे माहौल और समाज में रहते हुए मुसलमानों को एक-दूसरे की इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त का दर्स दिया है। यह बात ख़ूब साफ़ तरीक़े से बयान की है कि जो क़ीमत एक मुसलमान के ख़ून की है वही उसकी इज़्ज़त व आबरू की है। गोया किसी मुसलमान को बेआबरू कर देना ऐसा ही है जैसा कि उसको जान से मार देना।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हज्जतुल-विदा के मौक़े पर इरशाद फ़रमाया :

> जो दर्जा मक्का मुकर्रमा के अन्दर माहे ज़िलहिज्जा के यौमे अरफ़ा को हासिल है वही दर्जा मुसलमान की इज़्ज़त व आबरू को भी हासिल है।

एक हदीस पाक में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फरमाया :

> كل المسلم على المسلم حرام عرضه وماله ودمه (رياض الصالحين)

> मुसलमान की इज़्ज़त व आबरू और जान दूसरे मुसलमान पर हराम है।

इससे अच्छी तरह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि अल्लाह तआला के नज़दीक मोमिन की इज़्ज़त कितनी अहमियत रखती है।

मुसलमान की इज़्ज़त

जिन आमाल के ज़रिए मोमिन पर कीचड़ उछाला जा सकता है शरिअत ने उनकी नापसन्दीदगी का ऐलान कर दिया। मसलनः

1. बदगुमानी

इरशाद बारी तआला है :

اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ

बचो तुम ज़्यादा गुमान करने से बेशक बाज़ गुमान गुनाह हैं। (हुजुरात : 12)

उसके मुक़ाबले में हुस्ने ज़न को पसन्द किया गया है। लिहाज़ा मामूली बातों पर एक-दूसरे के बारे में दिल में बदगुमानी पैदा कर लेना बहुत बड़ा गुनाह है। उलमा ने लिखा है कि अगर मोमिन भाई के अमल में 99वें पहलू बुराई के निकलते हों सिर्फ़ एक पहलू अच्छाई का निकलता हो तो उसके एक पहलू को सामने रखते हुए अपने भाई से हुस्ने ज़न रखना चाहिए। आजकल तो ज़रा सा इशारा मिल जाए तो लोग ख़ूबसूरत कहानी घड़ने के माहिर हैं। इसी को बात का बतंगड़ कहते हैं। शरअ शरीफ़ ने उसे हराम क़रार दिया है।

2. तजस्सुस

कुछ लोगों की आदत होती है कि दूसरों के ऐब तलाश करते रहते हैं। हर वक़्त किसी-न-किसी की टोह में लगे रहते हैं। खोद कुरेद करके दूसरों की गल्तियों को ज़ाहिर करना उनका बेहतरीन मश्ग़ला होता है। इरशादे बारी तआला है : (और तुम तजस्सुस में न पड़ो)। शरिअत ने इस बात को नापसन्द किया है कि एक मुसलमान बिना वजह दूसरे के पीछे पड़ जाए। बक़ौल शायर—

तुझको पराई क्या पड़ी अपनी नबेड़ तू

शिकारी कुत्ते की आदत होती है कि वह चलता है तो हर झाड़ी और दरख़्त में मुँह मारता है। सूंघता है, शिकार ढूंढता है इसी तरह कुछ लोगों की आदत होती है कि हर दूसरें इनसान की

ज़िन्दगी के हालात को टटोलने और उसमें मुँह मारी करने की कोशिश करते हैं। ये लोग इनसान होकर हैवान वाली हरकतें कर रहे होते हैं।

3. सरगोशी

अक्सर अवक़ात सरगोशी के ज़रिए दो आदमी किसी तीसरे आदमी के बारे में ख़्यालात का इज़्हार करते हैं। शरअ शरीफ़ ने इस बारे में मोमिन को मोहतात रहने की तलक़ीन की है। इरशादे बारी तआला है :

لَا خَيْرَ فِي كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ

नहीं है भलाई ज़्यादा उनके मशवरे में। (निसा : 114)

इससे मालूम हुआ कि मजबूरी की हालत में सरगोशी करने की इजाज़त है वरना हर मुमकिन परहेज़ करना चाहिए ताकि किसी तीसरे के दिल में वहम न पैदा हो कि ये लोग आपस में बैठे किसी के ऐब बयान कर रहे हैं।

4. ग़ीबत

कुछ लोग आपस में बातचीत के दौरान किसी तीसरे आदमी की बुराईयों का तज़्किरा शुरू कर देते हैं। शरिअत की नज़र में यह ग़ीबत है और गुनाहे कबीरा है।

इरशादे बारी तआला है :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ۭ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا

فَكَرِهْتُمُوْهُ

और तुममें से कोई दूसरे की ग़ीबत न करे, क्या तुममें से कोई पसन्द करता है कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए। पस तुम इसे नापसन्द करते हो। (हुजुरात : 12)

मालूम हुआ कि जिस तरह मुर्दार का गोश्त खाने से इनसान को कराहत होती है, इसी तरह मोमिन को दूसरे मुसलमान भाई की ग़ीबत करते हुए कराहत होनी चाहिए।

हदीस पाक में आया है :

الغيبة اشد من الزنا (مشكوة ٤١٦/٢)

ग़ीबत ज़िना से ज़्यादा सख़्त हैं

इससे अच्छी तरह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि दीने इस्लाम में ग़ीबत किस क़द्र नापसन्दीदा और बुरा अमल है। मान लें अगर कोई आदमी ज़िना करे तो भी उसकी ग़ीबत करने की इजाज़त नहीं। अगर कोई करेगा तो वह इस ज़ानी की बनिस्बत ज़्यादा बुरा अमल कर रहा होगा। यही दीने इस्लाम का हुस्न व जमाल है कि अगर दो आदमी आपस में घंटों बातें करें तो तीसरे को फ़िक्रमंद होने की ज़रूरत नहीं कि ये मेरी बुराईयाँ बयान कर रहे होंगे। अव्वल तो करेंगे ही नहीं और अगर मान लें कि ग़ीबत करेंगे तो क़यामत के दिन इस आदमी को अपनी नेकियाँ देकर राज़ी करने के पाबन्द होंगे।

5. बोहतान तराशी

किसी की ऐसी बुराई करना जिसके शरई गवाह मौजूद न हों, बोहतान कहलाता है। शरिअत की नज़र में ऐसी बात करनेवाले को सज़ा मिलती है मसलन–

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ
ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝

और जो लोग पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाए, फिर चार गवाह न लाए तो उनको अस्सी कोड़े लगाओ और कभी उनकी गवाही क़बूल न करो और यही लोग फ़ासिक़ हैं। (नूर : 4)

इस आयतें मुबारक से वाज़ेह होता है कि बोहतान लगानेवाले पर तीन दफ़ाएँ क़ायम होंगी :

- अस्सी कोड़े लगाओ,
- आइन्दा कभी भी उसकी गवाही क़बूल न करो,

- ऐसे आदमी को फ़ासिक़ समझो।

इस सज़ा का इल्म होने के बाद कोई शख़्स किसी मुसलमान के बारे में ज़बान चलाने की हिम्मत नहीं कर सकता। अस्सी कोड़े लगने की तकलीफ़ अपनी जगह है मगर सारी उम्र के लिए ग़ैर मौतबर और झूठा बनकर रहना बहुत बड़ी सज़ा है। इस हुक्म के ज़रिए शरिअत ने मुसलमान के बारे में दूसरों की ज़बान को ताले लगा दिए है। अगर किसी ने बात करनी है तो सोच समझकर ज़बान खोले वरना अपनी इज़्ज़त हमेशा के लिए बरबाद कर बैठेगा।

ख़ुलासा यह है कि दीने इसलाम ने बदगुमानी, तजस्सुस, सरगोशी, ग़ीबत और बोहतान तराशी से मना फ़रमाकर मुसलामन की इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त का हक़ अदा कर दिया है। अब यह मुसलमान की अपनी ज़िम्मेदारी है कि वह भी कोई ऐसा काम न करे कि जिससे उसकी इज़्ज़त पर आंच आए। अगर कोई ऐसा वैसा अमल करेगा तो नतीजों का भी ख़ुद ज़िम्मेदार होगा। अपने पाँव पर ख़ुद ही कुल्हाड़ी मारने वाला बनेगा।

ज़िना की सज़ा दुनिया में

मसल मश्हूर है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते। लिहाज़ा दीने इस्लाम ने हदों और पाबन्दियों को तोड़ने वालों के लिए मुख़्तलिफ़ सज़ाए तय की हैं। सज़ा की नौइय्यत जुर्म के एतिबार से है।

जैसा जुर्म वैसी सज़ा

शरअ शरीफ़ में हर जुर्म की सज़ा उसके हिसाब से दी गई है मसलन—

1. चोरी : चोरी करनेवाला शख़्स क्योंकि दूसरे के माल पर हाथ उठाता है। लिहाज़ा दीने इसलाम में चोरी की सज़ा हाथ काटना है।
2. डाका : डाका मारने वाला आदमी क्यों खुल्लम-खुल्ला दूसरे

शख़्स को माल छीन लेता है। लिहाज़ा शरअ शरीफ़ ने उसकी सज़ा एक हाथ और एक पाँव काट देना है।

3. क़त्ल : किसी मुसलमान को ज़ख़्मी करने य क़त्ल करने के बारे में इरशाद बारी तआला है :

أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ

जान के बदले में जान है और आँख के बदले में आँख।

(माइदा : 45)

4. ज़िना : ज़ानी आदमी किसी मुसलामन की इज़्ज़त व आबरू को लूट लेता है। लिहाज़ा उसकी सज़ा माल लूटने से ज़्यादा सख़्त होनी चाहिए। आम दस्तूर को सामने रखते हुए तो ज़हन इस तरफ जाता है कि ज़ानी की शर्मगाह को काट देना चाहिए। न रहे बांस न बजे बांसुरी। लेकिन इसमें दो नुक्ते क़ाबिले ग़ौर हैं। अगर ऐसा कर दिया जाता तो एक हमेशा के लिए इनसानी नस्ल को काट देना हो जाता। दूसरे इस सज़ा का आम आदमी, को इल्म ही न होगा। लिहाज़ा वह इबरत नहीं हासिल कर सकेगा। इस बिना पर शरअ शरीफ़ ने इसकी सज़ा कोड़े तजवीज़ फ़रमाई है। इरशादे बारी तआला है :

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

ज़िना करनेवाली औरत और ज़िनाकरने वाला मर्द इन दोनों में से हर एक को सौ कोड़े लगाओ और तुम लोगों को अल्लाह तआला के मामले में इन दोनों पर ज़रा रहम नहीं आना चाहिए। अगर तुम अल्लाह तआला और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हो।

यह साफ़ ज़ाहिर है कि ज़िना में लज़्ज़त सिर्फ़ ख़ास आज़ा को ही नहीं मिलती बल्कि जिस्म के अंग-अंग में कैफ़ य सुरूर की मस्ती छा जाती है। और इन्ज़ाल के वक़्त तो रुवाँ-रुवाँ इस

लज़्ज़त को महसूस करता है। लिहाज़ा कोड़े लगने की सज़ा बहुत मुनासिब मालूम होती हैं ताकि ज़ाहिरी तौर पर पूरे जिस्म को तकलीफ़ पहुँचे। याद रहे कि यह सज़ा ग़ैर-शादीशुदा ज़ानी के लिए है।

अगर कोई शादीशुदा शख़्स ज़िना करे और क़ाज़ी के पास जाकर इक़रार करे या शरई गवाह भी पेश हो जाएँ तो फिर उसकी सज़ा रजम है।

रजम का तरीक़ा

मुजरिम का जुर्म साबित होने के बाद एक खुले मैदान में ले जाए। जहाँ क़ाज़ी, गवाह और मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत मौजूद हो। अगर जुर्म क़बूल करने से फ़ैसला हुआ है तो पत्थर मारने में हाकिम इब्तिदा करेगा। अगर गवाही से जुर्म साबित हुआ है तो गवाह इब्तिदा करेंगे। फिर तमाम मुसलमान पत्थर मारेंगे यहाँ तक कि उस आदमी की जान निकल जाए। औरत को रजम करने के लिए ज़मीन में इतना गहरा गढ़्ढा खोद जाए कि उसका आधा बदन उसमें छिप जाए। फिर उसको संगसार कर दिया जाए।

इस्लामी सज़ाएँ

दौरे हाज़िर में काफ़िरों और मुश्रिकों की तरफ़ से ये एतिराज़ सुनने में आता है कि इस्लामी सज़ाए वहशियाना हैं। कुछ नए पढ़ लिखे फ़िरंगी ज़हनियत रखनेवाले लोग भी इसकी हाँ में हाँ मिलाते नज़र आते हैं। आइए ज़रा इस बात का जाएज़ा लें कि रजम की सज़ा कब मिलती है। इसकी हक़ीक़त को समझने के लिए चंद वज़ाहतें इस तरह हैं :

1. इस्लाम ने बालिग़ शख़्स की शरई ज़रूरत के पूरा करने के लिए निकाह को बहुत आसान बनाया है। मेहर के हक़ के साथ दो शरई गवाहों की मौजूदगी में ईजाब व क़बूल चंद मिनटों का काम है।

2. अगर एक बीवी से ख़ाविन्द का जी नहीं भरता और उसका दिल किसी और की तरफ़ माइल हो जाता है तो शरई हुक़ूक का ख़्याल रखते हुए मर्द ज़रूरत के तहत चार शादियाँ कर सकता है।
3. इसके बावजूद उसको पाँचवीं लड़की पसन्द आ जाए तो पहली चार मे से एक को तलाक़ देकर फ़ारिग करे और उससे निकाह कर ले यानी जो करना है जाएज़ तरीक़े से करे।
4. एक वक़्त में चार बीवियाँ रखने में यह भी हिकमत है कि कोई-न-कोई हर वक़्त हैज़ व निफ़ास से पाक अपने ख़ाविन्द की ख़िदमत के लिए हाज़िर होगी। बस जब एक काम हलाल तरीक़े से हो सकता है तो हराम में मुँह मारने की क्या ज़रूरत है।
5. अगर बीवी अपने ख़ाविन्द से मुतमइन नहीं है तो उसे शरई अदालत से ख़ुला हासिल करने का हक़ हासिल है।
6. किसी मर्द व औरत के ज़िना को साबित करना आमतौर पर नामुमकिन नहीं तो इंतिहाई मुश्किल है। शरिअत ने पर्दे का हुक्म देकर, मिली जुली महफ़िलों से मना करके और बिना इजाज़त किसी घर में दाख़िले से रोकर ज़िना के मौक़े को ख़त्म कर दिया है।
7. एक आदमी किसी मर्द व औरत को तन्हाई में बैठे देखे या हंसते मुस्कराते देखे या चूमते-लिपटते देखे, यहाँ तक कि नंगी हालत में एक-दूसरे से चिमटा हुआ देखे तो भी उसे ज़बान बंद रखनी पड़ेगी। उसे चाहिए कि मर्द और औरत को समझाए ताकि वे आइन्दा ऐसी ग़ल्ती न करें। अगर यह आदमी उन पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाएगा तो उसे चार गवाह पेश करने पड़ेगे। अगर नहीं कर सकेगा तो उसे कोड़े लगाए जाएँगे और आइन्दा के लिए गवाही क़बूल नहीं होगी बल्कि सारी उम्र की ज़िल्लत रुसवाई हासिल होगी।

8. क्या यह मुमकिन है कि मर्द व औरत ऐसी जगह ज़िना करें कि जहाँ उन्हें चार आदमी इतना क़रीब से देखें कि देखने वालों को यह भी पता चल जाए कि मर्द का अज़ू औरत की शर्मगाह में दाख़िल हो चुका है। चंद फ़िट की दूरी से देखने वाले भी बात की गवाही नहीं दे सकते। पोशीदा आज़ा मिलाप के वक़्त और पोशीदा हो जाते हैं उन पर ग़ैर की नज़र पड़नी मुमकिन नहीं होती।
9. क्या ज़िना करनेवाले मर्द व औरत इतने बेशर्म हैं कि इतने लोगों को क़रीब से देखने का मौक़ा फ़राहम करेंगे और फिर भी अमल करते रहेंगे। एक-दूसरे से अलैहिदा नहीं होंगे।
10. क्या ज़ानी मर्द और ज़ानी औरत इतने बेख़ौफ़ हैं कि उन्हें गवाहों के देखने की परवाह ही नहीं और वे एक-दूसरे से मिलाप के वक़्त एक चादर अपने ऊपर ले सकते ताकि लोगों की निगाहों से बच जाएँ।
11. अगर ज़िना करनेवाले मर्द व औरत इस तरह से ज़िना करते हैं कि उन्हें एक नहीं दो नहीं तीन नहीं बल्कि चार आदमी खुल्लम-खुल्ला क़रीब से ज़िना करते देख लेते हैं तो गोया गवाहों को गवाही का ख़ुद मौक़ा देते हैं। इसका मतलब तो यह हुआ कि या तो उन्हें हुक्मे ख़ुदावन्दी का ख़्याल ही नहीं या उन्हें किसी सज़ा का ख़ौफ़ नहीं। न तो वे शरिअत के हुक्म का लिहाज़ करते हैं न ही उन्हें अपनी इज़्ज़त व बेइज़्ज़ती क एहसास है। ऐसे लोग तो इनसाननुमा जानवर हैं। उनको सज़ा न दी जाए तो सारे मआशरे में बेहयाई नंगापन फैलने का ज़रिया बनेंगे। बेहतर यही है कि उन्हें ऐसी सख़्त सज़ा दी जाए कि अव्वल तो उनका अपना दिमाग़ साफ़ हो जाए। दूसरे बाक़ी लोगों को इबरत हासिल हो ताकि आइन्दा बेहयाई की जुर्रत न कर सकें। लिहाजा शरिअत में ग़ैर-शादीशुदा ज़ानी के लिए सौ कोड़े और शादीशुदा ज़ानी के लिए रजम को हुक्म दिया गया है।

रजम वहशियाना सज़ा नहीं

ऊपर लिखी वज़ाहतों से यह बात अच्छी तरह साफ़ हो गई कि दीन इस्लाम ने शहवत को जाएज़ तरीक़े से पूरा करने के लिए निकाह बहुत आसान बनाया है। फिर ज़िना के मौक़ों को पर्दे का हुक्म देकर मिली जुली महफ़िलों से रोकरकर बहुत मुश्किल बना दिय है। ऐसी सूरतेहाल में ज़िना का सुबूत मिलने की चंद सूरतें हैं :

1. कोई शख़्स जबरन ज़िना करे और औरत अदालत में गवाही देकर साबित करे कि एक दरिन्दानुमा इनसान ने मेरी इज़्ज़त को लूट लिया है और मर्द अपने जुर्म का इक़रार कर ले। दूसरे लफ़्ज़ों में औरत यह कह रही है :

- इस आदमी ने समाज में मुझे ब-इज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने से महरूम कर दिया।
- इस आदमी ने मुझे क़ल्बी सुकून से महरूम करके मेरी ज़िन्दगी को अज़ाब बना दिया।
- इस आदमी ने मुझे ग़ैर-महफ़ूज़ होने का एहसास दिलाकर सारी ज़िन्दगी के लिए ख़ौफ़ में मुब्तला कर दिया।
- इस आदमी ने मेरा पर्दा बकारत ज़ाएल करके मुझे होनेवाले ख़ाविन्द की नज़र से बेआबरू कर दिया।
- इस आदमी ने मुझे हामला बनाकर हराम का बच्चा जनन पर मजबूर कर दिया। लोग ताने दिय करेंगे। मैं इस बच्चे की परवरिश कैसे करूँगी। कौन इसका वली बनेगा।
- मेरा होनेवाला बच्चा सारी उम्र हरामी यानी वलदुज़्ज़िना कहलाएगा।

लिहाज़ा क़ाज़ी साहब मुझ पर और मेरे होनेवाले बच्चे पर जो ज़ुल्म हुआ है, उसका बदला लिया जाए। इंसाफ़ का राग अलापने वाले ज़रा अपने ज़मीर की अदालत से फ़ैसला लें कि इस मामले में मज़लूमा का साथ दिया जाए या ज़ालिम

का साथ दिया जाए। ज़ालिम का साथ देने का मतलब तो यह है कि इसे मामूली सज़ा देकर आज़ाद कर दिया जाए यानी उसे इस काम का एक और मौक़ा दिया जाए। मज़लूमा का साथ देने का मतलब यह है कि दरवाज़ा बंद कर दिया जाए। शरिअत ने अदल व इंसाफ़ के उसूलों की हिमायत करते हुए ज़ुल्म के दरवाज़े को बंद करने का हुक्म दिया। लिहाज़ा ज़ानी को ऐसी सज़ा मिलनी चाहिए कि लोग उसे देखकर इबरत हासिल कर सकें।

2. मर्द व औरत रज़ामंदी से ज़िना करें फिर ख़ौफ़े ख़ुदा से डरकर, क़यामत की रुसवाई से बचने के लिए और दुनिया में पका होने के लिए ख़ुद क़ाज़ी के सामने जुर्म का इक़रार कर लें। इस सूरत में दुनिया की जितनी बड़ी सज़ा भी हमल जाए वह आख़िरत की ज़िल्लत व रुसवाई और अज़ाब के मुक़ाबले में कोई हैसियत ही नहीं रखती।

3. मर्द व औरत ज़िना करें मगर चार शरई गवाह उनके खुल्लम- खुल्ला अलल ऐलान बेख़ौफ़ व ख़तर इस तरह ज़िना करते देखें कि मर्द का अज़ू औरत की शर्मगाह में पेवस्त हो चुका है। अदालत में सुबूत मिल जाने के बाद दो सूरतें मुमकिन हैं। एक तो यह कि मर्द व औरत को मामूली सज़ा देकर आज़ाद कर दिया जाए ताकि वह बकरे-बकरी, गधे-गधी या कुत्ते-कुतिया की तरह सड़कों के किनारे खड़े लेटे दोबार यह काम करें और दूसरों को भी दावते दें। इस तरह तो समाज में से हया का जनाज़ा निकल जाएगा। इनसान और हैवान का फ़र्क़ ख़त्म हो जाएगा।

दूसरी सूरत यह है कि मर्द व औरत को सख़्ततरीन सज़ा देकर बेहयाई के दरवाज़ें को बंद कर दिया जाए। शरिअत ने शर्म व हया की पासदारी करते हुए रजम का हुक्म देकर ज़ानी और ज़ानिया को बरसरे आम ऐसी सज़ा तजवीज़ की जाए ताकि लोग

आइन्दा के लिए कानों को हाथ लगाएँ कि हमने ऐसी बेहयाई नहीं करनी।

साबित हुआ कि रजम वहशियाना सज़ा नहीं बल्कि निहायत इनसाफ़ भरी सज़ा है। अदल व इंसाफ़ की हिमायत करनेवाले लोग इस हक़ीक़त को तसलीम करने से इनकार नहीं कर सकते।

रजम से वहशत क्यों?

आम लोगों को रजम से वहशत महसूस होने की दो वजह हैं:

1. ज़ानी मौत के घाट उतार दिया जाता है

अगर ठंडे दिल व दिमाग़ से सोचा जाए तो मौत की सज़ा कोई अनहोनी बात नहीं है। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में इसकी कई मिसालें हैं।

1. जमादात में मिसालें

अगर किसी इमारत को बनाते वक़्त मार्बल पत्थर या टाइल लगाई जाए तो ज़रूरत के तहत पत्थर व टाइलों को काट-काट कर टुकड़े कर दिया जाता हैं बदनुमा हिस्सों से नजात हासिल करके ऐसे पत्थर लगाए जाते हैं जो ख़ूबसूरत लगें। इसी तरह ज़ानी समाज का बदनुमा फ़र्द है। उसे रजम के ज़रिए मौत की नींद सुलाकर साफ़ सुथरे पाकीज़ा समाज के परवान चढ़ने दिया जाता है।

2. नबातात (पेड़-पौधों) में मिसालें

खेतीबाड़ी और काश्तकारी का इल्म रखनेवाले लोग जानते हैं कि कभी-कभी खेतों में अपने आप उगनवाले पौधे उग आते हैं। अगर उनको उखाड़ा न जाए तो ये खेतों में बीमारी यानी वाइरस वग़ैरह फैलने का ज़रिया बनते है बल्कि इज़ाफ़ी ख़ुराक इस्तेमाल करके खेती के असल पौधों को कमज़ोर कर देते हैं। इन पौधों को दवाईयों के ज़रिए मार दिया जाता है या उनको जड़ से उखाड़ दिया जाता है। दुनिया के हर मुल्क में ऐसी दवाईयाँ

आसानी से मिलती हैं। कोई एतिराज़ नहीं करता कि एक पौधे की ज़िन्दगी को क्यों ख़त्म किया जाता है।

फलों और फूलों के पेड़ों में शाख़ तराशी रोज़ाना का मामूल बन चुका है। अगर कोई माली को देखे कि उसने तर व ताज़ा पत्तों वाली शाखें काटकर ढेर लगा दिया तो ख़ुश होते हैं कि अब हमारा बाग़ या लॉन ख़ूबसूरत नज़र आएगा। फलदार पेड़ की जो शाखें सूख जाती हैं उन्हें काटा न जाए तो बाक़ी शाखों का फल कम हो जाता है। लिहाज़ा उनकी शाख़ तरीशी लाज़मी समझी जाती है। समाज में ज़ानी आदमी को ज़िन्दा रहने दिया जाए तो माहौल व समाज में बेहयाई का वाइरस फैल जाता है। लोगों में हया के फल-फूल कम हो जाते हैं। इसलिए ज़ानी की सर तराशी ज़रूरी है ताकि बाक़ी समाज़ को बेहयाई की ख़तरनाक बीमारी से बचाया जा सके।

3. हैवानात में मिसालें

हैवानात में भी नुक़सानदेह जानवर को मारना रोज़मर्रा का मामूल है।

- आम लोग सांप बिच्छू को देख लें तो उसको मारकर ख़ुश होते हैं कि हमने ईज़ा (तकलीफ़) पहुँचाने वाली चीज़ से छुटकारा पा लिया। ज़ानी को रजम करके एक मूज़ी से निजात पाई जाती है।
- जंगली हैवानात की हिफ़ाज़त का दावा करनेवाले लोग जब देखते हैं कि कोई शेर, चीता, भेड़िया या हाथी वग़ैरह इनसान का दुश्मन बन गया है तो बावजूद हिफ़ाज़त का दावा करने के ऐसे जानदार को ख़ुद ही गोली मारकर हलाक कर देते हैं। इसी तरह ज़ानी शख़्स हया का दुश्मन बन जाता है। रजम के ज़रिए उसको ख़त्म करके बक़िया इनसानों की इज़्ज़तों की हिफ़ाज़त को यक़ीनी बना लिया जाता है।
- पालतू जानवरों में जब मुँह खर की बीमारी आ जाए तो

हज़ारों जानवरों को हलाक करके उनके गोश्त को दफ़न कर दिया जाता है या जला दिया जाता है। हुकूमतें ऐसा काम करके मुतमइन हो जाती हैं कि हमने इनसानों को जानी नुक़सान से बचा लिया है। ज़ानी आदमी के अन्दर भी शर्मगाह बेक़ाबू होने की बीमारी आ जाती है। दीने इस्लाम ने उसे रजम के ज़रिए ख़त्म करने का हुक्म दिया है। इससे बक़िया इनसानों को अख़्लाक़ी नुक़सान से बचा लिया जाता है।

- मुर्ग़ियों में वाइरस की बीमारी फैल जाने से लाखों मुर्ग़ियों को ज़मीन में दफ़न कर दिया जाता है। इसी तरह ज़ानी शख़्स में बेहयाई का वाइरस फैल जाने से उसको भी रजम कर दिया जाता है। मुहज़्ज़िब क़ौमें अख़बारों में ख़बरें शाए करती हैं कि हमने इतने जानवरों को वाइरस की वजह से हलाक कर दिया। क्या मुसलमान यह नहीं कह सकते कि हमने बेहयाई के वाइरस वाले शख़्स को ख़त्म करके बाक़ी लोगों को बचा लिया।

4. इनसानों में मिसालें

- अगर इनसान के जिस्म के किसी अज़्व में कैंसर हो जाए तो उसे काटकर अलग कर दिया जाता है। कितनी औरतें छाती के कैंसर की वजह से अपने पिस्तान कटवा देती हैं। बाद में ख़ुश होती हैं कि हमें कैंसर से निजात मिल गई।
- शूगर के मरीज़ों में कई मर्तबा पाँव पर फोड़ा बन जाता हैं ऐसी सूरतेहाल में पाँव को काटकर बाक़ी जिस्म को बीमारी से बचा लिया जाता है। कुछ लोगों की टांग में नाक़ाबिले इलाज फोड़ा होने की वजह से उनकी पूरी टांग को काट दिया जाता है। इसी तरह ज़ानी शख़्स भी समाज के जिस्म पर फोड़े की तरह होता है। उसको रजम करके फोड़े का आप्रेशन कर दिया जाता है। समाज को बेहयाई की बीमारी से बचा लिया जाता है।

- दुनिया के तरक़्क़ीयाफ़्ता मुल्कों में अभी अगर कोई शख़्स मुल्क के साथ ग़द्दारी करे तो उसे सज़ाए मौत दी जाती है। उसे इनसाफ़ के नमालेवा हर्गिज़ बुरा नहीं समझते। अदालत सज़ाए मौत का हुक्म जारी करें तो पूरे मुल्क में ख़बरें सुनाई जाती है ताकि आम लोगों को पता चल जाए और आइन्दा कोई दूसरा शख़्स ऐसी हरकत दोहराने की जुर्रत न करे। दीने इस्लाम ने भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से ग़द्दारी करनेवाले ज़ानी शख़्स को सज़ाए मौत का हुक्म दिया और आम लोगां के मजमें में हद जारी करके बता दिया कि आइन्दा कोई दूसरा आदमी ऐसी हरकत दोहराने की जुर्रत न करे।

ऊपर लिखी मिसालों से पता चलता है कि जमादात (पत्थर वग़ैरह), नबादात (पेड़ पौधों), हैवानात और इनसान सबमें यही उसूल काम कर रहा है कि बीमार अज़ू को ख़त्म करके बाक़ी जिस्म को बचा लिया जाए। यह उसूले फ़ितरत है। दीने इस्लाम क्योंकि दीने फ़ितरत है इसलिए शरिअत में ज़ानी को संगसार करके बाक़ी मआशरे को बेहयाई के रूहानी मर्ज़ से बचाने का हुक्म दिया गया है।

2. मजमे में संगसार करना

आम लोगों को रजम से वहशत महसूस होने की दूसरी वजह मजमे में ज़ानी को संगसार करना है। यह मंज़र सोचकर ही दिल पर दहशत सवार हो जाती है और अगर कोई देख ले तो फिर उसका क्या बनेगा। मगर शरिअत का मक़सद तो यही है कि लोग एक मर्तबा किसी को रजम होता देख लेंगे तो बाक़ी सबकी मस्तियाँ ख़त्म हो जाएँगी। हर किसी को गुनाह के बाद अपने अंजाम का अच्छी तरह पता होगा। यह दीने इस्लाम का हुस्न है कि एक ज़ानी को रजम करके बाक़ी समाज को बेहयाई के वाइरस से महफ़ूज़ कर लिया। इससे साबित हुआ कि इस्लामी सज़ाए वहशियाना नहीं बल्कि मुन्सिफ़ाना हैं। मज़लूम की

फ़रियाद सुनी जाती है और ज़ालिम को सज़ा मिलती है।

रजम के फ़ायदे

1. कोई मर्द किसी औरत को कमज़ोर जानकर, अकेला देखकर या ग़रीब व बेसहारा समझकर उसकी इज़्ज़त व आबरू लूटने की कोशिश नहीं करेगा।
2. कोई औरत किसी मर्द को फाँसने के लिए मकर नही करेगी। बेपर्दगी ख़त्म हो जाएगी।
3. कोई औरत जिस्म फ़रोशी को अपना कारोबार नहीं बनाएगी। लोगों के नवजवान लड़कों को भटका नहीं सकेगी। न बाज़ारे हुस्न का काराबार चल सकेगा। न ही अमीर इलाक़ों की बड़ी कोठियों में शराब व शबाब की महफ़िले सज सकेंगी।
4. मर्द अपनी बीवी पर तवज्जोह ज़्यादा दिया करेंगे। बाज़ार में बेपर्दा औरतें गुनाह की दावत नहीं दे सकेंगी। न ही मॉडल गर्ल्स को देखकर ख़ाविन्द बीवियों से उचाट होंगे।
5. चोरी छिपे ताल्लुक़ात क़ायम करनेवाले और करने वालियाँ ख़त्म हो जाएँगी। याराना दोस्तियाँ ख़त्म हो जाएँगी। कम्प्युटर चैटिंग ख़त्म हो जाएगी। नवजवान लड़के और लड़कियों का वक़्त बरबाद नहीं होगा।
6. हंसते बसते घरों को उजाड़ने वाले ख़त्म हो जाएँगे। न कोई मर्द किसी की बीवी को उसके ख़ाविन्द के ख़िलाफ़ भड़का सकेगा। न कोई औरत किसी मर्द को उसकी बीवी से बेज़ार कर सकेगी। हर कोई अपने-अपने घर में आराम व सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार सकेगा।
7. ख़ाविन्द अगर दफ़्तर, दुकान, खेत पर काम के लिए चला गया तो कोई पीछे उसकी बीवी को घर में अकेला पाकर उसकी इज़्ज़त लूटने की कोशिश नहीं करेगा। बीवी को भी ख़ौफ़ नहीं होगा और ख़ाविन्द को भी पीछे कि फ़िक्र नहीं होगी।

8. अमीर लोग ग़रीब लोगों की बीवियों और बेटियों पर ग़लत नज़र नहीं रख सकेंगे।
9. अमीर लोग एक बीवी के साथ कई-कई दाशताएँ नहीं रख सकेंगे।
10. यह नही होगा कि औरत घर किसी का बसाए और दिल में किसी और को बसाए।
11. बिन ब्याही माँए अपने बच्चों को गंदगी के ढेर पर नहीं फेंक सकेंगी।
12. औरत घर में या सफ़र व हज़र में अपने आपको महफ़ूज़ समझेगी। अगर यमन से मदीना मुनव्वरा का सफ़र अकेले करेगी तो भी कोई उसकी जान, उसके माल, उसकी इज़्ज़त व आबरू की तरफ़ हाथ नहीं उठाएगा। हया व पाकदामनी के माहौल में अल्लाह तआला की रहमतें हर वक़्त बारिश की तरह बरसेंगी। रिज़्क़ में बरकत होगी, तलाक़ें कम हो जाएँगी। हर घर मियाँ-बीवी के लिए जन्नत का छोटा-सा नमूना बन जाएगा।
13. अगर कोई मर्द किसी औरत को फुसलाने की कोशिश भी करेगा तो वह जवाब में कहेगी :

    "My body, my life, my decision, I say no."
    "मेरा जिस्म, मेरी ज़िन्दगी, मेरा फ़ैसला। मैं कहती हूँ नहीं।"
14. अगर कोई औरत किसी मर्द को फुसलाने की कोशिश करेगी तो जवाब में सुनेगी मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ। ऐसे में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की याद ताज़ा हो जाएगी।
15. किरदार की पुख़्तगी की वजह से दुआएँ जल्दी क़बूल होंगी। हर तरफ़ रहमत के आसार ज़ाहिर होंगे। दुनिया में इस्लाम का बोल बाला और कुफ़्र का मुँह काला होगा।

आमदम बर मतलब

जिस तरह शराब की सज़ा और हुरमत दर्जा-ब-दर्जा हुई इसी

तरह ज़िना की सज़ा भी तीन मरहलों में हुई :

1. पहले मरहले में फ़रमाया दो मर्दों में बदकारी का सुबूत मिल जाए तो क़ाज़ी उन पर ताज़ीर लागू करे यानी मुनासिब सज़ा दे।
2. दूसरे मरहले में फ़रमाया :

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ

ज़ानिया औरत और ज़ानी मर्द दोनों को सौ कोड़े लगाओ। लोगां का मजमा होना चाहिए और नरमी हर्गिज़ नहीं करनी चाहिए।
3. तीसरे महरले में नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

الرجم للثيب والجلد للبكر. (بخاری صفحه۵۲)

शादीशुदा मर्द व औरत के लिए संगसारी और ग़ैर शादीशुदा के लिए सौ कोड़े मारने हैं।

ज़िना की गवाही में चार मर्दों की शर्त रखी। क्योंकि दो मर्द व दो औरत के लिए दो-दो गवाह हों तो कुल चार बने। दूसरा इस नाज़ुक मसअले में औरत की गवाही क़बूल नहीं की गई चूँकि औरतें इल्ज़ाम लगाने में जल्दबाज़ होती है।

यह भी वाज़ेह हुआ कि जब सज़ा सख़्त हो तो उसके सुबूत की शराईत भी सख़्त होती हैं। इस्लाम ने इब्तिदा में सतरपोशी का मामला करने का हुक्म दिया है लेकिन जब चार शरई गवाह सुबूत पेश कर दें तो फिर इन ज़ानी मर्द व औरत को जी भरकर रुसवा करने का हुक्म दिया है और नरमी से मना कर दिया ताकि लोग इबरत हासिल कर सकें। आमतौर पर मर्दों के हुक्म में औरतें शामिल होती हैं। इस नाज़ुक मसअले में 'अल्ज़ानिया' के लफ़्ज़ से औरत के ज़िक्र की वज़ाहत कर दी है ताकि कोई यह न समझे कि रजम का हुक्म सिर्फ़ मर्दों के लिए है।

ज़िना की सज़ा दुनिया और आख़िरत में

एक हदीस पाक से मालूम होता है कि ज़िना के छः नुक़सान हैं। तीन दुनिय के और तीन आख़िरत के है :

दुनिया के नुक़सानात

1. चेहरे की रौनक़ ख़त्म हो जाती है,
2. फ़क़्र व तंगदस्ती पैदा हो जाती है,
3. उम्र कम हो जाती है।

आख़िरत के नुक़सानात

1. अल्लाह तआला नाराज़ होते हैं,
2. हिसाब सख़्ती से लिया जाएगा,
3. दोज़ख़ में हमेशा-हमेशा रहेगा।

अहादीसे मुबारका का मुताला करने से यह बात मालूम होती है कि जो आदमी ज़िना करता हुआ और बग़ैर तौबा के मर जाए तो उस पर मुसीबतों का दरवाज़ा खुल जाता हैं अल्लाह तआला उस पर सख़्ती फ़रमाएँगे। उसको ज़िना के हर-हर अमल के बदले आख़िरत का मिलता जुलता अज़ाब होगा। उसकी तफ़सील इस तरह है :

नं.	दुनिया का अमल	आख़ित का अज़ाब
1.	ग़ैर-महरम के लिए चेहरा संवारता था।	क़यामत के दिन चेहरा स्याह होगा।
2.	ग़ैर-महरम के चेहरे को मुहब्बत की नज़र देखता था।	क़यामत के दिन चेहरे का गोश्त गिर जाएगा।
3.	ग़ैर-महरम को देखकर उसका चेहरा खिल जाता था।	क़यामत के दिन उसके चेहरे को आग से जलाया जाएगा।

4.	ग़ैर-महरह से दिल लगी की बातें करता था।	क़यामत के दिन रोता हुआ उठेगा।
5.	ग़ैर-महरम से हँसी मज़ाक करके क़हक़हे लगाता था।	क़यामत के दिन पीटता चिल्लाता उठेगा।
6.	ग़ैर-महरक से मुलाक़ात करके खुश होता था।	क़यामत के दिन ग़मगीन और उदास हालत में उठेगा।
7.	ग़ैर-महरम को शहवत की नज़र से देखता था।	क़यामत के दिन पिघला हुआ सीसा आँखों में डाला जाएगा।
8.	ग़ैर-महरम की मुलाक़ात लिए चलकर गया।	क़यामत के दिन पाँव में आग की बेड़ियाँ पहनाएँगे।
9.	ग़ैर-महरम के हाथों में हाथ डाले।	क़यामत के दिन हाथों में आग की हथकड़ियाँ पहनाएँगे।
10.	ग़ैर-महरम से ज़िना की इब्तिदा मुँह मिलाने (बोसे) से की।	क़यामत के दिन घसीटकर मुँह के बल जहन्नम में डाला जाएगा।
11.	ग़ैर-महरम की गर्दन से गर्दन मिलाई।	क़यामत के दिन गर्दन मे आग की ज़ंजीर डालेंगे।
12.	ग़ैर-महरम के सामने शर्मगाह से लिबास हटाया।	क़यामत के दिन तारकोल का लिबास पहनाएँगे।
13.	ग़ैर-महरम से मिलकर जिन्सी प्यास बुझाई।	क़यामत के दिन प्यासा उठाया जाएगा।
14.	ग़ैर-महरम से मिलाप के वक़्त जिन्सी तूफ़ान उठा।	क़यामत के दिन शर्मगाह को आग से दहकाया जाएगा।
15.	ग़ैर-महरम से मिलाप के वक़्त शर्मगाह से मनी खारिज़ हुई।	क़यामत के दिन शर्मगाह से बदबू खारिज होगी।

16.	ग़ैर-महरम के बालों में मुहब्बत से उंगलियाँ फेरी।	क़यामत के दिन बालों से पकड़कर जहन्नम में लटकाएँगे।
17.	ग़ैर-महरम के पिस्तान पकड़े और चूसे।	क़यामत के दिन पिस्तानों के बल जहन्नम में लटकाए जाएँगे।
18.	ग़ैर-महरम के जिस्म की महक सूंघी।	क़यामत के दिन जिस्म से हैरानकुन अज़ियतनाक बदबू आएगी
19.	ग़ैर-महरम के साथ एक बिसतर पर इकठ्ठे हुए।	क़यामत के दिन आग के तन्दूर में यकजा किया जाएगा।
20.	ग़ैर-महरम के साथ अपने जिस्म का खोला।	क़यामत के दिन अल्लाह तआला के सामने नंगा पेश किया जाएगा।
21.	ग़ैर-महरम से ज़िना के लिए लोगों से छिप गया।	क़यामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने बेइज़्ज़त किया जाएगा।
22.	ग़ैर-महरम से ताल्लुक़ छिपाने के लिए लोगों से झूठ बोला	क़यामत के दिन मुँह पर मुहर लगाकर आज़ा से झूठ बोला। गवाही लेंगे।
23.	ग़ैर-महरम से अपने हुस्न व जमाल की तारीफ़ें सुनीं।	क़यामत के दिन सब लोग लानतें भेजेंगे।
24.	ग़ैर-महरम से मिलते वक़्त सलाम करते थे।	क़यामत के दिन अल्लाह तआला लानतें भेजेंगे।
25.	ग़ैर-महरम के जिस्म के बोसे लिए।	क़यामत के दिन साँप पूरे जिस्म को डसेंगे।

26.	ग़ैर-महरम से ज़िना के वक़्त अंग-अंग से मज़ा पाया।	क़यामत के दिन अंग-अंग में बिच्छू डंक लगाएगा।
27.	ग़ैर-महरम के जिस्म पर इख़्तियार पाया।	क़यामत के दिन ग़ैर-महरम के शौहर को नेकियों पर इख़्तियार मिलेगा।
28.	ग़ैर-महरम के जिस्म पर सवारी की।	क़यामत के दिन ग़ैर-महरम के शौहर के गनाह उसके सर पर सवार होंगे।
29.	ग़ैर-महरम से हमेशा की दोस्ती के वादे किए।	क़यामत के दिन जहन्नम में हमेशा का अज़ाब होगा।
30.	ग़ैर-महरम से हमकलामी के लुत्फ़ व मज़े लिए।	क़यामत के दिन अल्लाह तआला से हमकलामी की लज़्ज़त से महरूम होगा।

ऊपर लिखी इबारत से साबित हुआ कि जितनी तफ़्सीली सज़ा ज़िना के अमल की मिलेगी उतनी किसी और गुनाह की नहीं मिलेगी। सबसे बड़ी सज़ा यह है कि अल्लाह तआला हमकलाम होना पसन्द नहीं करेंगे बल्कि लानतें बरसाएँगे, रुसवा करेंगे। अल्लाह तआला हमें, हमारे घरवालों को, बच्चों को, क़यामत तक आने वाली नस्लों को और जुमला ताल्लुक़ वालों की ज़िना से महफ़ूज़ फ़रमाए।

बाब -9

शहवत कैसे कंट्रोल करें

अल्लाह तआला ने इनसानी फ़ितरत में कुछ तक़ाज़े रखे हैं। मसलन कुछ वक़्त गुज़रने के बाद इनसान को भूख महसूस होती है तो हर इनसान के खाने का बंदोबस्त करता है। प्यास महसूस होती है तो पानी पीने का इंतिज़ाम करता है। जब काम करके थक जाता है तो नींद की कैफ़ियत महसूस करता हैं लिहाज़ा सोने के लिए चारपाई बिसतर का एहतिमाम करता है। जब पेशाब पाख़ाने का तक़ाज़ा हो तो बैतुल-ख़ला जाकर फ़राग़त हासिल करता है। ये सबके सब तबई तक़ाज़े हैं। इनको इनसान थोड़ी देर के लिए तो रोक सकता है मगर इनको पूरा किए बग़ैर आराम व सुकून नहीं पा सकता।

इसी तरह जब इनसान बालिग़ हो जाए तो उसे अपने अन्दर शहवत का जिन्सी तक़ाज़ा महसूस होता है। इस तक़ाज़े को इनसान कुछ अरसे के लिए तो ज़ब्त कर सकता है मगर इसको पूरा किए बग़ैर सुकून नहीं पा सकता।

1. शहवत का ख़ुदाई इलाज

अल्लाह तआला ने मर्द व औरत के लिए निकाह को शहवत का इलाज बताया है। इरशादे बारी तआला है :

فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَاءِ

औरतों में से जो तुम्हें पसन्द हों उनसे निकाह करो।

(निसा :4)

निकाह के ज़रिए मर्द और औरत आपस में मिलाप करके शहवत का बेहतरीन इलाज करते हैं। शहवत की हालत में

तबियत में अजीब तरह का इंतिशार व बेचैनी होती है। ऐसी हालत में न इबादत में दिल लगता है न तसल्ली से कोई और काम होता है। दिल व दिमाग़ पर ऐसा नशा छा जाता है कि उसे पूरा किए बग़ैर कोई चारा नहीं होता। मियाँ-बीवी के मिलाप के बाद वह सब नशा हिरन हो जाता है। तबियत में आसूदगी महसूस होती है। हर रह का तनाव ख़त्म हो जाता है। इनसान एक दूसरे के लिए अतिया ख़ुदावंदी और तोहफ़ा आसमानी है। इरशादे बारी तआला है :

وَمِنْ اٰیٰتِہٖۤ اَنْ خَلَقَ لَکُمْ مِّنْ اَنْفُسِکُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْکُنُوْۤا اِلَیْھَا

और उसकी निशानियों में से है कि पैदा किया है तुम्हारे नफ़्सों से तुम्हारे लिए जोड़े ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो। (रूम : 30)

इस आयत मुबारक से साबित हुआ कि मर्द व औरत एक दूसरे के लिए कुदरत की बेहतरीन निशानियाँ हैं। उन्हें एक दूसरे से मिलकर सुकून नसीब होता है। दीने इस्लाम क्योंकि दीने फ़ितरत है। उसने रहबानियत (सन्यास) का हुक्म नहीं दिया। न ही बुद्धमत की तरह सारी उम्र बग़ैर शादी के गुज़ारने को पसन्द किया और न ही शादी को मारिफ़त के हासिल होने में रुकावट कहा बल्कि इरशादे बारी तआला है :

और अलबत्ता तहक़ीक़ हमने आपसे पहले भी रसूल भेजे और हमने उनके लिए बीवियाँ और औलाद बनाई।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी उम्मत को निकाह करने का हुक्म दिया और उसे निस्फ़ दीन बतलाया।

मिश्कात शरीफ़ में एक रिवायत नक़ल की गई है :

اذا تزوج العبد فقد استکمل نصف الدین (مشکوۃ کتاب النکاح)

जिस बन्दे ने शादी कर ली उसने निस्फ़ दीन को पूरा कर लिया।

इफ़्फ़त व पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए शादी बेहतरीन इलाज है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद है :

من اراد ان یلقی اللہ الیہ طاھرا مطھرا فلیتزوج الحرائر ۔(مشکوۃ)

जो शख़्स अल्लाह तआला से पाक साफ़ मिलना चाहे उसको शरीफ़ औरत से शादी करनी चाहिए।

इससे मालूम हुआ कि शादी करने से न सिर्फ़ शाहवत से छुटकारा मिल जाता है बल्कि सब बड़े-बड़े गुनाहों से बचना भी आसान हो जाा है। असबाब के एतिबार से गुनाहों से मुकम्मल बचाव के लिए शादी लाज़मी है। ग़ैर-शादीशुदा आदमी मुजाहिदा करके अपने आपको जिन्सी गुनाह से बचा भी लें तो भी अपने दिल व दिमाग़ को जिन्सी ख़्यालात से नहीं बचा सकता। उसके लिए किसी भी वक़्त गुनाह में मुलव्विस होने का ख़तरा मौजूद रहता है। शादी के बाद यह ख़तरा ख़त्म तो नहीं होता हाँ घट ज़रूर जाता है। दूसरे लफ़्ज़ों में इनसान के लिए अपनी शहवत को कंट्रोल करना आसान हो जाता है यानी हलाल तरीक़े से शहवत पूरा करने की बिना पर हराम से बचना आसान होता है।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने 'फ़तहुल-बारी' में लिखा है :

ویتزوج لکسر الشھوۃ واعفاف النفس وتکثیر النسل(فتح الباری ۲۰،۲۴)

शादी शहवत तोड़ने, नफ़्स को अफ़ीफ़ बनाने और नस्ले इनसानी को बढ़ाने का ज़रिया है।

बाज़ अहादीस से साबित होता है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बग़ैर उज़्र शादी न करनेवालों से नाराज़गी का इज़्हार फ़रमाया है। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है :

اتزوج فمن رغب عن سنتی فلیس منی (بخاری باب ترغیب النکاح)

मैं शादी करता हूँ बस जो मेरे तरीक़े से इन्हिराफ़ (फिरे) वह मुझसे नहीं।

मुझसे नहीं का मतलब यह है कि उसका मेरे साथ कोई

ताल्लुक़ नहीं। वह मेरी उम्मत में से नहीं हैं नाराज़गी ज़ाहिर करने के लिए इससे ज़्यादा सख़्त अन्दाज़ और क्या हो सकता है?

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि अकाफ़ बिन बशर तमीमी रज़ियल्लाहु अन्हु एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने दर्याफ़्त किया, "ऐ अकाफ़ तुम्हारी बीवी है? उन्होंने कहा, नहीं। फिर पूछा क्या तुम्हारे पास बांदी है? उन्होंने कहा, नहीं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया, तुम ख़ुशहाल हो, शादी करने की सालहियत रखते हो फिर भी शादी नहीं की तो :

اذا انت من اخوان الشياطين (عن احمد كتاب النكاح جمع الفوائد)

तब तो तुम शैतान के भाईयों में से हो।

इस इबारत का मक़सद व मंशा एक आम तालिबे इल्म भी आसानी से समझ सकता है।

शहवत का बेहतरीन इलाज यही है कि मर्द अपनी बीवी से जी भरकर सोहबत करे और ग़ैर-महरम से बेवास्ता हो जाए। मशहूर है कि अगर घर में पेट भरकर दाल रोटी खा ले तो बाहर के हलवे, बिरयानियाँ, मुर्ग़ मुसल्लम खाने को भी दिल नहीं करता। नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम की एक हदीस पाक से भी मालूम होता है कि अगर किसी आदमी की नज़र ग़ैर-महरम पर पड़ जाए और उसका हुस्न व जमाल तबियत को भा जाए तो आदमी को चाहिए कि घर आकर अपनी बीवी से हमबिस्तरी करे। इसलिए कि जो कुछ उस औरत के पास था वह सब कुछ बीवी के पास मौजूद हैं इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है :

ان المرأة تقبل في صورة شيطان وتدبر في صورة شيطان اذا احدكم اعجبته المرأة فوقعت في قلبه فليعمد الى امرأته فليواقعها فان ذالك يرد ما في نفسه.

बिला शुब्ह औरत शैतान की सूरत में आती है और शैतान की सूरत में वापस जाती हैं जब तुममें से किसी को औरत अच्छी लगे, दिल माइल हो तो चाहिए कि बीवी से हमबिस्तरी करे। इस तरह असर ख़त्म हो जाएगा।

कभी-कभी औरत अपनी जिस्मानी बनावट की वजह से मर्द को पहली नज़र में अपनी तरफ़ मुतवज्जेह कर लेती है। मर्द के अन्दर शहवत का समुद्र जोश मारने लगता है। इस जोश की कैफ़ियत का इलाज भी नही अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह तजवीज़ फ़रमाया कि अपनी बीवी से हमबिस्तरी कर लो ताकि मादा ख़ारिज हो जाए। शैतान को गुनाह से मुलव्विस करने की हिम्मत न हो। शरअ मुस्लिम अल्लमा नूरी रह. इस हदीस के तहत लिखते हैं :

انه يستحب لمن رأى امرأةفتحركت شهوته ان ياتى امرأته.
فليواقعها ليدفع شهوته وتسكن نفسه ويجمع قلبه على ما هو بصدده.
(شرح مسلم ١٠٢٢

किसी औरत को देखने से जब किसी की शहवत में उभार पैदा हो तो उसको चाहिए कि बीवी से हमबिसतरी करे ताकि दिल का तकाज़ा ठंडा पड़ जाए और नफ़्स को सुकून मिले और दिल जिस बात की दरपे है वह जाती रहे।

शरअ शरीफ़ ने इसीलिए कुछ वक़्तों में बीवी से हमबिस्तरी को मुस्तहब कहा है :

- सफ़र में जाने से पहले,
- सफ़र से वापस आने के बाद,
- हज व उमरा का एहराम बाँधने से पहले,
- ग़ैर-महरम पर नज़र पड़ने और तबियत चाहने के बाद,
- हैज़ व निफ़ास का गुस्ल करने के बाद।

ऊपर लिखी मिसालों से मालूम होता है कि जाएज़ तरीक़े से शहवत को पूरा करने से नाजाएज़ तरीक़ों से बचाव आसान हो जाता है। मर्द को चाहिए कि बीवी को अल्लाह तआला की नेमत समझे और उसकी ख़ूब क़द्र करे। उसे ख़ुश रखने की हर मुमकिन कोशिश करे। इसी तरह बीवी को चाहिए कि अपने ख़ाविन्द को अल्लाह तआला की अता समझे। उसको दिल खोलकर प्यार दे। उसकी ख़िदमत में कोताही न करे। उसे दिली सुकून पहुँचाने की हर मुमकिन कोशिश करे। इस तरह मियाँ-बीवी दोनों को अल्लाह तआला की रज़ा नसीब होती है। एक हदीस पाक में आया है :

> "जब बीवी ख़ाविन्द को देखकर मुस्कराती है या ख़ाविन्द बीवी को देखकर मुस्कराता है तो अल्लाह तआला उन दोनों को देखकर मुस्कराता है।"

इसलिए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने शहवत का बेहतरीन इलाज शादी करना ही बतलाया है। इरशाद नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है :

> يا معشر الشباب من استاع منكم البائة فليتزوج فانه اغض للبصر واحفظ للفرج (عن عبد الله ابن مسعود رضي متفق عليه)

> ऐ नवजवानों की जमाअत! जो तुममें से निकाह की ताक़त रखता हो वह निकाह करे क्योंकि निकाह करना नज़र को छिपाता है और शर्मगाह को महफ़ूज़ करता है।

इस हदीस पाक ने सूरतेहाल को ख़ूब अच्छी तरह वाज़ेह कर दिया। और ज़्यादा कलाम की गुंजाइश ही नहीं रही

2. शहवत का क़ुरआनी इलाज

अगर किसी आदमी के लिए शादी करने में शरई रुकावटें हैं तो उसको चाहिए कि सब्र व ज़ब्त से काम ले और अपनी पाकदामनी की हिफ़ाज़त करे। इरशादे बारी तआला है :

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ

और चाहिए कि अपने आपको रोक रखें वे लोग जिनको नहीं मिलता निकाह का सामान, यहाँ तक कि अल्लाह तआला उनको मुक़द्दर दे अपने फ़ज़्ल से।

अमूमी तजरिबा है कि पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारनेवाले लोगों के लिए अल्लाह तआला जल्दी निकाह का रास्ता हमवार कर देते है। हज़रत अबुहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी अलैहस्सिलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

ثلاثة حق على الله عونهم. المكاتب الذى يريد الاداء والناكح الذى يريد العفاف. والمجاهد فى سبيل الله. (مشكوة باب النكاح)

तीन शख़्सों की मदद अल्लाह तआला पर लाज़िम है। एक मकातिब (गुलाम) जो पैसे अदा करने का इरादा रखता हो। दूसरा निकाह करनेवाला जो पाकदामन रहना चाहता हो और तीसरा अल्लाह की राह में जिहाद करनेवाला।

सोचने की बात है कि जिस आदमी की मदद अल्लाह तआला करे उसे मंज़िल पर पहुँचने से कौन रोक सकता है। क़ुरआन मजीद का मुताला करने से यह बात वाज़ेह होती है कि शहवत पर क़ाबू करने के लिए चार काम बहुत फ़ायदेमंद हैं :

1. बद नज़री से परहेज़

इरशादे बारी तआला है :

قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ

मोमिनों को कह दीजिए कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। (नूर : 30)

बद नज़री से इनसान के अन्दर शहवत की आग भड़क उठती है। जिस तरह बटन दबाने से मशीन चल पड़ती है इसी

तरह ग़ैर-महरम पर नज़र पड़ने से इनसान के जिस्म में शहवत की आज़ा हरकत में आ जाते हैं। जो लोग पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारना चाहते हों उनके लिए बदनज़री से बचना लाज़मी है। नज़र पाकीज़ा न हो तो शहवत की आग भड़कने से रोकना नामुमकिन है। इसीलिए क़ुरआन मजीद में निगाहें नीची रखने का हुक्म है। साथ ही शर्मगाह की हिफ़ाज़त का हुक्म है। इससे साबित हुआ कि ये दोनों चीज़ें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

2. फ़ासिक़ीन की मुहब्बत से परहेज़

शवहत को क़ाबू करने का दूसरा तरीक़ा यह है कि इनसान फ़ासिक़ों की सोहबत से परहेज़ करे। फ़ासिक़ व फ़ाज़िर लोगों का कलाम कभी-कभी इनसान को नाग की तरह डस लेता है और रूहानी मौत हो जाती है।

इरशादे बारी तआला है :

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ۝

न रोके इससे आपको वह शख़्स जो यक़ीन नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिशात के पीछे लगा हुआ है, पस तू गिर पड़ेगा। (ताहा : 16)

इमाम ग़ज़ाली रह. ने लिखा है कि यार-बद, मार-बद (सांप) से भी ज़्यादा बुरा होता है। इसलिए के सॉप के डसने से जिस्मानी मौत वाक़ेअ होती है जबकि यार-बद के कलाम से रूहानी मौत वाक़ेअ हो जाती है।

इसके अलावा यार-बद शैतान से भी ज़्यादा बुरा होता है। इसलिए कि शैतान तो इनसान के दिमाग़ में सिर्फ़ गुनाह का ख़्याल डालता है जबकि यार-बद हाथ पकड़कर इनसान से गुनाह करवाता है। सैंकड़ों नवजवान ऐसे हैं कि पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे मगर किसी फ़ासिक़ दोस्त की वजह से ज़िना कर गुज़रे।

3. नमाज़ के ज़रिए मदद

इरशादे बारी तआला है :

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ

और मदद चाहो सब्र के साथ और नमाज़ के साथ।

इनसान को चाहिए कि शहवत को सब्र के ज़रिए क़ाबू करे। जब देखे कि तूफ़ान ज़्यादा उठ खड़ा हुआ है तो नमाज़ पढ़कर अल्लाह तआला से मदद माँगे। अल्लाह तआला दिल में ठंडक डाल देंगे। ऐसे वक़्त में दो रकअत सलातुल-हाजत पढ़कर अल्लाह तआला से दुआ करे। हैरान करनेवाले नतीजे सामने आएँगे।

इरशादे बारी तआला है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ

बेशक नमाज़ फ़ाहशी और बुरे कामों से रोकती है।
(अनकबूत : 45)

ग़ैर-शादीशुदा आदमी के लिए ईशा की नमाज़ के बाद या नमाज़ फ़ज्र के वक़्त दो रकअत पढ़कर अल्लाह तआला से शहवत के क़ाबू में होने की दुआ माँगना तीर ब-हदफ़ इलाज़ है। शहवत के उठते तूफ़ान रुक जाते हैं, सैलाब के आगे बाँध बंध जाते हैं। इफ़्फ़त व पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारना आसान हो जाता है।

4. कसरत ज़िक्रे इलाही

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि फ़िक्र की गंदगी ज़िक्र से दूर होती है। दिमाग़ में हर वक़्त शैतानी, शहवानी, नफ़्सानी ख़्यालात की भरमार को फ़िक्र की गंदगी कहते हैं। नवजवान शख़्स अपने ख़्यालात की दुनिया में ख़्याली महबूबा से मिलाप का तसव्वुर करके शहवत के मज़े लेता है। यहाँ तक कि उठते बैठते चलते फ़िरते यही ख़्यालात दिमाग़ में छाए होते हैं। अगर इस मर्ज़का इलाज न किया जाए तो मामला इतना बिगड़ जाता है कि ऐन नमाज़ की हालत में भी ख़्यालात की सैर चल रही होती है—

मुझे क्या पता था क़याम का मुझे क्या ख़बर थी रुकू की

तेरे नक़्शे पा की तलाश थी के मैं झुक रहा था नमाज़ में
इसीलिए नमाज़ उठक-बैठक के सिवा कुछ नहीं होती।
अल्लामा इक़बाल ने सच कहा है—
मैं जो सर बसज्दा हुआ कभी तो ज़मीं से आने लगी सदा
तेरा दिल तो है सनम आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ मे
ऐसी सूरतेहाल में ज़िक्र की कसरत इनसानी फ़िक्र को गंदगी से पाक कर देती है। तजरिबा शर्त है।

3. शहवत का नबवी इलाज

1. रोज़े रखना

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स निकाह पर क़ुदरत न रखता हो उसे रोज़े रखने चाहिए। इरशाद नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है :

فمن لم يستطع فعليه بالصوم فانه له وجاء.

जो निकाह न कर सके वह रोज़े रखे क्योंकि उसके लिए वजा है।

"वजा" का मतलब शहवत को तोड़ने वाला या ख़त्म करने वाला है। रोज़े रखने का मक़सद भूखा रहना यानी पेट ख़ाली रखना है। इससे तकब्बुर और शहवत दोनों का तोड़ होता है। एक मर्तबा हज़रत बायज़ीद बुसतामी रह॰ फ़ाक़े के फ़ज़ाईल बयान फ़रमा रहे थे। किसी ने पूछा कि यह भी कोई फ़ज़ीलत की चीज़ है? फ़रमाया, हाँ अगर फ़िरऔन को फ़ाक़े आते तो ख़ुदाई का दावा न करता। इससे मालूम हुआ कि ये सब मस्तियाँ पेट भरे होने की वजह से होती हैं। जिस नवजवान को पहले रोज़े रखने की आदत न हो उसे चाहिए कि हर महीने की 13, 14, 15 तारीख़ को अय्यामे बीज़ के रोज़े रखें। जब आदत पुख़्ता हो जाए और शहवत पूरी तरह न टूटे तो फिर हर हफ़्ते में सोमवार और जुमेरात के दो रोज़े रखें। जब यह आदत पक्की हो जाए और मज़ीद रोज़े रखने की ज़रूरत महसूस हो तो सौमे

दाऊदी रखे यानी एक दिन रोज़ा दूसरे दिन इफ़्तार। यह मामूल सबसे बेहतर है। यह बात ज़हन में रहे कि पहले दिन रोज़ा रखने से शहवत पर कोई असर नहीं पड़ता। लगातार कई दिन रोज़ें का मामूल चलान से शहवत टूटती है। फिर सहरी इफ़्तारी में पेट भरकर न खाए वरना मक़सद छूट जाएगा।

2. बा-वुज़ू रहना

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया

यानी वुज़ू मोमिन का अस्लहा (हथियार) है।

लिहाज़ा शैतानी हमले से बचने के लिए वुज़ू बेहतरीन इलाज हैं नवजवान लोग अगर बावुज़ू रहने को अपनी आदत बना लें तो इबादत करना उनके लिए आसान हो जाए। वुज़ू से इनसान को बातिनी जमियत नसीब होती है। परेशान ख़्याली से निजात मिल जाती है।

3. दुआ माँगना

शहवत कंट्रोल करने का एक ख़ूबसूरत इलाज यह भी है कि बारगाहे ख़ुदावंदी में फ़रियाद की जाए कि मेरे मौला मैं कमज़ोर हूँ। मेरी मदद फ़रमा, मुझे गुनाहों में सनने से बचा ले। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से बहुत-सी दुआएँ नक़ल की गई हैं। हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अनहु रावी हैं कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास एक नवजवान आया और उसने ज़िना की इजाज़त माँगी। सहाबा किराम ने इस सवाल को सख़्त नापसन्द किया और उसे डाँटा। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उसे अपने क़रीब बुलाकर फ़रमाया, क्या तुम अपनी माँ से किसी का ज़िना करना पसन्द करते हो? उसने कहा नहीं। फ़रमाया, क्या अपनी बेटी से किसी का ज़िना करना पसन्द करते हो? उसने कहा नहीं। फ़रमया, अपनी बहन के साथ किसी का ज़िना करना पसन्द करते हो? उसने कहा नहीं। फ़रमाया, अपनी फूफी से ज़िना करना पसन्द करते हो? उसने कहा, नहीं। फ़रमाया,

अपनी ख़ाला से किसी का ज़िना करना पसन्द करते हो? उसने कहा नहीं। आपने इरशाद फ़रमाया कि तुम जिससे ज़िना करोगे वह किसी की माँ होगी, बेटी होगी, बीवी होगी, फूफी होगी, ख़ाला होगी। जिस तरह तुम पसन्द नहीं करते इसी तरह और लोग भी ज़िना को अपनी महरम औरतों के लिए पसन्द नहीं करते। उसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दस्ते शफ़क़त उस नवजवान के सीने पर रखकर फ़रमाया :

اللهم اغفر ذنبه وطهر قلبه واحصن فرجه۔(ابن كثير ٣٨٣)

ऐ अल्लाह इसके गुनाह को माफ़ फ़रमा, दिल को पाक फ़रमा और इसकी शर्मगाह की हिफ़ाज़त फ़रमा।

इस दुआ का ऐसा असर हुआ कि उस नवजवान के दिल में कभी ज़िना का ख़्याल भी पैदा न हुआ।

अहादीसे मुबारका में नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम से और भी दुआए नक़ल की गई हैं। उनको माँगने से बहुत फ़ायदा होता है।

اللهم انی اسئلك الهدیٰ والتقیٰ والعفاف والغنیٰ(مسلم مشكوة باب الاستعاذة)

अल्लाहुम्मा इन्नि असअलुकल हुदा वत्तुक़ा वल अफ़ाफ़ा वल ग़िना।

ऐ अल्लाह! मैं आपसे हिदायत, तक़्वा, पाकदामनी और ग़िना का सवाल करता हूँ।

कभी-कभी इन अल्फ़ाज़ में दुआ फ़रमाते :

اللهم انی اسئلك الصحة والعفة والحسن والرضا بالقدر. مشكوة باب الاستعاذة)

अल्लाहुम्मा इन्नि असअलुकस-सिह्हता वल इफ़-फ़ता वल हुस्ना वर्रिज़ा बिल क़द्र।

ऐ अल्लाह! मैं आपसे सेहत, पाकदामनी, ख़ूबी और तक़्दीर पर राज़ी रहने की दरख़ास्त करता हूँ।

कभी-कभी इन अल्फ़ाज़ में दुआ माँगते :

اللهم الهمنى رشدى واعذنى من شر نفسى.(ترمذى مشكوة،٢١٤)

अल्लाहुम्मा अलहिमनी रुशदी वअ-इज़नि मिन शर्रि नफ़्सी।

ऐ अल्लाह मुझे सीधे रास्ते की रहनुमाई फ़रमा और नफ़्स की बुराई से अपनी पनाह अता फ़रमा।

बाज़ हदीसों में से दुआ भी नक़ल की गई है :

اللهم انى اعوذبك من منكرات الاخلاق والاعمال والاهواء.(ترمذى)

अल्लाहुम्मा इन्नि अऊज़ुबिका मिम-मुन्करातिल अख़्लाक़ि वल आमालि वल अह्वाई।

ऐ अल्लाह! मैं बुरे अख़्लाक़, बुरे आमाल, बुरी ख़ाहिशात से आपकी पनाह चाहता हूँ।

बाज़ हदीसों में यह दुआ भी आई है :

اللهم انى اعوذبك من فتنة النساء.

अल्लाहुम्मा इन्नि अऊज़ुबि मिन फ़ितनतिन्-निसा।

ऐ अल्लाह मैं औरतों के फ़ित्ने से आपकी पनाह चाहता हूँ

बुज़ुर्गों के हालाते ज़िन्दगी से पता चलता है कि वे भी क़बूलियत दुआ के वक़्तों में शहवत के फ़ित्ने से अल्लाह तआला की पनाह माँगते थे। हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह. पर एक रात शहवत का ग़लबा हुआ। आपने दो रकअत नफ़िल पढ़कर अल्लाह तआला से दुआ माँगी। फ़रमाते हैं कि उसके बाद मेरे लिए औरत और दीवार में कोई फ़र्क़ न रहा।

यह बात ज़हन नशीन रहे कि दुआएँ पढ़ने से क़बूल नहीं होतीं बल्कि माँगने से क़बूल होती हैं। दुआ माँगने का मतलब यह है कि इनसान सरापा दुआ बन जाए। आँख नहीं रोई तो दिल रो रहा है। दिल की गहराईयों से फ़रियाद निकल रही हो कि ऐ मेरे मालिक मैं कमज़ोर हूँ, आप क़वी हैं। हर कमज़ोर

क़वी को मदद के लिए पुकारता है। लिहाज़ा मैं आपसे फ़रियाद करता हूँ कि मुझे औरत के फ़ित्ने से महफ़ूज़ फ़रमाइए और मेरी शहवत को मेरे क़ाबू में कर दीजिए। फिर उसके नतीजे देखिए। सच्चे परवरदिगार का सच्चा क़ुरआन गवाही दे रहा है :

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ

कौन है जो बेक़रार की दुआ क़बूल करता है जब वह उसे पुकारे।

4. शहवत का फ़क़ीरी इलाज

सादा सी बात है कि अगर किसी मरीज़ को किसी दवा से आराम मिले, सहत नसीब हो तो वह दूसरे मरीज़ों को खोल-खोल कर बयान करता है कि यह दवा बड़ी अच्छी हैं आप लोग भी इस्तेमाल करके देखें। मुझे अपनी ज़िन्दगी में जिन बातों ने नफ़ा दिया वह पढ़ने वालों की ख़िदमत में पेश की जाती हैं :

1. फ़ारिग़ न रहें

शहवत कंट्रोल करने का बेहतरीन तरीक़ा यही है कि अपने आपको कामों में इतना मशग़ूल कर दें कि सर खुजाने की फ़ुर्सत ही न मिले। जहाँ दो काम करने हों वहाँ दर्मियान में तीसरा काम ज़रूर घुसा दें। बदन आराम तलब करे, आँखें नींद को तरसे यहाँ तक कि सोते वक़्त बिस्तर पर गिरने वाला मामला बन जाए। काम, काम, काम बस थोड़ा आराम का उसूल अपनाएँ। पूरे दिन का लाए अमल (टाईम टेबल) बनाएँ। पढ़ने वाले अपना भरपूर वक़्त अपनी पढ़ाई में लगाएँ, मदरसे के दीनी तालीम पाने वाले बच्चे असर मग़रिब खेलने को तालीम की तरह ज़रूरी समझें। फ़राग़त का वक़्त किताबों का ज़ाती मुताला करें। किताबों को अपना दोस्त बनाए मदरसे को वतन समझें और किताबों के काग़ज़ को कफ़न समझें। अगर वक़्त बच जाए तो क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ करने में या दोहराने में मशग़ूल रहें। और वक़्त हो तो किसी ज़ाकिर शाग़िल शेख़ुल हदीस या मुफ़्ती साहब या

उस्ताद की सोहबत व ख़िदमत में अपना वक़्त गुज़ारें। नवजवान तुलबा के पास बिला मक़सद बैठने का ज़हर की तरह समझें। मसल मशहूर है :

A young leading the young is like a blind leading the blind, they will both fall into the ditch.

एक नवजवान दूसरे नवजवान को रहबर बने तो उसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे एक अंधा दूसरे अंधे को अपनी लाठी पकड़ा दे। यक़ीनी बात है कि दोनों किसी वक़्त भी गढ़े में गिर सकते हैं।

युनिवर्ससिटी, कॉलेज में पढ़ने वाले फ़ारिग़ वक़्त में क़ुरआन मजीद का तर्जुमा पढ़ने को अपना महबूब मशग़ला बना लें। क़रीबी मस्जिद में या मदरसे के आलिम साहब से इब्तिदाई सर्फ़ व नहू को पढ़ना शुरू कर दें। वक़्त साथ दे तो जुज़ वक़्त (पार्ट टाइम) तालिब इल्म के तौर पर हदीस पाक की किताबें भी पढ़ना शुरू कर दें। दुनियावी तालीम के साथ आलिम का कोर्स कर लेने से इनसान दो दरियाओं का संगम बन जाता हैं अगर हाफ़िज़ा अच्छा है और वक़्त में गुंजाइश है तो क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ करना शुरू कर दं। पढ़ने से दिल उकता जाए तबियत थक जाए तो किसी माज़ूर शख़्स की या बीमार की ख़िदमत अपने जिम्में लें और ख़ामोशी से उसके काम समेट दिया करें।

दफ़्तरों में काम करने वाले नवजवान भी आलिम कोर्स से फ़ायदा उठा सकते हैं। अगर घर के कामों में अपना वक़्त लगा सकें तो उसे सुन्नते नबवी समझकर करें। बूढे माँ-बाप की ख़िदमत को सआदत समझें। उनकी दुआएँ लिया करें ताकि दीन व दुनिया की कामयाबियाँ नसीब हों। नवजवान हज़रात के वक़्त में गुंजाइश हो तो किसी शेख़े कामिल की सोहबत में वक़्त गुज़ारें या तबलीग़ी जमाअत की तर्तीब में अपने आपको जोड़ें। फ़ारिग़ रहने को अपने ऊपर हराम समझें। किसी तजरिबेकार इनसान ने कहा है :

An ideal mans brain is devol's workshop.

एक फ़ारिग आदमी का दिमाग़ शैतान का कारख़ाना होता है।

जिस तरह कारख़ाने में मशीनें तैयार होती हैं उस तरह फ़ारिग इनसान के दिमाग़ में शहवानी, शैतानी मंसूबे बनते हैं। फ़ारिग वक़्त में अल्लाह वालों के हालाते ज़िन्दगी पढ़ने से मुर्दा दिलों को ज़िन्दगी मिलती है। उनका कलाम दवा और उनकी नज़र शिफ़ा होती है।

2. तन्हाई में न रहें

शहवत कंट्रोल करने का दूसरा सुनहरा उसूल यह है कि तन्हा रहने से बचें। ख़लवत दर अंजुमन (सबके साथ रहते हुए यकसू रहने) को अपना उसूल बनाएँ। नवजवान जब तन्हा होगा शैतान उसे "ख़्याली महबूब" की मज्लिस में पहुँचा देगा। ऐसी जगह बैठकर पढ़ें जहाँ दूसरो की नज़र पड़ती हो। बंद कमरों में बैठने से शैतान को छेड़-छाड़ का मौक़ा मिल जाता है। वह किसी-न-किसी हसीन चेहरे को सामने कर देता है। क़ौल शायर—

तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता

अगर तन्हाई में शहवत की आग भड़क उठे तो फ़ौरन कमरे से बाहर निकल जाएँ। किसी माहिर नफ़्सियात का क़ौल है :

"किसी इनसान की शहवत में उभार आ जाता है तो आधी अक़्ल पर पर्दा पड़ जाता है।"

ऐसी हालत में अगर तन्हाई भी हो तो पूरी अक़्ल पर पर्दा पड़ना आसान होता है, अल्लाहुम्मा अहफ़िज़ना मिन्हु। तन्हाई और बेहयाई में चोली दामन का साथ है। अगर चंद साल का बच्चा भी क़रीब हो तो नवजवान फ़हश हरकतें करने से बचा रहता है। जब समझता है कि मुझे देखने वाला कोई नहीं तो

शहवानी हरकतों में लग जाता है। बूढ़ों को तन्हाई फ़ायदा देती है जबकि नवजवानों को नुक़सान देती है। ऐसे नवजवान कम होते हैं जो अपनी जवानी में बूढ़ों जैसा दिमाग़ रखते हों। एक तालिब इल्म ने बताया कि जब भी मैं तन्हा होता हूँ मेरा अज़्व ख़ास "तन जाने" की हालत में पहुँच जाता है। ऐसे नवजवान हज़रात तन्हा रहने को हराम समझें। दो नवजवान तन्हा रहने वाले अकेले नवजवान की तरह होते हैं बल्कि इससे ज़्यादा ख़तरे में होते हैं। तन्हाई में नंगा होने से बचें। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक आदमी से फ़रमाया :

احفظ عورتك الا من زوجتك او ما ملكت يمينك فقال افرأيت اذا
كان الرجل خاليا۔ قال الله احق ان يستحيا منه۔ (حجة البالغه ۱۱۲،۲)

अपने सतर की देखभाल कर हाँ बीवी या बांदी के पास हो तो और बात है। उसने पूछा कि अगर कोई तन्हा हों तो? फ़रमाया उस वक़्त अल्लाह से शर्माना ज़रूरी है।

3. बग़ैर नींद लेटने से कतराएँ

नवजवान हज़रात ऐसे वक़्त में बिस्तर पर आए जब यह पता चले कि तकिए पर सर पहले रखा था या नींद पहले आई थी। जब आँखे खुल जाए तो फ़ौरन बिस्तर से उठ जाएँ। बिस्तर में बिना वजह लेटे रहने से भी शहवत भड़कती है। माँ-बाप इस बात पर नज़र रखें कि बच्चा बग़ैर नींद के बिस्तर में न पड़ा रहे। बच्चों के सोने के कमरे अलग-अलग हों तो अन्दर से कमरे को बंद करने का बंदोबस्त नहीं होना चाहिए। बच्चियों के कमरे में माँ जब चाहे दरवाज़ा खोलकर अन्दर चली जाए। बच्चों के कमरों में बाप जब भी चाहे दरवाज़ा खोलकर चला जाए। बच्चों को अंधेरे में सोने के बजाए रोशनी में सोने की आदत डालें। माँ-बाप को पता होना चाहिए कि बच्चे की नींद में क्या हालत होती है। उसका हाथ कहाँ-कहाँ पहुँचा होता हैं नवजवान औंधा लेटकर सोने से परहेज़ करें। ऐसी हालत में तो बूढ़ों के अज़्व में

तनाव आ जाता है। नवजवान तो भड़कती आग होते हैं। एक हदीस पाक में अबू इब्ने तख़्फ़ा गफ़्फ़ारी अपने वालिद से रिवायत करते हैं :

قال ابی بینما انا مضطجع فی المسجد علی بطنی الی رجل یحرکنی برجله فقال ان هذا ضجعة یبغضها الله. قال فنظرت فاذا هو رسول الله ﷺ.(ابوداؤد)

मेरे वालिद कहते हैं कि मैं मस्जिद में पेट के बल लेटा हुआ था कि अचानक किसी ने मुझे अपने पाँव से हरकत दी। फिर कहा कि यह ऐसा लेटा है कि अल्लाह तआला इससे नाराज़ हुए हैं। मैंने देखा तो वह रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे।

दो नवजवान एक बिस्तर या एक चादर में हर्गिज न लेटें। हॉस्टल के निगरान हज़रात एक कमरें में तीन से कम बच्चों को हर्गिज़ न रहने दें।

4. बैतुलखला में ज़्यादा देर न लगाए

बैतुलख़ला ज़रूरत पूरा करने की जगह होती है। लिहाज़ा फ़रागत होते ही बाहर निकल आना चाहिए। कुछ नवजवान बैतुलख़ला को बैतुलख़ाला (ख़ाला का घर) समझकर बैठ ही जाते हैं। नंगे बदन की हालत में शहवत का भड़कना बहुत आसान होता है। बैतुलख़ला में बग़ैर ज़रूरत अज़्व ख़ास को हाथ न लगाए वरना हाथ से ज़िना करने की आदत पड़ जाएगी। पोशीदार बालों को भी साफ़ करने में ज़्यादा देर नहीं लगानी चाहिए। माँ-बाप की ज़िम्मेदारी है कि इस बात पर नज़र रखें कि बच्चा बैतुलख़ला में कितना वक़्त लगाता है। जो नवजवान बिस्तर और बैतुलख़ला में गुनाह से बच गया उसके लिए पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारना बहुत आसान हो जाता है। बैतुलख़ला में आने जाने की मसनून दुआएँ माने का लिहाज़ करते हुए पढ़ी जाएँ तो बहुत फ़ायदा होता है।

नवजवान बच्चे अगर बैतुलख़ला में ज़्यादा देर लगाए तो माँ को चाहिए कि पहले समझाए। अगर न समझें तो डांट पिलाए। जब देखे कि वक़्त ज़्यादा लग रहा है तो फ़ौरन बैतुलख़ला का दरवाज़ा खटखटाए। इतनी ज़्यादा सख़्ती करे कि नवजवान बच्चे बैतुलख़ला खटखटाएगी। फिर ख़ूब डांट पड़ जाएगी।

5. फ़हश मज़ाक से बचें

नवजवानी में ज़राफ़त की हिस बहुत तेज़ होती है। नवजवान लड़के-लड़कियाँ लतीफ़े सुनने-सुनाने को पसन्द करते हैं। हालाँकि ज़्यादा हंसने से दिल मुर्दा हो जाता है। अगर इस आदत को कंट्रोल न किया जाए तो नवजवान में मज़ाक की आदत पड़ जाती है। वक़्त के साथ-साथ जिन लोगों से तबियत खुली होती है फिर उनके साथ फ़हश मज़ाक की आदत पड़ जाती है। यह इंतिहाई ख़तरनाक मामला है। इरशाद बारी तआला है :

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَن تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾

जो लोग पसन्द करते हैं कि शोहरत हो बदकारी की ईमान वालों में, उनके लिए दर्दनाक अज़ाब हैं दुनिया में और आख़िरत में। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (नूर : 19)

- कुछ नवजवान आपस में मिलते हैं तो पूछते हैं, "आज आप नहाए हुए लगते हैं।" बस फ़हश मज़ाक का दरवाज़ा खुल जाता है।
- कुछ नवजवान एक-दूसरे को प्यार मुहब्बत में फ़हश व गंदी गालियाँ देते हैं। भला इससे गंदा काम और क्या हो सकता है।
- कुछ नवजवान एक-दूसरे के जिस्म को हाथ लगाने, गुदगुदी करने का मज़ाक करते हैं। यह फ़हाशी का दरवाज़ा खोलने की कुंजी है।

- कुछ नवजवान मिलते वक़्त एक-दूसरे को ख़ूब दबाते हैं। इससे पोशीदा आज़ा को एक दूसरे के जिस्म से रगड़ने का मौक़ा मिल जाता हैं शहवत भड़कती है, ज़िना का रास्ता आसान हो जाता है।
- अगर फ़हश मज़ाक की आदत रिश्तेदार लड़के-लड़की में आ जाए तो बक़ौल शायर "बात पहुँची तेरी जवानी तक।" देवर भाभी, ख़ाला भांजे या इसी तरह के दूसरे रिश्तों में मज़ाक की आदत ख़तरनाक हद तक नुक़सानदेह है।

कुछ शादीशुदा मर्दों की आदत होती है कि वह नवजवान लड़कों को अपनी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की इतनी तफ़्सीलात बताते हैं कि नवजवान तसव्वुर की आँख से एक मर्द व औरत को हमबिस्तरी करता हुए देखते हैं। हदसी पाक में है:

ان من اشر الناس عندالله منزلة يوم القيامة الرجل يفضى الى امراة وتفضى اليه ثم ينشر سرها. (مسلم، ۱۴۳)

अल्लाह तआला के नज़दीक क़यामत के दिन बदतरीन शख़्स वह है जो अपनी बीवी से हमबिस्तरी करे फिर उसके राज़ की हालत दूसरों पर खोल दे।

- कुछ नवजवान एक-दूसरे को अपनी इश्क़ व मुहब्बत की दास्तानें सुनाते हैं। कुछ फ़ासिक़ नवजवानों की महफिल में बहस चलती है कि अगर तुम्हें कोई और अकेली मिल जाए तो क्या करोगे। सब बारी-बारी अपने बुरे जज़्बात का इस तरह इज़्हार करते हैं कि हर नवजवान की तबियत ज़िना के लिए बेताब हो जाती है। यह महफ़िलें इनसान को न दीन का छोड़ती हैं न दुनिया का। ऐसी महफ़िलों में जाना अल्लाह तआला के नाफ़रमानों में अपना नाम लिखवाने की मानिन्द है।
- वालैदन इस बात को नोट करें कि नवजवान बच्चे घर से बाहर चंद मिनट भी न गुज़ारें। उन्हें जो कुछ करना है घर में

करें ताकि माँ-बाप की नज़र औलाद की शैतान से और शैतान नुमा इनसानों से हिफ़ाज़त करने पर पड़ती रहे। नवजवान बच्चे पढ़ने जाएँ तो छुट्टी होते ही घर आए। चंद मिनट की देर होने पर माँ उनसे जवाब तलबी करे। बच्चे को दोस्तों से मिलने की इजाज़त देने की बजाए यह कहा जाए कि वह अपने दोस्त को घर मिलने की बजाए स्कूल में ही मिल लिया करे। माँ-बाप बच्चों से पूछते रहे कि वह आपस में मिलकर क्या बातें करते हैं। बच्चे कच्चे होते हैं। वे चार बातों के अन्दर राज़ खोल बैठते हैं। अगर झूठ बोलें तो भी जल्दी पकड़े जाते हैं। लड़किया अगर सहेली के घर जाना चाहें तो उन्हें किसी सूरत में इजाज़त नहीं देनी चाहिए। सहेली से उसके भाई और फिर चारपाई तक मामला पहुँच जाता है। माँ-बाप को कानों कान ख़बर भी नहीं होती।

6. बदनज़री के मौक़ों से बचें

नवजवान हज़रात गली कूचों बाज़ार से गुज़रते हुए बदनज़री से बचें। कारोबारी हज़रात को औरत से लेने-देन करना पड़े तो इस तरह करें जैसे उससे ख़ुदा वास्ते का बैर हो। क़रीब से गुज़रती बस या कार को न देखा करें। आमतौर पर खिड़कियों के पास के पास बेपर्दा औरतें बैठी नज़र आती हैं। अख़बार व रिसालों में औरत की तस्वीर को देखना भी शहवत भड़कने का सबब बनता है। बेदाढ़ी लड़कों के चेहरे को भी न देखा करें। नवजवान मिस्ल पैट्रोल के होता है और बदनज़री आग लगाने की मानिन्द है।

7. क़ब्रिस्तान जाते रहा करें

शहरों की रंगीनियाँ इनसान को अपने अंजाम से बेख़बर कर देती है। मौत को याद रखने का आसान तरीक़ा यह है कि जनाज़ों के साथ क़ब्रिस्तान जाएँ। टूटी क़ब्रों पर ग़ौर करें कि

कैसे-कैसे हसीनों की मिट्टी पलीद हो रही है। दुनिया की मदहोश कॉलोनी में रहने वाले लोगों को क़ब्रिस्तान की ख़ामोश कॉलोनी में जाकर होश आ जाता है। शहवत की आग ठंडी हो जाती है। तबियत की मस्तियों को सुकून मिल जाता है।

मैय्यत को क़ब्र में दफ़न करने का मंज़र कितना इबरतनाक होता है। जो लोग अपने कपड़ों पर मैल धब्बा पसन्द नहीं करते थे उन्हें मनों मिट्टी के नीचे दबाया जा रहा है। जो महफ़िलों की ज़ीनत बनते थे आज क़ब्र की ज़ीनत बन रहे हैं। जो शमाए महफ़िल बनकर ज़िन्दगी गुज़ारते थे आज इबरत का निशान बने पड़े हैं। जो औरतों के झुरमुट में ज़िन्दगी गुज़ारते थे आज तन्हाई का शिकार हो चुके हैं। हमारे बाज़ बुज़ुर्गों ने अपने घर में क़ब्र खोद रखी थी, रोज़ाना उसमें लेटते और अपने नफ़्स को मुख़ातिब होकर फ़रमाते कि याद रख एक दिन तुम्हें क़ब्र में दफ़न होना है। लिहाज़ा अल्लाह तआला की नाफ़रमानी से बचो।

एक आदमी को हार्ट अटैक हुआ और मौत आ गई। घर के सब लोग एक हफ़्ते के लिए किसी शादी की तक़रीब में शामिल होने के लिए गए हुए थे। यह साहब घर में अकेले थे। उनकी लाश एक हफ़्ता पड़ी रही। जब घरवाले वापस आए तो पूरा घर सड़ांध और बदबू से भरा हुआ था। कोई अन्दर दाख़िल होने के लिए तैयार न था। एक साहब ने नाक पर कपड़ा लपेटा। अन्दर दाख़िल होकर देखा कि उनके जिस्म में कीड़े पड़ चुके थे। दोनों आँखों के ढेले निकलकर गालों पर आ गए थे। दोनों होंठ जिस्म से अलग हो चुके थे। मुर्दा बकरी की तरह दांत नज़र आ रहे थे। पेट में गढ़ा पड़ चुका था जो कीड़ों से भरा हुआ था। नाक से पानी बहकर कानों तक फैल गया था। यह देखकर उनके ज़हन पर मंज़र ऐसा नक़्शा हुआ कि कई महीने तक न उन्हें नींद आती थी और न खाना अच्छा लगता था। न ही लोगों की महफ़िलों में बैठने को दिल करता था। वह कहा करते थे कि मैंने दुनिया की हक़ीक़त को आँखों से देख लिया है।

जब नवजवान को शहवत गुनाह पर मजबूर करे तो उसे चाहिए कि क़ब्र के मंज़र को याद करे। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

(اكثروا ذكروا هاذم اللذات الموت. (الجامع الصغير ١٢٠٨)

लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद करो।

अल्लाह तआला ने हमारे आका व सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हमारी तरफ़ से बेहतरीन जज़ा दे जिन्होंने हक़ीक़त की तरफ रहनुमाई फ़रमाई और दुनिया की आरज़ी अय्याशियों को छोड़कर आख़िरत की दाईमी ऐश पाने की राह दिखाई।

8. जलती आग से इबरत पकड़ो

नवजवान हज़रात को चाहिए कि जलती आग के शोले देखकर इबरत हासिल करें। कभी-कभी गोश्त का टुकड़ा डालकर देखें कि आग उसको किस तरह जलाकर कोयला बना देती है। हमारे बुज़ुर्ग लोहार की भठ्ठी को देखकर बेहोश हो जाया करते थे। राबिया बसरिया रह० को किसी ने मुर्ग खाने के लिए पेश किया। उन्होंने रोना शुरू कर दिया। ख़ादिम ने पूछा क्या हुआ? फ़रमाया कि मुझसे यह मुर्ग अच्छा है कि इसे आग में भूनने से पहले ज़िब्ह किया गया, जान निकाली गई फिर भूना गया। अगर राबिया को क़यामत के दिन माफ़ी न मिली तो मुझे तो ज़िन्दा हालत में जहन्नत की आग में भूना जाएगा।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का इरशाद है :

أَفَمَن يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۖ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

भला वह शख़्स जो आग में डाला जाए वह बेहतर है या वह जो रोज़े क़यामत अमन के साथ आया। अमल करो ज़ो तुम चाहो। बेशक वह तुम्हारे अमल को देखता है।

आग देखकर इस आयत के माने को ज़हन में दोहराए तो शहवत कंट्रोल करना आसान हो जाता है। अगर शहवत का सैलाब फिर भी न थमे तो अपनी उंगली आग के क़रीब करके देखें। इरशाद बारी तआला है :

أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۝ ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِّلْمُقْوِينَ ۝

भला तुम देखो आग को जो लगाते हो। क्या तुमने पैदा किया उसका दरख़्त या हम हैं पैदा करनेवाले। हमने बनाया है इसे नसीहत और नफ़े का सामान जंगल वालों के लिए। (वाक़िआ : 71-73)

एक और जगह इरशाद फ़रमाते हैं :

فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

बचो ऐसी आग से कि उसका ईंधन हैं लोग और पत्थर।

एक जगह इर्शाद फ़रमाते हैं :

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا (المومن:٤٦)

आग है सुबह और शाम उस पर उनको पेश किया जाता है।

एक जगह इर्शाद फ़रमाते हैं :

إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا ۝ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝ (المزمل)

बेशक हमारे पास बेड़ियाँ हैं और आग का ढेर और खाना गलों में अटकने वाला और दर्दनाक अज़ाब।

एक जगह इर्शाद फ़रमाते हैं :

نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ ۝ الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ۝ (الهمزة)

आग है अल्लाह तआला की सुलगाई हुई और झांक लेती है दिलों पर।

एक जगह इर्शाद फ़रमाते हैं :

एक जगह इरशाद फ़रमाते हैं :

سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيرًا

सुने उसके लिए झुंझलाना और चिल्लाना।

9. रोज़े महशर की ज़िल्लत

शहवत का ज़ोर तोड़ने के लिए रोज़े महशर की पेशी को याद करना ज़रूरी है। उस दिन की ज़िल्लत बड़ी और बुरी होगी। जो आदमी दो आदमियों के सामने ज़िल्लत बरदाश्त नहीं कर सकता, वह सारी मख़्लूक़ के सामने की ज़िल्लत कैसे बरदाश्त करेगा। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं जिस दिन भेद खोल दिए जाएँगे। जब अल्लाह तआला छिपे राज़ों को खोलेंगे तो हमारी ज़िल्लत व रुसवाई में क्या कमी रह जाएगी। माँ-बाप के सामने औलाद रुसवा होगी। मियाँ के सामने बीवी, बाप के सामने बेटी और बेटे के सामने माँ रुसवा होगी। अकेले में क्या करतूत करते फिरते थें।

क़यामत के दिन मुज़रिम अल्लाह तआला के सामने शर्म व नदामत की वजह से सर भी नहीं उठा सकेंगे। इरशादे बारी तआला है :

وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

अगर आप देखें जब कि मुजरिम अपने रब के सामने सर झुकाए हुए होंगे। (सजदा : 12)

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया :

خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ

आँख झपकाए हुए ज़िल्लत से। (शूरा : 45)

इनसान परेशान होगा मगर सर छिपाने की जगह भी न मिलेगी।

इरशादे बारी तआला है :

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ

कहेगा इनसान उस दिन कहाँ भागकर जाऊँ। (क़ियामह)

हदीस पाक में आया है कि जो आदमी दुनिया में अपने हाथ से शहवत पूरी करता होगा, क़यामत के दिन वह इस हाल में उठेगा कि उसका हाथ हामला औरत के पेट की तरह फूला हुआ होगा।

नवजवान हज़रात क़यामत के मंज़रों को बार-बार सोचा करें ताकि ख़शियते इलाही हासिल होकर गुनाहों से नजात नसीब हो।

10. मईयते इलाही का ध्यान

नवजवान को चाहिए कि हर वक़्त मईयते इलाही के बारे में सोचता रहे। इरशाद बारी तआला है :

هُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ

वह साथ होता है जहाँ कहीं भी तुम हो।

अल्लाह तआला हमरे पास होते हैं फ़रमाया :

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ

और हम आपसे शह रग (रगे जान) से ज़्यादा क़रीब हैं।

हम जो कुछ करते हैं अल्लाह तआला हमें करता हुआ देखते हैं। जो बोलते हैं वह सब कुछ सुनते हैं।

इरशाद बारी तआला है :

أَسْمَعُ وَأَرَىٰ

मैं सुनता हूँ और देखता हूँ।

अगर कोई हमारा क़रीबी हमें तन्हाई में फ़हश हरकत करता देखे तो हमें कितनी नदामत होगी। अगर किसी औरत का भाई या ख़ाविन्द देख रहा हो तो हम उसकी तरफ़ आँख उठाकर देखते हुए घबराएँगे जबकि अल्लाह तआला हमें हर काम करते हुए देखते हैं। हम फिर भी एहसास नहीं करते। एक बुज़ुर्ग फ़रमाते थे कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मेरे दिल पर इल्हाम

फ़रमाया, "मेरे बंदों से कह दो कि जब तुम गुनाह करते हो तो उन तमाम दरवाज़ों को बंद कर लेते हो जिससे मैं मख़्लूक देखती है और उस दरवाज़े को बंद नहीं करते जिससे मैं परवरदिगार देखता हूँ। क्या अपनी तरफ़ देखने वालों में सबसे कम दर्जे का तुम मुझे समझते हो।" अल्लाहु अकबर कबीरा।

इरशाद बारी तआला है :

أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۝

क्या नहीं जानता कि अल्लाह देखता है। (अलक़ : 14)

एक और जगह फ़रमाया :

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ

वह आँखों की ख़्यानत को और जो कुछ सीनों में छिपा हुआ है उसे जानता है।

इस मज़मून को किसी साहिबे दिल ने अपने अल्फ़ाज़ का जामा पहनाया है--

चोरियाँ आँखों की और सीनों के राज़
जानता है सबको तू ऐ बे नियाज़

11. माहौल बदल लो

जहाँ शहवत उभरने का भरपूर सामान हो, ज़िना की तरफ़ माइल करने वाले असबाब मौजूद हों, उस जगह को छोड़ देना और माहौल को बदल लेना इंतिहाई ज़रूरी होता है। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जब ज़नाने मिस्र (मिस्र की औरतों) ने गुनाह की तरफ़ माइल करना चाहा तो उन्होंने दुआ माँगी :

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ

ऐ रब जेल मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है उससे जिसकी तरफ़ वह मुझे बुलाती है।

इस तरह बनी इस्राईल के सौ आदमियों के क़ातिल ने जब तौबा की नीयत कर ली तो उसे अपनी बस्ती छोड़ने और नेकों की बस्ती की तरफ़ जाने का हुक्म हुआ। दूसरे लफ़्जो में माहौल

बदलने का हुक्म हुआ। गुनाहों को छोड़ना और नेकी के माहौल को अपनाना लाज़मी होता है। अगर किसी जगह ऐसी तस्वीर लगी है जिसको देखकर शहवत भड़क उठती हो तो उस जगह को फ़ौरन छोड़ देना चाहिए। अगर किसी जगह ऐसा इनसान है जिसको देखने से या बात करने से शहवत भड़कती हैपा उसी तरफ़ से गुनाह की दावत मिलती है तो उस जगह को छोड़ देना ज़रूरी हो जाता है। अगर किसी कमरे में टीवी चल रहा है और आप बंद करने पर क़ादिर नहीं हैं तो उस जगह से उठकर चले जाए

12. पोशीदा बीमारियाँ

शहवत को हाथ से पूरा करने से या किसी और के साथ बदकारी करने से या बद-फेअली करने से इनसान के जिस्म में खतरनाक बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। उनका इलाज भी रुसवाई का बाइस बनता है। कभी-कभी नवजवान अपनी जवानी में इतने कमज़ोर हो जाते हैं कि शादी के बाद बीवी से मुबाशरत के क़ाबिल नहीं रहते। इससे न सिर्फ़ अपनी ज़िन्दगी तबाह होती है बल्कि बीवी की भी ज़िन्दगी बरबाद होती है। कभी-कभी नौबत तलाक़ तक पहुँच जाती है। दो ख़ानदान एक-दूसरे से जुदा हो जाते हैं। नवजवान हज़रात यह बात ख़ूब अच्छी तरह ज़हन में बिठा लें कि शहवत को ग़लत तरीक़े से या ग़लत जगह पर पूरा करने से रुसवाई का सामना ज़रूर करना पड़ता है।

13. ज़िना इनसान पर क़र्ज़ है

जब इनसान पर शहवत का भूत सवार हो और ज़िना करने के लिए तबियत बेक़रार हो तो ज़हन में यह सोचे की एक तो ज़िना गुनाहे कबीरा होने की वजह से अल्लाह तआला की नाराज़गी का सबब है। दूसरा यह इनसान के सर पर क़र्ज़ होता है। इस क़र्ज़ को घर की कोई औरत ज़रूर चुकाती है चाहे बेटी हो, बीवी हो, बहन हो। ख़ुशी से उतारे या मजबूरी में उतारें। अगर आप मैं किसी की औरत के साथ ज़िना करूँगा तो कल

कोई मेरी औरत के साथ ज़िना करेगा। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोगों की औरतों के साथ परहेज़गारी का बर्ताव करो। लोग तुम्हारी औरतों के साथ परहेज़गारी का मामला करेंगे। इसको अदले का बदला कहते हैं। इनसान जो बोएगा वही काटेगा। मसल मशहूर है :

As you sow, so shell you reap.

जो कुछ तुम बीज डालोंगे वही काटोंगे।

इस ख़्याल को बार-बार ज़हन में दोहराने से शहवत का बुख़ार उतर जाएगा। शिफ़ाए कामिला नसीब हो जाएगी।

14. ज़िना करने से शैतान का दोस्त

इरशादे बारी तआला है :

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا۟ ٱلشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾ وَأَنِ ٱعْبُدُونِى ۚ هَٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا۟ تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

ऐ औलादे आदम! मैंने तुमको न कहा था कि न इबादत करो शैतान की। वह बेशक तुम्हारा खुला दुश्मन है और इबादत करो मेरी यह है सीधी राह। ओर वह बहका ले गया तुममें से बहुत ख़िलक़त को। फिर क्या तुम में समझ न थी। (यासीन : 60-62)

ज़िना करने से इनसान शैतान का साथी बनता है जबकि परहेज़गारी से इनसान अल्लाह का दोस्त बनता है। नवजवान ज़हन में यह सोचे कि कल क़यामत के दिन मैं इबादुर्रहमान में शामिल होना चाहता हूँ तो मुझे ज़िना से बचना चाहिए। ऐसा न हो कि अल्लाह तआला अपने दरबार से धुतकार दे।

इरशादे बारी तआला है :

أَفَتَتَّخِذُونَهُۥ وَذُرِّيَّتَهُۥٓ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِى وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّۢ ۚ بِئْسَ لِلظَّٰلِمِينَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾

क्या तुम बनाते हो उसको और उसकी औलाद को
दोस्त मेरे सिवा हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं, ज़ालिमों
के लिए बुरा है बदला।(कह्फ़ : 50)

अगर कल क़यामत के दिन ज़ानी को यही कह दिया गया कि तुमने मुझे छोड़कर शैतान की पैरवी की थी। लिहाज़ा उसी के साथ जहन्नम में जाओ तो फिर क्या बनेगा। इस आयत के मानी पर ग़ौर करने से और उसको अक्सर व बेशतर पढ़ते रहने से शहवत का ज़ोर टूट जाता है।

15. अपना कोटा ख़त्म

अल्लाह तआला ने इनसान को रिज़्क तय कर दिया है। इरशादे बारी तआला है :

وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢١﴾

और हर चीज़ के खज़ाने हैं हमारे पास और उसे एक
मुताइय्यन अंदाज़े से ही उतारते हैं।

हर चीज़ की एक मिक़्दार तय है। इनसान ने दुनिया में कितने दिन ज़िन्दा रहना है। कितने सांस लेने हैं या कितनी बार शहवत की लज़्ज़त से लुत्फ़ अंदोज़ होना है । अगर बिल फ़र्ज़ एक आदमी की ज़िन्दगी 65 साल है और उसने पंद्रह साल की उम्र में बालिग़ होना है तो बक़िया 50 साल में उसने 6000 मर्तबा शहवत की लज़्ज़त पानी है। अगर यह नवजवान इफ़्फ़त व पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारेगा तो यह लज़्ज़त अपनी बीवी से हमबिस्तरी के ज़रिए कामिल तौर पर हासिल करेगा। अगर शहवत से मग़लूब होकर अपने हाथ से या ज़िनाकारी से शहवत पूरी करेगा तो उतना कोटा घट जाएगा। इसी लिए जो नवजवान लड़के मुश्तज़नी और नवजवान लड़कियाँ अंगुश्तज़नी का शिकार हो जाती हैं। उनको इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की लज़्ज़तें या तो अधूरी रह जाती हैं या न होने के बराबर रह जाती हैं। कई मर्तबा ऐसा होता है कि अगर लड़की ने अपना कोटा शादी से पहले ज़ाए कर

लिया तो उसका ख़ाविन्द किसी दूसरी लड़की से शादी करके अपना कोटा पूरा करेगा। अगर शादी न की तो ज़िनाकारी, बदकारी का रास्ता अपनाएगा। इसी तरह अगर लड़के ने शादी से पहले अपना कोटा ज़ाए कर लिया तो उसकी बीवी छिपी आशनाई के ज़रिए अपनी मस्तियाँ उड़ाएगी। लिहाज़ा ग़लत तरीक़े से शहवत पूरी करके इनसान अपना ही नुकसान करता है। ज़रा सब्र से काम ले तो हराम की बजाए हलाल तरीक़े से सब कुछ मिल जाएगा। मियाँ-बीवी में प्यार व मुहब्बत की ज़िन्दगी होती। एक-दूसरे पर जान छिड़केंगे। लोग उन्हें मिसाली जोड़ा कहेंगे। मर्द मिसाली ख़ाविन्द कहलाएगा, औरत मिसाली बीवी कहलाएगी। नसीब अपना-अपना होता है मगर जल्दबाजी से हराम काम होगा और सब्र कर लेने से हलाल बन जाएगा। नवजवान हज़रात अगर इस नुक्ते पर ग़ौर करें तो शहवत को क़ाबू करना और शर्मगाह को थामना आसान हो जाएगा।

शहवत का तिब्बी इलाज

अगर कोई नवजवान अपनी बुरी आदतों की वजह से जिन्सी तौर पर कमज़ोर हो गया है, उसकी हिस इतनी तेज़ हो गई है कि ज़रा-सी बात से उसकी शहवत भड़क उठती है। हर वक़्त अज़्व ख़ास में तनाव रहता है। दिमाग़ में शैतानी शहवानी ख़्यालात हर वक़्त छाए रहते हैं, एहतिलाम की कसरत होती है तो इस मर्ज़ का इलाज करवाने के लिए वह किसी दीनदार तबीब या माहिर जिन्सियात (सैक्सोलोजिस्ट) से रुजू करे। इसमें देर करने से इनसान का बहुत नुक़सान होता है। नवजवान लड़कियाँ अगर लिकोरिया की मरीज़ हों तो उन्हें भी इलाज करवाना चाहिए। हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तआला ने जो बीमारी नाज़िल की है उसकी दवा भी नाज़िल फ़रमाई है।

औरत का जिहाद

क़ुरआन मजीद में ज़िना का तज़्किरा करते हुए फ़रमाते हैं यानी ज़ानिया औरत और ज़ानी मर्द। इसमें औरत का तज़्किरा पहले किया गया जबकि मर्द क तज़्किरा बाद में किया गया है। मुफ़स्सिरीन ने इसकी एक हिकमत यह भी बयान की है कि ज़िना की इब्तिदा औरत से शुरू होती है। मसलन औरत ने पर्दा करने में बेएहतियाती की और मर्द ने देख लिया तो मामला आगे बढ़ा। औरत ने मर्द से बात करते हुए नरम लहजा इख़्तियार किया तो मर्द को बात से बात बढ़ाने का मौक़ा मिल गया। औरन ने बेवक़्त बग़ैर महरम के घर से निकली, मर्द को जबरन ज़िना करने का मौक़ा मिल गया। औरत ने मर्द की नीयत में फ़ुतूर महसूस करने के बावजूद घरवालों को न बताया, मर्द को वरगलाने का मौक़ा मिल गया। औरत ने मर्द का पर्चा पढ़कर, टेलीफ़ोन सुनकर या पैग़ाम वसूल करके सख़्ती का रवैय्या न इख़्तियार किया तो इसका नतीजा ज़ीना तक जा पहुँचा क्योंकि मर्द औरत से ज़िना करने में कामयाब हो ही नहीं सकता जब तक औरत अमादा न हो। इसीलिए क़ुरआन मजीद ने ज़िना के अमल में औरत को पहले कुसूरवार ठहराया है। औरत को चाहिए कि अपनी इफ़्फ़त व असमत की हिफ़ाज़त करने में कोई कमी न रहने दे। शरअ शरीफ़ ने जिस तरह जिहाद करने वाले मर्द को मुजाहिद की फ़ज़ीलत से नवाज़ा है, पाकदामन औरत को घर की चारदीवारी में रहते हुए अल्लाह के दफ़्तर में "मुजाहिदा" लिखी जाती हैं इसीलिए क़यामत के हौलानाक दिन में उसे अर्श का साया अता किया जाएगा। नीचे मर्द और औरत के जिहाद का आपस में जाएज़ा लिया गया है :

न0	मर्द का जिहाद	औरत का जिहाद
1.	नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मर्दों से जिहाद करने पर बैअते रिज़वान ली।	नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने औरत से इफ़्फ़त व असमत की हिफ़ाज़त पर बैअत ली।
2.	मुजाहिद का जिहाद घर से बाहर निकलकर होता है।	औरत का जिहाद घर में रहकर भी होता है।
3.	मुजाहिद का जिहाद काफ़िर दुश्मन के साथ होता है।	औरत का जिहाद ग़ैर-महरम रिश्तेदार के साथ भी होता है।
4.	दुश्मन मुजाहिद पर गोलियाँ बरसाता है।	ग़ैर-महरम औरत पर मस्त निगाहों के तीर चलाता है।
5.	दुश्मन मुजाहिद के मुल्क पर क़ब्ज़ा करना चाहता है।	ग़ैर-महरम औरत के जिस्म पर इख़्तियार हासिल करना चाहता है।
6.	दुश्मन मुजाहिद के मुल्की वसाइल से है।	ग़ैर-महरम औरत के जिस्म से लुत्फ़अंदोज़ होना चाहता फ़ायदा लेना चाहता है।
7.	मुजाहिद दुश्मन को मुल्की सरहद से दूर रखता है।	औरत ग़ैर-महरम को अपने आपसे दूर रखती है।
8.	मुजाहिद दुश्मन को मुल्क के अन्दर एक इंच घुसने की इजाज़त नहीं देता।	औरत ग़ैर-महरम को अपने जिस्म के साथ उंगली लगाने की भी इजाज़त नहीं देती।
9.	मुजाहिद दुश्मन पर एतिमाद नहीं करता।	औरत ग़ैर-महरम पर एतिमाद नहीं करती।
10.	मुजाहिद मोर्चे में रहकर अपना बचाव करता है।	औरत घर की चारदीवारी में रह कर अपनी हिफ़ाज़त करती है।
11.	मुजाहिद समझता है कि दुश्मन ने देख लिया तो जान का ख़तरा है।	औरत समझती है कि ग़ैर-महरम ने देख लिया तो आबरु लुट जाने का ख़तरा है।

12.	दुश्मन मुजाहिद के मुल्क को लूट लेता है।	ग़ैर-महरम औरत की इज़्ज़त व आबरु को लूट लेता है।
13.	मुजाहिद ने दुश्मन को दूर रखकर ग़ाज़ी का दर्जा पाया।	औरत ने ग़ैर-महरम को दूर रखकर मुजाहिद का लक़ब पाया।
14.	मुजाहिद दुश्मन से छिपकर काम करता है।	औरत ग़ैर-महरम से छिपकर अपना काम करती है।
15.	मुजाहिद दुश्मन के वार से बचने के लिए ज़िरह पहनता है।	औरत ग़ैर-महरम की निगाहों से बचने के लिए बुर्क़ा पहनती है।
16.	मुजाहिद को दुश्मन के सामने इस्तिक़ामत दिखाने पर कामयाबी मिलती है।	औरत को ग़ैर-महरम के मामले में इस्तिक़ामत दिखाने पर कामयाबी मिलती है।
17.	दुश्मन मुजाहिद से मुज़ाकरात को चाल के तौर पर इस्तेमाल करता है।	ग़ैर-महरम औरत के साथ बातचीत को चाल के तौर पर इस्तेमाल करता है।
18.	दुश्मन मुजाहिद के मुल्क में जासूस भेजता है।	ग़ैर-महरम औरत की तरफ़ पैग़ाम्बर या फ़ोन काल भेजता है।
19.	दुश्मन मुजाहिद के रास्त. में बारूदी सुरंगे बिछाकर कामयाब होता है।	ग़ैर-महरम औरत की तरफ़ तोहफ़े वग़ैरह भेजकर मक़सद में कामयाब होता है।
20.	मुजाहिद को दिन-रात सरहद का पहरा देकर अज्र मिलता है।	औरत को दिन-रात ग़ैर-महरम से चौकन्ना रहने पर अज्र मिलता है।
21.	मुजाहिद दुश्मन को रमल के ज़रिए कमज़ोरी का पता न चलने दे।	औरत पर्दे के ज़रिए ग़ैर-महरम को अपने हुस्न व जमाल का पता न चलने दे

22.	अंदरूनी दुश्मन मुजाहिद को हथियार डालने पर मजबूर करते हैं।	औरत को नफ़्स ग़ैर-महरम के सामने नरम हो जाने पर मजबूर करते हैं।
23.	मुजाहिद को जिहाद अल्लाह तआला का क़ुर्ब अता करता है।	औरत को पाकदामनी अल्लाह तआला को क़ुर्ब अता करती है।
24.	मुजाहिद को दुश्मन से ख़तरा हो तो मोमिन दोस्त से मदद मिलती है।	औरत को ग़ैर-महरम से ख़तरा हो तो अपने महरम मर्दों से मदद मिलती है।
25.	मुजाहिद को चाहिए कि दुमश्न के हमले का मुँह तोड़ जवाब दे।	औरत को चाहिए कि ग़ैर-महरम की बात का मुँह तोड़ जवाब दे।
26.	मुजाहिद को अपने मुल्क की हिफ़ाज़त करने से मुहब्बत होती है।	औरत को अपने नामूस की हिफ़ाज़त करने से मुहब्बत होती है।
27.	मुजाहिद की दुआएँ अल्लाह तआला के हाँ क़बूल होती हैं।	पाकदामन औरत की दुआएँ अल्लाह तआला के हाँ क़बूल होती हैं।
28.	मुजाहिद को अंदरूनी दुश्मन से ज़्यादा ख़तरा होता है।	औरत को रिश्तेदार ग़ैर-महरम से ज़्यादा ख़तरा होता है
29.	मुजाहिद मुल्क की हिफ़ाज़त करते मरा तो शहीद होता है।	औरत अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करते मरी तो शहीद होती है।
30.	मुजाहिद को चाहिए कि अपनी कामयाबी के लिए अल्लाह तआला से दुआ माँगे।	औरत को चाहिए कि अपनी इज़्ज़त व इफ़्फ़त की हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह तआला से दुआ माँगे।

शहवत कंट्रोल करने से मुताल्लिक़ इम्तिहानी पर्चा

नोट : तमाम सवालात के जवाब देने लाज़मी हैं। सामने दिए गए जवबात में से सही पर निशान लगाइए :

1.	क्या आप ग़ैर-महरम की शहवत की नज़र से देखते हैं?	A	B
2.	क्या आप ख़ुद ग़ैर-महरम कज़िनों से पर्दा करने की कोशिश करते हैं?	A	B
3.	क्या आप अपने दोस्तों से शहवत भरा मज़ाक करते हैं?	A	B
4.	क्या आप टीवी स्क्रीन पर ख़बरें य ड्रामें देखते हैं?	A	B
5.	क्या आप मुहब्बत भरे अफ़साने या तीन औरतें तीन कहानियाँ पढ़ते हैं?	A	B
6.	क्या आप किसी हसीन या हसीना से छिपी मुहब्बत करते हैं?	A	B
7.	क्या आपको इंडियन गाने या पॉप गानें या पॉप म्युज़िक अच्छी लगती है?	A	B
8.	क्या आप इंटरनेट पर चैटिंग करते हैं या जिन्सी तस्वीरें देखते हैं?	A	B
9.	क्या आप टेलीफ़ोन पर ग़ैर-महरम से जिन्सी बातें करते हैं?	A	B
10.	क्या आप ग़ैर शरई तरीक़े से शहवत पूरी करते हैं?	A	B

हिदायत :

हर सवाल के जवाब पर 10 नंबर देते जाएँ फिर टोटल करें।

- अगर B नंबर 50 से ज़्यादा हैं तो आप फेल हैं। फ़ौरी तौबा के ज़रिए दोबारा इम्तिहान में हाज़िर हों।
- अगर A नंबर 50 से ज़्यादा हैं तो आप पास हैं। तौबा इस्तिग़फ़ार के ज़रिए अपनी डीविज़न इम्प्रूव करने की कोशिश करें।
- अगर A नंबर 80 के ज़्यादा है तो आप फ़र्स्ट डिवीज़न पास हैं। थोड़ी हिम्मत करने से एज़ाज़ हासिल कर सकते हैं।
- अगर A नंबर 100 के बराबर हैं तो आपने इम्तियाज़ी पोज़ीशन हासिल कर ली। आप मुबारकबाद के लायक़ हैं।

अल्लाह का शुक्र अदा करें। हमसे राब्ता करें हम आपको मिठाई खिलाएंगे या आइस्क्रीम। इसके अलावा आपसे दरख़्वास्त करेंगे कि हम आज़िज़ मिस्कीनों की बख़्शिश के लिए दुआ फ़रमा दें। सुना है कि अल्लाह तआला पाकदामन शख़्स के उठे हुए हाथों को ख़ाली नहीं लौटाते।

बाब-10

ज़िना से तौबा

इनसान ख़ता का पुतला है। इनसान होने के नाते गुनाह कर बैठता है। जब एहसास होता है तो दिल में नदामत होती है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। इसी नदामत का दूसरा नाम तौबा हैं नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया यानी नदामत तौबा है।

इसलिए बंदा गुनाह कर रहा होता है तो अल्लाह तआला उस वक़्त भी ग़ज़बनाक नहीं होते। वह हलीम हैं, ग़लती पर पछताने का मौक़ा देते हैं।

1. अल्लाह तआला गुनाह करता देखकर भी ग़ज़बनाक नहीं होते

बनी इसराईल के एक बादशाह के सामने किसी आबिद का तज़्किरा हुआ। बादशाह ने उसे बुला भेजा और मिन्नत समाजत करके उसे अपने महल में रखने की कोशिश की। आबिद ने कहा, बादशाह सलामत! बात तो बहुत अच्छी है मगर यह बताइए कि अगर आप मुझे किसी दिन अपनी बांदी से ज़िना करता देख लें तो क्या होगा? बादशाह यह सुनकर ग़ज़बनाक हो गया। कहने लगा, ओ बदकार तू मेरे महल में ऐसी जुर्रत कैसे कर सकता है! आबिद ने कहा बादशाह सलामत नाराज़ न हों। मेरा रब कितना करीम है। मुझे दिन में सत्तर दफ़ा गुनाह करता देखे तो भी मुझ पर ग़ज़बनाक नहीं होता और न ही अपने दरवाज़े से धकेलता है। न ही रिज़्क़ से महरूम करता है तो मैं उसका दरवाज़ा कैसे छोड़ूँ और आपके दरवाज़े पर कैसे आऊँ कि

आप गुनाह करने से पहले ही मुझपर ग़ज़बनाक हो रहे हैं। अगर आप जुर्म करता देखलें तो मेरा क्या हशर करें। यह कहकर वह आबिद वापस चला गया।

2. अल्लाह तआला की रहमत से मायूस न हों

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल वहशी ने मक्का मुकर्रमा से नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ख़त भेजा कि मैं इस्लाम क़बूल करना चाहता हूँ मगर मेरे लिए क़ुरआन करीम की यह आयत रुकावट है :

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾

और जो लोग नहीं पुकारते अल्लाह तआला के साथ दूसरे अल्लाह को और न ख़ून करते हैं ऐसी जान का जो अल्लाह ने मना कर दी है मगर हक़ के साथ और न बदकारी करते हैं और जो करे यह काम वह जा पड़ता है गुनाह में। (फ़ुरक़ान : 68)

मैंने शिर्क, क़त्ल और ज़िना तीनों काम किए हैं तो क्या मेरे लिए तौबा है? इस पर यह आयत नाज़िल हुई :

إِلَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ

लेकिन जिसने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे अमल किए, यह हैं कि बदल देगा अल्लाह उनकी बुराईयाँ नेकियों के साथ। (फ़ुरक़ान : 70)

आपने यह आयत लिखकर वहशी (रज़ियल्लाहु अन्हु) को भेजी। उन्होंने जवाब में कहा कि इस आयत में नेक आमाल करना शर्त है। पता नहीं कि मैं कर सकूँ या न कर सकूँ। इस पर यह आयत नाज़िल हुई :

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَشَآءُ

बेशक अल्लाह नहीं माफ़ फ़रमाते यह कि उसके साथ किसी को शरीक किया जाए और इसके अलावा जिसके लिए चाहे माफ़ी अता फ़रमाते हैं। (निसा :116)

नबी अलहिस्सलातु वस्सलाम ने यह आयत लिखकर भेजी। वहशी ने जवाब दिया कि इस आयत में मग़फ़िरत शर्त के साथ हैं क्या ख़बर मेरी मग़फ़िरत चाहेंगे या नहीं। इस पर यह आयत नाज़िल हुई :

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ أَسْرَفُوْا عَلٰى أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا إِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

कह दीजिए ऐ मेरे बंदो! जिन्होंने अपने नफ़्सों पर ज़्यादतियाँ की न मायूस हो अल्लाह की रहमत से। बेशक अलह तआला माफ़ फ़रमा देंगे तमाम गुनाह। बेशक वह मग़फ़िरत करनेवाल और रहम करनेवाला है।
(ज़ुमर : 53)

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह आयत लिखकर भेजी। इसमें मग़फ़िरत के लिए कोई पेशगी शर्त का तज़्किरा नहीं था। वहशी रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना तैय्यबा हाज़िर होकर इस्लाम क़बूल कर लिया। इससे मालूम हुआ कि बंदे को अल्लाह तआला की रहमत से हर्गिज़-हर्गिज़ मायूस नहीं होना चाहिए। दीने इस्लाम ने मायूसी को कुफ़्र कहा है। इरशादे बारी तआला है :

إِنَّهٗ لَا يَاْيْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ

बेशक अल्लाह की रहमत से काफ़िर नाउम्मीद हैं।
(यूसुफ़ : 87)

लिहाज़ा अगर किसी बन्दे ने बार-बार ज़िना भी किया हो तो भी उसके लिए तौबा का दरवाज़ा खुला है। वह जब चाहे अपने रूठे हुए रब को मना सकता है।

3. तौबा का आख़िरी वक़्त

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक हदीस पाक में इरशाद फ़रमाया है कि जो शख़्स मौत के वक़्त सांस उखड़ने से पहले तौबा कर ले तो भी अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल फ़रमा लेते हैं। इरशादे बारी तआला है :

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُوا عَنِ السَّيِّاٰتِ

वह है कि तौबा क़बूल करता है अपने बंदों की और उनकी गुनाहों से दरगुज़र करता है। (शूरा : 25)

हज़रत सईद बिन हसीब रह. से पूछा गया कि यानी बेशक वह रुजू करनेवालों की ख़ता को माफ़ कर देता है से क्या मुराद है? फ़रमाया जो बंदा गुनाह करता है फिर तौबा कर लेता है। हसन बसरी रह. से पूछा गया कि यह सिलसिला कब तक रहेगा? फ़रमाया जब तक सूरज मग़रिब से तुलू नहीं हो जाता यानी उस वक़्त तक कोई भी ज़ानी ज़िना से तौबा कर लेगा तो क़बूल हो जाएगी।

4. तौबा का तरीक़ा

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह हदीस सुनाई कि जब बन्दा गुनाह करता है, फिर अच्छी तरह वुज़ू करता है और दो रकअत नमाज़ पढ़ लेता है और अल्लाह तआला से बख़्शिश माँगता है तो अल्लाह तआला उसे माफ़ फ़रमा देते हैं। फिर आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई :

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

जो बुरे काम करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह तआला से माफ़ी माँगे, अल्लाह तआला को

मग़फ़िरत करने वाला और रहम करने वाला पाएगा।
(निसा : 110)

बाज़ ताबईन से मन्क़ूल है कि एक गुनाहगार गुनाह करता है फिर उस पर नादिम होकर इस्तिग़फ़ार करता रहता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत करके उसे जन्नत में दाख़िल कर देते हैं। तो शैतान कहता है कि ऐ काश! मैं इसे गुनाह में मुब्तला ही न करता।

5. तौबा की अलामतें

आदमी की तौबा की चार अलामतों से पहचानी जाती है :

1. पिछले गुनाहों पर नदामत और आइन्दा गुनाह करने का दिल में पक्का इरादा हो।
2. अपने दिल में किसी मोमिन के ख़िलाफ़ कीना न रखे यानी सबको अल्लाह तआला के लिए माफ़ कर दे।
3. फ़ासिक़ व फ़ाज़िर लोगों से दिली ताल्लुक़ तोड़े बल्कि अलैहिदगी इख़्तियार कर ले।
4. मौत की तैयारी में लग जाए।

ऐसी सच्ची तौबा करने वाले के बारे में लोगों पर चार चीज़ें वाजिब हो जाती हैं :

1. उससे मुहब्बत करे, नफ़रत दिल से निकाल दें।
2. तौबा पर साबित क़दमी की दुआ करें।
3. गुज़िश्ता गुनाहों पर उसे शर्मिन्दा न करें।
4. नेक काम करने में उसका तआवुन करें।

ऐसी सच्ची तौबा करनेवाले को अल्लाह तआला भी चार ईनाम से नवाज़ते हैं।

1. उसके गुनाहों इस तरह मिटा देते हैं जैसा कि उसने गुनाह किया ही न हो।

हदीस पाक में है :

التائب من الذنب كمن لا ذنب له

गुनाह से तौबा करनेवाला ऐसा ही है जैसा उसने कभी गुनाह किया ही नहीं।

2. आइन्दा शैतान के हमलों से उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं। इरशादे बारी तआला है :

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ.

बेशक मेरे बंदे कि नहीं है तेरे लिए उन पर कोई हुज्जत।

3. उसको अपना महबूब बना लेते हैं :

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ.

बेशक अल्लाह तआला तौबा करने वालों को पसन्द करता है।

हदीस पाक में भी है :

तौबा करनेवाला अल्लाह का दोस्त है।

4. दुनिया से रुख़्सत होने से पहले उसे ख़ौफ़ से अमन की ख़ुशख़बरी अता करते हैं। इरशादे बारी तआला है :

تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝

उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि न ख़ौफ़ करो तुम और न ग़म करो तुम और तुम्हें ख़ुशख़बरी हो जन्नत की जिसका तुमसे वादा किया गया है। (हामीम सजदा : 30)

6. गुनाहगार को शर्मिन्दा न करें

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक औरत को ज़िना करने पर रजम की सज़ा दी और फिर उसकी नमाज़ें जनाज़ा पढ़ाई। कुछ सहाबा ने पूछा कि ऐ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने ख़ुद ही रजम की सज़ा दी और ख़ुद ही नमाज़ें जनाज़ा पढ़ाई।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि इस औरत ने ऐसी तौबा की है कि अगर सत्तर आदमियों में तक़सीम कर दी जाती तो उनके गुनाह माफ़ हो जाते। इससे मालूम होता है कि मोमिन ग़फ़लत की वजह से गुनाह करता है, उसे पसन्द नहीं करता। इरशादे बारी तआला है :

وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ

नफ़रत डाल दी तुम्हारी तरफ़ कुफ़्र और गुनाह और नाफ़रमानी की। (हुजूरात : 7)

इस आयत से मालूम हुआ कि मोमिन गुनाह से ख़ुश नहीं होता। ग़फ़लत की वजह से कर बैठता है। बस जब तौबा कर ले तो उसे शर्मिन्दा नहीं करना चाहिए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद है कि जो शख़्स किसी मोमिन को उसके गुनाह की वजह से शर्मिन्दा करता है उसे उस वक़्त मौत नहीं आती जब तक उस गुनाह में ख़ुद मुलव्विस न हो जाए।

इसलिए जब बन्दा अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर लेता है तो अल्लाह तआला उसके जिस्म के आज़ा, उसके किरामन कातिबीन, ज़मीन के टुकड़े वग़ैरह सबको गुनाह भुला देता है। नामाए आमाल से गुनाह मिटा देते हैं ताकि क़यामत के दिन कोई गवाही देनेवाला भी न हो। बस अगर कोई औरत ज़िना से सच्ची तौबा कर ले तो लोगों को नहीं सजता कि उसको शर्मिन्दा करें या आर दिलाएँ अगरचे उसने तवाएफ़ की ज़िन्दगी ही क्यों न गुज़ारी हो।

नशा पिलाकर गिराना तो सबको आता है
मज़ा तो तब है कि गिर तों को थाम ले साक़ी

7. गुनाह के बावजूद मोमिन

अल्लाह तआला ने इब्लीस मलऊन को मोहलत दी तो उसने कहा तेरी इज़्ज़त की क़सम मैं तेरे बंदे के सीने से नहीं निकलूँगा जब तक उसे मौत न आ जाए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुझे

अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं अपने बन्दों के लिए तौबा को आम कर दूँगा यहाँ तक कि उनहें मौत आ जाए। अल्लाह तआला की अपने बन्दों पर रहमत तो देखू कि गुनाह के बाद उन्हें मोमिन के लक़ब से ज़िक्र फ़रमाते हैं। इरशादे बारी तआला है :

وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾ (النور)

और तौबा करो तुम अल्लाह से सबके सब ऐ मोमिनों ताकि तुम कामयाब हो जाओ।

जब बन्दा तौबा कर लेता है तो उसे अपना महबूब करार देते हैं। इरशादे बारी तआला है :

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ

अल्लाह तौबा करनेवालों को पसन्द फ़रमाते हैं। (बक़रा : 222)

जब अल्लाह तआला तौबा करनेवाले से मुहब्बत करते हैं तो बन्दों को कहाँ इजाज़त है कि वह उससे नफ़रत करें।

8. नेकियाँ बुराईयों को मिटाती हैं

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया :

التائب من الذنب كمن لا ذنب له

गुनाहों से तौबा करनेवाला ऐसा ही है जैसे उसने गुनाह किया ही नहीं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से एक आदमी ने सवाल किया कि मुझसे गुनाह हो गया हैं आपने फ़रमाया, तौबा कर फिर गुनाह न कर। साइल ने कहा कि मैं तो तौबा करने के बाद भी गुनाह कर चुका हूँ। फ़रमाया फिर तौबा कर लो, आइन्दा गुनाह न करना। उसने पूछा कब तक? फ़रमाया उस वक़्त तक कि शैतान थक जाए।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु रावी है कि एक

आदमी ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैंने एक औरत को बाग़ में पाया तो उससे बोस व किनार वग़ैरह सब कुछ किया अलबत्ता मिलाप नहीं किया। आपने चंद लम्हें सुकूत फ़रमाया तो ये आयत नाज़िल हुई :

إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ

बेशक नेकियाँ बुराईयों को मिटा देती हैं।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उस शख़्स को यह आयतें सुनायीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या यह इसी शख़्स की ख़ुसूसियत है या तमाम लोगों के लिए है। फ़रमाया तमाम लोगों के लिए है।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इरशाद है कि हर बंदे पर दो फ़रिश्ते निगरान हैं। दाएँ जानिब वाला नेकी का फ़रिश्ता बाएँ जानिब वाले बदी लिखनेवाले फ़रिश्ते पर निगरान है। जब कोई बन्दा नेकी करता है तो दाएँ जानिब का फ़रिश्ता फ़ौरन उसे लिख लेता है लेकिन जब वह बंदा गुनाह करता है तो बाएँ जानिब वाला फ़रिश्ता पूछता है कि मैं इसे लिख लूँ? दूसरा कहता है कि अभी पाँच गुनाह इकठ्ठे होने दो। जब पाँच गुनाह इकठ्ठे हो जाते हैं तो वह एक नेकी कर लेता है। बस फ़रिश्ता कहता है कि एक नेकी दस के बराबर होती हैं बस तुम पाँच गुनाह के बदले पाँच नेकियाँ समझ लो। बक़िया पाँच उसके नामाए आमाल में लिख दो। इस पर शैतान चीख़ता है कि इब्ने आदम पर ग़लबा पाना मेरे बस की बात नहीं है।

9. कुफ़्र की भी माफ़ी

अल्लाह तआला के दरबार में सौ साल का काफ़िर भी आकर सच्ची तौबा कर ले तो अल्लाह तआला उसकी तौबा भी क़बूल कर लेते हैं। इरशादे बारी तआला है :

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ

काफ़िरों से कह दो कि अगर वे बाज़ आ जाएँ तो पहले जो हो चुका है माफ़ कर दिया जाएगा।

(अनफ़ाल :38)

बस अगर कुफ़्र की भी तौबा है तो उन गुनाहों का क्या कहना जो कुफ़्र से कम दर्जे के हों। बस ज़ानी अगर तौबा करेगा तो यक़ीनन बख़्शिश नसीब होगी।

10. ज़िना से तौबा करनेवालों के वाक़िआत

किताबुत्तव्वाबीन और तंबिहुल-ग़ाफ़िलीन से उन लोगों के कुछ वाक़िआत नक़ल किए जाते हैं जिन्होंने ज़िना किया था लेकिन बाद में नादिम व शर्मिन्दा होकर माफ़ी माँगी और ज़िन्दगी की तर्तीब को बदल लिया और पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।

ज़ानिया औरत की तौबा

हज़रत अबहुरैरह फ़रमाते हैं कि एक रात में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ ईशा की नमाज़ पढ़कर निकला। क्या देखता हूँ कि एक औरत नक़ाब ओढ़े रास्ते में खड़ी है। वह कहने लगी कि मुझसे बड़ा गुनाह हो गया है, क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है? मैंने पूछा तेरा गुनाह क्या है? उसने कहा कि मैंने ज़िना किया है और उससे पैदा होने वाले बच्चे को भी क़त्ल कर दिया है। मैंने कहा तू ख़ुद भी हलाक हो गई और एक मासूम जान को भी हलाक कर दिया, ख़ुदा की क़सम तेरी तौबा क़बूल नहीं। यह सुनकर उस औरत ने चीख़ मारी गोया कि बेहोश होकर गिर पड़ी। मैं आगे चला गया। अपने जी मेंसोचा कि जब नबी अलैहिस्सलातु वसल्लम मौजूद हैं तो मुझे फ़तवा देने की क्या ज़रूरत हैं सुबह हुई तो मैं जल्दी नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! गुज़िश्ता रात एक औरत ने मुझसे मसअला पूछा और

मैंने उसका यूँ जवाब दिया। यह सुनकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा और फ़रमाया ऐ अबूहुरैरह! तू ख़ुद भी हलाक हुआ और उसे भी हलाक किया क्या तुझे यह आयत मालूम न थी :

وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾

नहीं क़त्ल करते वह किसी ऐसी जान को कि अल्लाह ने हराम किया है उसे मगर हक़ के साथ और न बदकारी करते हैं। और जो इस तरह करे वह बड़े गुनाह में पड़ गया। उसके लिए दोहरा अज़ाब है और क़यामत के दिन हमेशा के लिए उसमें ख़्वार होते रहेंगे। जिसने तौबा की, ईमान लाया और नेक अमल किए अल्लाह तआला उनकी बुराईयों को नेकियों में बदल देगा और अल्लाह माफ़ करनेवाला और रहम करनेवाला है।

(फ़ुरक़ान : 68-70)

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं उस वक़्त नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के हाँ से चला गया और मेरा यह हाल था कि मदीना की गलियों में ढूँढता फिरता था कि कोई मुझे उस औरत का पता बताए जिसने कल रात मुझसे मसला पूछा था। मुझे देखकर बच्चे शोर करते कि अबूहुरैरह दीवाना हो गया। इसी तरह रात हुई क़ुदरती बात कि ईशा की नमाज़ के बाद कल की जगह पर वही औरत मुझे खड़ी मिल गई। मैंने उसे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का फ़रमान सुनाया कि तेरी तौबा क़बूल है। यह सुनकर वह औरत ख़ुशी के मारे रोने लगी और कहने लगी कि फ़लाँ बाग़ मेरा है। मैं इस गुनाह के कफ़्फ़ारे में मिस्कीनों के लिए सदक़ा करती हूँ।

ज़ानिया औरत तौबा करके वलियों की माँ बनी

फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़ंदी रह० अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि बनी इस्राईल में एक फ़ाहिशा औरत थी। लोग उसके हुस्न व ज़माल पर लट्टू हो जाते थे। उसका दरवाज़ा हर वक़्त खुला रहता था। हाल यह था कि जो शख़्स एक नज़र देख लेता उससे मुलाक़ात के लिए बेताब हो जाता। वह और दस दीनार वसूल करतीं फिर अपने पास आने देती।

एक दिन एक नवजवान आबिद का उधर गुज़र हुआ। उसने परी चेहरा औरत को तख़्त पर बैठे हुए देखा तो आशिक़ हो गया। दिल क़ाबू में न रहा। हज़ार जतन के बाद उस औरत का ख़्याल दिल से निकल जाए मगर कामयाबी न हुई। दिन-रात और सुबह व शाम उसी औरत का ख़्याल उसके दिल में छाया रहता। मजबूर होकर उसने अपना माल व असबाब बेचा और दस दीनार इकट्ठे किए। फिर औरत के वकील के ज़रिए उस तक पहुँच गया। औरत ज़ेब व ज़ीनत किए हुए पलंग पर बैठी थी। वह आबिद भी उस के साथ पलंग पर बैठ गया। और हाथ बढ़ाकर बोस व किनार करने लगा। अल्लाह तआला ने उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाई। पिछली इबादतों की बरकतें ज़ाहिर हुईं तो उसके दिल में ख़्याल आया कि मेरा परवरदिगार मुझे इस हालत में देख रहा है। ऐसा न हो कि इस हराम अमल से मेरी की हई सब इबादतें जाए हो जाएँ। अल्लाह तआला का ऐसा ख़ौफ़ दिल पर तारी हुआ कि उसने कांपना शुरू कर दिया। चेहरे का रंग फ़क़ हो गया।

औरत ने पूछा तुझे क्या हुआ? आबिद ने कहा मुझे अपने परवरदिगार से शर्म आ रही है, मैं वापस जाना चाहता हूँ। औरत कहने लगी कि लोग तो इस मौक़े के लिए मुद्दतों तड़पते हैं, तुझे हासिल है, अपनी मुराद पूरी कर ले। आबिद कहने लगा, मैंने जो तुझे माल दिया था वह तेरे लिए हलाल है, बस मुझे जाने

दे। औरत कहने लगी कि लगता है तूने यह काम पहले कभी नहीं किया। आबिद कहने लगा हाँ कभी नहीं किया। औरत ने उस आबिद का नाम पता पूछा तो उस आबिद ने सब कुछ बता दिया। जब वहाँ से निकला तो ज़ार व क़तार रोने लगा कि मैं अल्लाह के दर को छोड़कर एक ज़ानिया के दर पर आ पहुँचा। इधर ज़ानिया औरत के दिल में भी आबिद की बरकत से ख़ौफ़े ख़ुदा तारी हुआ। अपने जी में कहने लगी कि इस शख़्स का पहला गुनाह था और यह इस क़द्र डरा। मैं बरसों से गुनाह कर रही हूँ, मैं नहीं डरती हालाँकि मेरा ख़ुदा भी तो वही है और वह मुझे सब कुछ करते हुए देखता है।

उस औरत ने घर का दरवाज़ा बंद कर लिया। मामूली कपड़े पहन लिए और इबादत में मशग़ूल हो गई। एक दिन उसके दिल में ख़्याल आया कि क्यों न मैं उस आबिद के पास चली जाऊँ। मुमकिन है कि वह मेरे साथ निकाह कर ले। मैं उससे दीन सीखूंगी। वह इबादत में मेरा मददगार बनेगा। यह कहकर उसने सामान बाँधा और उस आबिद की बस्ती में पहुँची। आबिद को बुलाया, जब वह सामने आया तो उस औरत ने चेहरा खोल दिया ताकि वह उसे पहचान ले। आबिद ने उस औरत को देखा तो उसकी निगाहों में सारा मंज़र फिर गया। उसने एक चीख़ मारी और उसकी रूह परवाज़ कर गई। औरत को इसका बहुत सदमा हुआ। उसने आबिद के भाई से निकाह करके नेकी की ज़िन्दगी शुरू कर दी। उसके सात बच्चे हुए जो बनी इस्राईल के औलिया बने। वल्लाहु सुब्हानहु अ-लम बिस्सवाब।

ज़ानी जवान की सच्ची तौबा

ज़ोहरी रिवायत करते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रोते हुए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने रोने की वजह पूछी तो अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह दरवाज़ें पर एक नवजवान रो रहा है जिसने मेरे

दिल को हिला दिया है। फ़रमाया, उमर! उसे अन्दर ले आओ। वह नवजवान हाज़िरे ख़िदमत हुआ तो ज़ार व क़तार रो रहा था। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पूछा तुम्हारे रोने की क्या वजह है? नवजवान ने कहा कि मेरे गुनाहों का बोझ मुझे रुला रहा है। मुझे डर है कि रब्बे जब्बार मुझ पर बहुत ग़ज़बनाक होगा।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया ऐ नवजवान क्या तूने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक ठहराया है? अर्ज़ किया नहीं। पूछा क्या तूने किसी जान को नाहक़ क़त्ल किया है? अर्ज़ किया नहीं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि फिर अल्लाह तआला तेरे गुनाहों को माफ़ कर देंगे अगरचे वे सातों आसमानों ज़मीनों और पहाड़ों से बढ़े हुए क्यों न हों। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा क्या तेरा गुनाह बड़ा है या कुर्सी? उसने कहा मेरा गुनाह बड़ है। फ़रमाया अज़ीम को रब्बे अज़ीम ही माफ़ फ़रमाएगा। अच्छा बताओ कि तेरा गुनाह क्या है? उसने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मुझे आपसे हया आती है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बता दो।

कहने लगा कि मैं कफ़न चोर था। सात साल तक यही काम करता रहा। एक दफ़ा अंसार की नवजवान लड़की फ़ौत हुई। आदत के मुताबिक रात को क़ब्र खोदी और कफ़न उतारकर चल दिया। थोड़ी दूर गया तो शैतान ने मुझ पर ग़लबा पाया और शहवत को भड़का दिया। मैं वापस गया और उसके साथ ज़िना किया। जब फ़ारिग होकर उठने लगा तो मुझे यूँ लगा जैसे वह लड़की कह रही हो कि ऐ बन्दए ख़ुदा तुझे क़यामत के दिन जज़ा व सज़ा देनेवाले परवरदिगार से हया नहीं आती जिस वक़्त ज़ालिम से मज़लूम का बदला दिलवाएँगे। तू मरने वालों के मजमे में मुझे नंगी करके चल दिया और मुझे अल्लाह के सामने जनाबत की हालत में हाज़िर होने पर मजबूर कर दिया। वह सुनकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के चेहरे पर नाराज़गी के

आसार ज़ाहिर हुए। वह नवजवान वहाँ से उठकर चला गया। मदीना के बाहर पहाड़ों के दर्मियान चालीस दिन तक रोता और फ़रियाद करता रहा। आपने परवरदिगा से तौबा करता रहा था। चालीस दिन रात ख़ूब रो-रो कर माफ़ी माँगी तो एक मर्तबा आसमान की तरफ़ सर उठाकर कहने लगा ऐ परवरदिगार अगर आपने मेरी तौबा क़बूल कर ली है तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को इत्तिला दे दीजिए। अगर तौबा क़बूल नहीं की तो आग भेजकर मुझे दुनिया में ही कोयला बना दीजिए मगर आख़िरत के अज़ाब से बचा लिजिए।

इतने में जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, सलाम किया और कहा कि अल्लाह तआला ने आपकी तरफ़ सलाम भेजा है। आपने फ़रमाया वह ख़ुद सलाम हैं। सलाम का मुब्दा और मुन्तहा वही हैं जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मुझे भी और तमाम मख़्लूक़ को अल्लाह तआला ने पैदा किया है। अर्ज़ किया अल्लाह तआला पूछते हैं कि क्या मख़्लूक़ को आप रिज़्क़ देते हैं। फ़रमाया मुझे भी और सारी मख़्लूक़ को अल्लाह तआला रिज़्क़ देते हैं। अर्ज़ किया अल्लाह तआला पूछते हैं कि बन्दों की तौबा आप क़बूल करते हैं? फ़रमाया मेरी और तमाम बन्दो की तौबा को अल्लाह क़बूल करते हैं। अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मैंने उस नवजवान की तौबा क़बूल कर ली। आप भी उस पर निगाहे शफ़क़त फ़रमाइए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उस नवजवान को बुलाकर तौबा क़बूल होने की बशारत सुनाई।

जानना चाहिए कि ज़िन्दा के साथ ज़िना मुर्दा के साथ ज़िना करने से ज़्यादा बड़ा गुनाह है। जब अल्लाह तआला ने नवजवान की सच्ची तौबा क़बूल कर ली तो हमें भी अपनी करतूतों से सच्ची तौबा करनी चाहिए।

एक ज़ानी नवजवान की तौबा

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने यह हदीस नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सात मर्तबा से भी ज़्यादा मर्तबा सुनी है। आपने इरशाद फ़रमाया :

बनी इसराईल की क़ौम में किफ़्ल नामी एक आदमी था जो गुनाहों के करने में बड़ा बेबाक था। एक मर्तबा एक औरत आई जो बहुत मजबूर थी। उसने उसको साठ दीनार इस शर्त पर दिए कि वह अपने साथ गुनाह करने दे। औरत राज़ी हो गई। फिर जब वह उससे गुनाह करने लगा और उसके पास बैठ गया जैसा कि मर्द औरत के पास बैठता है तो औरत की चीख़ निकल गई और रोने लगी। उस जवान ने पूछा कि क्यों रोती हो, क्या मैंने तुम्हें इसके लिए मजबूर किया था? उसने कहा नहीं, यह बात नहीं है बल्कि यह गुनाह ऐसा है कि जो मैंने आज तक नहीं किया लेकिन आज मैं मजबूरी की वजह से मजबूर हो गई। यह सुनकर वह नवजवान उससे हट गया और कहा चली जाओ और यह दीनार भी ले जाओ। फिर उस शख़्स ने कहा अल्लाह की क़सम! किफ़्ल भी आज के बाद यह गुनाह नहीं करेगा। फिर यह शख़्स उसी रात फ़ौत हो गया। सुबह हुई तो उसके घर के दरवाज़े पर लिखा हुआ था—

قد غفر الله الكفل-

अल्लाह ने किफ़्ल की मग़फ़िरत कर दी।